







732

ਸਿੱਖ ਯੁੱਗ ਵਿੱਚ ਸਾਹਿਬਜ਼ਾਦੇ



[illegible]

The view of each year

20th July 1895

92	93	94	95	96	97	98	99	00	01	02	03	04	05	06	07	08	09	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	00	01	02	03	04	05	06	07	08	09	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	00	01	02	03	04	05	06	07	08	09	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	00	01	02	03	04	05	06	07	08	09	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	00	01	02	03	04	05	06	07	08	09	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	00	01	02	03	04	05	06	07	08	09	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75
----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----

10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 841. 842. 843. 844. 845. 846.

۱۷۲۸

626 44

Digitized by Google

ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫਤਹ
 ਸ੍ਰੀ ਸਤਿਗੁਰੂ ਭਗਤ ਰਾਮ ਕੇ ਹਰੀ
 ਸਿੰਘ ਖਾਲਸੇ ਕੇ ਪਰਉਪਕਾਰ ਹੇਤ
 ਸੁਗਮ ਟੀਕਾ ਸੰਪਰਦਾਈ

ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ੧੦
 ਸੰਮਤ ੧੭੭੪
 ੧੭੭੪

ਸਫਰਨਾਮਾ

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਸਾਹਿਬ

ਜਿਸਦਾ

ਟੀਕਾ ਭਾਈ ਨਾਰਾਇਣ ਸਿੰਘ
 ਮੁੜ ਸਗਵਰਨ ਮੇਂਟ ਸਕੂਲ ਅ-
 ਮਰ ਸਰ ਨੈ ਤਿਆਰ ਕੀਤਾ।

ਬਿਨ ਪਛੇ ਟੀਕਾ ਕਾਰ ਦੇ ਕੋਈ ਨ ਛਾਪੇ

ਯੋਗੇਸ਼ ਅਮਰ ਪ੍ਰੇਸ ਵਿਚੋਂ ਭਾਈ ਨਰਾਇਣ
 ਘੋਲਦੇ ਭਾਈ ਅਮਰ ਸਿੰਘ ਜੀ ਸਾਹਿਬ
 ਕੇ ਅਧਿਕਾਰ ਸੇ ਛਪਾ।

ਹਸਬ ਫਰਮਾਇਸ਼ ਭਾਈ ਨਰਾਇਣ ਸਿੰਘ ਅਮਰ ਪ੍ਰੇਸ ਅਮਰ

تقدیر جلد ۳۵۰

بار اول

تبیع فی جلد ۶

2732

28
 1774
 1774

੧੬

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਰਾਮਦਾਸ ਲਾਇਬਰੇਰੀ
(ਸ੍ਰੀ ਦਰਬਾਰ ਸਾਹਿਬ ਕਮੇਟੀ ਸ੍ਰੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ
ਮੈਕਸੈਸ਼ਨ ਨੰ: 2732)

ਕਲਾਸ ਨੰ:.....

ਸੈਲਫ ਨੰ:.....

ਮੋਖ.....

(੧) ਮੈਂਬਰਾਂ ਨੂੰ ਇਕ ਸਮੇਂ ਮੁਕੱਰਰ ਕੀਤੀ ਗਈ ਗਿਣਤੀ ਦੀਆਂ ਕਿਤਾਬਾਂ ਲੈ ਸਕਣ ਦੀ ਆਗਿਆ ਹੋਵੇਗੀ ਜੇਕਿ ਉਹ ੧੫ ਦਨਾਂ ਤੋਂ ਵਧੀਕ ਤਕ ਨਹੀਂ ਰਖ ਸਕਣਗੇ।

(੨) ਮਿਆਦ ਦੇ ਅੰਦਰ ਕਿਤਾਬਾਂ ਵਾਪਸ ਨ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਮੈਂਬਰਾਂ ਨੂੰ ਦੋ ਪੈਸੇ ਰੋਜ਼ ਫੀ ਕਿਤਾਬ ਜੁਰਮਾਨਾ ਹੋਵੇਗਾ—ਜੇਕਿ ਸ ਹਾਲਤਾਂ ਵਿਚ ਸਕੱਤਰ ਸਾਹਿਬ ਮੁਆਫ਼ ਕਰ ਸਕਣਗੇ।

(੩) ਕਿਤਾਬਾਂ ਲੈਣ ਵਾਲੇ ਸੱਜਣ ਲਾਇਬਰੇਰੀ ਦੀਆਂ ਤਾਬਾਂ ਕਿਸੇ ਹੋਰ ਨੂੰ ਅਗੇ ਨਹੀਂ ਦੇ ਸਕਦੇ, ਭਾਵੇਂ ਦੂਜਾ ਸੱਜਣ ਲਾਇਬਰੇਰੀ ਵਿਚੋਂ ਆਪ ਕਿਤਾਬਾਂ ਲੈਣ ਦਾ ਹਕਦਾਰ ਹੋਵੇ ਤੇ ਵੇਂ ਨਾਂ।

ਕਿਤਾਬਾਂ ਤੇ ਕਿਸੇ ਕਿਸਮ ਦਾ ਕੋਈ ਨਿਸ਼ਾਨ ਆਦਿਕ ਲਗਾਇਆ ਜਾਵੇ।

(੪) ਖਰਾਬ ਕੀਤੀਆਂ ਕਿਤਾਬਾਂ ਦੀ ਥਾਂ ਨਵੀਆਂ ਕਿਤਾਬਾਂ ਦੀਆਂ ਪੇਂਟਗੀਆਂ।

ਪਾਪਨ

ਨਿਗਦਾ ਖਲਾਸਾ

ਪ੍ਰਸਾਹਿਬ ਦਸਵੀ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਨੇ
ਬੇਕੁਮੀ ਵਿਚੋਂ ਪੰਥ ਖਲਾਸਾ ਪ੍ਰਗਟ
ਕਰ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਫੁਕਾਇਆ ਤੇ ਉਸਸ
ਦਹਲੀ ਨੇ ਸੁਦਕਰ ਵਿਚੋਂ ਹਾਜ਼ੇ ਮੇ
ਨ ਕਰਦਾ ਸੀ ਏਹ ਤੇ ਤੀਸਰਾ ਪੰ
ਇਸ ਵਾਸਤੇ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ
ਨਾ ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਸੇ ਲਿਖਾ ਜੇ ਆਪ
ਲਵਾ ਸਰਹਵੀ ਨੇਕੇ ਵਿਚੋਂ ਤਸਰੀ
ਆਉਗਾ ਆਪ ਕੀ ਮੁਲਾਕਾਤ ਕੇ
ਆਪਕੇ ਸਾਬਦਗਾ ਨਹੀਂ ਕਰੁਗਾ
ਆਪਕੀ ਕਰੁਗਾ, ਇਧਰ ਤੇ ਪਰ

ਵਾਨਾ ਫੇਜ਼ਾ ਉਧਰ ਫੇਜ਼ਾ ਕੇ ਹੁਕਮ ਕੀਤਾ ਜੇ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬ ਕੇ ਪ
ਕੜਕੇ ਜਿਸਤਰਾਂ ਹੋ ਸਕੇ ਲੈ ਆਓ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬ ਬਾਦਸ਼ਾਹ ਦੇ
ਲਿਖੇ ਮੁਜਬ ਆਨੰਦ ਪੁਰ ਜੀ ਸੇ ਜਿਸਵੇਲੇ ਕੂਚ ਕੀਤਾ ਰਸਤੇ ਵਿ
ਚ ਚਮਕੀਰ ਸਾਹਿਬ ਬਾਦਸ਼ਾਹੀ ਫੌਜ ਬੇਓਕੂਰ ਨੇ ਆਵ ਘੇਰਾ
ਪਾਇਆ, ਉਥੇ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬ ਦੇ ਨਾਲ ਚਾਲੀ ਸਿੰਘ ਵੇ ਸਾਹਿ
ਬ ਜਾਵੇ ਬੇ ਬਡੀ ਲੜਾਈ ਹੋਈ ਵੇਡੇ ਸਾਹਿਬ ਜਾਵੇ ਸੁਹੀਦ ਹੋਏ
ਬਾਦਸ਼ਾਹੀ ਫੌਜ ਨੂੰ ਥੀ ਭਾਜ ਪਈ ਫੇਰ ਗੁਰੂ ਜੀ ਮੁਕਤਸਰ ਜੀ ਚਲੇ
ਦਮਦਮੇ ਸਾਹਿਬ ਪਹਿਚੇ ਫੇਰ ਦੀਨੇ ਕੇ ਜਾਕੇ ਏਹ ਹਿਕਾਇਤ ਭੀ
ਖੁਕੇ ਭੇਜੀ ਬਾਦਸ਼ਾਹ ਵਹਲੀ ਦੇ ਪਾਸ ਜੋ ਹਮੇ ਤੇ ਏਕਰਾ ਮੁਜਬ ਆਗਾਏ ਤੇ
ਪਰ ਤੁਮ ਨਹੀਂ ਆਏ ਹੋ ਕਸਮ ਪੁਰੀ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ ਹੈ॥

42/32

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
 ਨਿਰੰਕਾਰਿ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰਿ
 ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ॥
 ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹੁਕਮਸਤਿ

ਉਸਕਾ ਹੁਕਮਸਚਾ

ਜਫਰਨਾਮਹ

ਫਤਹਦੀ ਸ਼੍ਰੀ

ਸ਼੍ਰੀਮੁਖਬਾਕ

ਸੋਭਾਵਨ ਮੁਖਚਬਿਦ ਕ ਉਚਰਾਹੂਆ

ਪਾਤਿਸਾਹੀ ੧੦

ਪਾਤਿਸਾਹ ਦਸਵਾਂ ਸ਼੍ਰੀਕਲਗੀਧਰ ਕੁਰੁਗਬਿਦ

ਮਾਲੇ ਕਰਾਮਾਤੁ ਕਾਯਮ ਕਰੀਮਾ ॥੧॥

ਸ੍ਰੀਪੂਰਨੋ ਕਰਾਮਾਤੁ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਦੀ ਚਲਤਨਹੀ ਕ੍ਰਿਪਾਲੂ ॥੨॥

ਰਜਾ ਬਖਸ਼ੁ ਹਾਸਿਕ ਰਹਾ ਕੇਰਹੀਮਾ ॥੧॥

ਖਜੀਕੇ ਦੇਵੇਵਾਲਾ ਬਿਜਕਕੇ ਦੇਵੇਵਾਲਾ ਖਲਸੀ ਦੇਵੇਵੇਵਾਲਾ ਦਮਾ ਦੇਵੇਵੇਵਾਲਾ

ਅਮਾ ਬਖਸ਼ੁ ਬਖਸ਼ਿ ਦਓ ਦਸਤਗੀਰਾ ॥

ਧਰਮਕੇ ਦੇਵੇਵਾਲਾ ਅਤਸੇਕਰਕੇ ਦੇਵੇਵਾਲਾ ਚਿਹਾਬਕੇ ਪਕੜਨੇਵਾਲਾ

ਰਜਾ ਬਖਸ਼ੁ ਰੋਜੀ ਦਿਹੋ ਦਿਲਪਜੀਰਾ ॥੨॥

ਖਜੀਕੇ ਦੇਵੇਵਾਲਾ ਬਿਜਕਕੇ ਦੇਵੇਵਾਲਾ ਜੋਸਾ ਦਿਲਪਸੀ ਦੋਹੇਵੇ ॥

ਸ੍ਰਹਨ ਸ੍ਰਾਹ ਖੂਬੀ ਦਿਹੋ ਰਹਨ ਮੁੰ ॥

ਪਾਤਿਸਾਹੋ ਕਪਾਤਸਾਹ ਭੁਲਾ ਆਈਕੇ ਦੇਵੇਵਾਲਾ ਰਜਤ ਦਿਖਲਾਵੇਵਾਲਾ

ਕਿਯੋਗੀਨੁ ਬੋਚੂਨੁ ਚੁੰਬੇ ਨਮੁੰ ॥੩॥

ਜੇਹੀਗਾਥੀ ਰਹਤੋ ਚਿਹਨਬੀਰਹਤੋ ਬਿਨ ਨਮੁਨੇਬੀ ॥

ਨਸਾਜੋ ਨਬਾਜੋ ਨਫਉਜੋ ਨਫਰਸਾ॥
 ਨਸਾਜੋਹੋਵੈ ਨਬਾਜੋਹੋਵੈ ਨਫਉਜੋਹੋਵੈ ਨਗਲੀਰੋਹੋਵੈ॥
 ਖਦਾਵੰਦ ਬਖਸ਼ਿੰਦ ਹੋਐਸੁ ਅਰਸਾ॥ ੪॥
 ਜੇਹਾਹੋਵਾਹਿਗੁਰੂ ਤਉਸਨੂੰ ਬਖਸਦੇਵੇ ਬਾਦਸਾਹੀ ਦੇਵਲੋਕਦੀ॥
 ਜਹਾਂ ਪਾਕੁ ਜਬਰ ਅਸਤੁ ਜਹਿਰਿ ਜਹੂਰਾ॥
 ਦੁਨੀਅਸੇ ਪਵਿਤ੍ਰ ਅਤੇ ਰੂਹਾਹੋ ਪ੍ਰਸਿਧ ਪਸਾਰਾਹੋ ਉਸਦਾ
 ਅਤਾਮੇ ਇਹਦਹਮਚੁਹਾਜ਼ਰ ਹਜ਼ੂਰਾ॥ ੫॥
 ਦਤ ਇਦਾਹੋ ਮਨੀਦ ਪ੍ਰਗਟ ਸਾਖਿਆਤ ਕੀ॥
 ਅਤਾ ਬਖਸ਼ਿੰਦ ਪਾਕ ਪਰਵਰਦਿ ਗਾਰਾ॥
 ਦਤਕੇ ਦੇਵੇਵਾਲਾ ਅਤੇ ਪਵਿਤ੍ਰੇ ਪਾਲਦੇਵਾਲਾਹੋ॥
 ਰਹੀਮ ਅਸਤੁ ਰੋਜ਼ੀ ਦਿਹੋ ਹਰਿਦਿਆਰਾ॥ ੬॥
 ਦਮਾਦੇਕਰਦੇਵਾਲਾਹੋ ਅਤੇ ਰਿਜਕਦੇਵੇਵਾਲਾਹੋ ਸਭਨਾਦੇਸਨੂੰ
 ਕਿਸਾਹਿ ਬਿਯਾਰ ਅਸਤੁ ਅਜਮ ਅਜੀਮਾ॥
 ਜੇਅਲਿਕ ਦੇਸਾਦਾਹੋ ਵਡੇਸੇਵਰਾਹੋ॥
 ਕਿਹੁਸਨਲ ਜਮਾਲ ਅਸਤੁ ਹਾਜ਼ਰ ਰਹੀਮਾ॥ ੭॥
 ਜੇਰੂਪਹਾਹਿਗੁਰੂਦਾਸੀਦਾਹੋ ਅਤੇ ਰਿਜਕਦੇਵੇਵਾਲਾ ਦਮਾਦੇਕਰਦੇਵਾਲਾਹੋ
 ਕਿਸਾਹਿ ਬਿਸਰਿਰ ਅਸਤੁ ਅਜਿਜ ਨਿਵਾਜਾ॥
 ਮਾਲਕੁ ਬਿਦਾਹੋ ਅਤੇ ਗਰੀਬਨੂੰ ਪਾਲਦੇਵਾਲਾਹੋ॥
 ਗਰੀਬੁਲ ਪਰਸਤੋ ਗਨੀਮੁਲ ਗੁਦਾਜਾ॥ ੮॥
 ਗਰੀਬਨੂੰ ਪਾਲਦੇਵਾਲਾਹੋ ਅਤੇ ਦੁਸਟਾਂ ਦੇ ਗਲਦੇਵਾਲਾਹੋ॥
 ਸਰੀਅਤਿ ਪਰਸਤੋ ਫਜੀਲਤ ਮਆਬਾ॥
 ਧਰਮਦੇਪਾਲਦੇਵਾਲਾ ਵਹਿਅਈਦਾਪਰ
 ਹਕੀਕਤ ਸਨਾਜੋ ਨਬੀਉਲ ਕਿਤਾਬਾ॥ ੯॥
 ਹਾਹਿਗੁਰੂ ਹਕੀਕ ਦੇਸਨਦੇਵਾਲਾ ਨਬੀਹੋ ਕਿਤਾਬਕੇਬਣਾਵੇਵੇਵਾਲਾਹੋ
 ਕਿਦਾਨਸੁ ਪ੍ਰਮੋਹ ਅਸਤੁ ਸਾਹਿਬਿਸਰਿਰਾ॥
 ਜੇਬਖਸ਼ਿੰਦੇਵੇਵਾਲਾਹੋ ਅਤੇ ਮਲਿਕ ਬਖਸ਼ਦਾਹੋ॥

ਹਰੀਕ੍ਰਿਤਿ ਸਨਾਤਨ ਅਸਤੁ ਜਗਤਿ ਰਜਹੁਗ ॥ ੧੦ ॥
 ਹਰੀਕ੍ਰਿਤ ਕੇ ਪਛਾਨਣੇ ਵਾਲਾ ਹੈ ਪ੍ਰਸਿਧ ਹੈ ਸੰਸਾਰ ਮੇਂ ॥
 ਸਨਾਤਿ ਦੁਹੇ ਇਲੀਮ ਆਲਮ ਖੁਦਾਇ ॥
 ਪਛਾਨਣੇ ਵਾਲਾ ਹੈ ਇਹ ਮਾਏ ਅਤੇ ਇਹ ਜਾਨਣੇ ਵਾਲਾ ਹੈ ਦੁਨੀਆ ਦੀ ॥
 ਕੁਸਾਇ ਦੁਹੇ ਕਾਰਿ ਆਲਮ ਕੁਸਾਇ ॥ ੧੧ ॥
 ਖੋਲਣੇ ਵਾਲਾ ਕੀਮਤਾ ਅਤੇ ਦੁਨੀਆਂ ਦੇ ਖੋਲਣੇ ਵਾਲਾ ॥
 ਗੁਜਾਰਿ ਦੁਹੇ ਕਾਰਿ ਆਲਮ ਕਬੀਰਾ ॥
 ਤੇਰੇ ਵਾਲਾ ਹੈ ਕੀਮਤ ਦੁਨੀਆਂ ਵਰਗੇ ਅਤੇ ਆਪਣਾ ਭਾਏ ॥
 ਸਨਾਤਿ ਦੁਹੇ ਇਲੀਮ ਆਲਮ ਅਮੀਰ ॥ ੧੨ ॥
 ਪਛਾਨਣੇ ਵਾਲਾ ਹੈ ਇਹ ਦੁਨੀਆਂ ਦੀ ਅਤੇ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਦਾ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਹੈ ॥

ਦਾਸਤਾਨ

ਵਾਰਤਾ

ਮਰਾਮੇਤੁ ਬਾਰੇ ਬਰਈ ਕਸਮ ਨੇਸਤੁ ॥
 ਮੇਰੇ ਤਾਈਂ ਕੁਰਸਾ ਪ੍ਰਿਥ ਵਿਸਤਰੀ ਦ ਤੇਰੀ ਕੋ ਨਹੀਂ ॥
 ਕਿਉਂ ਜਦ ਗੁਵਾਹ ਅਸਤੁ ਯਜਦਾ ਯਕੇਸਤੁ ॥ ੧੩ ॥
 ਜੇਵਹੀ ਗੁਰੂ ਜਾਣਵਾ ਹੈ ਵਹਿਗੁਰੂ ਇਕੁ ਹੈ ॥
 ਨ ਕਤਰਹ ਮਰਾਮੇਤੁ ਬਾਰੇ ਬਰਸਤੁ ॥
 ਨਹੀਂ ਜਗਤੀ ਮੇਰੇ ਤਾਈਂ ਕੁਰਸਾ ਪ੍ਰਿਥ ਵਿਸਤਰੀ ॥
 ਕਿਉਂ ਪਸੀਰ ਦੀਵਾਨ ਹਮਰ ਕਿਜ ਬਰੀਸਤੁ ॥ ੧੪ ॥
 ਕਿਉਂ ਤੇਰੇ ਖਜਨਚੀ ਅਤੇ ਮੁਨਸ਼ੀ ਤਮਾਮ ਬੂਠ ਬੋਲਣ ਵਾਲੇ ॥
 ਕਸੇ ਕਉਲ ਕੁਰਾਮ ਕੁਨਵ ਮੇਰੇ ਬਾਰ ॥
 ਜੇਕੋਈ ਸੁਰੀਦ ਕੁਰਾਨ ਦੀ ਦਾ ਕਰੇ ਕੁਰਸਾ ॥
 ਹੁਮਾਂ ਰੋਜ਼ ਆਖਰ ਜਵਦ ਮਰਦ ਖੁਆਰ ॥ ੧੫ ॥
 ਉਸੀ ਦਿਨ ਸੇ ਅੰਤ ਤੇਰੀ ਹੋਵੇ ਆਦਮੀ ਖੁਆਰ ॥
 ਹੁਮਾਂ ਰਾਕਸੇ ਸਾਯਾਹ ਆਯਾਦ ਬਜੇਰਾ ॥
 ਹੁਮਾਂ ਪੰਛੀ ਕਸਿਸ ਆਦਮੀ ਉਪ ਪਕਵਾ ਆਵੇ ॥ - (ਅਰਥਾਤ) ਅਕਾਲ

ਮਰਾਮੇਤੁ ਬਾਰੇ ਬਰਈ ਕਸਮ ਨੇਸਤੁ ॥
 ਮੇਰੇ ਤਾਈਂ ਕੁਰਸਾ ਪ੍ਰਿਥ ਵਿਸਤਰੀ ਦ ਤੇਰੀ ਕੋ ਨਹੀਂ ॥
 ਕਿਉਂ ਜਦ ਗੁਵਾਹ ਅਸਤੁ ਯਜਦਾ ਯਕੇਸਤੁ ॥ ੧੩ ॥
 ਜੇਵਹੀ ਗੁਰੂ ਜਾਣਵਾ ਹੈ ਵਹਿਗੁਰੂ ਇਕੁ ਹੈ ॥
 ਨ ਕਤਰਹ ਮਰਾਮੇਤੁ ਬਾਰੇ ਬਰਸਤੁ ॥
 ਨਹੀਂ ਜਗਤੀ ਮੇਰੇ ਤਾਈਂ ਕੁਰਸਾ ਪ੍ਰਿਥ ਵਿਸਤਰੀ ॥
 ਕਿਉਂ ਪਸੀਰ ਦੀਵਾਨ ਹਮਰ ਕਿਜ ਬਰੀਸਤੁ ॥ ੧੪ ॥
 ਕਿਉਂ ਤੇਰੇ ਖਜਨਚੀ ਅਤੇ ਮੁਨਸ਼ੀ ਤਮਾਮ ਬੂਠ ਬੋਲਣ ਵਾਲੇ ॥
 ਕਸੇ ਕਉਲ ਕੁਰਾਮ ਕੁਨਵ ਮੇਰੇ ਬਾਰ ॥
 ਜੇਕੋਈ ਸੁਰੀਦ ਕੁਰਾਨ ਦੀ ਦਾ ਕਰੇ ਕੁਰਸਾ ॥
 ਹੁਮਾਂ ਰੋਜ਼ ਆਖਰ ਜਵਦ ਮਰਦ ਖੁਆਰ ॥ ੧੫ ॥
 ਉਸੀ ਦਿਨ ਸੇ ਅੰਤ ਤੇਰੀ ਹੋਵੇ ਆਦਮੀ ਖੁਆਰ ॥
 ਹੁਮਾਂ ਰਾਕਸੇ ਸਾਯਾਹ ਆਯਾਦ ਬਜੇਰਾ ॥
 ਹੁਮਾਂ ਪੰਛੀ ਕਸਿਸ ਆਦਮੀ ਉਪ ਪਕਵਾ ਆਵੇ ॥ - (ਅਰਥਾਤ) ਅਕਾਲ

੪ ਬਰੇ ਦਸਤ ਦਾਰਦ ਨ ਜਾਰੇ ਦਿਲੇਰਾ ॥੧੬॥
 ਉਪਰ ਉਸਦੇ ਹਥ ਨਹੀ ਰਖਦਾ ਹੈ ਕਾਂਝੇ ਦਲੇਰ ਹੋਵੇ ॥
 ਕਸੇ ਪਸਤ ਅਫਤਦ ਪਸੇ ਸੇਰ ਨਰਾ ॥
 ਜੋ ਕੋਈ ਆਸਰੇ ਆਵੇ ਪਿਛੇ ਸਿੰਘ ਨਰਦੇ ॥ (ਅਰਥਤ) ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਸਿੰਘ
 ਨਗੀਰਦ ਬੁਜੇ ਮੇਸੁ ਆਹੁ ਗੁਜਰਾ ॥੧੭॥ ਹੋ ਅਸੀਤਾਂ ਉਸ
 ਨਹੀ ਪਕੜ ਸਕਦਾ ਹੈ ਬਕਰੀ ਅਤੇ ਭੇਡ ਅਤੇ ਹਿਰਨ ਲਿਖ ਕੇ ॥ ਮੁਖ
 ਕਸਮ ਮੁਸਾਹਰੇ ਖੁਫੀ ਯਹ ਗਰਣੀ ਖੁਰਮਾ ॥
 ਸੁਰੰਦ ਕੁਰਨਦੀ ਛਿਪਕੇ ਜੇਕਰ ਮੇਖਾਵਾਂ ॥
 ਨਫ ਉਜੇ ਅਜੀਜੇ ਰਿਸਮ ਅਫਕਨਮਾ ॥੧੮॥
 ਨਾ ਆਪਣੀ ਫੌਜ ਸੇ ਇਸ ਸੇ ਹਿਰੋ ਪੈਰੇ ਦਾ ਸੁਮ ਅਕੇ ਸਿਟਦਾ ਮੇ ॥
 ਗੁਰਸਨਹ ਚਿਕਾਰੇ ਕੁਨੰਦ ਚਿਹਲ ਨਰਾ ॥
 ਰੁਖੇ ਕਿਆ ਕੰਮ ਕਰਵੇ ਰਲੀ ਸਿੰਘ
 ਕਿਦਹ ਲਕਬਰ ਆਯਦ ਬਰੇ ਬੇਖਬਰਾ ॥੧੯॥
 ਜੋ ਦਸ ਲਖ ਉਪਰ ਆਵੇ ਉਨਾਵੇ ਬੇਖਬਰ ਹੀ ॥
 ਕਪੇ ਅੰ ਸਿਕਨ ਬੇਦਰੰਗ ਆਮਦੀ ਦਾ ॥
 ਜੇ ਸੁਰੰਦ ਤੇਰੇ ਬਿਨਾ ਢਿਲਬੀ ਆਏ ॥
 ਮਿਯਾਂ ਤੇਰਾ ਤੀਰੇ ਤੁਫੰਗ ਆਮਦੀ ਦਾ ॥੨੦॥
 ਵਿਚ ਤਲਵਾਰ ਅਤੇ ਤੀਰ ਅਤੇ ਬੰਦੂਕਾ ਦੇ ਆਏ ॥
 ਬਲਾ ਚਾਰਗੀ ਦਰ ਮਿਯਾ ਆਮਦੀ ਮਾ ॥
 ਸਾਬਲ ਚਾਰੀ ਦੇ ਵਿਚ ਅਸੀ ਭੀ ਆਏ ॥
 ਬਤਦ ਬੀਰ ਤੀਰੇ ਤੁਫੰਗ ਆਮਦੀ ਮਾ ॥੨੧॥
 ਸਾਬਤ ਬੀਰ ਦੇ ਤੀਰ ਅਤੇ ਬੰਦੂਕ ਨਾਲ ਆਏ ਅਸੀ ॥
 ਦੁਕਾਰ ਅਜ ਹਮਰ ਹੀਲ ਤੇ ਦਰ ਗੁਜ ਸਤਾ ॥
 ਜਦੋ ਕੰਮ ਤਮਾਮ ਹੀਲਿਆ ਸੇ ਲਿਖਿਆ (ਅਰਥਤ) ਸੁਮ ਦਾ
 ਹਲਾਲ ਸਤ ਬਰਦਨ ਬਸਮ ਸੇਰ ਦਸਤਾ ॥੨੨॥
 ਦਰਸੁ ਹੈ ਲੇਜਾਣਾ ਉਪਰ ਤਲਵਾਰ ਕੇ ਹਾਥ ॥

ਚਿ ਕੁਸਮੇ ਕੁਰਾਂ ਮਨ ਕੁਨਮ ਅੰਤ ਬਾਰਾ॥ ੫੭॥
 ਕਿਆ ਸੋਹ ਕੁਰਾਨ ਵੀਦਾ ਕੁਰਾਂ ਮੇ ਭਰੇਸਾ॥
 ਵਗਾਰਨਹ ਤੁਗਈ ਮਨ ਵੀ ਰਹਿ ਚਿਕਾਰਾ॥ ੫੮॥
 ਅਤੇ ਜੇਕਰ ਨਹੀ ਭਾਂਤੁ ਕੁਰਖਾਂ ਮੇਰਾ ਇਜਰਾਹ ਵਿਚ ਕੀ ਕੀਮਤੀ॥
 ਨਵਾਨ ਮ ਕਿਈ ਮਰਦ ਰੋਬਾਹੀ ਪੇਚਾ॥
 ਨਹੀ ਜਾਣਦਾ ਮੇ ਜੇਏਹੁ ਆਦਮੀ ਬੁਝੜੀ ਜੇਹੇਦਾ ਓਧਤ ਲਾਉਦੇ॥
 ਮਗਰ ਹਰਿਗਿਜ਼ਈ ਰਹ ਨਿਯਾਰਦ ਬਹੋਚਾ॥ ੫੯॥
 ਜੇਕਰ ਮੇ ਜਾਣਦਾ ਕਈ ਤੇਰੇਦਾਉ ਵਿਚ ਨ ਆਉਦਾ॥
 ਹਰਾਂ ਕੁਸਮ ਕੀ ਕਉਲੇ ਕੁਰਾਂ ਆਪਦਾਸਾ॥
 ਜੇ ਆਦਮੀ ਬਚਨ ਕੁਰਾਂ ਨਦੇ ਨਾਲ ਆਵੇ॥
 ਨਜੇ ਬਸਤੁ ਨ ਕੁਸਤੁ ਨ ਬਾਯਦਾਸਾ॥ ੬੦॥
 ਨ ਉਸਨੂੰ ਬੰਨਣਾ ਅਤੇ ਨ ਉਸਨੂੰ ਮਾਰਨਾ ਚਾਹੀਏ॥
 ਬਰੀਰੇ ਮਗਸ ਸਿਆਹ ਪੇਸ਼ ਆਮਦੀਦਾ॥
 ਸਾਬਰੀਗ ਮਖੀਆਂ ਦੇ ਕਾਲੇ ਕਪੜੇ ਪਹਨ ਕੇ ਆਈ ਤੇਰੀ ਫੌਜ॥
 ਬਯਕ ਬਾਰਗੀ ਵਰ ਬਰੇ ਸੁਆਮੀਦੀਦਾ॥ ੬੧॥
 ਜਾਬ ਇਕੇ ਬਾਰਗੀ ਵਿਚ ਸੋਰ ਦੇ ਆਈ॥
 ਹਰਾਂ ਕੁਸਮ ਜਿ ਦੇਵਾਰ ਆਮਦ ਬਰੀ॥
 ਜੇ ਆਦਮੀ ਕੰਧਸੇ ਆਇਆ ਬਾਹਰੀ॥
 ਬਖੁਰਦਨ ਘਰੇ ਤੀਰ ਸੁਦ ਗਰਕਿ ਖੀ॥ ੬੨॥
 ਜਾਬ ਖਾਏ ਇਕ ਤੀਰ ਕੇ ਹੋਇਆ ਬੁਝਾ ਹੋਯਾ ਲਹੂ ਵਿਚ॥
 ਕਿ ਬੇਰੁੰ ਨਿਯਾਮਦ ਕਸੇ ਜੇ ਦਿਵਾਰ॥
 ਜੇ ਬਾਹਰ ਨ ਆਇਆ ਆਦਮੀ ਕੰਧਸੇ॥
 ਨਖੁਰਦੀਦ ਤੀਰੇ ਨਗ ਸੁਤੰਦ ਖੁਆਰਾ॥ ੬੩॥
 ਨਖਾਵਾ ਤੀਰ ਅਤੇ ਨ ਹੋਇਆ ਖੁਆਰਾ॥
 ਚੁਣੀਦਮ ਕਿਨਾਹਰ ਬਿਯਾਮਦ ਬਜੀਗਾ॥
 ਜਦ ਛਿਹਮ ਨੇ ਜੇ ਨਹਰ ਖਨ ਤੁਰਕ ਆਇਆ ਵਿਚ ਜੀਗਦੇ॥

੬ ਰਜੀਦਨ ਘਰੇ ਤੀਰ ਤਨ ਬੇਦਰੰਗਾ ॥ ੩੮ ॥
 ੫ ਰਖਣੇ ਇਕ ਤੀਰ ਕੇ ਸੇ ਸਰੀਰ ਤੇ ਕੇ ਖਬਰ ਹੋਇਆ ॥
 ਹਮ ਅਖਰ ਗੁਰੇ ਜੀਵ ਬਜਾਏ ਮੁਸਾਫਰ ॥
 ਭੀਰਿ ਕਰੁ ਭੁਜੇ ਤੇਰੇ ਸਦਾ ਰਜਾਗਾ ਚੁਪਕੀ ਜੇੜੇ ਨਾਹ ਰਖ ਦੇ ਸਾਬੀਏ
 ਬਸੇ ਖਾਨ ਹ ਖਰਦੀਵ ਬੇਰੁੰ ਗਜਾਫ ॥ ੩੯ ॥
 ਬਹੁਤ ਖਾਣੇ ਵਾਲੇ ਅਤੇ ਬਾਹਰ ਗਘਾ ਮਾਰਨੇ ਵਾਲੇ ਸੇ
 ਕਿ ਅਫਗਾਨ ਦੀ ਗਾਰ ਬਿਯਾਮਦ ਬਜੀਗਾ ॥
 ਜੇ ਪਠਾਣ ਦੂਸਰਾ ਆਇਆ ਇਕ ਜੀਗਦੇ ॥
 ਚਸੇ ਲੇ ਦਵਾ ਹਮ ਚੁਤੀਰੇ ਤੁਫੰਗਾ ॥ ੪੦ ॥
 ਜੇ ਸੇ ਹੜਪ ਹੜਦਾ ਜੇ ਸੇ ਕਮਾਫ ਜੇ ਤੀਰ ਜੇ ਸੇ ਕੇਵਲ ਸੇ ਗੋਲੀ ਆਵਤੀ ॥
 ਬਸੇ ਹਮਲਾਹ ਕਰਦੀਵ ਬਮਰਦਾ ਨਹੀ ॥
 ਬਹੁਤ ਹਲੇ ਕੀਏ ਸਾਬ ਸੁਰਮ ਤਕੇ
 ਹਮ ਅਜ ਹੋਸਗੀ ਹਮ ਜਿ ਦੇਵਾਨਗੀ ॥ ੪੧ ॥
 ਭੀ ਅਕਲ ਸੇ ਭੀ ਦੇਵਾਨਗੀ ਨਾਲਾ ॥
 ਬਸੇ ਹਮਲਾਹ ਕਰਦਾਹ ਬਸੇ ਜੁਖਮ ਖਰਦਾ ॥
 ਬਹੁਤ ਹਲੇ ਕੀਤੇ ਬਹੁਤ ਸਟਾਂ ਪਾਵੀਆ ॥
 ਦਕਸਰਾ ਬਜਾ ਕੁਸਤ ਜਾਂ ਹਮ ਜਾਪੁਰਦਾ ॥ ੪੨ ॥
 ਜੇ ਆਦਮੀ ਆਏ ਤਾਂ ਟੀ ਉਸ ਜਗਾਂ ਮਾਇਰੀ ਗਾਇਆ ॥
 ਕਿ ਆਂ ਖੁਜਹ ਮਰਦੂਦ ਜਾਗਹ ਦਿਵਾਰ ॥
 ਜੇ ਆ ਖੁਜਹ ਕਾਇਰ ਪਿਛੇ ਕੀਧੇ ॥
 ਬਸੇ ਦਾ ਨਿਯਾਮਦ ਬਮਰਦਾਨ ਹਵਾਰਾ ॥ ੪੩ ॥
 ਬੀਚ ਮੇਦਲ ਕੇ ਨਾਮਾ ਸੁਫੀਆਂ ਦੀ ਤਰਹ ॥
 ਦਰੇਗਾ ਅਗਾਰ ਕੇ ਉਠੇ ਦੀਵ ਮੇ ॥
 ਅਫਸੋਸ ਜੇਕਰ ਮੂੰਹ ਉਸਦਾ ਦੇਖਦੇ ਹਮ ॥
 ਬਯਕ ਤੀਰ ਲਾਚਾਰ ਬਖਸ਼ੀ ਦਮੋ ॥ ੪੪ ॥
 ਇਕ ਤੀਰ ਜਵੂਰ ਉਸਕੇ ਵਿਚੇ ਹਮ-

੦੧
 ਦੇਸੀ ਬਜ
 ਦੇ ਮਾਰੇ ਗ
 ਏ ॥

ਹਮ ਆਖਰ ਬਸੇ ਜਖਮ ਤੀਰੇ ਤੁਠੇਗਾ॥
 ਤੀਰੇ ਤੁਠੇਗਾ ਨੂੰ ਬਹੁਤ ਜਖਮ ਤੀਰੇ ਅਰੁ ਬੰਦੁਕ ਦੇਸੇ॥
 ਦਸੁਦੇ ਬਸੇ ਕੁਸਤੁਹ ਸੁਦ ਬੇਦਰੇਗਾ॥ ੩੬॥
 ਦੇਨੇ ਹੀ ਤੁਠੇ ਬਹੁਤ ਮਾਰੇ ਗਏ ਛੇਤੀ ਨਾਲ
 ਬਸੇ ਬਾਨ ਬਰੀਦ ਤੀਰੇ ਤੁਠੇਗਾ॥
 ਬਹੁਤ ਬਾਨ ਵੀ ਬਰਖਾ ਹੋਈ ਅਤੇ ਤੀਰੇ ਦੀ ਤੇ ਬੰਦੂਕਾਂ ਦੀ
 ਜਿਸੀ ਗਸਤੁਹ ਮਾਰੇ ਗਏ ਲਾਲ ਹਰੇਗਾ॥ ੩੭॥
 ਧਰਤੀ ਹੋਈ ਅੰਧੀ ਜੋ ਜੀ ਫੁਲ ਲਏ ਦਰੀ ਗਹੁ ਦਾ ਹੋ॥
 ਜਰੇ ਪਾਇ ਅੰਧੇ ਹੁੰਦੇ ਸੁਦਹਾ॥
 ਸਿਰ ਅਤੇ ਪੈਰਾਂ ਦੇ ਹੋਇ ਤੁਨ ਹੋਗਿਆ
 ਕਿ ਮੇਰੇ ਪੁਰ ਅਜਰਾਇ ਚੰਗਾ ਸੁਦਹਾ॥ ੩੮॥
 ਜੇ ਮੇਰੇ ਤੁਰਿਆ ਹੋਇਆ ਖੁਦੇ ਅਤੇ ਖੰਡੀਆ ਦਾ ਹੋਇਆ॥
 ਤਰੀਕਾਰ ਤੀਰੇ ਤਰੀਕੇ ਕਮਾਂ॥
 ਕੜਾਕੇ ਤੀਰੇ ਦੇ ਹੋਏ ਅਤੇ ਤੜਾਕੇ ਕਮਾਣੇ ਦੇ ਹੋਏ
 ਬਰਾਮਦ ਯਕੇ ਹਾਇ ਹੁਮਜ ਜਹਾਂ॥ ੩੯॥
 ਬਾਹਰਿਆਈ ਇਕ ਹੋਇ ਹੁ ਜਹਾਨ ਸੇ॥
 ਦਿਗਰ ਸੋਰਿਸੇ ਕੈ ਬਰੇ ਕੀਨ ਹੋਕੇ ਸਾ॥
 ਦਸਰਾ ਸੋਰ ਤੀਰੇ ਦੁਸਮਨੀ ਕਰਕੇ ਵਾਲਿਆ॥ ਤੀਰੇ
 ਜਿ ਮਰਦਾਨ ਹਮਰਦਾਂ ਬਰੀਕਤੁ ਹੋਸਾ॥ ੪੦॥
 ਸੁਰਮਿਆਂ ਮਰਦਾਂ ਦੇ ਬਾਹਰਿ ਗਏ ਹੋਸਾ॥
 ਹਮ ਆਖਰ ਚਿ ਮਰਦੀ ਕੁਨ ਦਕਾਰ ਜਾਰਾ॥
 ਤੀਰੇ ਤੁਠੇ ਸਿਧ ਕਿਆ ਸੁਰਮਤ ਕਰਨ ਮੇਰੇ ਜੀਰਾ ਦਿਰਾ॥
 ਕਿ ਬਰਾਚਿ ਹਲ ਤੁਨ ਆਯਾ ਦਸ ਬੇਸੁਮਾਰਾ॥ ੪੧॥
 ਜੇ ਪੁਰ ਚਾਲੀ ਸਿਧਾ ਦੇ ਆਏ ਬਹੁਤ ਬੇਚਿਤ ਕਰਾਏ ਫੌਜ
 ਚਿਰਾਗੇ ਜਹਾਂ ਨੇ ਸੁਦਹਾ ਬੁਰਕਾ ਪਸਾ॥
 ਦੀਵਾ ਜਹਾਂ ਦੇ ਹੋਇਆ ਬੁਰਕਾ ਪੈਨਣੇ ਵਾਲਾ॥ ਸੁਰਜ

੮
 ਸਬੇ ਸਹ ਬਰ ਅਮਦ ਬਹਮ ਚਿਲਵਹ ਜੇਸਾ ॥ ੪੨ ॥
 ਰਾਵਾ ਬਾਦਸਾਹ ਅਯਾ ਸਬਤਾਮ ਜੋਏ ॥
 ਹਰਾਂ ਕਸ ਕਿ ਕਉਲੇ ਕੁਰਾਂ ਆਯਦਸਾ ॥
 ਜੋ ਕਈ ਪਰਸ ਭਰਿੰਦ ਕੁਰਾਂ ਦੀ ਨਾਭ ਆਵੇ ॥
 ਕਿ ਯਜਦਾ ਬਰ ਓ ਰਹਿਨੁ ਮਾ ਆਯਦਸਾ ॥ ੪੩ ॥
 ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਅਗੇ ਉਸਦੇ ਰਸਤਾ ਦਿਖਾ ਲਵਾ ਓਹਾ ਹੋ ॥
 ਨਪੋਚੀ ਦਮੁ ਦੇ ਨਰੀ ਜੀ ਦ ਤੁਨਾ ॥
 ਨਵੇਗਾ ਹੋ ਆਵਾ ਲਸਾ ਰਾ ਅਤੇ ਨ ਦੁਖ ਹੋ ਆ ਸਾਰੇ ਸਰੀਰ ਨੂੰ ॥
 ਕਿ ਬੋਰੁ ਪੁਦਾ ਆਵਰਦ ਦੁਸਮਨ ਸਿਰੀਨਾ ॥ ੪੪ ॥
 ਜੋ ਬਾਹਰੇ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਸਾਨੂੰ ਲੈ ਆਯਾ ਦੁਸਟਾਨ ਤੋੜ ਕੇ ॥
 ਨਵਾਨ ਮ ਕਿ ਈ ਮਰਦ ਪੇਸਾ ਸਿਰੀਨਾ ॥
 ਨਹੀ ਜਾਣਦਾ ਸੀ ਮੇਰੇ ਹੋ ਆਦਾਮੀ ਬਚਨ ਤੋੜਨ ਵਾਲਾ ਹੋ ॥
 ਕਿ ਦਓਲਤ ਪਰਸਤੁ ਅਸਤੁ ਈਸਾ ਫਿਰੀਨਾ ॥ ੪੫ ॥
 (੩੦੦੦) ਜੋ ਤੁੰਧਨ ਦਾ ਇਕ ਠਾਕਰ ਨੇ ਵਾਲਾ ਹੋ ਤੇ ਧਮਾਕਾ ਸਿਟਕਾਵਾ
 ਨਈਸਾ ਪਰਸਤੀ ਨਾ ਅਉਜਾਇ ਦੀਨਾ ॥
 (੩੦੦੦) ਤੁੰਧਨ ਦੀ ਪਾਲਵ ਕਰਵੇ ਵਾਲਾ ਹੋ ਨ ਤੂੰ ਦੀਨ ਵਾਰੇ ॥
 ਨ ਸਾਹਿਬ ਸਨਾ ਜੀਨ ਮਹਮਦ ਅਕੀਨਾ ॥ ੪੬ ॥
 (੩੦੦੦) ਤੂੰ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਤੂੰ ਪਛਾਣਦਾ ਹੋ ਨ ਤੇਰੀ ਮਹਿਮਦ ਪਰਪਤੀ ਤੇ
 ਹਰਾਂ ਕਸ ਕਿ ਈਸਾ ਪਰਸਤੀ ਕੁਨ ਦਾ ॥
 (੩੦੦੦) ਜੋ ਪਰਸ ਧਰਮ ਦੀ ਪੂਜਾ ਕਰਦਾ ਹੋ
 ਨਪੇਸਾ ਪੁਦਸ ਪੇਸ ਪਸਤੀ ਕੁਨ ਦਾ ॥ ੪੭ ॥
 ਨਹੀ ਬਚਨ ਆਪਣੇ ਨੂੰ ਅਗੇ ਪਛੇ ਕਰਦਾ ਹੋ ॥
 ਕਿ ਈ ਮਰਦ ਰਾ ਜਰਹੁ ਅੰਤ ਬਾਰ ਨੇਸਤੁ ॥
 ਜੋ ਇਸ ਮਰਦ ਦਾ ਜਰਾਭੀ ਭਰੇ ਜਾਨੀ ਹੋ ॥
 ਚਿਕਸ ਮੇ ਕੁਰਾਨ ਅਸਤੁ ਯਜਦਾ ਅਕੇਸਤੁ ॥ ੪੮ ॥
 ਕਿ ਆਸਰੀ ਧ ਕੁਰਾਨ ਦੀ ਹੋ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਇਕ ਹੋ ॥

ਤੇ ਬਾਪ ਤੂੰ ਅਤੇ ਭਾ
 ਈ ਆਨੂੰ ਮਰਿਆ
 ਤੇ ਹਿਦਾ ਅਨੂੰ ਮੁ
 ਸਭ ਮਨ ਕੀ
 ਤਾ ਹੋ ॥

ਚੁਕਸਮੇਕੁਰਾਂਸਦ ਕੁਨਦ ਇਖਤਿਆਰੁ॥
ਇਕ ਕਿਆ ਸੁਗੰਧ ਕੁਰਨਦੀ ਚੋਜੇਕਰ ਤੂੰ ਸੁਸਰੀਦ ਤੀਕਰੇ॥
ਮਰਾ ਕਤਰਹ ਨਿਲਾਫਦਾ ਮਜੇ ਮੇਤੁ ਬਾਰ॥੪੯॥
ਹਮਾਰੇ ਤਾਈ ਬੋਲਾਭੀ ਨਹੀ ਆਉਦਾ ਉਸਉਪਰ ਛੋਕੇਸਾ॥
ਅਗਰ ਚੇਤਰਾ ਮੇਤੁ ਬਾਰ ਆਮਦੇ॥
ਜੇਕਰ ਤੇਰੇ ਤਾਈ ਭਰੋਸਾ ਹੋਜਾਵਾ (ਅ:) ਤੂੰ ਤਾ ਫਰੋਬੀ ਹੈ॥
ਕਮਰ ਬਸਤੁ ਤੇ ਪੀਸਵਾ ਆਮਦੇ॥੫੦॥
ਕਮਰ ਬੰਨਕੇ ਤੂੰ ਅਗੇ ਸਾਡੇ ਆਜਾਵਾ (ਅ:) ਜੇ ਤੇਰੇ ਦਿਲ ਵਿਚ ਦਗਾ
ਕਿਫਰ ਜਸਤੁ ਬਰ ਜਰ ਤੁਰਾਂ ਈ ਸੁਖਨਾ॥੫੧॥
(ਅ:) ਜੇ ਤੁਰਾਂ ਪੈ ਉਪਰ ਸਿਰ ਤੇਰੇ ਦੇ ਇਸ ਬਾਤ ਦਾ ਜੋ ਤੇ ਸੁਰੀਦ ਕੀਤੀ ਹੈ॥
ਕਿ ਕਉਲੇ ਖੁਦਾ ਅਸਤੁ ਵਕਸਮ ਅਸਤੁ ਮਨਾ॥੫੨॥
ਕਿਸਵਾਸ ਤੇ ਜੇ ਕੁਰਨਦੀ ਹੋ ਅਤੇ ਸੁਰੀਦ ਹੈ ਮੇਰੀ ਕੀਤੀ ਫੋ ਤੂੰ ਨੇ॥
ਅਗਰ ਹਜਰ ਤੇ ਖੁਦ ਸਿਤਾਦਾ ਸੁਦਦਾ॥
(ਅ:) ਜੇਕਰ ਤੁਸਾਡਾ ਮਹਿਮਾਵਾ ਅਪਖਰਾ ਹੋਵੇ (ਅ:) ਜੀਉਦਾ ਹੋਵੇ॥
ਬਜੋਨੇ ਦਿਲੇ ਕਾਰਵਾਜ਼ਾ ਸੁਦਦਾ॥੫੩॥
ਸਾਬ ਜਨ ਅਤੇ ਦਿਲ ਦੇ ਕੀਮਤ ਪਗਰ ਹੋਵੇ॥
ਸੁਮਾਰਾ ਚ ਫਰਜ ਅਸਤੁ ਕਾਰੇ ਕੁਨੀ॥
ਤੇਰੇ ਤਾਈ ਜੋ ਦ ਭਾਰ ਪੈ ਜੋ ਏਹ ਕੀਮ ਜਰੂਰ ਕਰੇ ਤੂੰ॥
ਬਖੁਜ ਬਨਾਇ ਸਤੁਹ ਸੁਮਾਰੇ ਕੁਨੀ॥੫੪॥
ਮੁਜੋਬ ਲਿਖੇ ਹੋਏ ਦਰਗਾਹ ਦੇ ਤੂੰ ਕੀਮ ਕਰੇ॥
ਨਵਿਸਤੁਹ ਰਸੀਦੇ ਬਗੁਫਤੁਹ ਜੁਬਾ॥
ਦਰਗਾਹ ਦਾ ਲਿਖਿਆ ਹੋਇਆ ਭੀ ਅਨ ਪਹੁਚਾ ਅਤੇ ਜੁਬਾਨੀ ਭੀ ਕਰਾਏ॥
ਬਿਬਾਯਦ ਕਿ ਕਾਰਈ ਬਾਰਾਹਤ ਰਜਾ॥੫੫॥
ਹਮੀਦਾ ਪੈ ਤੇਰੇ ਤਾਈ ਜੋ ਇਸ ਕੀਮਤੀ ਸਾਬਖਸੀ ਦੇ ਪੁਰ ਕਰਾ॥
ਹਮੀ ਮਰਦ ਬਾਯਦ ਸੁਦਦ ਸੁਖਨ ਦਰਾ॥
ਮੇਸਾ ਅਦਮੀ ਰਾਹੀਦਾ ਪੈ ਜੋ ਹੋਵੇ ਸੁਖਨ ਦੇ ਪੁਰ ਕਰਨੇ ਵਾਲਾ॥

ਨਸਿਕਮੇ ਦਿਗਰ ਦਰ ਦਹਨੇ ਦਿਗਰ॥੫੫॥

ਮੇਸਾਨਹੀ ਜੇ ਦਿਲ ਵਿਚ ਹੋਰ ਅਤੇ ਵਿਚ ਮੂੰਹ ਦੇ ਹੋਰ

ਕਿ ਕਾਜੀ ਮਰਾ ਗੁਫਤਰ ਬੇਰੂ ਨਿਯਮ॥

ਜੇ ਮਾਮਦਨੇ ਮੇਰੇ ਤਾਈ ਕਿਹਾ ਹੈ ਬਾਹਰ ਨਹੀ ਹਾਮੇ ਤੇਰੇ ਕਹੇ ਬੋ॥

ਅਗਰ ਰਾਸਤੀ ਖੁਦ ਬਿਯਾਰੀ ਕਦਮ॥੫੬॥

ਜੇ ਕਰਤੂ ਸਚਾ ਹੈ ਆਪ ਲਿਆਉ ਕਦਮ॥

ਤੁਰਾ ਗਰਬੁ ਬਾਯਦ ਬਕ ਉਲੇ ਕੁਰਾਂ॥

ਤੇਰੇ ਤਾਂਈ ਜੇ ਕਰ ਚਾਹੀਏ ਸੁਰੀਧ ਕੁਰਨ ਦੀ

ਬਨਿਜਦੇ ਸੁਮਾਰਾ ਰਸਾਨ ਮੁਹਮਾਂ॥੫੭॥

ਪਾਸ ਤੇਰੇ ਭੇਜਾਂ ਮੇ ਓਹੀ ਸੁਰੀਦ -

ਕਿ ਤੁਸਰੀਫ ਦਰ ਕਸਬ ਹ ਕਾਂਗੜ ਕੁਨਦਾ॥

ਜੇ ਤੂੰ ਆਵਣਾ ਵਿਚ ਗਾਉ ਧਉੜੇ ਕਾਂਗੜ ਦੇ ਕਰੋ (ਹੋ ਅੰਬੀਗੇ)

ਵਜਾਂ ਪਸੁ ਮੁਲਾਕਾਤ ਬਾਹਮ ਸੁਣਦਾ॥੫੮॥

ਉਸਥੀ ਪਿਛੇ ਮੁਲਾਕਾਤ ਆਪਸ ਵਿਚ ਤੇਰੀ ਸਾਡੀ ਹੋਵੇਗੀ॥

ਨਜਰ ਹ ਦਰ ਈ ਰਾਹਿ ਖਤਰ ਹ ਤੁਰਾਸਤਾ॥

ਜਰਾ ਨਹੀ ਪੈ ਵਿਚ ਇਸ ਰਸਤੇ ਦੇ ਡਰ ਤੇਰੇ ਤਾਈ॥

ਹਮ ਹ ਕੇ ਮ ਬੇਰਾੜ ਹੁਕਮੇ ਮਰਾਸਤਾ॥੫੯॥

ਤਮਾ ਮਕੇ ਮ ਬੇਰਾੜਾਂ ਦੀ ਸਾਡੇ ਹੁਕਮ ਵਿਚ ਹੈ॥

ਬਿਨਾਤਾ ਬਮਨ ਖੁਦ ਜੁਬਾਨੀ ਕੁਨੇਮਾ॥

(ਹੋ ਅੰਬੀਗੇ) ਆਉਤੁ ਤਾਂ ਅਸੀ ਸਾਮਣੇ ਗਲ ਕਰੀਏ॥

ਬਰੇਏ ਸੁਮਾਂ ਮਹਰਬਾਨੀ ਕੁਨੇਮਾ॥੬੦॥

ਉਤੇ ਮਹਿ ਤੇਰੇ ਦੇ ਮਹਰਬਾਨੀ ਕਰੀਏ ਅਸੀ॥

ਯਕੋ ਅਸਪ ਜਾਇ ਸਤੁ ਵੇਲਾ ਕਹ ਜਾਰਾ॥

ਸੁੰਦਰ ਘੋੜੇ ਲਾਇਕ ਇਕ ਹਜਰ ਦੇ ਨਾਲ ਤੂੰ ਹੋਏ॥

ਬਿਨਾਤਾ ਬਰੀਰੀ ਬਮਨ ਈ ਦਿਯਾਰਾ॥੬੧॥

ਆਉਤੁ ਤਾਂ ਤੂੰ ਲੇਸਾਬੀ ਏਹ ਕਲਾਇਤ ਬੇਰਾੜਾਂ ਦੀ॥

ਸਹਨ ਸਾਹਿਰਾ ਬੰਦੇ ਰਾਕਰੇਮਾ॥
 ਬਾਦਸਾਹੋਕਾ ਬਾਦਸਾਹ ਤਿਸਦੇ ਨੌਕਰਾਂ ਦੇ ਨੌਕਰ ਤੈਅਸੀ॥
 ਅਗਰ ਹੁਕਮ ਆਯਾਦ ਬਜਾ ਹਾਜ਼ਰੇਮਾ॥ ੬੩॥
 ਜੇਕਰ ਫਾਹਿਗੁਰ ਦਾ ਹੁਕਮ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਮੇਸਾਬ ਜਾਨਦੇ ਹਾਜ਼ਰ ਹੋਵਾਂ
 ਅਗਰ ਚਿਬਿਯਾਮਦ ਬਫਰਮਾਨ ਮਾਨਾ॥
 ਜੇਕਰ ਆਵੇ ਆਗਮਾਦਾ ਹੁਕਮ ਮੇਰੇ ਤਾਈ
 ਹਜ਼ਰਤ ਬਿਯਾਯਮ ਹਮ ਹਜ਼ਰਤ ਤਨੂ॥ ੬੩॥
 ਪਾਸ ਤੇਰੇ ਆਵਾਮੇ ਤਮਾਮ ਜਾਨ ਅਤੇ ਤਨਦੇ
 ਅਗਰ ਤੇ ਬਯਾਜਦਾਂ ਪਰਸਤੀ ਕੁਨੀ॥
 ਜੇਕਰ ਤੂੰ ਫਾਹਿਗੁਰ ਦੀ ਪੂਜਾ ਕਰੇ॥
 ਬਕਾਰੇ ਮਰਾ ਈ ਨ ਸੁਸਤੀ ਕੁਨੀ॥ ੬੪॥
 ਵੇਰ ਕੰਮ ਇਸ ਹਮਾਰੇ ਦੇ ਸੁਸਤੀ ਨਾ ਕਰੇ॥
 ਬੁਥਾਯਦ ਕਿ ਪਾਜ਼ਦਾ ਸੁਨਾਸੀ ਕੁਨੀ॥
 ਚਾਹੀਦਾ ਹੋ ਤੇਰੇ ਤਾਂ ਈ ਜੇਤੂੰ ਫਾਹਿਗੁਰ ਨੂੰ ਪਛਾਣੇ॥
 ਨਗੁਫਤੁਹ ਕਸਾਂ ਕਸ ਖਰਾਸੀ ਕੁਨੀ॥ ੬੫॥
 ਨਹੀਂ ਕਹਾਏ ਜੇਤੂੰ ਕਿਸੀਨੂੰ ਛਿਲਦਾ ਕਰੇ॥
 ਤਮਾਸਨਦ ਨਸੀ ਸਰਵਰੇ ਕਾਯਨਾਤਾ॥
 ਤੂੰ ਗਦੀ ਬੈਠਦੇ ਵਾਲਾ ਸੁਦਾਰੀ ਦੁਨੀਆ ਦਾ ਹੋ॥
 ਕਿ ਅਜਬ ਅਸਤੁ ਇਨਸਾਫ ਈ ਹਮ ਸਫਾਤਾ॥ ੬੬॥
 ਜੇ ਅਸਚਰਜ ਹੋ ਇਸ ਅਦਾਲਤ ਤੋਂ ਭੀ ਇਸ ਵਾਕਿਆਈ ਨੂੰ॥
 ਕਿ ਅਜਬ ਅਸਤੁ ਇਨਸਾਫ ਦੀ ਪਰਵਰੀ॥
 ਜੇ ਅਸਚਰਜ ਹੋ ਅਦਾਲਤ ਧਰਮ ਪਾਲਦੇ ਨੀ॥
 ਕਿ ਹੋਫ ਅਸਤੁ ਸਦ ਪੈਫ ਈ ਸਰਵਰੀ॥ ੬੭॥
 ਜੇ ਅਸਚਰਜ ਹੋ ਸੋਫੇਰੀ ਅਰਸੇਸ ਹੋ ਤੇਰੀ ਇਸ ਸੁਦਾਰੀ ਪਰ
 ਕਿ ਅਜਬ ਅਸਤੁ ਅਜਬ ਅਸਤੁ ਫਰਵਰ ਸੁਮਾਂ॥
 ਜੇ ਅਸਚਰਜ ਹੋ ਅਸਚਰਜ ਹੋ ਹੁਕਮ ਸੁਰ ਤੁਸਤੀ ਪਰ॥

ਬਜੁਜੁ ਰਾਸਤੀ ਸੁਖਨ ਗੁਫਤੁਨ ਜਿਯਾਂ ॥੬੮॥

ਸਿਫੁ ਸਚਬੀ ਬਾਤ ਕਰਣੀ ਘਾਟਾਹੈ ॥

ਮਜਨ ਤੇਗ ਬਰਖੂਨਿ ਕਸਬੇ ਦਰੇਗਾ ॥

ਮਤਮਾਰ ਤਲਵਾਰ ਉਪਰ ਖੂਨ ਕਿਸੇਦੀ ਬਿਨ ਸੋਚੇਬੀ ॥

ਤੁਰਾ ਨੀਜ ਖੂਨ ਅਸਤੁ ਬਾਚਰਖ ਤੇਗਾ ॥੬੯॥

ਤੇਰਾਤਾਈ ਭੀਖੂਨ ਹੈ ਸਾਬ ਗੋਬਦੀ ਤਲਵਾਰਦੇ ॥

ਤੁ ਗਾਫਲ ਮਸੂਉ ਮਰਦ ਘਜ਼ਵਾਂ ਹਿਰਾਸਾ ॥

ਤੁ ਭੁਲਨਾ ਮਰਦ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਨੂੰ ਤੇ ਡਰਾ ॥

ਕਿਓ ਬੇ ਨਿਆਜ ਅਸਤੁ ਓ ਬੇ ਸੁਪਾਸਾ ॥੭੦॥

ਕਿਉਜੇ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਵਡੀਨਹੀਲੇ ਫਟਾਲਾ ਵਡਿਆਈ ਖੁਸਾਮਦੀ ਸੋਭੀ ਬਿਨਾਹੈ ॥

ਕਿਓ ਬੇ ਮੁਹਾਬਸਤੁ ਸਾਹਨ ਸਾਹਾ ॥

ਜੇ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਕਿਸੀਬੀ ਡਰਦਾ ਨਹੀਹੈ ਸਚਾ ਪਾਤਿਸਾਹਾਂਦਾ ਪਾਤਿਸਾਹਹੈ ॥

ਜਿਮੀਨੇ ਜਮਾਂ ਸਚਏ ਪਾਤਿਸਾਹਾ ॥੭੧॥

ਪ੍ਰਿਥਵੀਦਾ ਅਤੇ ਅਕਾਸਕਾ ਸਚਾ ਪਾਤਿਸਾਹ ਹੈ ॥

ਖੁਦਾਵੰਦ ਏਜ਼ਦੁ ਜਿਮੀਨੇ ਜਮਾਨਾ ॥

ਖਵੰਦ ਇਕੁਹੈ ਪ੍ਰਿਥਵੀ ਅਤੇ ਅਕਾਸਦਾ ॥

ਕੁਨਿੰਦ ਅਸਤੁ ਹਰ ਕਸਮ ਕੀਨੇ ਮਕਾਨਾ ॥੭੨॥

ਕਰਨੇਵਾਲਾਹੈ ਹਰ ਕਿਸੀ ਮਕਾਨ ਵਾਲੇਨੂੰ ਅਤੇ ਮਕਾਨ ਨੂੰ ॥

ਹਮ ਅਜ ਪੀਰ ਮੋਰੇ ਹਮ ਅਜ ਫੀਲ ਤੁਨਾ ॥

ਭੀ ਬੁਡੀ ਕੀਕੀਸੇਭੀ ਹਾਥੀਦੇ ਤਨਸੇ - ਅ: ਸਤੁਦੀ ਸਾਰ ਜਾਣਦਾਹੈ ॥

ਕਿਆਜ਼ ਜਿਨਿਵਾਜ ਅਸਤੁ ਗਾਫਲ ਸਿਕੰਨਾ ॥੭੩॥

ਜੇ ਗਰੀਬਾਨੂੰ ਵਡਿਆਈ ਦੇਵੇਵਾਲਾ ਹੈ ਤੇਕਾਹੀਆਨੂੰ ਤੇੜਨਵਾਲਾਹੈ ॥

ਕਿਓਰਾ ਚੁਇਸਮ ਅਸਤੁ ਆਜ਼ਾਜ਼ਿ ਨਿਵਾਜਾ ॥

ਜੇ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਦਾਜਦਨਾਮਹੈ ਗਰੀਬਾਨੂੰ ਵਡਿਆਈ ਦੇਵੇਵਾਲਾ ॥

ਕਿਓ ਬੇ ਸੁਪਾਸ ਅਸਤੁ ਓ ਬੇ ਨਿਆਜਾ ॥੭੪॥

(ਜੇ ਵਾਹਿਗੁਰੂ) ਪਾਸ ਕਿਸੇਦੀ ਸੁਪਾਰਸ ਨਹੀਰਲਵੀਹੈ ਜੇਵਡੀਨਹੀਲੇਦਾਹੈ ॥

ਸਚਾ ਪਾਤਿਸਾਹ ਹੈ ॥

ਕਿਓ ਬੇ ਨਿਰੀਨ ਅਸਤੁ ਵਓ ਬੇ ਰਹੀਨਾ।

ਜੇ ਓਹ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਬਿਨਾ ਰੰਗਾਈ ਹੈ ਅਤੇ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਬਿਨਾ ਰੰਗਾਈ ਹੈ

ਕਿਓ ਰਹਿਨਾ ਅਸਤੁ ਓਹ ਰਹਿਨ ਮੁਨਾ। ੧੫॥

ਜੇ ਓਹ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਰਸਤਾ ਵਸਦੇ ਵਾਲਾ ਹੈ ਓਹ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਨਮੁਨੇ ਬੀਘਤ ਹੈ

ਕਿ ਬਰਸਰ ਤਰਫ ਰਸ ਕਸਮੇ ਕਰਨਾ।

ਜੇ ਉਪਰ ਸਿਰ ਤੋਰੇ ਦੇ ਭਾਰ ਹੈ ਸੁੰਗਦ ਕੁਠਾਨ ਦੀ ਵਾ

ਬਰਫ ਤਹ ਸਮਾ ਕਾਰ ਖੁਬੀ ਰਸਾ। ੧੬॥

ਕਿਹਾ ਹੈ ਤੇਰੇ ਤਾਈ ਕੰਮ ਸਾਥ ਭਲਾਈ ਦੇ ਪਹਚਾਉ।

ਬਿਬਾਯਦ ਤੁਲਨਾ ਪਰਸਤੀ ਕੁਨੀ।

ਤੇਰੇ ਤਾਈ ਚਾਹੀ ਵਾ ਹੈ ਤੂੰ ਚੁਧ ਦੀ ਪਾਲਵਾ ਕਰੇ

ਬਕਾਰੇ ਸਮਾ ਚੇਰਹ ਵਸਤੀ ਕੁਨੀ। ੧੭॥

ਵੇਚ ਕੰਮ ਦੇ ਤੂੰ ਚਲਾਕੀ ਦਾ ਤਥ ਕਰੇ

ਚਿਹਾਸਦ ਕਿਚੁ ਬਚਗਾ ਕੁਸਤੁਹ ਚਾਰਾ।

ਕੀ ਹੋਇਆ ਜੇ ਤੂੰ ਬੇਦੇ ਮਾਰੇ ਹੈ ਚਾਰ ਮੇਰੇ

ਕਿ ਬਾਂਕੀ ਬਿਮਾਦ ਅਸਤੁ ਪੇਚੀਦਹ ਮਾਰਾ। ੧੮॥

ਕਿਉਂ ਜੋ ਪਿਛੇ ਹਮ ਰਹੇ ਹੈ ਭਾਗੀ ਸੇ ਸਜਾਗਾ

ਚਿਮਾਰਦੀ ਕਿਅਖਗਾਰ ਖਮੇਸਾ ਕੁਨੀ।

ਕਿਆ ਸੁਰਮਤ ਜੇ ਤੂੰ ਅਗ ਦੇ ਚੰਗਾ ਮਾਰੇ ਬੁਝਾਉ ਦੇ ਕਰਵਾ

ਕਿਅਤੀਸ ਦਮਾਰਾ ਬਦਓਰਾ ਕੁਨੀ। ੧੯॥

ਬਲਕ ਅਗ ਦਬੀ ਤੇਈ ਕੇ ਤਾਈ ਪੁਲਕਤ ਕੀਤਾ ਹੈ ਤੂੰ

ਚਿਖਸ ਗੁਫਤ ਫਿਰਦੇਸੀ ਦੇ ਖੁਸ ਜੁਬਾ।

ਕਿਆ ਹਫਾ ਕਿਹਾ ਹੈ ਫਿਰਦੇਸੀ ਭਲੇ ਕਵੀ ਸਰਨੇ

ਸਿਤਾਈ ਬਵਦਕਾਰ ਅਹਰ ਮਨਾ। ੨੦॥

ਛੱਤੀ ਕਰਨੀ ਤੇਵੇ ਕੰਮ ਸੈਤਾਨਾ ਵਾ

ਕਿਮਾ ਬਾਰਗਹਿ ਹਜਰਤੁ ਮਾਲੁ ਮੁਸਮਾ।

ਜੇ ਅਸੀਂ ਕਰੋਗੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਸੇ ਅਤੇ ਹੈ ਅਤੇ ਤੁਹਾਡੇ ਪੈਰੀ ਬਰਾ

੧੪ ਅਜ ਰੋਜ ਬਾਸੀ ਵ ਸਾਹਦ ਸੁਮਾਂ ॥੮੧॥

ਉਸ ਦਿਨਥੀ ਹੋਵੇ ਤੂੰ ਵਕਫ

ਵਗਰਨਹ ਤੂੰ ਹੀ ਹਮ ਫਰਮੇ ਸੁਕਨਦਾ ॥

ਅਰਨਹੀ ਤਾਜੇਕਰੇ ਇਸ ਗਲਨੂੰ ਤੂੰ ਭੁਲਾਵਣਾ ਕਰੇਗਾ ॥

ਤੁਰਾ ਹਮ ਫਰਮੇ ਸੁਮਾਜਦਾ ਕੁਨਦਾ ॥੮੨॥

ਤੇਰੇ ਤਾਈ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਭੁਲਾਵਣਾ ਕਰੇਗਾ

ਅਗਰ ਕਾਰ ਈ ਬਰ ਤੁਬਸਤੀ ਕਮਰਾ ॥

ਜੇਕਰ ਕੰਮ ਇਸ ਉਪਰ ਤੂੰ ਬੰਨੀ ਕਮਰ

ਖਦਾਵੰਦ ਬਾਸਦ ਤੁਰਾ ਬਹਿਰ ਵਰਾ ॥੮੩॥

ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਹੋਵੇਗਾ ਤੇਰੇ ਤਾਈ ਫਲ ਦੇਵੇਵਾਲਾ

ਕਿਈ ਕਾਰ ਨੇਕ ਅਸਤ ਦੀ ਪਰਵਰੀ ॥

ਜੇ ਏਹ ਕੰਮ ਭਲਾਏ ਧਰਮ ਪਾਲਵੇਦਾ

ਰਸਮਦਾ ਸਨਾਸੀ ਬਜ ਬਰਤਰੀ ॥੮੪॥

ਜੇਹੇ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਨੂੰ ਪਛਾਣੇ ਤੂੰ ਜਲ ਸੇ ਪਿਆਰਾ ਹੋ ॥

ਤੁਰਾ ਮਨਨਦਾਨਮ ਕਿਸਮਦਾ ਸਨਾਸਾ ॥

ਤੇਰੇ ਤਾਈ ਮੇਨਹੀ ਜਾਣਦਾ ਜੇਤੂੰ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਨੂੰ ਪਛਾਣਵੇ ਵਾਲਾ ਹੋ ॥

ਬਰਾਮਦ ਜਿਤੇ ਕਾਰਾ ਪੁਰ ਖਰਾਸਾ ॥੮੫॥

ਬਾਹਰ ਆਈ ਜੇ ਤੋਥੀ ਕੰਮ ਭਰੇ ਹੋਵੇ ਦੁਖ ਦੇਵੇ ਵਾਲੇ ॥

ਸਨਾਸਦ ਹਮੀਤੇ ਨ ਸਮਜਦਾ ਕਰੀਆ ॥

ਪਛਾਣੁ ਭਾਭੀ ਤੋਥੇ ਨਹੀ ਵਾਹਗੁਰੂ ਕਿਰਪਾ ਕਰਨੇ ਵਾਲਾ ॥

ਨਖਾਹਦ ਹਮੀਤੇ ਬੋਲੇਲਤ ਅਜੀਆ ॥੮੬॥

ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਨਹੀ ਚਾਹੇਗਾ ਭੀ ਤੋਥੇ ਵੋਲਤ ਭਾਗੀ ॥

ਅਗਰ ਸਦਕਰਾਰ ਬਖੁਰਦੀ ਕਸਮਾ ॥

ਜੇਕਰ ਸ੍ਰ ਕਰਾਨ ਦੀ ਖਾਦੀ ਤੇ ਸੁਰੀਦਾ ॥

ਮਰਾ ਮੇਤਬਾਰੇ ਨਈ ਜਰਹਦਾਮਾ ॥੮੭॥

ਮੇਰੇ ਤਾਈ ਭਰੋਸਾ ਨਹੀ ਤੇ ਇਕ ਰਤੀ ਭਰ ਤੇਰੇ ਇਕ ਸੁਆਸਦਾ

ਹਜਰੇ ਨਿਯਾਯਮ ਨ ਈ ਰਹਿ ਸਵਾਮੀ॥
 ਤੇਰੇ ਪਾਸ ਨਹੀ ਆਉਦੇ ਅਸੀ ਨਾਇਸਰਸ ਤੇਵਲ ਤਕ ਦੇਖੈ॥
 ਅਗਰ ਸਹ ਬਖਾਹਦ ਮਨ ਆਜਾ ਰਵਾਮੀ॥੮੮॥
 ਜੇਕਰ ਬਾਦਸਾਹ ਸਦੇਇਧੁ ਤਾਂ ਅਸੀ ਵੂਸਰੇ ਪਾਸੇ ਜਾਵਾਂਗੇ॥
 ਖੁਸ਼ਸ ਸਾਹਿ ਸਾਹਾਨ ਅਉਰੰਗ ਜੇਬਾ॥
 ਬਹੁਤ ਭੁਲਾਏ ਪਾਤਿਸਾਹੋਕਾ ਪਾਤਿਸਾਹ ਪੈ ਤਖਤ ਨੂੰ ਸੋਭਾ ਦੇਵੇ ਵਾਲਾ॥
 ਕਿ ਚਾਲਕ ਦਸਤੁ ਅਸਤੁ ਚਾਕਰ ਰਕੇਬਾ॥੮੯॥
 ਜੇ ਚਾਲਕ ਹਥਾਦਾ ਹੈ ਤੂੰ ਅਤੇ ਚਾਲਕ ਪੈਰੇ ਦੀ ਸਵਾਰੀ ਦਾ ਹੈ ਤੂੰ॥
 ਚਿ ਹੁਸਨਲ ਜਮਾਲ ਅਸਤੁ ਰਉਸਨ ਜਮੀਰਾ॥
 ਕਿਆ ਰੂਪ ਸੁੰਦਰ ਤੇਤੇਰਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਵਾਲੀ ਬੁਧੀ ਹੈ ਤੇਰੀ॥
 ਖੁਦਾਵੰਦ ਮੁਲਕ ਅਸਤੁ ਸਾਹਿਬ ਅਮੀਰਾ॥੯੦॥
 ਮਾਲਕ ਮੁਲਕਾਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਮਾਲਕ ਅਮੀਰਾਦਾ ਹੈ॥
 ਬਤਰਤੀਬ ਦਾਨਸ ਬਤਵਬੀਰ ਤੇਰਾ॥
 ਸਾਬ ਸਵਾਰੀ ਹੋਈ ਬੁਧ ਦੇ ਸਾਬ ਜਗਤੀ ਦੀ ਤਲਵਾਰ ਦੇ॥
 ਖੁਦਾਵੰਦ ਦੇਰੇ ਖੁਦਾਵੰਦ ਤੇਰਾ॥੯੧॥
 ਮਾਲਕ ਲੰਗਾਦਾ ਹੈ ਤੂੰ ਅਤੇ ਮਾਲਕ ਤਲਵਾਰ ਦਾ ਹੈ ਤੂੰ॥
 ਕਿ ਰਉਸਨ ਜਮੀਰਾ ਅਸਤੁ ਹੁਸਨਲ ਜਮਾਲਾ॥
 ਜੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਵਾਲੀ ਬੁਧੀ ਹੈ ਅਤੇ ਰੂਪ ਸੁੰਦਰ ਹੈ ਤੇਰਾ॥
 ਖੁਦਾਵੰਦ ਬਖਸ਼ਿਸ਼ ਦੇ ਮੁਲਕੁ ਮਾਲਾ॥੯੨॥
 ਮਾਲਕ ਹੈ ਬਖਸ਼ਿਸ਼ ਕਰਨੇ ਵਾਲਾ ਹੈ ਮੁਲਕ ਅਤੇ ਦੌਲਤ ਦਾ॥
 ਕਿ ਬਖਸ਼ਿਸ਼ ਕਬੀਰਾ ਅਸਤੁ ਦਰਜੀਗ ਕੋਹਾ॥
 ਜੇ ਬਖਸ਼ਿਸ਼ ਵਡੀ ਭਾਰੀ ਹੈ ਵਿਚਲੜਾਈ ਦੇ ਪਹਾੜ ਵਤ ਅਚਲਾ ਹੈ॥
 ਮਲਾਯਕ ਸਿਫਤ ਚੈ ਸੁਰਯਾ ਸੁਕੋਹਾ॥੯੩॥
 ਦੇਵਤਿਆਂ ਜੋਸੀ ਤੇਰੀ ਵਡਿਆਈ ਹੈ ਮਲਿਕ ਤਾਰੇ ਬੋਦੀ ਵਲੋਂ ਤੇਰੇ ਭੋਏ॥
 ਸਹਾਨ ਸਾਹਿ ਅਉਰੰਗ ਜੇਬਾ ਅਲਾਮੀ॥
 ਬਾਦਸਾਹੋਕਾ ਬਾਦਸਾਹ ਤਖੁਦੇ ਸੋਭਾ ਦੇਵੇ ਵਾਲਾ ਜਗਤ ਵਿਚਾ॥

੧੬ ਕਿਵਾਰਾਇ ਦਊਰਅਸਤੁ ਦਰਅਸਤੁਦੀ॥੮੪॥
(ਅਸਰੀ) ਜੇ ਸਦਾ ਜਮਨੇਦਾਹੈ ਪਦੁਰੁ ਤੇ ਤੂੰ ਧਰਮਥੀ॥

ਮਨਮ ਕੁਸਤੁਨਮ ਕੋਹੀਯਾ ਬੁਤ ਪਰਸਤੁ॥

ਮੇਲੇ ਮਾਨੇਹੈ ਪਹਾੜੀਏ ਪਬਰ ਪੁਜਵੇਵਾਲੇ॥

ਕਿਓ ਬੁਤ ਪਰਸਤੀਦ ਮਨ ਬੁਤ ਸਿਕਸਤੁ॥੮੫॥

ਜੇ ਓ ਪਬਰ ਨੂੰ ਪੁਜਦੇਹੈ ਮੇ ਪਬਰ ਨੂੰ ਤੇਰਿਆਹੈ॥

ਬਾਧੀ ਗਰਦਜੇ ਬੇਵਫਾ ਈਜਮਾਂ॥

ਦੇਖਤੂੰ ਫਿਰਵੇ ਬੇਵਫਾਈ ਅਕਾਸ ਦੀਨੂੰ॥

ਪਸੇ ਪਸਤੁ ਅਫਤੁਦ ਰਸਨਦ ਜਿਯਾਂ॥੮੬॥

ਪਿਛੇ ਪਠਦੇਪੇਦਾਹੈ ਅਤੇ ਪਹੁਚਾਉਦਾਹੈ ਨਕਸਲਾਂ॥

ਬਾਧੀ ਕੁਦਰਤੇ ਨੇਕ ਨਜਦਾਨ ਪਾਕਾ॥

ਦੇਖ ਤੂੰ ਕਰਮਾਤੁ ਨੇਕ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਪਾਵਿੜਦੀ॥

ਕਿ ਅਜ ਅਕ ਬਦਹਲਖ ਰਸਾਨੁਦ ਹਿਲਾਕਾ॥

ਜੇ ਇਕਸੇ ਸਾਥ ਦਸਲਖ ਦੇ ਪਹੁਚਾਉਦਾਹੈ ਸੋਤਾ॥

ਚਿ ਦੁਸਮਨ ਕੁਨਦੀ ਮਿਹਰਬਾਨ ਅਸਤੁ ਦੇਸਤੁ॥

ਕਿਸ ਦੁਸਮਨ ਕਰੇ ਜੇ ਕ੍ਰਿਪਾਲੁਹੈ ਵਾਹਿਗੁਰੂ

ਕਿ ਬਖਸ਼ਿਦਗੀ ਕਰ ਬਖਸ਼ਿਦਹ ਰਿਸਤੁ॥੮੭॥

ਜੇ ਬਖਸ਼ੀਸ ਦਾਕੀਮ ਅਤੇ ਬਖਸ਼ੀਸ ਕਰਵੇ ਵਾਲਾ ਵਾਹਿਗੁਰੂਹੈ

ਰਹਾਈ ਦਿਹੈ ਰਹੀਨੁ ਮਾਈ ਦਿਹਦਾ॥

ਖਲਾਸੀ ਦੇਵੇ ਵਾਲਾਹੈ ਰਸਤਾ ਦਿਖਲਾਉਵੇ ਵਾਲਾਹੈ॥

ਬੁਝਾ ਰਾ ਬਖਸ਼ਿ ਫਤੁ ਅਸਨਾਈ ਦਿਹਦਾ॥੮੮॥

ਦੁਸਮਨ ਕੇਤਾਈ ਸਾਥ ਭਜਨ ਦੇ ਮਿਤਾਈ ਦਿਦਾਹੈ॥

ਖਸਮ ਰਾ ਚੁਕੋਰਓ ਕੁਨਦ ਵਕਤ ਕਾਰਾ॥

ਦੁਸਮਨ ਕੇਤਾਈ ਮਾਨਿਦ ਅੰਧਿਆਰੀ ਕਰਦਾਹੈ ਵਖਤ ਕੀਮਦੇ

ਅਤੀਮ ਬਰੀ ਬਰਦ ਬੇਜਖਮ ਪਾਗਾ॥੯੦॥

ਗਰੀਬਾਂਨੂੰ ਬਾਹਰ ਲੈਰਿਆ ਬਿਨਾ ਪੀੜ ਕੀਰੇਥੀ॥ ਅ ਤੇਰੇ ਦਸਲਖਦੇ

ਮਿਦਿਸਨੇ ਕੁਰਹੈ ਮਾਦਾ॥

ਹਰਾਂ ਕਸ ਕਜੇ ਰਸਤ ਬਾਜੀ ਕਨ ਦਾ।
ਜੇਕੋਈ ਆਦਮੀ ਉਸਵਾਹਿਗੁਰੂ ਨਾਲ ਸੋਚਿਆਈ ਕਰੇ॥

ਰਹੀਮੇ ਬਰੇ ਰਹਮ ਸਾਜੀ ਕਨ ਦਾ॥ ੧੦੧॥

ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਉਪਰ ਉਸ ਆਦਮੀ ਦੇ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਦਾ ਹੈ॥

ਕੁਜੇ ਪ੍ਰਦਮਤ ਆਯਦ ਬਸੇ ਦਿਲ ਵਜਾਂ॥

ਜੇਕੋਈ ਏਹਿਲ ਵਿਰ ਆਵੇ ਅਤਮੈ ਕਰਕੇ ਚਿਤ ਅਤੇ ਜਨਸੇ॥

ਖਦਾਵੇਦ ਬਖਸੀਦ ਬਰਵੇ ਆਮਾਂ॥ ੧੦੨॥

ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਨੇ ਬਖਸਿਆ ਹੈ ਉਪਰ ਉਸਕੇ ਧਰਮ (ਅ:) ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਚਿਤ ਦੀ ਰਛੇ ਆਕਰਦਾ ਹੈ॥

ਚਿ ਦਸਮਨ ਕੁਜਾਂ ਹੀਲਹ ਸਸੀ ਕਨ ਦਾ॥

ਇਸ ਸਤੁ ਜੇ ਉਸਸੇ ਉਪਾਉ ਸਾਜਨਾ ਕਰੇ॥

ਅਗਰ ਰਹਿਨੁਮਾਂ ਬਰਵੇ ਰਾਜੀ ਸੁਵਦਾਂ॥ ੧੦੩॥

ਜੇਕਰ ਰਸਤਾ ਦਿਖਾਲਵੇਵਾਲਾ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਉਪਰ ਉਸਕੇ ਰਾਜੀ ਹੋਵੇ॥

ਅਗਰ ਬਰਖਾਕ ਆਯਦ ਦੁਹੇ ਦਹਿ ਹਜਾਰਾ॥

ਜੇਕਰ ਉਪਰ ਉਕਦੇ ਆਵੇ ਦਸਲਖ ਚੜਕੇ॥ (ਅ:) ਤੇਰਾ ਲੀਜਿਯਾ ਉਪਰ ਦਸਲਖ ਫੌਜ ਤੇਜੀਯੀ॥

ਨਿਗਹਬਾਨ ਓਰਾ ਸੁਵਦ ਕਿਰਦ ਗਾਰਾ॥ ੧੦੪॥

ਰਾਖਾ ਉਸਦਾ ਉਦਾਰੇ ਵਾਹਿਗੁਰੂ

ਤਰਾਰ ਨਜਰ ਹਸਤ ਲਸਕਰ ਵ ਜਰਾ॥

ਤੋਰ ਜੇਕਰ ਧਿਆਨ ਪੈ ਫੌਜ ਅਤੇ ਦੌਲਤ ਉਪ (ਅ:) ਤੇਨੂੰ ਤੋਕਾਰ ਫੌਜ ਅਤੇ ਧਨ ਦਾ ਹੈ॥

ਕਿਮਾਰਾ ਨਿਗਾਹ ਅਸਤੁ ਯਜਦਾ ਸੁਕਰਾ॥ ੧੦੫॥

ਜੇਮੇਰੇਤਾਈ ਖੀਗਾਹ ਹੈ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਦੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਉਪਰ

ਕਿਓਰ ਗਰੂਰ ਅਸਤੁ ਬਰਖਾਕ ਮਾਲਕ ਮਾਲਾ॥

ਜੇ ਉਸਕੇ ਤਾਈ ਤੋਕਾਰ ਹੈ ਉਪਰ ਮੁਲਕ ਅਤੇ ਧਨ ਦੇ॥

ਵਮਾਰਾ ਪਨਾਹ ਅਸਤੁ ਯਜਦਾ ਅਗਲਾ॥ ੧੦੬॥

ਅਤੇਮੇਰੇਤਾਈ ਆਸਰਾ ਹੈ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਦਾ

ਤਗਾਫਲ ਮਸਤੁ ਏਈ ਸਿਪਜੀ ਸਰਾਇ॥

ਤੁਹਾਫਲ ਮਤੇਹਇ ਉਸ ਦੁਨੀਆ ਦੇ ਘਰ ਉਪਰ॥

੧੮ ਕਿਆਲਮ ਬਗੁਜਰਦ ਸਰੇ ਜਾ ਬਜਾਇ॥੧੦੭॥
 ਜੋ ਜਗਤ ਲਿਖਦਾਹੈ ਸਿਰੇਬੀਜਾਗਾ ਜਾਗਾਵੇਚਾ॥
 ਬੁਝੀ ਗਰਦਸੇ ਬੇਵਫਾਈ ਜਮਾਂ॥
 ਦੇਖਤੂੰ ਫਿਰਨ ਬੇਵਫਾਈ ਜਮਾਂਦੀਦਾਂ॥
 ਕਿ ਬਚਾਜਸਤ ਬਰਹਰਮਕੀਨੇ ਮਕਾਂ॥੧੦੮॥
 ਜੋਲਿਖਾਹੈ ਉਪਸਭਮਕਨ ਵਾਲਿਆ ਅਤੇ ਮਕਾਂਦੇ॥
 ਤੁ ਗਰ ਨਬਰ ਅਜਜ ਖਰਾਸੀ ਮਕੁਨ॥
 ਤੂੰ ਜੇਕਰ ਭਵਾਹੈ ਗਰੀਬਨੂੰ ਛਿਲਣਾ ਮਤਕਰ॥
 ਕਸਮਰਾ ਬਤੇਸਹ ਤਰਾਸੀ ਮਕੁਨ॥੧੦੯॥
 ਸੁਗੰਧਕੇ ਤਾਈ ਸਾਬ ਤੇਜੇਦੇ ਛਿਲਣਾ ਮਤਕਰਤੂੰ॥
 ਹਕੇਯਾਰ ਬਾਸਦ ਚਿ ਦੁਸਮਨ ਕੁਨਦਾ॥
 ਜਬ ਸਚ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਪਿਆਰਾ ਹੋਵੇ ਕਿਆ ਸਤੁਕਰ ਸਕਦਾਹੈ॥
 ਅਗਰ ਦੁਸਮਨੀ ਰਾ ਬਾਸਦ ਤਨ ਕੁਨਦਾ॥੧੧੦॥
 ਜੇਕਰ ਦੁਸਮਨੀ ਕੇ ਤਾਈ ਸਾਬ ਸੋ ਤਨਕੇਕਰੇ॥
 ਖਸਮ ਦੁਸਮਨੀ ਗਰ ਹਜਾਰ ਆਵਰਦਾ॥
 ਦੁਸਮਨ ਦੁਸਮਨੀਆ ਜੇਕਰ ਹਜਾਰਹੀ ਲਿਆਵੇ॥
 ਨ ਯਕ ਮੁਏ ਚਿਰਾ ਅਜਾਰ ਆਵਰਦਾ॥੧੧੧॥
 ਨਹੀ ਏਕ ਰੋਮ ਉਸਕੇ ਤਾਈ ਦੁਖ ਲਿਆਵੇ ਪਵਹਿਗੁਰੂ ਕੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਜੇ ਹਮਚੇਖੇ॥
 ਹਿਕਯਤ) ਅਰੀਜੇ ਅਰੀਜੇ ਅਰੂਪੇ ਅਰੇਖਾ॥
 ਵਹਿਗੁਰੂ ਅਗਿਣਤਹੈ ਮਨੇਬੀਗਤ ਹੈ ਰੂਪਬੀਗਤਹੈ ਰਾਜਬੀਗਤ॥
 ਅਰਾਧੇ ਅਬਾਧੇ ਅਬਰਮੇ ਅਲੇਖਾ॥੧੧੨॥
 (ਵਹਿਗੁਰੂ) ਬੇਅੰਤਹੈ ਬਿਪਨਸੇ ਰਹਤਹੈ ਭਰਮਸੇ ਰਹਤਹੈ ਲੇਖੇਸੇ॥
 ਅਰਾਗੇ ਅਰੂਪੇ ਅਰੇਖੇ ਅਰੀਗਾ॥
 ਕੀਸੇ ਪ੍ਰੇਮਨਹੀ ਕੋਈ ਰੂਪਨਹੀ ਰੇਖਾਸੇ ਰਹਤਹੈ ਰੰਗਾਸੇ ਰਹਤਹੈ॥
 ਅਜਨਮੇ ਅਬਰਨੇ ਅਬੁਤੇ ਅਬੀਗਾ॥੧੧੩॥
 ਜਨਮਧੀਗਤਹੈ ਚਰੇਬਰਣਸੇ ਰਹਤਹੈ ਸੁਖਮਹੈ ਨਾਸਹੈ ਲੇਖੇ ਰਹਤਹੈ॥

ਅਛੇਰੇ ਅਥੇਰੇ ਅਕਰਮੇ ਅਕਾਮਾ॥
 ਕਟਣੇ ਸੇਰਹਤੁ ਕੀਸੀ ਸੇਜੁ ਦਾਨਹੀ ਹੈ ਕਰਮਾ ਸੇਰਹਤੁ ਇਛਾ ਸੇਰ
 ਅਖੇਰੇ ਅਥੇਰੇ ਅਕਰਮੇ ਅਕਾਮਾ॥੧੧੪॥ [ਹਤੁ]
 ਦੁਖ ਸੇਰਹਤੁ ਕੋਈ ਦਾਹਿਗੁਰੂ ਦਾ ਨਹੀ ਜਾਣਦਾ ਹੈ ਤੁਰਮਾ ਸੇਰਹਤੁ ਇਸਤੀ
 ਅਥੇਰੇ ਅਥੇਰੇ ਅਲੇਖੇ ਅਭੀਗਾ॥ [ਸੇਰਹਤੁ]
 ਰੇਖਾ ਸੇਰਹਤੁ ਤੇਖਾ ਸੇਰਹਤੁ ਉਸਕਾ ਕੋਈ ਲੇਖਾ ਨਹੀ ਜਾਣਦਾ ਨਾਸ ਸੇਰਹਤੁ
 ਖੁਦਾਵੰਦ ਬਖਸ਼ਿਦ ਹੋ ਰੰਗ ਰੰਗਾ॥੧੧੫॥
 ਮਾਲਕ ਹੋ ਬਖਸ਼ਨੇ ਵਾਲਾ ਹੈ ਰੰਗਾ ਰੰਗੇਤ ਮਾਸੋ॥ ਅਬਦਾ
 ਰੰਗਾ ਰੰਗਾ ਦੇ ਪਦਾਰਥਾ॥

ਹਿਕਾਯਤ
ਕਥਾ

ਦੂਸਰੀ ਚਲੀ



੧ ਚਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫਤਹ॥

ਹਿਕਾਯਤ ਸੁਨੀਦੇ ਮ ਰਾਜ ਹ ਦਲੀਪਾ॥
 ਸੁਣੀਹੈ ਮੇਨੇ ਰਾਜੇ ਦਲੀਪਦੀ॥
 ਨਿਸ਼ਾਨੁ ਤਹ ਬੁਦਹ ਨਿਜ ਦਸਨੇ ਮਹੀਪਾ॥੧॥
 ਬੈਠਾ ਹੋਇਆ ਥਾ ਪਾਸ ਮਨਧਾਤਾ ਪ੍ਰਿਥੀਪਤਿ ਕੋ॥
 ਕਿ ਚਿਹਾ ਹਮੀ ਬੂਦ ਪਿਸਰੇ ਚਹਾਰਾ॥
 ਜੇ ਉਸਕੇ ਅੰਸੇ ਥੇ ਬੈਟੇ ਚਰ ੪
 ਕਿ ਦਰ ਰਜਮ ਦਰ ਬਜਮ ਆਮ ਖਤੁ ਹੁਕਾਵਾ॥੨॥
 ਜੇ ਦਿਰ ਜੁਧਵੇ ਅਤੇ ਦਿਰ ਕਚੇਰੀ ਦੇ ਸਿਖੇ ਹੋਵੇ ਕੰਮ
 ਬਰਜਮ ਅੰਦਰ ਹਮਚ ਅਜ ਸੇਰ ਮਸਤਾ॥
 ਦਿਰ ਜੁਧਵੇ ਅੰਦਰ ਮਨਿ ਦਸਿਘ ਮਸਤਦੀ॥

ਕਿ ਚਾਬਕ ਰਿਕਾਬ ਅਸਤੁ ਗੁਜਤਾਖ ਦਸਤਾ ॥ ੩ ॥
ਜੋਘੇਰੇਸਵਰਚੰਗੇ ਅਤੇ ਘਬਰੇ ਚਾਲਾਕ ਪੈ ਜੁਧਦਿਚਾ ॥

ਚੁਹਾਰੇ ਸਹੇਪੇਸਿ ਪਿਸਰਾ ਬੁਖਾਂਦਾ ॥
ਚਰੇ ਬੇਰੇ ਬਾਦਸਾਹ ਨੇ ਅਗੇ ਝੁਲਾਵੇ ॥

ਜੁਦਾ ਬਰ ਜੁਦਾ ਕੁਰਸੀਏ ਜਰ ਨਿਜਾਂਦਾ ॥ ੪ ॥
ਜੁਦੇ ਜੁਦੇ ਉਪਰ ਕੁਰਸੀਆਂ ਸੋਨੇ ਦੀਆਂ ਬਠਲਾਵੇ ॥

ਬਿਪੁਰਸੀਦ ਦਲਾਇ ਦੁਲਿਤ ਪੁਰਸਤਾ ॥
ਸਾਬ ਪੁਛਿਆ ਸਿਆਣਿਆਂ ਦੇਖਤ ਬੇਪੁਜਵਾਇਆਂ (ਅ) ਵਜੀਰਾਂ ਪੁ-
ਛਿਆ ॥

ਅਜੀ ਅੰਦਰੁ ਬਾਦਿਸਾਹੀ ਕਜੁ ਅਸਤਾ ॥ ੫ ॥
ਇਨ ਵਿਚੋ ਬਾਦਸਾਹੀ ਦੀ ਲਾਇਕ ਕੋਢ ਪੈ ॥

ਸੁਨੀਦ ਮਾਂਚ ਦਲਾਇ ਦਲਸ ਨਿਹਾਵਾ ॥
ਸੁਨੀਏ ਹਥਾਤ ਜੋਧੇ ਸਿਆਣਿਆਂ ਅਕਲ ਰਖ ਨਿਵਾਇਆ ॥

ਬਤਮਕੀਨਿ ਪਾਸਖ ਅਲਮ ਬਰਕੁਸਾਦਾ ॥ ੬ ॥
ਸਾਬ ਮਰਤਬੇ ਦੇ ਜੁਬਾਬ ਦਾ ਝੰਡਾ ਪੋਇਆ ॥

ਬਿਗੁਫਤਾ ਕਿਖੁਸਦੀਨ ਦਲਾਇ ਨਗਜਾ ॥
ਕਹਿਆ ਏਜੇ ਭਲਾ ਤੇਰਾ ਧਰਮ ਅਤੇ ਦਲ ਤੂੰ ਅਸਚਰਜ ਪੈ ॥

ਕਿ ਘਜਦਾ ਸਨਾਸ ਅਸਤੁ ਅਜਾਦ ਮਰਾਜਾ ॥ ੭ ॥
ਜੇਤੂੰ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਪੁਛਨ ਦੇਵਲਾਹੇ ਅਤੇ ਇਕ ਮਰਾਜਾ ਪੈ (ਅ) ਜੋ ਸੇਸਿ ਪੁਛੇ
ਇਕ ਮੇਤੀ ਹੋਵੇ ॥

ਮਰਾ ਕਦਰਤੇ ਨੇਸਤੁ ਈ ਗੁਫਤ ਨੀਸਤਾ ॥
ਮੇਰੇ ਤਾਈ ਜੋਰਨਹੀਏ ਇਸ ਬਾਤ ਕੇ ਕਹਾਵੇਗਾ ॥

ਸੁਖਨ ਗੁਫਤੋਨੇ ਬਿਕਰਜਾ ਗੁਫਤ ਨੀਸਤਾ ॥ ੮ ॥
ਏਹਾਤ ਕਹਾਣੀ ਮੇਤੀ ਅਵਾਇਧ ਦਾ ਪਰੇਵਾਹੈ ॥ (ਅ) ਇਸ ਬਾਤ ਦਾ ਕਰਵਾਮੇ
ਤੀਜਲ ਦਾ ਪਰੇਵਾਹੈ ॥

ਅਗਰ ਸਹਿ ਬਿਗੋਯਾਦ ਬਿਗੋਯਾਮ ਜਵਾਬਾ ॥
ਜੇਕਰ ਬਾਦਸਾਹ ਕਹੇਤਾ ਕੈਦਾਹਾ ਮੇ ਉਤਾ ॥

ਨੁਮਾਯਾਮ ਬੋਤ ਹਾਲ ਈ ਬਾ ਸਵਾਬਾ ॥ ੯ ॥
ਦਿਖਾਲੁ ਮੈਸਾਬ ਤੇਰੇ ਹਾਲ ਇਸ ਦਾ ਸਾਬ ਖੁਬੀਦੇ ॥

ਹਰਾਕਸੁ ਕਿਯਜਦਾਨਿ ਯਾਰੀ ਦਿਹਦਾ।

ਜਿਸਕਿਸੀਨੂੰ ਜੋ ਵਹਿਗੁਰੂ ਯਾਰੀ ਦੇਵੈ (ਅ:) ਜਿਸਉਪਰ ਵਹਿਗੁਰੂ ਕ੍ਰਿਪਾਕਰੇ

ਬਕਾਰੇ ਜਹਾਂ ਕਾਮ ਯਾਰੀ ਕਨਦਾ॥੧੦॥

ਵਿਚ ਕੰਮਜਹਨਦੇ ਮਕਸੂਦ ਪੁਰਾਕਰੇ (ਅ:) ਬਾਦਸਾਹ ਬਣਾਵੇ॥

ਕਿਈਰਾ ਬਾਅਕਲ ਅਜਮਾਈ ਕਨੇਮਾ॥

ਜੇ ਇਨਕੇਤਾਈ ਸਾਬ ਅਕਲਦੇ ਅਜਮੂਦਾ ਕਰੇਹਮ

ਟਜਾਂ ਪਸ ਬਕਾਰ ਅਜਮਾਈ ਕਨੇਮਾ॥੧੧॥

ਔਰ ਫੇਰ ਇਸਸੇ ਪੀਛੇ ਵਿਚ ਕੰਮਦੇ ਅਜਮਾਉਣਾ ਕਰੇਹਮ॥

ਪ੍ਰਕੇਰਾ ਦਿਹਦ ਫੀਲ ਦਹ ਹਜਾਰ ਮਸਤਾ॥

ਏਕਕੇਤਾਈ ਦਿਦਾਹੈ ਹਾਈ ਦਸਹਜਾਰ ਮਸਤ ਵਜੀਰਾ ਦੇ ਕਰੇ ਮੁਜਬਾ॥

ਹਮ ਮਸਤ ਮਸਤੀ ਚਿਜੀਰ ਬਸਤਾ॥੧੨॥

ਸਭ ਮਸਤੀ ਤੇ ਮਸਤ ਅਤੇ ਸੰਗਲਾਨਾਲ ਬੰਨੇ ਹੋਏ॥

ਦਿਗਰ ਰਾ ਦਿਹਦ ਅਸਪ ਪਾਂਸਦ ਹਜਾਰ॥

ਦੂਸਰੇ ਕੇਤਾਈ ਦਿਦਾਹੈ ਘੋੜੇ ਪੰਜ ਲਖ

ਜਿਜਰ ਸਾਖਤੁਹ ਜੀਨ ਚੰਨ ਉਬਹਾਰ॥੧੩॥

ਜਰੀਸੇ ਬਣਾਏ ਹੋਏ ਕਾਕੀਆ ਮੰਗੀਦ ਨਉਬਹਾਰਦੀ॥

ਸਿਯਮਰਾ ਦਿਹਦ ਸੁਤਰ ਸੇ ਸਦ ਹਜਾਰ॥

ਬੀਸਰੇ ਕੇਤਾਈ ਦਿਦਾਹੈ ਉਠ ਤਿਨ ਲਖ॥

ਹਮ ਨਕਰਹ ਬਾਰੇ ਹਮ ਜਰ ਨਿਗਾਰ॥੧੪॥

ਸਭ ਗਾਵੀਦੇ ਤਾ ਰਾਨਾਲ ਅਤੇ ਸੇਨੇ ਨਾਲ ਮੜੇ ਹੋਏ॥

ਚੁਅਮਰਾ ਦਿਹਦ ਮੰਗ ਪਕ ਨਖਦਨੀਮਾ॥

ਚੁਥੇਤਾਈ ਦਿਦਾਹੈ ਇਕਦਾਣਾ ਮੰਗੀਦਾ ਅਤੇ ਅਧਾ ਛੇਲਾ॥

ਅਜਾਂ ਮਰਦ ਅਜਾਦ ਅਕਿਲ ਅਜੀਮਾ॥੧੫॥

ਹਿ ਮਰਦ ਉਤਮ ਅਤੇ ਅਕੱਲ ਫੜੀ ਫਾਲਾਸੀ

ਬਿਆਵਰਦ ਪੁਰ ਅਕਲ ਖਾਨਹ ਕਜਾਂ॥

ਲੈਆਇਆ ਪੁਰਣ ਅਕਲ ਫਾਲਾ ਘਰ ਵਿਚ ਉਸਨੂੰ॥

ਇਗਰ ਨੀਮ ਨੁਖਦਸੁ ਬਿ ਬਸਤੁਨ ਅਜਾਂ ॥ ੧੬ ॥
 ਦੁਸਰਾ ਛੋਲਾ ਅਧੇ ਛੋਲੇ ਦੇ ਬਾਬਰ ਲੋਲਿਆ ॥
 ਹਮੀ ਖਾਸਤੁ ਕੇ ਤੁਖਮ ਰੇਜੀ ਕੁਨਦਾ ॥
 ਇਹ ਚਾਹਿਆ ਜੋ ਬੀਜੋ ਬੀਜਣਾ ਕਰੀਏ ॥
 ਖਿਰਦ ਅਜਮਾਯਸੁ ਬਰੇਜੀ ਕੁਨਦਾ ॥ ੧੭ ॥
 ਅਕਲ ਦਾ ਅਜਮੁਦਾ ਅਤੇ ਬੀਜਣਾ ਕਰੀਏ ॥
 ਦਫਨ ਕਰਦ ਹਰ ਦੇ ਜ਼ਿਮੀਨ ਅੰਦਰਾਂ ॥
 ਦਬਦੇ ਕੀਤਾ ਹਰਿ ਦੇ ਕੇ ਤਾਂਈ ਪ੍ਰੀਤੀ ਵਿਚ ॥
 ਨਜਰ ਕਰਦ ਬਰ ਸੁਕਰਿ ਸਾਹਿਬ ਗਿਰਾਂ ॥ ੧੮ ॥
 ਧਿਆਨ ਕੀਤਾ ਉਪ੍ਰ ਕ੍ਰਿਪਾ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਵਡਿਆਈ ਵਾਲੇ ਦੀ ਦਾ
 ਚੀ ਸੁਸਮਾਹ ਗਸਤੀ ਦ ਦਰ ਦਫਨ ਵਾਰਾਂ ॥
 ਜੇਏ ਛੇ ਮਹੀਨੇ ਰੇਏ ਵਿਚ ਦਬਿਆਂ ॥
 ਪਦੀਦ ਅਮਦਹ ਸਬਜ ਹੇ ਨਉ ਬਹਾਰਾਂ ॥ ੧੯ ॥
 ਪਰਗਟ ਅਇਆ ਸਬਜਾ ਨਉ ਬਹਾਰ ਵਾਲਾ
 ਬਰੇਜੀ ਦ ਦਹਿਸਾਲ ਤੁਖਮ ਕੁਜਾਂ ॥
 ਬੀਜਣਾ ਕੀਤਾ ਦਸ ਬਰਸਾ ਦਇਆ ਉਨਾਨੀ ॥
 ਬਪਰਵਰ ਦਹ ਚਿਰਾ ਬਰੀ ਦਨ ਅਜਾਂ ॥ ੨੦ ॥
 ਪਾਲਿਆ ਉਨਾ ਕੇ ਤਾਂਈ ਅਤੇ ਵਡਿਆ ਉਨਾਨੀ ॥
 ਬਰੇਜੀ ਦ ਦਹ ਬੀਸਤੁ ਬਾਰਸੁ ਅਜੇ ॥
 ਬੀਜਿਆ ਦਸ ਵੀਹ ਵਾਰੀ ਉਨਾਸੀ ॥
 ਬਸੇ ਗਸਤੁ ਖਰਵਾਰਹ ਦਾਨੁ ਅਜੇ ॥ ੨੧ ॥
 ਬਹੁਤ ਤੇਏ ਖਲਵਾਰੇ ਦਇਆ ਦੇ ਉਨਾਸੀ ॥
 ਚੁਨਾ ਜਿਸਾ ਦਹ ਸੁਦ ਦਉਲਤ ਬੇ ਕਰਾਰਾਂ ॥
 ਇਤਨੀ ਵਧੇਰੇ ਹੋਈ ਦਉਲਤ ਬੇ ਓੜਕ ॥
 ਕਜੇ ਦਾਨੁ ਸੁਦ ਦਾਨੁ ਹਾਏ ਅਬਾਰਾਂ ॥ ੨੨ ॥
 ਜੋ ਉਨਾ ਦਇਆ ਸੇ ਹੋਏ ਦਇਆ ਦੇ ਦੁਹਾਰਾਂ ॥

ਖਰੀਦਿਆਂ ਨਕਦ ਦਹ ਹਜਾਰ ਫੀਲਾ॥
 ਖਰੀਦਿਆਂ ਉਸ ਨਕਦੀ ਸੇਵਸ ਹਜਾਰ ਹਾਥੀ॥
 ਚੁਕਦੇ ਰਵਾਂ ਹਮਰੁ ਦਰੀਯਾਇ ਨੀਲਾ॥ ੨੩॥
 ਮਨਿਦ ਪਾੜਦੇ ਉਰੇ ਤੁਰਨੇ ਵਲੇ ਮਨਿਦ ਦਰਮਾਇ ਨੀਲਦੇ॥
 ਖਰੀਦਦ ਅਜੇ ਅਸੁਪ ਪਾਸਦ ਹਜਾਰਾ॥
 ਲੇਦਾ ਹੋ ਰੋਕਰ ਉਸੀ ਸੇਧੀ ਪੰਜ ਲਖਾ॥
 ਹਮਰ ਜਰ ਵਜੀਨੇ ਹਮਰ ਨੁਕਰ ਹਵਾਰਾ॥ ੨੪॥
 ਸਭ ਸੋਨੇ ਦੀਆ ਕਾਨੀਆ ਵਲੇ ਤਮਾਮ ਚਾਂਦੀ ਨਲ ਲਦੇ ਹੋਏ॥
 ਖਰੀਦਦ ਸੇਸਦ ਹਜਾਰੇ ਸੁਤਰਾ॥
 ਖਰੀਦਿਆ ਤਿਨ ਲਖ ਊਠ
 ਹਮਰ ਜਰ ਬਾਰੇ ਹਮਰ ਨੁਕਰ ਹਪੁਰਾ॥ ੨੫॥
 ਤਮਾਮ ਸੋਨੇ ਦੇ ਭਾਰਨਾ ਲਅਤੇ ਤਮਾਮ ਚਾਂਦੀ ਦੇ ਭਾਰਨਾ ਲਲਦੇ
 ਵਜਾ ਦਾਲਨ ਉਸਹਰ ਅਜਮ ਬਿਬਸਤਾ॥ ੨੬॥
 ਉਸਦਾ ਲਦੇ ਦਾਣੇ ਦਾ ਨਮਾ ਸੈਹਰ ਵਡਾ ਬਸਾਇਆ॥
 ਕਿਨਾਮੇ ਅਜਾ ਸਹਰ ਦਿਹਲੀ ਸੁਦ ਅਸਤਾ॥ ੨੭॥
 ਜੇ ਨਾਮ ਉਸ ਸੈਹਰ ਦਾ ਦਿਹਲੀ ਰਖਿਆ ਰਿਆਹੀ॥
 ਦਿਹਰ ਦਾਨਹਰਾ ਬਸਤ ਖੁੰਗੀ ਪਟਨਾ॥
 ਦੁਸਰੇ ਦਾਣੇ ਦਾ ਬਸਾਇਆ ਖੁੰਗੀ ਪਟਨਾ ਸੈਹਰਾ॥
 ਚੁਕਦੇ ਪਸੰਦ ਅਸਤ ਦੁਸਮਨ ਫਿਕਨਾ॥ ੨੮॥
 ਜੇ ਮਿਥਾਨੂੰ ਪਸੰਦ ਹੋ ਅਤੇ ਸੁਕਾਨੂੰ ਤੋੜ ਦੇ ਵਾਲਾ ਹੋ
 ਬਹੁਜਾਨੀ ਦ ਦਹਦੇ ਕਰੀਨਾ ਮਤ ਸਾਲਾ॥
 ਗੁਜਰੇ ਬਾਹਾ ਬਰਸਾਇਲੀ ਪੁਕਾਰ - ਖੇਤੀ ਕਰ ਦੇ ਲੇਵੇ ਉਦੇਨੂੰ
 ਬਸੇ ਗਜਰੁ ਜੇ ਦਹਿਲਤੁ ਬੀਜ ਦਾਲਾ॥ ੨੯॥
 ਬਹੁਤ ਹੋਈ ਉਸਸੇ ਦੋਲਤ ਨਾਵਰ ਹੋਵੇ ਵਾਲੀ ਇਸਾ ਬਿਰ
 ਦੁਬਿਨ ਸਸਤ ਬਰ ਤਖਤ ਮਾਨੇ ਮਹੀਪਾ॥
 ਜੇਦੇ ਬੇਰ ਉਪਰ ਤਖਤ ਦੇ ਮਾਨਧਾਤਾ ਰਾਜਾ॥

ਬਪੁਰਸਿਸਦਰਾਮਦਸਰੇ ਹਫਤ ਦੀਪਾ ॥ ੨੯ ॥

ਵਿਚ ਪੁਛਵੇ ਆਇਆ ਬਾਦਸਾਹੁ ਸਤਾ ਦੀਪਾਦਾ ॥

ਬਗੁਫਤ ਕਿਪੇਸੀਨ ਕਾਰਾਜੁ ਇਯਾਰਾ ॥

ਫਜੀਰਨੂੰ ਕਹਿਆ ਜੇਪੇਹਲਾ ਕਾਰਾਜੁ ਇਯਾਰਿ ਤੁਸੀ ॥

ਚਿ ਬਖਸੀਦਮਮਨ ਬਪਿਸੁਰਾ ਚਹਾਰਾ ॥ ੩੦ ॥

ਕਿਆਦਿਤਾਰੇ ਮੇਰੇ ਸਾਬ ਬੋਦਿਆ ਚਰੇਕੇ ॥

ਦਬੀਰੇ ਕਲਮਿ ਜਨਕਲਮ ਬਰਗਿਰਫਤਾ ॥

ਮੁਨਸੀ ਕਲਮ ਚਲਾਉਣੇ ਫਾਲਿਅਲੇ ਕਲਮ ਪਕੜੀ ॥

ਜਟਾਬੇ ਸੁਖਨਰਾ ਅਲੀਮ ਬਰਗਿਰਫਤਾ ॥ ੩੧ ॥

ਉਤ ਬਾਤਕੋਤਾਈ ਤੰਤੂ ਪਕੜਿਆ ॥ ੮੫ ॥ ਬਾਦਸਾਹਕੀ ਬਾਤਕੋਉਤਦ ਤੰਤੂ ਪਕੜਿਆ ॥

ਬਿਗੁਫਤਾ ਚਿ ਬਖਸੀਦਮਦੇਸ਼ ਚਜਾਰਾ ॥

ਬਾਦਸਾਹਨੇ ਕਹਿਆ ਜੇਕਿਆਦਿਤਾਰੇ ਮੇਰੇ ਇਨਕੇ ਅਤੇ ਕਿਨੇ ਹਜਾਰਾ ॥

ਬਕਾਰਾਜ ਬੁਬੀਤਾ ਜੁਬਨਸ ਇਯਾਰਾ ॥ ੩੨ ॥

ਵਿਚ ਕਾਰਾਜਦੇ ਦੇਖੇ ਤੁਸੀ ਤਾਂ ਜੁਬਾਨਉਪਰ ਲਿਆਵੇ ॥

ਬਕਾਰਾਜ ਬੁਬੀਤਾ ਬਰੇਲਦ ਜੁਬਾਨਾ ॥

ਵਿਚ ਕਾਰਾਜਦੇ ਦੇਖੇ ਤੁਸੀ ਤਕਰੇ ਤੁਸੀ ਜੁਬਾਨੀ ॥

ਚੁ ਬਖਸੀਦਸਦ ਬਖਸਹਰਕਸ ਅਜਾਨਾ ॥ ੩੩ ॥

ਕਿਆ ਬਖਸੀਸਹੋਈ ਬਖਸੀਸਹਰਕਿਸੇਨੂੰ ਉਨਾਸੇ ॥

ਚੁ ਬਿਸਨੀਦ ਸੁਖਨ ਅਜਮਹੀ ਪਾਨਮਾਨਾ ॥

ਜੋਬ ਸੁਣੀ ਬਾਤ ਮੁਨਸੀਆਨੇ ਮਾਨਧਾਤਾ ਪ੍ਰਿਥੀਪਤਨੇ ॥

ਫਰਿਸਤਹੁ ਸਿਫਤਚੀ ਮਲਾਇਕ ਮਕਾਨਾ ॥ ੩੪ ॥

ਦੇਵਤਿਆਜੇਸੀ ਫਰਿਸਤਾਈ ਫਾਏ ਅਤੇ ਦੇਵਤਿਆ ਜੇਸੇ ਘਰਫਾਲੇਨੇ ॥

ਬਿਯਾਰੀ ਮਰਾਪੇਸ ਬਖਸੀਦਹ ਮਨਾ ॥

ਬਾਦਸਾਹਨੇ ਬੋਟੇਨੂੰ ਕਹਾ ਲਿਆਤੂੰ ਮੇਰੇ ਅਗੇ ਬਖਸੀਸ ਮੇਰੀ ਕੋਤਾਈ ॥

ਚਰਾਰੇ ਜਹਾਂ ਆਫਤਾਬੇ ਯਮਨਾ ॥ ੩੫ ॥

ਹੇਬੇਰਾਤੂੰ ਸੂਰਜ ਪ੍ਰਿਥੀਦਾ ਅਤੇ ਸੂਰਜਯਮਨ ਫਲਾਇਤਕਾਰੇ ॥ =

ਬਗੈਲਦ ਕਿਮੁਰਦੀਦ ਬਾਜੇ ਮੁਹੀਮਾ॥

ਪੇਲਾ ਬੇਟਾ ਕਹਿਦਾ ਹੈ ਜੋ ਕਈ ਮਰਗਏ ਕਈ ਮਰਿਮਾਵਿਚ ਕੰਮ ਆਏ॥

ਕਿਮਾ ਹਮ ਬਾਜੇ ਫੀਲ ਬਖਸੀਦ ਹਮਾਮਾ॥ ੩੬॥

ਕਿਉ ਜੇ ਹਮ ਨੇ ਭੀ ਕਈ ਹਾਥੀ ਬਖਸੀ ਸਕੀਤੇ ਹੋਆਪਾ॥

ਦਿਗਰ ਰਾ ਬਪੁਰਸੀਦ ਅਸਪਸ ਚਿਕਰਦਾ॥

ਦੂਸਰੇ ਕੇ ਤਾਈ ਪੁਛਿਆ ਘੋੜੇ ਤੇ ਕਿਆ ਕੀਤੇ॥

ਕਿ ਬਾਜੇ ਬਬਖਸੀਦ ਬਾਜੇ ਬਿਮੁਰਦਾ॥ ੩੭॥

ਉਸਨੇ ਕਹਾ ਜੋ ਬਾਜੇ ਮੇ ਬਖਸੀ ਸਕੀਤੇ ਬਾਜੇ ਮਰਗਏ॥

ਸਿਲਮ ਰਾ ਬਪੁਰਸੀਦ ਬੁਤਰਾਂ ਨੁਮਾਂ॥

ਤੀਸਰੇ ਕੇ ਤਾਈ ਪੁਛਿਆ ਤੂੰ ਉਠ ਦਿਖਾਲਾ॥

ਕਜਾਤੋ ਬਬਖਸੀਦ ਏਜਨ ਮਾਂ॥ ੩੮॥

ਕਿਥੇ ਤੇ ਬਖਸੀ ਸਕੀਤੇ ਹੋ ਮੇ ਮੇਰੀ ਜਨ

ਬਗੈਲਤਾ ਕਿ ਬਾਜੇ ਬਗੈਰ ਅਮਦੀਦਾ॥

ਉਸਨੇ ਕਹਿਾ ਜੋ ਕਿਤਨੇ ਤਾਵਿਚ ਕੰਮ ਦੇ ਆਏ ਹੋ॥

ਬਬਖਸ ਅਦਿਰੀ ਬੇ ਸੁਮਾਰ ਅਮਦੀਦਾ॥ ੩੯॥

ਵਿਚ ਬਖਸੀ ਸਦੇ ਅੰਦਰ ਬੇ ਓੜਕ ਹੀ ਆਏ॥

ਚੁਅਮ ਰਾ ਬਪੁਰਸੀਦ ਕਿ ਏਨੇ ਕ ਬਖਤਾ॥

ਚੌਥੇ ਕੇ ਤਾਈ ਪੁਛਿਆ ਜੋ ਏ ਭਲੇ ਨਸੀ ਬੇ ਵਾਲੇ॥

ਸਜਾਵਾਰ ਦੇ ਹੀਮ ਸਾਯਾਨ ਤਖਤਾ॥ ੪੦॥

ਲਾਇਕ ਬਾਦਸਾਹੀ ਮੁਕਟਦੀ ਅਤੇ ਲਾਇਕ ਸੀਪਾਸਦੀ

ਕਜਾ ਕਰਦ ਬਖਸਸ ਤੁਮਾਰਾ ਫਹੀਮਾ॥

ਕਿਥੇ ਕੀਤੀ ਖਰਚ ਬਖਸੀ ਸਮੇਰੀ ਤੂੰ ਮੇਰੇ ਤਾਈ ਸਮਝਾਉ॥

ਅਕੇ ਦਾਨ ਹ ਮੁੰਗੇ ਦਿਗਰ ਨੁਖਦ ਨੀਮਾ॥ ੪੧॥

ਇਕ ਦਾਨ ਮੁੰਗੀ ਦਾ ਸਾਬਤ ਅਤੇ ਦੂਸਰਾ ਛੋਲੇ ਦਾ ਅਧਾ ਦਾਨ

ਸਵਦ ਗਰਹੁਕਮ ਤਾ ਬਿਯਾਰੇ ਮਪੇਸਾ॥

ਆਪਕਾ ਹੋਵੇ ਜੇਕਰ ਹੁਕਮ ਤਾਂ ਲਿਆਵਾ ਮੇ ਅਗੇ ਆਪਦੇ॥

ਹਮਰ ਫੀਲ ਅਸਪ ਅਜੇ ਸੁਤਰ ਬੋਲਾ ॥ ੪੩ ॥

ਤਮ ਹਥੀ ਅਤੇ ਘੋੜੇ ਉਨਸੇ ਉਠ ਬਹੁਤ ਹੀ ਸੁੰਦਰ ॥

ਨਜਰ ਕਰਦ ਫੀਲ ਦੇ ਦੁਹਿ ਹਜਾਰ ਮਸਤਾ ॥

ਬਾਸਾਹ ਦੀ ਨਜਰ ਕੀਤੇ ਹਥੀ ਬਾਰ ਹਜਾਰ ਮਸਤਾ ॥

ਪੁਰ ਅਜ ਜਰ ਬਾਰੇ ਹਮਰ ਨੁਕਰਹ ਬਸਤਾ ॥ ੪੩ ॥

ਅਜੇ ਹੋਏ ਸੋਏ ਦੇ ਭੁਲਨਾਲ ਅਤੇ ਤਮਾਮ ਚਾਂਦੀ ਨਾਲ ਬੰਨੇ ਹੋਏ ॥

ਹਮਾਂ ਅਸਪ ਪਾਂਸਦ ਹਜਾਰ ਮਾਫ਼ਰੀਦਾ ॥

ਵੇਸੇ ਹੀ ਘੋੜੇ ਪੰਜ ਲਖ ਲਿਆਇਆ ॥

ਹਮਾਂ ਜਰ ਜੀਨ ਬੇਸਮਾਰ ਮਾਫ਼ਰੀਦਾ ॥ ੪੪ ॥

ਵੇਸੇ ਹੀ ਬੁਨਹਰੀ ਜੀਨ ਬੇਓੜਕ ਲਿਆਇਆ ॥

ਹਮਾਂ ਖੋਲਦ ਖਫਤਨ ਬਰਗਸ ਤੁਵਾਂ ॥

ਤਮਾਮ ਟੇਪਿਆ ਅਤੇ ਜਿਹਾ ਬੁਨੇਦੀ ਅਤੇ ਘੋੜੇ ਦਾ ਅਸਬਾਬ ਹੋ ॥

ਬਸੇਤੀਰ ਸਮਸੇਰ ਕੀਮਤ ਗਿਰਾਂ ॥ ੪੫ ॥

ਬਹੁਤ ਤੀਰ ਅਤੇ ਤਲਵਾਰ ਖੁਲਤਾਰੀ ਵਾਲੀਆ ॥

ਬਸੇ ਸੁਤਰ ਬਗਦਾਦ ਜਰ ਬਫਤ ਬਾਰ ॥

ਬਹੁਤ ਉਠ ਬਗਦਾਦ ਦੇ ਜਰੀ ਬਾਦਲੇ ਦੇ ਭੁਲਨਾਲ ਸਜਾਏ ਹੋਏ ॥

ਜਰੇ ਜਾਮਹ ਨੀਮ ਅਸਤੀ ਬੇਸਮਾਰ ॥ ੪੬ ॥

ਸੁਨੇਰੀ ਕੁੜਤੀਆ ਅਤੇ ਚੋਰੇ ਸੁਨੇਰੀ ਬੇ ਓੜਕ ॥

ਕਿ ਵਹਨੀਲ ਦਹਪਦਮ ਦੀਨਾਰ ਜਰਦਾ ॥

ਜੇ ਵਸਨੀਲ ਅਤੇ ਦਸਪਦਮ ਮੋਹਰ ਪੀਲੀਆਂ - ਕੁੰਦਨ ਦੀਆਂ ਮੋਹਰਾਂ ॥

ਕੁਜੇ ਦੀ ਦਹ ਸੁਦ ਦੀ ਦਹੋ ਦੇਸਤ ਸਰਦਾ ॥ ੪੭ ॥

ਜੇ ਉਸਕੇ ਦੇਖਣੇ ਹੋਏ ਨੇੜੇ ਪਿਆਰਿਆ ਦੇ ਠੰਡੇ ॥ ਪੁਲੀਨ ਹੋਏ ॥

ਕਿਸਕ ਮੁੰਗ ਅਕ ਸਹਰ ਜੇ ਕਾਮ ਸੁਦਾ ॥

ਜੇ ਇਕ ਦਾਵੇ ਮੁੰਗੀ ਸੇ ਇਕ ਸਹਰ ਦਾ ਮਕਸਦ ਹੋਇਆ ॥

ਕਿ ਮੁੰਗੀ ਪਟਨ ਸਹਰ ਓਨਾਮ ਸੁਦਾ ॥ ੪੮ ॥

ਜੇ ਮੁੰਗੀ ਪਟਨ ਸਹਰ ਉਸਦਾ ਨਾਮ ਰਖਿਆ ॥

ਕਿਨੀਮੇਨਖਦਰਾਦਿਗਰਸਹਰਬਸਤਾ॥

ਜੇਅਪੇਫੋਕੋਦਾ ਰੂਸਰਸਹਰਬਸਾਇਆ॥

ਕਿਨਾਮੇਅਜੇਸਹਰਦਹਲੀਸੁਦਅਸਤਾ॥੪੯॥

ਜੇਨਾਮਉਸਕੇਸੇਸਹਰਦਹਲੀਤੇਇਆਹੇ॥

ਖੁਸਆਮਦਬਤਦਬੀਰਮਾਨੇਮਹੀਪਾ॥

ਪਸੰਦਆਪਾਜਾਬਅਕਲਦੇਮਾਤਧਤਾਨੂੰ॥

ਖਿਤਾਬਸਬਦੇਵਾਦਰਾਜਹਦਲੀਪਾ॥੫੦॥

ਖਿਤਾਬਉਸਕੇਸਾਬਦਿਤਾਰਾਜਦਲੀਪਕਾ

ਕਿਪੇਦਾਅਜੇਫਰਿਰਸਾਹਨਸਾਹੀ॥

ਜੇਪੁਗਰਪੇਉਸਸੇਪੁਤਾਪ ਬਾਦਸਾਹੋਕੇਬਾਦਸਾਹਕਾ॥

ਸਜਾਫਾਰਤਖਤਅਸਤਤਾਜੇਮਹੀ॥੫੧॥

ਲਾਇਕਸਿਘਾਜਾਦਦੇਹੈਅਤੇਕਾਇਕਮੁਕਟਪ੍ਰਿਥੀਕੇਹੈ॥

ਬਜੇਬਦਅਜੇਮਰਦਤਾਜੇਨਗੀ॥

ਸੁੰਦਲਗਦਾਹੈਉਸਮਰਦਸੇਮੁਕਟਅਤੇਨਗੀਨਾ॥

ਬਰਾਅਕਲਤਦਬੀਰਹਜਾਰਆਫਗੀ॥੫੨॥

ਉਪਰਉਸਅਕਲਅਤੇਤਦਬੀਰਦੇਹਜਾਰਵੇਰੀਜਾਬਾਸਾ॥

ਸਿਓਹਸਤੁਬੇਅਕਲਆਲੂਦਹਮਗਜਾ॥

ਤਿਨੇਓਹੋਬੇਅਕਲਅਤੇਗੀਦੇਮਗਜਵਾਲੇ॥

ਨਗਫਤਾਰਖੁਸਤੁਰਨਰਫਤਾਰਨਗਜਾ॥੫੩॥

ਨਾਇਨਾਦੀਬੋਲੀਕੁਲੀਚੰਗੀਅਤੇਨਾਇਨਾਦੀਚਾਲਸੁੰਦਾ॥

ਹਮੀਖਾਸਤੁਕਿਓਰਾਬਸਾਹੀਦਿਹਮਾ॥

ਇਹਚਾਹਿਆਜੇਉਸਕੇਤਾਈਬਾਦਸਾਹੀਦੇਵਾਂਮੇ॥

ਜਿਦਉਲਤਖੁਦਸੁਰਾਅਗਾਹੀਦਿਹਮਾ॥੫੪॥

ਦਉਲਤਆਪਣੀਸੇਉਸਕੇਖਬਰਦੇਵਾਂਮੇ॥

ਬਜੇਬਦਅਜੇਫਰਿਰਸਾਹਨਸਾਹੀ॥

ਜੇਬੁਦਾਹੈਜੇਉਸਸੇਤਖਤਸਾਹਨਸਾਹੀਦਾ॥

ਕ੍ਰਿਸਾਹਿਬ ਸਚਿਰ ਅਸਤੁ ਵਮਾਲਕ ਮਹੀ॥ ੫੫॥
 ਜੇ ਮਾਲਕ ਬਧਾ ਤੇ ਅਤੇ ਮਾਲਕ ਪ੍ਰਥਵੀ ਦਾਤੇ॥
 ਪਿਤਾ ਬਸ ਅਜੇ ਗਸਤੁ ਰਾਜਹ ਦਲੀਪ॥
 ਪਿਤਾ ਬਧਿਸਕਾ ਉਸਸੇ ਹੋਇਆ ਰਾਜਾ ਦਲੀਪ॥
 ਪਿਲਾਫਤੁ ਬਖਸੀ ਦਮੋਨੇ ਮਹੀਪ॥ ੫੬॥
 ਬਾਦਸਾਹੀ ਉਸਕੇ ਸਾਥ ਬਖਸੀ ਸਕੀਤੀ ਮਨ ਮਹੀਪਨੇ॥
 ਸੁਪਿਸਰਾਂ ਦਿਗਰ ਸਾਹ ਮਾਜਾ ਦਕਰਦਾ॥
 ਤਿਨਾ ਬੇਇਆ ਦੁਸਰਿਆਂ ਕੇਤਾਈ ਬਾਦਸਾਹਨੇ ਕਢ ਦਿਤਾ॥
 ਨਦਲਸ ਪਰਸੋਤੇ ਨ ਮਾਜਾ ਦਮਰਦਾ॥ ੫੭॥
 ਨ ਬਧੀਏ ਪ੍ਰਜਣੇਵਾਲੇ ਅਤੇ ਨ ਖੁਲਾਸੇ ਮਰਦਾ॥
 ਕਿਰਿਰਾ ਕਰੇ ਜਰ ਸਿੰਘ ਸਨ ਨਿਜਾਂਦਾ॥
 ਜੇ ਉਸਕੇ ਤਾਈ ਉਪਰ ਸੋਨੇ ਦੇ ਸਿੰਘਾਸਣ ਦੇ ਬਿਠਾਇਆ॥
 ਕਲੀ ਦੇ ਕੁਹਨ ਰੀਜ ਰਾ ਬਰ ਕੁਸ਼ਾਦਾ॥ ੫੮॥
 ਕੁੰਜੀਆਂ ਪੁਰਤਨੀ ਖਜਾਨਿਆ ਦੇਤਾਈ ਖੋਲ੍ਹੇ ਦਿਖਾਇਆ॥
 ਬੋਰੇ ਦਾਦ ਸਾਹੀ ਪੁਦ ਮਾਜਾ ਦ ਗਸਤੁ॥
 ਸਾਥ ਉਸਕੇ ਦਿਤੀ ਬਾਦਸਾਹੀ ਆਪ ਨਿਆਰਾ ਤੇਇਆ॥
 ਬੋਧੀ ਸੀ ਦ ਦਲੀਪ ਰਵਾਂ ਸੁਦ ਬਦ ਸਤੁ॥ ੫੯॥
 ਪਾਈ ਗੇਵਰੀ ਗਲਮੇ ਤੁਰਪਿਆਂ ਤਰਫ ਬਨਕੀ॥
 ਬਿਦਿਹ ਸਾਕੀਨਾ ਸਾਗਰੇ ਸਬਜਰੀਗਾ॥
 ਦਿਹ ਮੇਰੁ ਕਈਆ ਪਿਆਲਾ ਹਰੇਰੀ ਗਵਾਲਾ॥
 ਕਿਮਾਰਾ ਬਕਾਰ ਅਸਤੁ ਦਰ ਵਕਤ ਜੀਗਾ॥ ੬੦॥
 ਤੇ ਮੇਰੇ ਤਾਈ ਚਾਹੀਦਾਏ ਵਿਚ ਵਖਤ ਬਧਾਈਏ॥
 ਬਮਨ ਦਿਹ ਕਿ ਬਖਤ ਮਾਜਾ ਮਾਈ ਕੁਨਮਾ॥
 ਸਾਥ ਮੇਰੇ ਦਿਹ ਤੇ ਭਗਾਦਾ ਅਜਮਾਇਆ ਕਰਾਮੇ॥
 ਜਿ ਤੇਰੇ ਪੁਦਸ ਕਾਰਵਾਈ ਕੁਨਮਾ॥ ੬੧॥
 ਤਦ ਵਾਰ ਆਪਣੀ ਸੈ ਕੀ ਮਰਲਾਇਆ ਕਰੇਹਾ॥ (ਤੋ ਮੇਰੀ ਗਜੇ ਬੋ)

ਦੇਖ ਜੇ ਜੇ ਕੇ ਬਾਦਸਾਹ ਅਕਲ ਵਾਲੇ ਤੇ ਦੇਹੇ ਓਹ ਆਪਣਿਆ ਬੇਇਆਰੀ
ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਅਕਲ ਪ੍ਰਤਾਇਕੇ ਪਛੇ ਬਾਦਸਾਹੀ ਇੰਦੇ ਹੋਨਾ।

ਹਿਕਾਯਤ

ਤੀਸਰੀ ਚਲੀ

ਕਥਾ

੧ ਚਿਵਾਹਿਰਾ ਰੂਜੀ ਕੀਫਤੋ॥

ਖੁਦਾਵੰਦ ਦਾਨਸ਼ ਦਿਹੋ ਦਾਦਗਾਰ॥

ਸਾਹਿਬ ਵਾਹਗੁਰੂ ਬੁਧਿਕੇ ਅਤੇ ਨਿਆਉਕੇ ਦੇਵੇਵਾਲਾ

ਰਜਾ ਬਖਸ਼ ਰੋਜੀ ਦਿਹੋ ਹਰ ਹੁਨਰ॥੧॥

ਖੁਸ਼ੀ ਦੇ ਬਖਸ਼ਣੇ ਵਾਲਾ ਅਤੇ ਰਿਜ਼ਕ ਦੇਵੇਵਾਲਾ ਸਭ ਹੁਨਰਾਂ ਕੇ ਤਾਂ (੨)

ਅਮਾ ਬਖਸ਼ ਬਖਸ਼ਿਦ ਚਿਦਸਤੁਰੀਰ॥

ਅਸਰੇ ਕੇ ਦੇਵੇਵਾਲਾ ਬਖਸ਼ੀਸ਼ ਕੇ ਕਰਨੇ ਵਾਲਾ ਤਥਾ ਪਕੜਨੇ ਵਾਲਾ

ਕਸ਼ਾਯਸ਼ ਕੁਨੇ ਰਹਿ ਨਮਾਯਸ਼ ਪਜੀਰ॥੨॥

ਤੀਸਰੇ ਖੇਲਣੇ ਵਾਲਾ ਰਹਦੇ ਵਿਖਲਣੇ ਵਾਲਾ ਇਲਦੀ ਬਾਤ ਅੰਨ ਦੇਵਾ (੩)

ਹਿਕਾਯਤ ਸੁਨੀਦ ਮਯਕੇ ਨੇਕ ਮਰਦ॥

ਬਤ ਸੁਣੀਓ ਹਮਨੇ ਇਕ ਭੁਲੇ ਆਦਮੀ ਦੀ॥

ਕਿਅਜ਼ ਦੁਇਰਿ ਦਸਮਨ ਬਰਾਵਰ ਦਗਰਦ॥੩॥

ਜੇਸਮੇ ਵੇਰੀਆਸੇ ਬਾਹਰ ਲਿਆਇਆ ਪਾਟਾ (ਅ) ਵੇਰੀਆਨੀ ਮਾਰਕੇ ਪਾਟੇ (ਮੇਰਲਾ ਦਿਤ)

ਖਸਮ ਅਫਕਨੇ ਸਾਹ ਗੀ ਦਿਲ ਫਿਰਜ॥

ਵੇਰੀਆਨੂੰ ਸਿਟਣੇ ਵਾਲਾ ਬਾਦਸਾਹ ਚੀਨਦਾ ਦਿਲ ਖੁਲੇਵਾਲਾ॥

ਗਰੀ ਬੁਲ ਨਿਵਾਜੇ ਗਨੀ ਮੁਲ ਗੁਦਾਜ॥੪॥

ਗਰੀ ਬਾਂ ਦੇ ਵਢਿਆਉਣੇ ਵਾਲਾ ਵੇਰੀਆਨੂੰ ਗਲਣੇ ਵਾਲਾ॥

ਜਿਰਜਮੇ ਬ ਬਜਮੇ ਹਮਹ ਬੰਦ ਬਸਤੁ॥

ਲੜਾਈ ਵਿਚ ਅਤੇ ਮਜਲਸ ਵਿਚ ਸਭ ਤੋਂ ਬੰਦ ਬਸਤ ਕੀਤਾ ਹੋਇਆ

ਕਿ ਬਿਸੀਯਾਰ ਤੇਗ ਅਸਤ ਹੁਸੀ ਆਰ ਦਸਤੁ॥੫॥

ਜੇ ਪਨੀ ਤਲਵਾਰਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਹੋਇਆ ਹੋਵੇਦਾ (ਅ) ਹਥ ਦਸਤੀ॥

ਨਿਵਾਲਹ ਪਿਆਲਹ ਜਿ ਰਜਮੇ ਬ ਬਜਮਾ॥

ਖਾਵਟੇਸੇ ਅਤੇ ਪੀਵਟੇਸੇ ਅਤੇ ਜੁੱਧਸੇ ਅਤੇ ਮਜਲਸ ਵਿਚ॥

ਤੁਰਾਤੁਰੀ ਕਿਦੀ ਗਰਯਕੇ ਯੁਦ ਬ ਬਜਮਾ॥ ੬॥

ਤੁਰਾਤੁਰੀ (ਅੰਗੇ) ਜੇ ਦੂਸਰਾ ਬਹਾਦਰ ਹੋਯਾ ਵਿਚ ਮਜਲਸ ਦੇ॥

ਜਿ ਤੀਰੇ ਤੁਰੰਗ ਹਮਰੁ ਆਮੁਖਿ ਤੁਹ ਸੁਦਾ॥

ਤੀਰ ਅਤੇ ਬੰਦੂਕ ਐਲੀ ਚਲਾਉਣੀ ਸਿਖੀ ਹੋਈ ਹੋ॥

ਤੁਰਾਤੁਰੀ ਕਿਦਰ ਸਿਰਮ ਅੰਦੇਖੁ ਤੁਹ ਸੁਦਾ॥ ੭॥

ਤੁਰਾਤੁਰੀ ਜੇ ਅੰਦਰ ਗਰਬ ਦੇਹੀ ਅਕੋਰੀ ਸਿਖੀ ਹੋਈ ਹੋ॥

ਚੁਮਾਲਸ ਰਿਰਨਸ ਮਤੁਲਸ ਅਜੀਮਾ॥

ਚੁਮਾਲ ਉਸਦਾ ਤੁਰੀ ਅਤੇ ਨਕਦੀ ਉਸਦੀ ਬਹੁਤ ਬੀ॥

ਕਿ ਮੁਲਕਸ ਬੁਜੇ ਅਸਤੁ ਬਖਸ ਸੁਗਰੀ॥ ੮॥

ਕਿਉ ਜੇ ਮੁਲਕ ਉਸਦੇ ਬਹੁਤ ਹੋਏ ਅਤੇ ਬਖਸੀਸ ਉਸਦੀ ਕ੍ਰਿਪਾਲੂ ਅਯੋਜੀ॥

ਅਜੇ ਬਾਦਸਾਹੀ ਬਾਮੁਖਿ ਯੁਦ ਅਸਤੁ॥

ਉਸਦੇ ਬਾਦਸਾਹੀ ਬਾਮੁਖਿ ਦੇਹੀ ਹੋਏ॥ (੮੮) ਜੇ ਦੇਹੀ ਬਾਦਸਾਹੀ ਮਰੇ

ਨਿਸਸਤਿਦ ਵਜੀਰਾਂ ਓਪੇਸ ਪਸਤੁ॥ ੯॥ (ਲਗਾ)

ਬੈਠੇ ਵਜੀਰ ਦਿਵਾਨ ਉਸਦੇ ਅਗੇ ਪਿਛੇ॥

ਜਿ ਤੇ ਪਸ ਕਿਰਾ ਬਾਦਸਾਹੀ ਦਿਹੇ॥

ਤੇਰੇ ਸੇਪਿਛੇ ਕਿਸਕੇ ਤਾਈ ਬਾਦਸਾਹੀ ਦੇਵੇ ਹਮ॥

ਕਿਰਾ ਤੁਜ ਇਕ ਬਾਲ ਬਰਸਰ ਨਿਹੇ॥ ੧੦॥

ਕਿਸਕੇ ਤਾਈ ਯੁਕ ਪੁਤਾ ਪਵਾਲਾ ਉਪਰ ਸਿਰ ਦੇ ਰਖੇ ਹਮ॥

ਕਿਰਾ ਮਰਦ ਅਜੁ ਖਾਨਹ ਬੇਰੁ ਕੁਨੇ॥

ਕਿਸਾਦਮੀ ਕੇ ਤਾਈ ਪਹੁੰਚੇ ਬਾਹਰ ਕਰੇ ਹਮ॥

ਕਿਰਾ ਬਖਤ ਇਕ ਬਾਲ ਬਰਸਰ ਨਿਹੇ॥ ੧੧॥

ਕਿਸਕੇ ਤਾਈ ਤੁਗ ਅਤੇ ਪੁਤਾ ਪਉਪਰ ਸਿਰ ਦੇ ਰਖੇ ਹਮ॥

ਬਹੇਸ ਅੰਦਰ ਅਮਰੁ ਦੁਸਾਰੇ ਦਰਸਮ॥

ਵਿਚ ਹੋਸਦੇ ਆਮ ਅਤੇ ਮੋਲੀਆਂ ਵੀ ਅਖੀਆ॥

ਬਗੁਫਤਾ ਸੁਖਨ ਸਾਹ ਪੇਸੀ ਨਹ ਰਸਮਾ ॥ ੧੩ ॥

ਕਹੀ ਬਾਤ ਬਾਦਸਾਹ ਨੇ ਪਹਿਲੀ ਤਰਾਂ ॥

ਨ ਪਾਓ ਨ ਦਸਤੇ ਨ ਚਸਮੇ ਜੁਬਾਂ ॥

ਨ ਪੈਰ ਨ ਹਥ ਨ ਨੇੜ ਅਤੇ ਨ ਹਸਨਾਂ ॥

ਨ ਹੋਸੇ ਨ ਹਿਮਤ ਨ ਹੋ ਬਤ ਕਸਾਂ ॥ ੧੩ ॥

ਨ ਹੋਸੇ ਨ ਹਿਮਤ ਨ ਭੈ ਕਿਸੀ ਆਦਮੀ ਦਾ ॥

ਨ ਹਉਢੇ ਨ ਤੁਹਮਤ ਨ ਹੀਲਹ ਨ ਹੋਸਾ ॥

ਨ ਰੂਰ ਨ ਤੁਹਮਤ ਨ ਬਹਾਨ ਕਰੇ ਜੁਧਮੇ ਨ ਹੋਸ ਭੁਜੈ ਟਲੀ ॥

ਨ ਬੀਨੀ ਨ ਬੀਨ ਅਗੀ ਹਰ ਦੇ ਗੋਸਾ ॥ ੧੪ ॥

ਨ ਨਾਕ ਨ ਫਿਜ਼ੀ ਹੋਵੇ ਨ ਦੇਨ ਕੰਨ ਹੋਵੇ ॥

ਹਰਾ ਕਸ ਕਿ ਹਸਤੁ ਆਜਮਾਯਸੁ ਬਟਦਾ ॥

ਜੋ ਕੋਈ ਐਸਾ ਆਦਮੀ ਹੈ ਜਿਸ ਵਿਖੇ ਏ ਬਾਂਤ ਪਾਈ ਆ ਜਾਣਾ ॥

ਦੁਜਾ ਦੁਇਰ ਦੀ ਬਾਦਸਾਹੁ ਜੁ ਸਟਦਾ ॥ ੧੫ ॥

ਹੋ ਜਮਾਨੇ ਦਾ ਅਤੇ ਧਰਮ ਦਾ ਬਾਦਸਾਹ ਹੋਵੇ ॥

ਅਜ ਬਮਾਂਦ ਦਾਨਾਇ ਦੋਰ ਈ ਜਵਾਬਾ ॥

ਅਸਚਰਜ ਰਹੇ ਬੁਧੀਮਾਨ ਜਮਾਨੇ ਦੇ ਇਸ ਉਤ ਬਾਦਸਾਹ ਦੇਸੇ ॥

ਸਖਨ ਬਾਜ ਦੀ ਗਰ ਕਨਦ ਬਾ ਸਟਦਾ ਬਾ ॥ ੧੬ ॥

ਬਾਂਤ ਫੇਰ ਦੂਸਰੀ ਬਾਰ ਕਰਦੇ ਹੋ ਸਾਬ ਭੁਲਿਆਈ ਦੇ ॥

ਬਰੀਗਸੁ ਦਰਾਮਦ ਦਰੀਗਸੁ ਗਾਰਿਫਤਾ ॥

ਵਜੀਰ ਵਿਚ ਸਲਾਹ ਕਰਨੇ ਦੇ ਆਏ ਅਤੇ ਦੇਰੀ ਕੀਤੀ ॥

ਜਵਾਬੇ ਸਖਨ ਰਾ ਬਰੀਗਸੁ ਗਾਰਿਫਤਾ ॥ ੧੭ ॥

ਉਤ ਬਾਂਤ ਕੋਤਾਈ ਸਾਬ ਇਕਦੀ ਗਦੇ ਕੀਤਾ ਵਜੀਰਾਨੇ ॥

ਚਪੇ ਰਾਸਤਾ ਸੁ ਕਰਦੇ ਚਰਖੇ ਜੁਬਾਂ ॥

ਖਬੇ ਸਜੇ ਉਨਕੇ ਗੀਤੀ ਚਰਖੀ ਜੁਬਾਨ ਦੀ ॥ (ਅ) ਜੋ ਹਾਥ ਚਪੇ ਗਏ ॥

ਬਰ ਅਵਰਦ ਸੁਖਨੇ ਦੁਕੈ ਬਰ ਕੁਮਾਂ ॥ ੧੮ ॥

ਬਾਹਰ ਲਿਆਏ ਬਾਂਤਰੁ ਜੋ ਜੇਤੀ ਰਕਮਾਣ ਸੇ ਫੁੱਤੀ ਨਿਕਲਦਾ ਹੋ ॥

ਕਿਏ ਜਾਹੁ ਹੁਜੀਆਰ ਅਜਾਦ ਮਗਜਾ॥

ਜੇਏ ਬਾਦਸਾਹ ਹੁਜੀਆਰ ਅਤੇ ਜੁਦੇ ਮਗਜਵਾਲੇ॥

ਚਰਾਮੇ ਤੇ ਰੋਈ ਦਰੀਕਾਰ ਨਗਜਾ॥ ੧੯॥

ਕਿਸਵਾਸ ਤੇ ਤੂੰ ਕਹਾਦੇ ਅੰਦਰ ਇਸ ਕੰਮ ਦੇ ਅਸਚਰਜ ਹੋ॥

ਕੁਸੇ ਰਾ ਸਵਦ ਕਾਰ ਈ ਦਰਜਮਾਂ॥

ਜਿਸ ਕਿਸੇ ਕੇਤਾਈ ਹੋਵੇ ਕੰਮ ਏਹ ਅੰਦਰ ਜਮਾਨੇ ਦੇ॥

ਵਜਾ ਹਸਤੁ ਅੰਬਸਤੁ ਜਾਹਰ ਜਹਾਂ॥ ੨੦॥

ਓਹੋ ਆਦਮੀ ਅੰਬਦਾਰ ਜਾਹਰ ਜਹਾਨ ਵਿਖੋ॥

ਕਿਈ ਹਸਤੁ ਅੰਬੋ ਤੁ ਰੋਈ ਹੁਨਰਾ॥

ਜੇਏਹੋ ਅੰਬ ਅਤੇ ਤੂੰ ਕਹਤਾ ਹੈ ਜੇਏਹ ਹੁਨਰ ਹੋ॥

ਕਿਏ ਜਾਹ ਸਾਹਨ ਹਮਹ ਬਹਿਰ ਬਰਾ॥ ੨੧॥

ਜੇਏ ਬਾਦਸਾਹੋ ਕੇ ਬਾਦਸਾਹ ਤਮਾਮ ਸਮੁੰਦਾ ਅਤੇ ਜੰਗਲਾ ਦੇ ਮਾਲਕਾ॥

ਨਦਰ ਜੰਗ ਪੁਸਤੋ ਨ ਦੁਸਨਾਮ ਦਾਦਾ॥

ਨਤੋਨੇ ਵਿਚ ਜੁਧ ਦੇ ਪਿਠ ਦਿਤੀ ਹੈ ਨਤੋ ਗਾਢੀ ਦਿਤੀ ਹੈ ਕਿਸੇ ਨੂੰ॥

ਨ ਅੰਗ ਸਤੁ ਬਰਹਰਫ ਦੁਸਮਨ ਨਿਹਾਦਾ॥ ੨੨॥

ਨਹੀ ਉਗਾਥੀ ਉਪਰ ਹਰਫ ਸਤ੍ਰੁ ਦੇ ਰਖੀ ਹੋ ਤੋਨੇ॥

ਨ ਅਰਾਮ ਦੁਸਮਨ ਨ ਅਜਾਰ ਦੇਸਤਾ॥

ਨਹੀ ਅਰਾਮ ਕਰਨ ਦੇਤਾ ਤੋਨੇ ਸਤ੍ਰੁ ਨਹੀ ਦੁਖ ਦੇਤਾ ਤੋਨੇ ਪਿਆਰਿ ਆਨੂੰ॥

ਜਵਾਬੇ ਗਵਾਰ ਉਦੁਰਾ ਬਿਪੇਸਤਾ॥ ੨੩॥

ਜਬਾਬ ਫਕੀਰ ਨੂੰ ਤੋਨਹੀ ਦੇਤਾ ਅਤੇ ਸਤ੍ਰੁ ਦੇ ਸੀਰ ਉਪਰ ਮੜਨ ਦੀ ਛ

ਨਵੀ ਸਿੰਦਹਰਾ ਜਨ ਹਰਫ ਨਿਹਾਦਾ॥

ਮੁਨਸੀਅ ਕੇਤਾਈ ਜਾਗਾ ਹਰਫ ਦੀ ਨਹੀ ਦਿਦਾ ਹੋ ਤੂੰ॥

ਸੁਖਨਰਾ ਬਹਰੁ ਜਾਇ ਸਰਫੇ ਦਿਹਾਦਾ॥ ੨੪॥

ਬਾਤ ਕੇਤਾਈ ਉਪਰ ਸਚੀ ਜਾਗਾ ਦੇ ਵਢਿਆਈ ਦਿਦਾ ਹੋ ਤੂੰ॥

ਨ ਉਸਤਾਦ ਰਾਦਾਦ ਜਾਏ ਸੁਖਨਾ॥

ਨਹੀ ਉਸਤਾਦ ਕੇਤਾਈ ਦਿਤੀ ਤੋਨੇ ਜਾਗਾ ਬਾਤ ਦੀ॥

ਫਰਮੇਸੁਗੀ ਚੰ ਬਕਾਰੇ ਕਹਨਾ॥ ੨੫॥

ਭੁਲਾਵਣਾ ਕਰਵਾਰੇ॥ ਤੂੰ ਕਿਸਤਾਂ ਵਿਚਕੀ ਮੁਕਾਰੇਦੇ॥ (ਅ॥) ਕਦਸਾਹੀ

ਬਬਦ ਮਸਲਹਤੁ ਕਸਨ ਦਾਦਨ ਦਿਗਰਾ॥ (ਕੌਮ)

ਬਰੀਸਲਾਹ ਕਿਸੀਨੂੰ ਨਹੀ ਦਿਤੀ ਦੁਸਰੇਨੂੰ

ਬਹਿਸ ਨਾਮਓ ਚੰ ਤੁਰੇਯਦ ਹਨਰਾ॥ ੨੬॥

ਫਰਟੇਜੇਗਾਹੇ ਨਾਮਓ॥ ਓ ਅੰਸੇਅਤੇਤੂੰ ਉਨ੍ਹਨੂੰ ਚੰਗੇਕੇਦਾਏ॥

ਨਬੀਨਦ ਦਿਗਰਜਨ ਬਚਸਮੇਖੁਦਸਾ॥

ਜੇਆਦਮੀ ਨਹੀਦੇਖਦਾਦੁਸਰੇਦੀਇਸਤੀ ਸਾਬਨੇਤਾਂ ਆਪਣਿਆਦੇ॥

ਨਬਰਕਾਰਕਸ ਕਰਦ ਨਜਰੇ ਬਦਸਾ॥ ੨੭॥

ਨਹੀਉਪਰਕੀਮਕਿਸੀਦੇਕੀਤੀਨਿਗਾਹ ਬੁਰੀਉਸਨੇ॥

ਨਜਰਕਰਦ ਕਸ ਬਰਨਹਰਫੇਹਰਾਮਾ॥

ਨਿਗਾਹਕੀਤੀਯਕਿਸੀਉਪਰਨਹੀਬਾਤਹਰਾਮਕਾਰੀਕੀ॥

ਨਿਗਾਹਦਾਸਤੁਬਰਜੁਕਰ ਅਜਦਾਂਮੁਦਾਮਾ॥

ਨਿਗਾਹਰਖੀਉਪਰਉਪ ਵਹਿਗੁਰੂਦੇ ਸਦੀਪਕਾਲਾ॥ ੨੮

ਨਜਰਰਾਜਿ ਬਦਕਾਰ ਦੀਗਰ ਬਕਸਤਾ॥

ਨਿਗਾਹਕੇਤਾਈਬਰੇਕੀਮਦੁਸਹਿਆਸੇ ਬੰਦਕੀਤਾਏ॥

ਸਨਾਸੀਤੁ ਤਹਕੀਰ ਓਕੋਰ ਹਸਤਾ॥ ੨੯॥

ਤੂੰਪੁਛਾਣੀਪੁਰਾਪੁਰਾ ਜੇਹਿਜੁਰਮਾਏ(ਅਥਤ) ਅੰਧਾਏ

ਕਦਮਰਾਨਦਾਰਦ ਬਬਦਕਾਰਕਾਰਾ॥

ਪੈਰਕੇਤਾਈਨਾਰਖੇਵਿਚਬਰੇਕੀਮਾਦੇ ਕਰਨੇਨੂੰ

ਨਦਰਜੀਗਪਸੁਪਾਉਪੁਸਤੇਹਜਾਰਾ॥ ੩੦॥

ਨਹੀਵਿਚਜੁਧਦੇਪਿਛੇਪੈਰਕਰੇ ਹਜਾਰਤੇਡਰਕੇ॥

ਨਦਰਕਾਰਦੁਜਦੀਨਦਿਲਬਿਸਕਨੀ॥

ਨਹੀਵਿਚਕੀਮਦੇ ਚੰਗੇਕਰਦਾਅਤੇਨਾਕੀਸੀਦਾਦਿਲਦੁਖਾਵੇ॥

ਨਖਾਨਹਖਮਰ ਬਾਜਨਾਰਹਜਨੀ॥ ੩੧॥

ਨਕਰਾਲਖਨੇਜੋਏ ਨਧਾਰਾਮਾਰੇ॥ (ਅ॥) ਦੇਸੁਕੇਪਾਸਨਾਜਾਵੇ॥

ਬਨਾਕਸ ਦੁਆਰੇ ਨਗੇਯਦ ਸੁਖਨਾ॥

ਸਾਬਨਕੀਮਾ ਦੀ ਅਰਜਾਦੇ ਨਕਰੇ ਬਾਤ॥

ਬਖਾਹਸ ਖਰਾਸੀਨ ਜੋਇਦ ਸੁਖਨਾ॥ ੩੩॥

ਸਾਬਇਛਾ ਛਿਲਣੇਦੇ ਨਾਵੁਦੇ ਬਾਤ (ਅਥਾਹੋ) ਕਿਸੀਨੂੰ ਦੁਖਾਵਣੇ ਦੀ ਇਛਾ
[ਨਕਰੇ॥]

ਬਕਦ ਕਾਰਕਸ ਦਰਨ ਦਾਦੇਦ ਪਾਇ॥

ਵਿਚ ਬੁਰੇਕੀਮ ਕਿਸੀਦੇ ਨਾ ਦੇਵੇ ਪੇਰ॥

ਕਿਓ ਪਾਇ ਲੰਗਸਤੁ ਗੋਈ ਬਜਾਇ॥ ੩੩॥

ਜੇ ਓਹ ਪੇਰਾਬੀ ਲੰਕਾਪੇ ਤੂੰ ਕਹੇ ਠੀਕ ਠੀਕ -

ਬਦੁਜ ਦੀ ਮਾਥਾ ਰਾਨ ਮਾਲੂਦ ਹ ਦਸਤ॥

ਸਾਬ ਚੋਰੀਦੇ ਪਦਾਰਥਾਦੇ ਨਕਰੇ ਗੀਦੇ ਹਥਾਨੂੰ॥

ਬਖੁਰਸੇ ਹਰਾਮੇ ਕੁਸ਼ਾਯ ਦਨ ਦਸਤ॥ ੩੪॥

ਸਾਬ ਖਾਣੇ ਹਰਾਮਦੇ ਖੋਲੇਨ ਹਥਾਨੂੰ॥

ਬਖੁਦ ਦਸਤ ਖਾਹੀਦ ਨਗੀਰੀਦ ਮਾਲਾ॥

ਸਾਬ ਆਪਣੇ ਹਥਾਂਦੇ ਨਹੀਚਾਹੇ ਅਤੇ ਨਾ ਪਕੜੇ ਮਾਲ ਕਿਸੀਦਾ॥

ਨ ਰਯਤ ਖਰਾਸੀ ਨ ਮਾਜਿਜ ਜਵਾਣਾ॥ ੩੫॥

ਨ ਪਰਜਾਨੂੰ ਛਿਲੇ ਅਤੇ ਨ ਗਰੀਬਾਨੂੰ ਦੁਖ ਦੇਵੇ॥

ਦਿਗਰ ਜਨਨ ਖੁਦ ਦਸਤ ਅੰਦਾਖਤਨ॥

ਬਿਗਾਨੀ ਇਸਤੀਨੂੰ ਨ ਆਪਣਾ ਹਥ ਫਾਲਣਾ॥

ਰਯਤ ਖੁਲਾਸਾਹ ਨ ਬਰਤਾਖਤਨ॥ ੩੬॥

ਪਰਜਾਨੂੰ ਖੁਸੀ ਦੇਖਕੇ ਨ ਉਪਰ ਉਸਦੇ ਚੜਤ ਕਰਨੀ॥

ਬਖੁਦ ਦਸਤ ਰਿਸਵਤ ਨ ਮਾਲੂਦ ਹ ਕਰਦਾ॥

ਆਪਣੇ ਹਥ ਵਡੀ ਨਾਲ ਨਹੀ ਗੀਦੇ ਕੀਤੇ ਜਿਸਨੇ॥

ਕਿ ਅਜ ਸਾਹ ਦੁਸਾਮਨ ਬਰਾਵਰਦ ਗਰਦਾ॥ ੩੭॥

ਜੇ ਸਤੁ ਬਾਦਸਾਹਸੇ ਬਾਹਰ ਲਿਆਇਆ ਧੂੜਾ॥

ਨ ਜਾਏ ਮਦੁਰਾ ਦਿਹਾਦ ਵਫ਼ਤ ਜੀਰਾ॥

ਨ ਜਾਗਾ ਯਤੁ ਕੇਤਾਈ ਦੇਵੇ ਵਖਤ ਜੁਧਾਦੇ॥

ਬਬਾਰਸ਼ ਵਿਹਦੁ ਤੇਭੁ ਤਰਕਸ਼ ਖਤੀਰਾ॥੩੮॥

ਬਰਖਾ ਬਰਖਾਵੇ ਤਲਵਾਰ ਅਤੇ ਤਰਕਸਸੇ ਤੀਰਾਂਦੀ॥

ਨਰਾਮਸ਼ੁ ਵਿਹਦੁ ਅਸਪਰਾ ਵਕਤ ਕਾਰਾ॥

ਨਾਅਰਾਮਦੇਵੇ ਘੋੜੇਕੇ ਤਾਈ ਵੇਲੇ ਕੀਮਦੇ॥ਅ॥ ਵੇਲੇਯੁੱਧਦੇ॥

ਨਜਾਇਸ਼ ਅਦੁਰਾ ਵਿਹਦੁ ਦੁਰਦਿਯਾਰਾ॥੩੯॥

ਨੀਜਾਗਾ ਸਤੁਕੇ ਤਾਈ ਦੰਦੇਵਿਚ ਵੇਲਾਇਤਦੇ॥

ਕਿ ਬੇਵਸਤ ਓਹਸਤੁਰੇ ਪੁਰ ਹਨਰਾ॥

ਜੇਬਿਨ ਹਥਾਸੇਓਹਏ ਅਤੇ ਕਹੇਤੂੰ ਭਰਿਆਹੋਇਆ ਹਨਰਾਵਾਹੇ॥

ਬਆਲਵਗੀ ਦਰ ਨ ਬਸਤਨ ਕਮਰਾ॥੪੦॥

ਵਸਤੇ ਠੀਵੇ ਕੀਮਾਂਦੇ ਵਿਚਨ ਬੀਨਦੀ ਕਮਰਾ॥

ਨਗੇਯਦ ਕਸੇ ਬਦ ਸਖਨ ਜੀ ਜਬਾ॥

ਨਹੀਕਹੇ ਕਿਸੀਨੂੰ ਖੋਟਾ ਬਚਨ ਇਸਰਸਨਾ ਸੇ॥

ਕਿਓ ਬੇਜਬਾਨ ਅਸਤੁਜਾਹਰ ਜਹਾਨ॥੪੧॥

ਜੇਓ ਬਿਨ ਜੁਬਾਨਦੇਹੈ ਜਗਤ ਵਿਖੇ ਪਗਟਾ॥

ਸੁਨੀਦਨ ਨ ਬਦ ਸਖਨ ਕਸਰਾ ਬੋਰੇਸਾ॥

ਸੁਣੇ ਨਹੀ ਖੋਟਾ ਬਚਨ ਕਿਸੀਕਾ ਸਵਣੇ ਵਿਖੇ॥

ਕਿਓ ਹਸਤ ਬੋਰੇਸਾ ਗੋਈ ਬਹੇਸਾ॥੪੨॥

ਜੇਓ ਆਦਮੀਏ ਬਿਨ ਸਰਵਟਾ ਬੀ ਤੂਕਹੈ ਸਾਬਹੇਸਦੇ॥

ਕਿਪਸਪਰਦਹ ਚਗਲੀ ਸੁਨੀਦਨ ਨ ਕਸਾ॥

ਜੇਪਛੇ ਪੜਦੇ ਚੁਗਲੀ ਸੁਣੇਨਹੀ ਕਿਸੇਦੀ॥

ਵਜਾਖਦ ਸਨਾਸੀ ਕਿਗੋਈ ਸਹਸਾ॥੪੩॥

ਉਸਕੇਤਾਈਆਪਤੂੰ ਪਛਾਣੀਜੇਕਹੀਤੂੰ ਬੇਬਦਸਹਏ॥

ਕਸੇਕਾਰ ਬਦਰਾ ਨ ਗੀਰਦ ਬੋਇ॥

ਕਿਸੇਕੀਮਖੋਟੇਦੀ ਨਹੀਜੁਰੀਧਤਾ ਲੇਵੇ॥

ਕਿਓ ਹਸਤ ਬੇਬੀਨੀਵੇ ਨੇਕਖੋਇ॥੪੪॥

ਜੇਓ ਆਦਮੀਏ ਬਿਨ ਨਕਬੀ ਅਤੇ ਭਲੇ ਸੁਭਾਇਵਾਲਾ॥

੨੬

ਨਹਉਲੇਦਿਗਰਹਸਤਰੀਰਅਜਪੁਵਾਇ॥

ਨਹੀਭੁੰਦੁਸਰੇਦਾਪੈ ਬਿਨਵਾਹਿਗੁਰੂਸੇ ਉਸਨੂੰ ਕਿਸੇਦਾ॥

ਕਿਹਿਮਤੁਵਰਾਂਰਾ ਵਰਾਰਦ ਸਿਪਾਇ॥ ੪੫॥

ਜੇਹੁਰਮਿਆਕੇਤਾਈਲਿਆਵੇਪੈਰਸੇ (ਅਥਤ) ਸੂਰਮਿਆਨੂੰ ਜੁਧਵਿਚਜੀਤੇ॥

ਬਹੁਸਅੰਦਰਅਇਦਹਮਹਵਕਤਜੀਗਾ॥

ਵਿਚਹੋਸਦੇ ਆਵੇਤਮਾਮ ਵੇਲੇਜੁਧਦੇ (ਅ॥) ਹਰਵੇਲੇਤਕਫਾਰੇ॥

ਕਿਕੋਸਸਕੁਨਦਓਬਤੀਰੇਤੁਫੰਗਾ॥ ੪੬॥

ਜੇਚਲਾਕੀਕਰੇ ਓਆਵਾਮੀ ਨਾਕਤੀਰ ਅਤੇਬੰਦੂਕ ਚਲਾਵਏਦੇ॥

ਕਿਦਰਕਾਰੰਇਨਸਾਫਓਹਿਮਤਅਸਤੁ॥

ਜੇ ਵਿਚ ਕੰਮ ਨਿਆਉਦੇ ਓਜਦੀਹਿਮਤਚਾਹੀਦੀਏ॥

ਕਿਦਰਪੇਸਗੁਰਬਾਇਓਆਜਜਅਸਤੁ॥ ੪੭॥

ਜੇਅਗੇਗਰੀਬਾਦੇ ਓਆਜਜਪੈ (ਅਥਤ) ਗਰੀਬਉਪਰਜੋਰਨਹੀਕਰਦੇ॥

ਨਹੀਲਹਕੁਨਦਵਕਤਦਰਕਾਰਜੀਗਾ॥

ਨ ਬਹਨਾ ਕਰੇ ਵੇਲੇ ਅੰਦਰ ਜੁਧਦੇ

ਨਹੀਬਤਕੁਨਦਦੁਸਮਾਨਬੇਸੁਆਰਾ॥ ੪੮॥

ਨਾ ਭੋਕਰੇ ਸੁਰੂਆ ਬੇਓਕਰੇਤੇ

ਹਰਾਂਕਸਕਜੀਹਸਤਰਾਜੀਬੁਵਦਾ॥

ਜੇਕੋਈਇਨਅਠਸੇਸੂਰਮਾਹੋਵੇ (ਅ॥) ਜਿਸਵਿਚਏਹਅਠਭਾਫਾਏਜਾਵੇ॥

ਬਕਾਰੇਜਹਾਂਰਜਮਸਾਜੀਕੁਨਦਾ॥ ੪੯॥

ਵਿਚਕੰਮ ਜਹਨ ਦੇ ਜੁਧਦਾਸਮਾਨ ਕਰੇ॥

ਕਸੇਰਾਕਿਈਕਾਰਆਯਾਦਪਸੰਦਾ॥

ਜਿਸਕਿਸੇਕੇਤਾਈ ਏ ਕਾਰ ਆਵੇ ਪਸਿੰਦ

ਵਜਾਂਸਾਹਬਾਸਦਜਹਾਂਅਰਜਮੰਦਾ॥ ੫੦॥

ਓਭਾਵਸਾਹੋਵੇਅਤੇ ਜਹਨ ਦੇ ਮਰਤਬੇਵਾਲੇਹੋਵੇ॥

ਸੁਨੀਦਈਸੁਖਨਦੁਹਿਰਦਾਨਵਜੀਗਾ॥

ਸੁਣੀਏਹੁ ਬਤ ਜਮਾਨੇਦੀ ਅਕਲਾਵਾਲੇ ਵਜੀਰਨੇ॥

ਕਿ ਅਕਲ ਸਨਾਸ ਅਜਤੁ ਪੰਜਕ ਪਜੀਰਾ ॥ ੫੧ ॥ ੩੭

ਜੇ ਅਕਲ ਦੇ ਪਛਨਫੇ ਵਾਲਾ ਹੈ ਅਤੇ ਉਜਰਦੇ ਕ ਬੁਲ ਕਰ ਨੇ ਵਾਲਾ ਹੈ ॥

ਕਸੇ ਰਾ ਸਨਾਸੀ ਬ ਅਕਲੇ ਬਿਹੀ ॥

ਜਿਸ ਕਿਸੇ ਦੇ ਤਾਈ ਪਛਨਫੇ ਤੁਸੀ ਜਾਬ ਬਧ ਦੇ ਫਲਾ

ਮਰੇਹਾ ਬਿ ਦਿਹ ਤਾਜ ਤਖਤ ਮਹੀ ॥ ੫੨ ॥

ਅਤਸੇ ਕਰਕੇ ਜਾਬ ਉਸਕੇ ਦੇਵੇ ਤੁਸੀ ਮੁਕਟ ਅਤੇ ਸਿਧਾਸਫਾ ॥

ਬਿ ਬਖਸੀ ਤੁ ਚਿਰ ਮਹੀ ਤਖਤ ਤਾਜ ॥

ਦੇਈ ਤੂੰ ਉਸਕੇ ਤਾਈ ਪਾਸ ਪਿਥਵੀ ਦਾ ਸਿਧਾਸਫਾ ਅਤੇ ਮੁਕਟ

ਗਚ ਚਿਰਾ ਸਨਾਸੀ ਗਇਲਤ ਨਿਵਾਜਾ ॥ ੫੩ ॥

ਜੇਕਰ ਉਸਕੇ ਤਾਈ ਪਛਨਫੇ ਤੂੰ ਫੀਖਤ ਦੇਵੇ ਚਿਰਾਉ ਦੇਵਾਲਾ ॥

ਬਹੇਰਤ ਦਰਾਮਦ ਬਪਿਸਰਾ ਚਹਾਰਾ ॥

ਵਿਚ ਹੈ ਗਲੀ ਦੇ ਆਏ ਬਾਦਸਾਹ ਦੇ ਚੌਥੇ ਬੇਟੇ ॥

ਕਸੇ ਗੋਇ ਗੀਰਦ ਹਮਰ ਵਕਤ ਕਾਰਾ ॥ ੫੪ ॥

ਜੇਕੋਈ ਖੁਦੇ ਪਕਵੇ ਤਮਾਮ ਵੇਲੇ ਕੀਮਤੀ (ਅ:) ਜਿਸਮੇ ਅਠ ਗੁਣ ਹੋਵੇ ਕੀਮਤੀ ਦੀ

ਹਰਾਂ ਕਸ ਕਿਰਾ ਅਕਲ ਯਾਰੀ ਦਿਹਦਾ ॥ (ਖੁਦੇ ਲੇਵੇ)

ਜਿਸ ਕਿਸੇ ਦੇ ਤਾਈ ਬੁਧੀ ਯਾਰੀ ਦੇਵੇ ॥

ਬਕਾਰੇ ਜਹਾਂ ਕਾਮਗਾਰੀ ਕਨਦਾ ॥ ੫੫ ॥

ਵਿਚ ਕੀਮਤ ਹਨ ਦੇ ਮੁਦਾ ਹਾਸਲ ਕਰੇ ॥ (ਅ:) ਬਾਦਸਾਹ ਹੋਵੇ ॥

ਬਿਦਿਹ ਸਾਕੀਆ ਸਾਗਰੇ ਸਬਜਰੀਗਾ ॥

ਦੇਹ ਦੇ ਸੁਖਈਆ ਪਿਆਲਾ ਹਰੇ ਚੰਗਵਾਲਾ

ਕਿਮਾਰਾ ਬਕਾਰਸਤ ਦਰ ਵਕਤ ਜੀਗਾ ॥ ੫੬ ॥

ਜੇਮੇਨੇ ਤਾਈ ਰਾਹੀ ਦਾਹੇ ਵਿਚ ਵੇਲੇ ਜੁਧਦੇ ॥

ਬਿਦਿਹ ਸਾਕੀਆ ਸਾਗਰੇ ਨੈਨ ਪਾਨਾ ॥

ਦੇਹ ਦੇ ਸੁਖਈਆ ਪਿਆਲਾ ਨੇੜਾ ਦੇ ਚੰਗ ਦੇਵੇ ਵਾਲਾ

ਕਨਦ ਪੀਰਸਦ ਸਾਲਹ ਰਾਨ ਉਜਵਾਨਾ ॥ ੫੭ ॥

ਅੰਸਾ ਪਿਆਲਾ ਜੇਕਰਦਾ ਹੈ ਬੁਧੇ ਸੇਬਰਸ ਦੇ ਤਾਈ ਬਾਰਾਂ ਬੁਰਸਾਦਾ ॥ (ਪ੍ਰਯੋਜਨਾ)

(ਹੋਸ਼ੀ ਰਹਿ ਜੇਬ) ਜੇਬਾਦਸਾਹ ਅਕਲ ਵਾਲੇ ਹੁੰਦੇ ਅਪਨੇ ਬੀਟਿਆਈ ਪੀ ਪਿਆ

ਸੁਖਈਆ ਪਿਆਲਾ ਨੇੜਾ ਦੇ ਚੰਗ ਦੇਵੇ ਵਾਲਾ

ਹਿਕਾਯਤ

ਕਥਾ



ਚੌਥੀ ਚਲੀ

੧ ਚਿਟਾਹਿਗੁਰੂਜੀਕੀਫਤੇ॥

ਕਿਰੇਜੀਦਿਹਿਦਮਸਤਰਾਜਿਕਰਹੀਮਾ॥

ਜੋਰੇਜੀਕੇਦੇਵੇਵਾਲਾਹੈਅਤੇਰਿਜਕੇਦੇਵੇਵਾਲਾਹੈਅਤੇਕ੍ਰਿਪਾਧੂਪੇ

ਚਿਹਾਈਦਿਹੋਗਹਿਨਮਾਏਕਰੀਮਾ॥੧॥

ਖਲਾਸੀਕੇਦੇਵੇਵਾਲਾਹੈਤੋਕੇਦਿਖਾਲਵੇਵਾਲਾਅਤੇਕ੍ਰਿਪਾਦੇਕਰਨੇ

ਦਿਲਅਫਜਾਇਦਾਨਸਦਿਹੋਦਾਦਗਰ॥

ਵਾਲਾਹੈ

ਦਿਲਦੇਵਧਾਉਦੇਵਾਲਾਅਕਲਦੇਦੇਵੇਵਾਲਾਅਤੇਨਿਆਉਦੇਕੁਵੇਵਾ

ਰਜਾਬਖਸਰੇਜੀਦਿਹੋਹਰਹੁਨਗ॥੨॥

ਭਾਪੈਗੁਰੂ

ਖੁਸੀਕੇਬਖਸਵੇਵਾਲਾਹੈਜੀਕੇਦੇਵੇਵਾਲਾਹਰਇਕਹੁਨਰਵਾਲੇਕੋਤਈ

ਹਿਕਾਯਤਸੁਨੀਦਮਖਕੇਨੇਕਜਨਾ॥

ਕਹਾਣੀਸੁਣੀਹੈ॥ਹਮਨੇਇਕਭੁਲੀਇਸਤਰੀਦੀ॥

ਰਸਮਸਾਦਕਰੇਬਜਾਏਰਾਮਨਾ॥੩॥

ਮਾਨਿਦਸਰੂਦੇਸਗੀਬਇਸਦੇਅਤੇਜੋਸੇਪ੍ਰਿਧਨਹਰਦੇਕੁਲਵਾੜੀਸੇਤਦੀ

ਕਿਓਰਾਪਦਰਗਾਜਹੈਉਤਰਦੇਸਾ॥

ਜੋਉਸਦਾਪਿਤਾਗਾਜਾਉਤਰਦੇਸਦਾਸੀ

ਬਸੀਰੀਜਬਾਹਮਰਇਖਲਾਸਕੇਸਾ॥੪॥

ਜਾਬਮਿਠੀਜੁਬਾਨਦੇਬੋਲਵੇਵਾਲਾਭੀਦੇਸੁਰੀਦੇਕੁਲਵਾਲਾਦਨਾਅਰ

ਕਿਆਮਦਬਰਾਏਹਮੇਗੁਜਲਗੀਗਾ॥

ਭਾਮਿਦ

ਜੋਆਏਵਾਸਤੇਤਮਾਮਇਸਨਾਨਗੀਗਾਦੇ॥

ਚਕੇਬਰਕਮਾਹਮਚਤੀਰੋਤਟੀਗਾ॥੫॥

ਜੋਸੇਗੀਰਕਾਵਤੇਜੋਸੇਗੋਲੀਬੰਦੁਕਦੀਆਉਦੀਹੈ॥ਅ॥ਐਸੇਫੇਰੀ

ਆਏ॥

ਹਮੀ ਖੁਸਤੁ ਕਿਓਰਾ ਸੰਬਰ ਕਨਮਾ।
 ਅਸੇ ਚਾਹਕੀਤੀਜੇ ਉਸਦਾ ਸੁਅੰਬਰ ਕਰਮੇ॥
 ਕਸੇ ਈ ਪਸੰਦ ਆਯਦ ਓਰਾ ਦਿਹਮਾ। ੬॥
 ਜੇਕੋਈ ਇਸਲਕਕੀਦੇ ਪਸੰਦ ਆਵੈ ਉਸਕੇ ਤਾਈ ਦੇਵਾਮੇ॥
 ਬਿਗੁਫਤਾ ਕਿਏ ਦਖਤਰੇ ਨੇਕ ਤਨਾ।
 ਰਾਜੇ ਨੇਕਾ-ਜੇਏ ਬੇਟੀ ਭਲੇ ਸਰੀਰਵਾਲੀ॥
 ਕਸੇ ਤੇ ਪਸੰਦ ਆਇਦ ਓਰਾ ਬਿਕੁਨਾ। ੭॥
 ਜੇ ਆਦਮੀ ਤੇਰੇ ਪਸੰਦ ਆਵੈ ਉਸਕੇ ਤਾਂਈ ਕਰਤੀ॥
 ਨਿਸਾਦੀਦ ਬਰਕਾਖਿ ਓਹਫਤਖਨਾ।
 ਬਿਠਾਲਿਆ ਉਪਰ ਚੁਬਾਰੇਦੇ ਉਸਕੇ ਸਤਫਤ ਵਾਲੇਦੇ॥
 ਰਮਾਹੇਮਹੀ ਆਫਤਾ ਬੇਖਮਨਾ। ੮॥
 ਮਾਨਿਦ ਚੰਦਮਾ ਪ੍ਰਥੀਦੇ ਅਤੇ ਜੇਸੇ ਸੂਰਜ ਖਮਨਦਾ ਹੀਦਾਰੈ-ਅੇਸੇ ਸੋਭਪਾਉ
 ਦਹਾਨੇ ਦਹਲਰਾ ਦਹਨ ਬਰਕੁਸਾਵਾ। (ਦੀਸੀ॥)
 ਢੋਲੀਆਨੇ ਢੋਲਾਦੇ ਮੂਹਨੂੰ ਖੋਲਿਆ (ਅ:) ਢੋਲਬਜਾਏ॥
 ਜਵਾਬੇ ਸਖਨਰਾ ਓਜਰ ਬਰ ਨਿਹਾਵਾ। ੯॥
 ਜਵਾਬ ਬਾਤਦੇਤਾਈ ਉਜਰ ਉਪਰ ਰਖਿਆ॥
 ਕਿਨੇਕੋ ਬੁਝੀ ਰਾਜਹਾ ਬੇਸੁਮਾਰਾ॥
 ਕਿਆਨੇਕਹੈ ਦੇਖਤੂੰ ਰਾਜਿਆ ਬੇਓਕਕਨੂੰ॥ (ਅ:) ਕਿਆ ਸੁੰਦਰ ਰਾਜੇਹੈ॥
 ਕਿਵਖਤੇ ਤਰਵਦ ਬਾਅਮੁਖਤਹ ਕਾਰਾ। ੧੦॥
 ਜੇਵੇਲੇ ਜੁਧਦੇ ਸਿਖੇਹੋਏ ਕੀਮਤ ਅਤੇ ਸਭਤਰਾਂ ਬਧਵਾਲੇ॥
 ਕਸੇ ਤੇ ਪਸੰਦ ਆਯਦਤ ਈਜਮਾਂ॥
 ਜੇਕੋਈ ਪਸੰਦ ਆਵੈ ਤੇਰੇਕੋ ਇਨਾਵਿਚੇ॥
 ਵਜਾਂ ਪਸ ਬਦਾਮਾਦੀ ਆਯਦ ਹਮਾਂ॥ ੧੧॥
 ਉਸਸੇਪਛੇ ਮੇਰਾਜਵਾਈ ਆਵੈ ਓਹੀ॥ (ਅ:) ਉਸਨੂੰ ਮੇਰਾਵਾਈ ਬਠਵਾ
 ਨਮਾਇਦ ਬਓਰਾਜਹਾ ਬੇਸੁਮਾਰਾ॥
 ਦਿਖਾਲੇ ਉਸਕੇਤਾਈ ਰਾਜੇ ਬੇਓਕਕੋ॥

ਹਮ ਅਖਰ ਅਕੇ ਰਾਜ ਹੇ ਬੁਭਟ ਸਿੰਘ॥

ਭੀ ਭਿਕਨੂੰ ਇਕ ਰਾਜ ਬੁਭਟ ਸਿੰਘ

ਪਸਿੰਦਾ ਅਮਦ ਸੁਹਾਮਰੁ ਗੁਰੁ ਹਾਂ ਨਿਹੰਗਾ॥੧੩॥

ਪਸਿੰਦਾ ਆਇਆ ਉਸਨੂੰ ਮਾਨਿੰਦ ਸੰਸਾਰ ਦੀ ਗਜ਼ਫੇਦਾਲ

ਹਮ ਹਿਮਦ ਹੇ ਰਾਜ ਹਾ ਪੇਸ ਖਾਂਦਾ॥

ਰਾਜੇ ਨੇ ਸਭ ਚੰਗੇ ਚੰਗੇ ਰਾਜੇ ਅਗੇ ਜਾਏ॥

ਜੁਦਾ ਬਰ ਜੁਦਾ ਦੋਰ ਮਜਲਸ ਨਿਸਾਂਦਾ॥੧੪॥

ਫਕੇ ਫਖਰੇ ਪੰਗਤੀ ਸਭਾ ਵਿਚ ਬੈਠਾਏ

ਬਿਪਰਸੀਦ ਕਿ ਏ ਦੁਖ ਤਰੇ ਨੇਕ ਪੋਇ॥

ਰਾਜੇ ਨੂੰ ਪਾਇਆ ਅਤੇ ਬੇਈ ਸਭ ਸੁਭਾਉ ਫਾਲੀ

ਤੁਰਾ ਕਸ ਪਸਿੰਦਾ ਅਯਦ ਅਜੁਈ ਹਾਂ ਬਜੋਇ॥੧੫॥

ਤੇਰੇ ਤਾਈ ਜੋੜੇਈ ਪਸਿੰਦਾ ਆਏ ਇਨ ਵਿਚੋਂ ਹੁਦ

ਰਵਾਂ ਕਰਦ ਜੁਨਾਰ ਦਾਰਾਂ ਪੇਸਾ॥

ਰਾਜੇ ਨੇ ਰੋਜਿਆ ਬ੍ਰਹਮਦਾ ਕੇ ਤਾਈ ਅਗੇ॥

ਬਿਗੋਲਦ ਕਿਈ ਰਾਜ ਹੇ ਉਤਰ ਦੇਸਾ॥੧੬॥

ਬ੍ਰਹਮਦ ਕਾਹਿਦੇ ਦੇ ਜੋਏ ਰਾਜ ਉਤਰ ਦੇਸ ਦਾ ਪੈ॥

ਕਿ ਓਨਾ ਮ ਬਸਤ ਸਬ ਫਤਰਾ ਮਤੀ॥

ਜੇ ਉਸਨੇ ਨਾਮ ਰਖਿਆ ਤੇ ਇਸਦਾ ਫਤਰਾ ਮਤੀ॥

ਦੁਮਾਰੇ ਫਲਕ ਆਫਤਾ ਬੇ ਮਹੀ॥੧੭॥

ਮਾਨਿੰਦ ਚੰਦ੍ਰਾਮੇ ਅਕਾਸ ਦੀ ਸ੍ਰੀ ਦੁ ਮਾਨਿੰਦ ਸੂਰਜ ਪ੍ਰਥਵੀ ਤੇ ਪ੍ਰਕਾਸ ਫਾਲੀ

ਅਜੀ ਰਾਜ ਹਾ ਕਸ ਨਿਆ ਮਦ ਨਜਰ॥

ਇਨ ਰਾਜਿਆ ਸੇ ਕੋਈ ਨਾ ਆਇਆ ਨਜਰ ਵਿਚ ਫਤਰਾ ਮਤੀ ਦੇ॥

ਦੁਜਾਂ ਪਸ ਅਜੀ ਹਾ ਬੁਬੀ ਪਰ ਗੁਹਰਾ॥੧੮॥

ਫੇਰ ਇਨ ਵਿਚੋਂ ਹੀ ਦੇਖੋ ਅਤੇ ਬੁਧੀ ਮਾਨ

ਨਜਰ ਗੁਰਦ ਬਰ ਰਾਜ ਹਾ ਨਾਜਨੀ॥

ਨਿਗਾਹ ਕੀਤੀ ਉਪਰ ਰਾਜਿਆ ਦੇ ਇਸਤੀਨੇ॥

ਨਜਰ ਕਰਦ ਬਰ ਰਾਜ ਹ ਨਾਜਨੀ॥

ਨਿਗਾਹ ਕੀਤੀ ਉਪਰ ਰਾਜਿਆ ਦੇ ਦਿਸਤੀਨੇ

ਪਸੰਦ ਜ ਨਿਯਾਮ ਦੇ ਕਸੇ ਦਿਲ ਨਗੀ॥੧੯॥

ਪਸੰਦ ਉਸਨੂੰ ਨਾ ਆਇਆ ਕੋਈ ਦਿਲਦਾ ਨਗੀਨਾ॥

ਦੀ ਬਰਵਜਾਂ ਰੋਜ ਮਉਕੂਫ ਗਸਤਾ॥

ਸਭ ਉਸਦਿਨ ਉਠ ਗਈ

ਕਿ ਨਾਜਮ ਬ ਬਰਖਾਸਤ ਦਰਵਾਜ਼ਾ ਬਸਤਾ॥

ਜੇ ਮਜਲਸ ਉਠ ਖੜੀ ਹੋਈ ਦਰਵਾਜ਼ਾ ਬੰਦ ਕਰ ਲਿਆ ਛਤ੍ਰਾ ਮਤੀਨੇ

ਕਿ ਰੋਜੇ ਦਿਗਰ ਸਾਹਿ ਜਰਰੀ ਸਿਪਰਾ॥

ਜੇ ਦੂਸਰੇ ਦਿਨ ਬਾਦਸਾਹ ਸੁਨੇਹਰੀ ਫਾਲਵਾਲਾ॥(ਅ) ਸੂਰਜ

ਬਰ ਮਉਰੀਗ ਬਰ ਆਮ ਦੇ ਚਰ ਉਸਨ ਗੁਹਰਾ॥੨੦॥

ਉਪਰ ਤਖਤ ਦੇ ਆਇਆ ਮਲਿਕ ਮੋਤੀ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਵਾਲੇ ਦੀ

ਦਿਗਰ ਰੋਜ ਹਮ ਰਾਜ ਹ ਖਾਸਤੀ ਦਾ॥

ਦੂਸਰੇ ਦਿਨ ਸਭ ਰਾਜਿਆਂ ਨੂੰ ਬੁਲਾਇਆ॥

ਦਿਗਰ ਗੁਨ ਹ ਬਾਜਾਰ ਆਰਾਸਤੀ ਦਾ॥੨੧॥

ਦੂਸਰੀ ਰਾਤ ਬਾਜਾਰ ਸੁਫਾਰਿਆ॥(ਅ:) ਦੂਜੀ ਰਾਤ ਸਭ ਬੈਠਾਈ

ਨਜਰ ਕੁਨ ਬਰਵੇ ਤੁਏ ਦਿਲ ਰੁਬਾਇ॥

ਫੇਖਣ ਕਰੋ ਤੂੰ ਉਪ ਮੂੰਹ ਇਨਾਰੇ ਦੇ ਦਿਲ ਦੇ ਚੁਰਾਵਾ ਵਾਲੀ॥

ਕਿਰਾਤੇ ਨਜਰ ਦਰ ਬਿਯਾਲ ਦੇ ਬਜਾਇ॥੨੨॥

ਜੇ ਕੋਈ ਤੇਰੀ ਨਜ਼ ਵਿਚ ਆਵੇ ਅੰਦਰ ਜਾਗਾ ਦੇਸਰੇ॥

ਬ ਪਹਿਨ ਅੰਦਰ ਆਮ ਦੇ ਗੁਲੇ ਅੰਜਮਨ॥

ਵਿਚ ਮੇਦਾਨ ਦੇ ਆਈ ਫੂਲ ਗੁਲਾਬ ਸਭਾ ਦਾ॥

ਕਿ ਜਰ ਆਬ ਰੀਗ ਅਸਤ ਸੀਮਾ ਬਤਨਾ॥੨੩॥

ਕਿਸ ਵਾਸਤੇ ਜੇ ਰੀਗ ਜੇਨੇ ਜੇਸਾਹੇ ਅਤੇ ਸਰੀਰ ਪਾਰੇ ਜੇਸਾ ਚੰਚਲ

ਰਵਾਂ ਗਸਤ ਦਰ ਰਾਜ ਹ ਬੇਸਮਾਰ॥

ਤੁਹ ਦੀ ਹੋਈ ਵਿਚ ਰਾਜਿਆ ਬਹੁਤੇ ਆਏ॥

ਗੁਣੇ ਸੁਰਖੁ ਚੁੰ ਗੁਣਜੇ ਨਉ ਬਹਾਰਾ ॥ ੨੫ ॥
 ਗੁਣਾ ਬਹਾਰੁ ਫੁਲ ਸੁਰੇ — ਰੰਗ ਜੋਸੇ ਬਹਾਰੁ ਬਲੀਤ ਰੁਤ ਵਿਚ ਖਿਜਾ ਹੁੰਦਾ

ਬਦਜ ਦੀਨ ਦਿਲ ਰਾਜਹਾਂ ਬੇਸੁਮਾਰਾ ॥
 ਚਰਾਏ ਦਿਲ ਰਾਜਿਆ ਬਹੁਤਿਆ ਦੇ ॥

ਬਿਅਫ ਤੰਦ ਜਿਮੀ ਚੁੰ ਘਲੇ ਕਾਰਜਾਹਾ ॥ ੨੬ ॥

ਗਿਰਦੇ ਹੋਰਾਜੇ ਦੇਖਕੇ ਉਸਨੂੰ ਮੁ — ਬੀ ਉਪਰ ਜਿਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਸੂਰਮੇ ਲੜਾਈ

ਬਿ ਜਵ ਬਾਂਗ ਬਰਵੇ ਕਿਖਾਰੁਨ ਖੇਸਾ ॥
 ਬਹਮਣਾਨੇ ਅਵਾਜ਼ ਕੀਤ ਉਪਰ ਜਿਆ ਦੇ — ਫੜਾ ਮਤੀ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ॥

ਕਿਈ ਉਮਦਹੇ ਰਾਜਹਾਂ ਉਤਰ ਦੇਸਾ ॥ ੨੭ ॥
 ਜੋ ਵੇਹੁ ਭੁਲਾ ਰਾਜਾ ਉਤਰੇ ਦੇਸਦਾ ਹੋ ॥

ਵਜਾ ਵਖਤਰੀ ਹਸਤ ਬਫਤਰਾ ਮਤੀ ॥
 ਉਸਦੀ ਬੋਲੀ ਏਹੀ ਫੜਾ ਮਤੀ ਇਸਦਾ ਨਾਮ ਹੋ ॥

ਚਮਾਹੇ ਫਲਕ ਹਮਚ ਹੁਰਪਰੀ ॥ ੨੮ ॥
 — ਜੋਸੇ ਚੰਦਮਾ ਅਕਾਸ਼ ਦਾ ਉਦ੍ਰੋਹ — ਭੂ ਮਾਨੰਦ ਅਪਫਰਾਦੀ ਉਦ੍ਰੋਹ ॥

ਦੁਅੰਬਰ ਦਰਮਦ ਚਮਾਹੇ ਫਲਕਾ ॥
 ਸਭਾ ਵਿਚ ਆਈ ਮਾਨੰਦ ਚੰਦਮਾ ਅਕਾਸ਼ ਦੀ ॥

ਫਰਿਸ਼ਤਹ ਸਿਫਤ ਚ ਚ ਜਾਤਸ ਮਲਕਾ ॥ ੨੯ ॥
 ਦੇਵਤਿਆ ਦੀ ਫਾਤਿਹਾਈ ਫਾਤਿਹੀ ਓਹ ਅਤੇ ਜਿਸਦਾ ਰੂਪ ਮਾਨੰਦ ਦੇਵਤਿਆ ਦੀ

ਕਿਰਾ ਦੁਇਲਤ ਇਕ ਬਾਲਸਾਰੀ ਦਿਹਦਾ ॥
 ਕਿਸਦੇ ਤਾਈ ਦੁਇਲਤ ਭਾਗਾ ਦੀ — ਮਤਾਈ ਦੇਵੇ ॥

ਕਿਈ ਮਾਹਰੇ ਕਾਮ ਗਾਰੀ ਕਨਦਾ ॥ ੩੦ ॥
 ਜੋ ਇਹ ਚੰਦਮਾ ਜੋਸੇ ਮੁਖਵਾਲੀ ਮੁਹਾਰ ਹੋਸਲਕਰੇ

ਪਸੰਦ ਆਮਦ ਓਰਾਜਹ ਜੁਭੁਟ ਸਿੰਘ ਨਾਮਾ ॥
 ਪਸੰਦ ਆਇਆ ਉਸਨੂੰ ਰਾਜ ਜੁਭੁਟ ਸਿੰਘ ਨਾਮੀ

ਕਿਰ ਉਸਨ ਤਬੀਅਤੁ ਸਲੀਖਤ ਮਦਾਮਾ ॥ ੩੧ ॥
 ਜੋ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਫਾਲੀ ਹੋ ਬੁਧੀ ਜਿਸਦੀ ਅਤੇ ਏਕਮ ਦੇ ਚੰਦਮਾ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇਖਦੇ

ਰਵਾਂ ਕਰਦੁ ਬਰਵੈ ਵਕੀਲਸੁ ਰਿਰਾ॥

ਉਸਿਆ ਉਸਦੇ ਪਾਸ ਵਕੀਲ ਬੁਧੀਮਾਨ ਵਡਾ ਭਰੀ॥

ਕਿ ਦੇ ਜਾਹਿ ਜਾਹਾਨੁ ਰਹਿਸਨ ਜਮਾਂ॥ ੩੩॥

ਜੇ ਦੇ ਬਾਦਸਾਹ ਦੇ ਬਾਦਸਾਹ ਸੰਸਾਰ ਵਿਚ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਵਾਲੇ॥

ਕਿ ਵੀ ਤਰਜੁ ਲਾਲਾਇ ਬਰਹੇ ਸਮਨ॥

ਜੇ ਇਹੁ ਸਰੂਪ ਗੁਲਾਲੇ ਵਾਲੀ ਅਤੇ ਚੰਬੇਲੀ ਦੇ ਪਤੇ ਵਰਗੀ ਚੁੰੜਾ॥

ਕਿ ਲਾਇਕੁ ਸਮਾਨੁ ਅਸਤੁ ਵੀਰ ਬਕੁਨ॥ ੩੪॥

ਜੇ ਲਾਇਕੁ ਆਪਕੀ ਹੈ ਇਸਕੇ ਤਾਈ ਵਰੇ ਤੁਸੀ॥

ਕਿ ਗਫਤਾਰੁ ਘਰੇ ਖਾਨੁ ਹੁਕਮੁ ਮਹਾਸਤੁ॥

ਸੁਭਟ ਸਿੰਘਨੇਕਹਾ ਜੇ ਇਕ ਮੇਰੇ ਘਰੇ ਚ ਇਸਤੀ ਹੈ॥

ਕਿ ਰਜਮੇ ਅਜੇ ਹਰ ਦੁਆਹੂ ਤਰਸਤੁ॥ ੩੫॥

ਜੇ ਨੇੜ ਉਸਦੇ ਦੇਨੇਹੀ ਹਰਨ ਨਾਲੇ ਚੁੰੜਾ ਹੈ॥

ਕਿ ਹਰਗਿਜੁ ਮਨੁ ਵੀਰਾ ਨਕਰਦੁ ਮਕਬੂਲ॥

ਜੇ ਕਬੀਲੇ ਇਸਕੇ ਤਾਈ ਨਹੀ ਕਬੂਲ ਕਰੂੰਗਾ

ਕਿ ਕਰਿਲੇ ਕੁਰਾਨੁ ਅਸਤੁ ਕਸਮੇ ਰਸੂਲ॥ ੩੬॥

ਜੇ ਕਸਮ ਕੁਰਾਨ ਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਸੁਰੀਦ ਰਸੂਲ ਦੀ ਹੈ॥

ਬਰੇਸੁ ਅੰਦਰੁ ਆਮਦੁ ਅਜੀਨੁ ਸਖਨ॥

ਛੜਾਮਤੀ ਦੇ ਕੰਨ ਵਿਚ ਆਇਆ ਖੋਟਾ ਬਚਨ ਸੁਭਟ ਸਿੰਘ ਵਾਲਾ॥

ਬਜੀਬਸੁ ਦਰੁ ਆਮਦੁ ਜਨੇ ਨੇਕੁ ਤਨ॥ ੩੭॥

ਵਿਚ ਗੁਸੇ ਦੇ ਆਈ ਇਸਤੀ ਭਲੇ ਸਰੀਰ ਵਾਲੀ॥

ਕਸੇ ਫਤਹੁ ਮਾਰਾ ਕਨਦੁ ਵਕਤੁ ਕਾਰ॥

ਜੇ ਕੋਈ ਮੇਰੇ ਤਾਈ ਜਿਤਣਾ ਕਰੇ ਵਿਚ ਲੜਾਈ ਦੇ॥

ਵਜ੍ਹਾ ਸਾਹਿ ਮਾਰਾ ਸੁਫੁਦੁ ਵੀ ਦਿਯਾਰ॥ ੩੮॥

ਉਸਸੇ ਪਿਛੇ ਫੀਸੇਰਾ ਖਾਇਦ ਹੋਵੇ ਇਸ ਵਲਾਇਤ ਦਾ ਮਾਲਕਾ॥

ਬਕੇਸੀ ਦੁਖੇ ਦਾਨੁ ਵੇਜੇਸੀ ਦੁਖੇ ਜੀਗ॥

ਚਲਾਕੀ ਕੀਤੀ ਮੇਦਾਨ ਦੀ ਅਤੇ ਤਿਆਗੀ ਕੀਤੀ ਜੁਧ ਦੀ॥

ਬਪੇਸੀਦ ਖੁਫਤਾਨ ਪੋਲਾਦ ਰੀਗਾ॥ ੩੮॥

ਪੋਲਾਦੀਆ ਸੰਜੇਆ ਫੁਲਾਦੀ ਲੋਹੇਦੇ ਰੀਗਾਦੀਆ॥

ਨਿਸਸਤਹ ਬਰਆ ਰਬ ਰੁਮਾਹੇ॥ ੩੯॥

ਬੇਰੀਏ ਉਪ ਉਸ ਰਬ ਦੇ ਸੋਸੇ ਚੰਦਮਾ ਅਤੇ ਸੂਰਜ ਹੋਤਾਹੇ॥

ਬਬਸਤੀਦ ਸਮਸੇਰ ਜੁਸਤੀਦ ਤੀਗਾ॥ ੪੦॥

ਬੀਨੀ ਤਲਵਾਰ ਅਤੇ ਚੁਫੇਰੀਰ (ਅ) ਤੀਰ ਚੁਫੇਰੇ ਤਕਸ ਵਿਚ ਪਾਏ॥

ਬਮੇਦਾ ਦਰਆਮਦ ਚੁਗਾਰੀ ਦਹ ਸੇਰਾ॥

ਵਿਚ ਮੇਦਾਨ ਦੇ ਅੰਦਰ ਆਈ ਮਾਨਿਦ ਸੇਰ ਗਜ਼ਰੇ ਵਾਲੇਦੀ॥

ਚੁਸੇਰ ਅਸਤੁ ਸੇਰ ਅਫਕਨੇ ਦਿਲ ਦਿਲੇਰਾ॥ ੪੧॥

ਮਾਨਿਦ ਸੇਰ ਦੀਏ ਅਤੇ ਸੇਰਾ ਦੇ ਸਿਟਵੇ ਵਾਲੀਏ ਦਿਲਦੀ ਸੂਰਮਾਹੇ॥

ਬਪੇਸੀਦ ਖੁਫਤਾਨ ਜੋਸੀਦ ਜੀਗਾ॥

ਪਾ ਲਈ ਸੰਜੇ ਅਤੇ ਗੁਸਬੀਤ ਲੜਾਈਦਾ॥

ਬਕੇਸੀਦ ਮੇਦਾ ਬਤੀਰੇ ਤੁਫੰਗਾ॥ ੪੨॥

ਚਲਾਕੀ ਕੀਤੀ ਵਿਚ ਲੜਾਈ ਦੇ ਸਾਬਤੀਰਾਂ ਅਤੇ ਬੰਦੂਕਾਦੇ॥

ਚੁਨਾ ਤੀਰ ਬਾਰੀਦ ਦਰਕਾਰ ਜਾਰਾ॥

ਮੇਸੀ ਤੀਰ ਬਰਜਾਏ ਵਿਚ ਜੁਧਾਏ॥

ਕਿਲਸਕਰ ਬਕਾਰ ਆਮਦਸ ਬੇਬੁਮਾਰਾ॥ ੪੩॥

ਜੇ ਲਸਕਰ ਵਿਚ ਕੰਮ ਦੇ ਆਇਆ ਬੇਅਤਿਹੀ॥

ਚੁਨਾ ਬਾਨ ਬਾਰੀਦ ਤੀਰੇ ਤੁਫੰਗਾ॥

ਮੇਸੇ ਬਨਾਦੀ ਬਕਾਰੇਈ ਤੀਰਾਂ ਅਤੇ ਬੰਦੂਕਾਦੀ

ਬਸੇ ਮਰਦਮ ਮਰਦਹ ਸੁਦ ਜਗਇ ਜੀਗਾ॥ ੪੪॥

ਬਹੁਤ ਸੂਰਮੇ ਮਰਦੇਹੋਏ ਸਾਗਾ ਲੜਾਈ ਵਿਚ॥

ਜਹੇਨਾਮ ਗਜ਼ ਸਿੰਘ ਦਰਆਮਦ ਬਜੀਗਾ॥

ਜਾਵਸੀਹ ਜਿਸਕ ਨਾਮ ਗਜ਼ ਸਿੰਘ ਆਇਆ ਅੰਦਰ ਜੁਧਾਏ॥

ਚੁਕੇ ਬਰਕਮਾਹ ਮਚੁ ਤੀਰੇ ਤੁਫੰਗਾ॥ ੪੫॥

ਤੀਰ ਆਵਤਾਏ ਕਮਾਨ ਸੇਰੇਈ ਬੰਦੂਕਸੇ ਆਤੀਏ ਇਸ ਪਕਰ ਗਜ਼ ਸਿੰਘ ਆਇਆ॥

ਬਜੀਬਜ ਦਰਾਮਦ ਚੁ ਇਫਰੀਤ ਮਸਤਾ॥

ਵਿਚ ਗੁਜੇ ਦੇ ਆਇਆ ਮਲਿਕ ਦੇਉ ਮਸਤਦੀ॥

ਸਕੇ ਗੁਰਜ ਅਜ ਫੀਲ ਪੇਕਰ ਬਦਸਤਾ॥੪੫॥

ਵਿਕ ਗੁਰਜ ਯਾਬੀ ਦੇ ਅਕਾਰ ਜੇਡੀ ਵਿਚ ਯਥਾ ਦੇ ਲਈ ਤੇਈ॥

ਸਕੇ ਤੀਰ ਜਦ ਬਾਨੁਏ ਪਾਕ ਮਰਦਾ॥

ਵਿਕ ਤੀਰ ਮਾਰਿਆ ਇਸਤੀ ਨੇ ਪਵਿਤ ਮਰਦਨੂੰ॥

ਕਿ ਗਜ ਸਿੰਘ ਅਜ ਅਜਪਾ ਅਮਦ ਬਗਰਦਾ॥੪੬॥

ਜੋ ਗਜ ਸਿੰਘ ਘੋੜੇ ਸੇ ਆਇਆ ਅਦਰ ਗਰਦ ਦੇ (ਅ:) ਮਾਰਿਆ ਗਿਆ॥

ਦਿਗਰ ਰਾਜਾ ਰਨ ਸਿੰਘ ਦਰਾਮਦ ਬਰੇਦਾ॥

ਦੁਸਰਾ ਰਾਜਾ ਰਨ ਸਿੰਘ ਆਇਆ ਸਾਬ ਗੁਜੇ ਦੇ॥

ਕਿ ਪਥਵਾਨ ਹੇਰੰ ਦਰਾਮਦ ਬੁਜੇਦਾ॥੪੭॥

ਜੋ ਪਤੰਗ ਜੇਸੇ ਦੀ ਵੇਨੂੰ ਦੇਖਕੇ ਆਇਆ ਵਿਚ ਸੇਰ ਦੇ॥

ਚੁਨਾ ਤੇਗ ਜਦ ਬਾਨੁਏ ਸੇਰ ਤਨਾ॥

ਅਜੀ ਤਲਵਾਰ ਮਾਰੀ ਇਸਤੀ ਸੇਰ ਤਨੇ ਰਾਜੇਨੂੰ॥

ਬਿਅਫਤਾਦ ਰਨ ਸਿੰਘ ਚ ਸਰਵੇ ਚਮਨਾ॥੪੮॥

ਵਿਗਿਆਨ ਸਿੰਘ ਜੇਸੇ ਸਰੂ ਬਾਗ ਵਿਚ ਡਿਗਦਾ ਹੈ॥

ਸਕੇ ਸਹਰ ਅੰਬੇਰ ਦਿਗਰ ਜੋਧ ਪੁਰਾ॥

ਵਿਕ ਰਾਜਾ ਸਹਰ ਅੰਬੇਰਦਾ ਦੁਸਰਾ ਰਾਜਾ ਜੋਧ ਪੁਰਦਾ॥

ਖਰਾਮੀ ਦਹ ਬਾਨੇ ਚੁ ਰਖ ਸਿੰਦਹ ਦਰਾ॥੪੯॥

ਲਟਕਦੀ ਹੈ ਇਸਤੀ ਮਲਿਕ ਸੇਤੀ ਚਮਕਦੇ ਵਾਲੇ ਦੀ॥

ਬਿਜਦ ਤੇਗ ਬਾਜੇਰ ਬਾਨੇ ਸਿਪਰਾ॥

ਮਾਰੀ ਤਲਵਾਰ ਸਾਬ ਜੋਰਦੇ ਇਸਤੀ ਦੀ ਫਾਲ ਉਪਰਾ॥

ਬ ਬਰਖੇਜ ਦਸ ਸੇ ਲਹ ਬਸੇ ਚੁ ਗੁਹਰਾ॥੫੦॥

ਉਠੇ ਉਸਸੇ ਚੰਗਿਆੜੇ ਜੇਸੇ ਸੇਤੀ ਚਮਕਦੇ ਤੇ॥

ਸਿਆਮ ਰਾਜਾ ਬੁੰਦੀ ਦਰਾਮਦ ਦਲੇਰਾ॥

ਤੀਸਰਾ ਰਾਜਾ ਬੁੰਦੀਦਾ ਆਇਆ ਵਿਚ ਦਲੇਰੀ ਦੇ॥

ਚੁ ਬਰ ਬਚੁ ਹਆ ਚੁ ਗੁਰ ਰੀ ਦਸੇਗਾ ॥ ੫੧ ॥

ਜੇਸੇ ਯਰਨ ਦੇ ਬਰੇ ਉਪਰ ਗਜਣੇ ਵਾਲੇ ਸੇਰ ਆਉਦਾ ਹੋ ॥

ਚੁਨ ਤੀਰ ਜਦ ਹਰੇ ਅਬਰੁ ਸਿਕੰਜਾ ॥

ਮੇਸਾਤੀਰ ਮਾਰਿਆ ਦੇਨੇ ਕੁਵਦਿਆ ਦੇ ਟੇਦ ਉਪਰਾ ॥

ਬਿਅਫਤਾਦ ਅਮਰ ਸਿਘ ਚੁ ਸਾਖੇ ਤੁਰੰਜਾ ॥

ਰਿਗਪਿਆ ਅਮਰ ਸਿਘ ਜੇਸੇ ਨਿਬੂ ਬੂਟੇ ਸੇ ਗਿਰਦਾ ਹੋ ॥ ੫੨ ॥

ਚੁ ਅਮ ਰਾਜ ਹਜੇ ਸਿਘ ਦਰ ਅਮਦ ਮੁਸਾਫਾ ॥

ਚੌਥਾ ਰਾਜਾ ਜੇ ਸਿਘ ਆਇਆ ਵਿਚ ਚੁਪਦੇ ॥

ਬਜੇ ਸ ਅੰਦਰੀ ਸੁਦ ਚੁ ਅਸਕੋ ਹ ਕਾਫਾ ॥ ੫੩ ॥

ਵਿਚ ਗੁਜੇ ਦੇ ਅੰਦਰ ਹੋਇਆ ਮਨਿ ਦੇ ਪਹਾੜ ਕੋ ਹ ਕਾਫ ਦੀ ॥

ਹੁਮਾਂ ਖਰਦ ਸਰ ਬਤੁ ਕਿਆਰੇ ਚੁ ਅਮਾ ॥

ਹੀਖਾਦਾ ਸਬਤ ਜੇਯਾਰ ਚੌਥੇ ਨੇ (ਅ) ਸਿੱਤ ਹੋ ਪਿਆਲਾ ਪੀਤਾ ॥

ਜਿ ਜੇ ਸਿਘ ਪਸੇ ਅਕ ਨਿਆਮ ਦ ਕਦਾਮਾ ॥ ੫੪ ॥

ਜੇ ਸਿਘ ਸੇ ਇਕ ਪੇਰ ਪਿਛੇ ਨ ਹਟ ਹੋਇਆ ॥ (ਅ) ਉਸੀ ਥਾਂ ਮਾਰਿਆ ਰਿਸ ॥

ਯਕੇ ਸਾਹਿ ਫਿਰੀਗੇ ਪਿਲੀ ਦੇ ਦਿਗਰਾ ॥

ਇਕ ਬਾਦਸਾਹ ਫਿਰੀਗੀ ਆਦਾ ਦੂਸਰਾ ਪਿਲੀ ਦੇ ਦੇਸਦਾ ॥

ਬਮੇਦਾਂ ਦਰ ਅਮਦ ਚੁ ਸੇਰੇ ਜਬਰਾ ॥ ੫੫ ॥

ਵਿਚ ਜੁੱਧਦੇ ਆਏ ਮਨਿ ਦੇ ਸਿਘ ਬਲਵਲ ਦੀ ॥

ਸਿਆਮ ਸਾਹਿ ਅੰਗਰੇਜ ਚੌਆਫਤਾ ਬਾ ॥

ਤੀਸਾ ਬਾਦਸਾਹ ਅੰਗੇਜਾਦਾ ਮਨਿ ਦੇ ਚੁਰਜ ਦੀ ਪ੍ਰਕਾਸਵਾਲਾ ਜੁੰਦ ॥

ਚੁ ਅਮ ਸਾਹਿ ਹ ਬਸੀ ਚੁ ਮਗਰੇ ਦਰ ਅਮਾ ॥ ੫੬ ॥

ਚੌਥਾ ਬਾਦਸਾਹ ਹ ਬਸੀ ਮਨਿ ਦੇ ਜੀਸਰ ਦੀ ਪਾਣੀ ਵਿਚਾ ॥

ਯਕੇਰਾ ਬਿਜਦ ਨੇਜ ਹ ਮਜਤੁ ਦਿਗਰਾ ॥

ਇਕ ਕੇਤਾਈ ਨੇਜ ਮਾਰਿਆ ਦੂਸਰੇ ਦੇ ਮੁਕੀ ਮਾਰੀ ॥

ਸਿਆਮ ਰਾ ਬਪਾਓ ਚੁ ਅਮਾਰ ਸਿਪਰਾ ॥ ੫੭ ॥

ਤੀਸਰੇ ਕੇਤਾਈ ਲਤ ਮਾਰੀ ਚੌਥੇ ਕੇਤਾਈ ਵਾਲ ਮਾਰੀ ॥

ਚੁਨਾਮੇ ਬਿਅਫਤਾਦਨ ਬਰਖਾਸਤੁ ਬਾਜਾ॥

ਅੰਸੇ ਗਿਰਪਵੇਥੇ ਨਹੀ ਉਠੇ ਫੇਰਾ॥

ਸੁਏ ਅਸਮਾਂ ਜਾਨ ਪਰਵਾਜ਼ ਸਾਜਾ॥੫੮॥

ਤਰਫ ਅਸਮਾਨ ਦੀ ਜਲਨੇ ਉਡਦਾ ਕੀਤਾ (ਅ:) ਮਰਗਏ॥

ਦਿਗਰ ਕੁਜ ਨਿਆਮਾਦ ਤੁਮਨਿਏ ਜੀਗਾ॥

ਦਸਰੇ ਕੁਸੇਨੂੰ ਨਹੋਈ ਇਛਾ ਜੁਧ ਦੀ

ਕਿ ਪੇਸੇ ਨਿਆਮਾਦ ਦਿਲਾਵਰ ਨਿਹੀਗਾ॥੫੯॥

ਜੇ ਅਗੇ ਨਾ ਆਇਆ ਸੁਰਮਾ ਸੰਸਾਰ ਦੀ ਨਿਆਈ॥

ਸਬੇ ਸਾਹਿ ਸਿ ਬਸਤੁ ਚੰ ਅਮਾਦ ਬੋਫੇਜਾ॥

ਗਤ ਦਾ ਬਾਦਸਾਹ ਚੰਦ ਜਦੋ ਆਇਆ ਵਿਚੋ ਫੇਜਦੇ॥ (ਅ:) ਤਾਰੇ ਚੜ੍ਹੇ॥

ਸਿਪਾਹ ਪਾਨਹ ਅਮਾਦ ਹਮਾਮ ਉਜੁ ਮੋਜਾ॥੬੦॥

ਸਿਪਾਹੀ ਡੇਰਿਆਨੂੰ ਆਏ ਤਮਾਮ ਟੋਲੀਆ ਟੋਲੀਆ ਹੋਕੇ॥

ਬਰੇਜੇ ਦਿਗਰ ਰਉਸ ਨੀਯਤ ਪਨਾਹ॥

ਦਿਨ ਦੂਸਰੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਦਾ ਆਸਰਾ (ਅਰਥਾਤ) ਸੂਰਜ ਚੜ੍ਹਿਆ॥

ਬ ਅਉਰੀਗ ਦਰਾ ਅਮਾਦ ਚੰ ਅਉਰੀਗ ਸਾਹਿ॥੬੧॥

ਉਪ੍ਰਤਖਤ ਦੇ ਆਇਆ ਜੋਸੇ ਬਾਦਸਾਹ ਤਖਤ ਉਪਰ ਬੈਠਦਾ ਹੋ॥

ਦੁਸੁਏ ਪਲਾ ਜਮਲਾ ਬਸਤੀਵ ਕਮਰਾ॥

ਦੋਨੋ ਝਫਾਤੇ ਜੁਗਮਾ ਅਨੇ ਬੰਨੀਆ ਕਮਰਾ॥

ਬ ਮੇਦਾਨ ਜਸਤੀਵ ਸਿਪਰ ਬਰ ਸਿਪਰਾ॥੬੨॥

ਵਿਚ ਮੇਦਾਨ ਦੇ ਖੇਦੀਆਂ ਦੇ ਢਾਲਾ ਉਪਰ ਢਾਲਦੇ॥

ਬ ਗੁਰਰੀ ਦਨ ਅਮਾਦ ਦੁ ਅਬਰੇ ਮਸਾਫਾ॥

ਵਿਚ ਗਜ਼ਦੇ ਦੇ ਆਏ ਦੋਨੋ ਬਦਲ ਜੁਧ ਦੇ (ਅ:) ਦੋਨੋ ਫੇਜਾ॥

ਅਕੇ ਗਸਤੁਹ ਤਯਲ ਅਕੇ ਗਸਤ ਜਾਫਾ॥੬੩॥

ਇਕ ਹੋਏ ਘਾਇਲ ਇਕ ਹੋਏ ਮਰਨੇ ਵਾਲੇ॥

ਚਕਾ ਚਾਂਕ ਬਰਖਾਸਤੁ ਤੀਰੋ ਤੁਫੇਗਾ॥

ਸਬਦ ਉਠੇ ਤੀਰਾਂ ਅਤੇ ਬੰਦੂਕ ਦੇ॥

ਖਤਾਖਤ ਦਰਅਮਦ ਹਮ ਹਰੀਗਰੀਗਾ॥ ੬੪॥

ਜਖਮਾ ਵਿਚ ਜਖਮ ਆਏ ਤਮਾਮ ਵਿਚੋ ਰੰਗ ਰੰਗ ਦਾ ਲੋਹੂ ਰਗ ਦਾ ਲੋ

ਜਿ ਤੀਰੋ ਜਿ ਤੋਪੋ ਜਿ ਤੋਗੋ ਤਬਰਾ॥

ਤੀਰਾਸੇ ਅਤੇ ਤੋਪਾਸੇ ਅਤੇ ਤਲਵਾਰਾਸੇ ਅਤੇ ਕੁਹਾੜਾਸੇ॥

ਜਿ ਨੇਜੁਹ ਵਨਾ ਚਖ ਵਨਾ ਵਕ ਸਿਪਰਾ॥ ੬੫॥

ਬੰਨੇ ਨੇਜੇਸੇ ਅਤੇ ਫੁਟੇ ਨੇਜੇਸੇ ਅਤੇ ਤੀਰਸੇ ਅਤੇ ਫਾਲਸੇ ਜੁੱਧ ਹੋਣੇ ਸਗ

ਸਰੇ ਦੇਵ ਆਮਦ ਕਿ ਜਾਰੋ ਨਿਸਾ॥

ਇਕ ਦੇਵ ਆਇਆ ਉਸ ਦੇ ਅਗੇ ਕਿਆਏ ਕਾਉਕਾਦਾ॥

ਚ ਗਾਰਗੀਦ ਸੇਰ ਹਮ ਚ ਪੀਲੇ ਦਮਾ॥ ੬੬॥

ਜੇਸੇ ਸੇਰ ਗਜ ਦੇ ਫਾਲ ਜੇਸੇ ਹਾਥੀ ਮਸਤ ਹੋਤਾ ਹੈ॥

ਕਨ ਦਤੀਰ ਬਾਰਾ ਚ ਬਾਰਾਂ ਮੇਰਾ॥

ਕਰਦਾ ਹੈ ਤੀਰ ਦੀ ਬਰਖਾ ਜੇਸੇ ਮੀਂਹ ਬਰਸਤਾ ਹੈ॥

ਬਰਖਸ ਅੰਦਰ ਅਬਰ ਚੋ ਬਰਕ ਤੇਰਾ॥ ੬੭॥

ਵਿਚ ਰਾਮ ਕਰੇ ਅੰਦਰ ਬਹੁ ਬਿਜਲੀ ਦੀ ਮਾਰੀ ਦ ਤਲਵਾਰ ਉਸ ਦੀ

ਬਜੇ ਸ ਅੰਦਰ ਆਮਦ ਦਹਾਨੇ ਦੁਹਲਾ॥

ਵਿਚ ਗੁਸੇ ਦੇ ਆਇਆ ਮੂੰਹ ਫੋਲਦਾ॥

ਚ ਪਰ ਗਸਤ ਬਾਜਾਰ ਜਾਏ ਅਜਲਾ॥ ੬੮॥

ਜੇਵੇ ਪੁਰ ਹੋਇਆ ਬਾਜਾਰ ਮੋਤਰੀ ਜਾਗਾ ਦਾ॥

ਹਰਾਂ ਕਸ ਕਿ ਪਰਾਂ ਸਵਦ ਤੀਰ ਸਸਤਾ॥

ਜਿਸ ਕਿਸੀਨੂੰ ਛਤਾ ਮਗੀ ਦ ਪਰਾਵਾਣਾ ਤੀਰ ਲਗਾ ਹਰ ਸੇ॥

ਬਸਦ ਪਹਿਲੂ ਪੀਲ ਮਰਦਾਂ ਗਜ ਸਤਾ॥ ੬੯॥

ਇਕ ਆਦਮੀ ਕਿਆ ਬਢਾ ਕੇਸੇ ਸੋ ਸੂਰਮਿਆ ਦੀ ਪਜਲੀ ਤਿਨ ਕੇ ਪਾਚ

ਹਮਾਂ ਕਸ ਬਸੇ ਤੀਰ ਜਦ ਬਰ ਕਜਾ॥ ਪਮਰਿਆ

ਉਨਾ ਤੀ ਆਦਮੀ ਆਨੇ ਬਹੁਤ ਤੀਰ ਮਾਰੇ ਉਪ ਉਸ ਦੇ ਵ ਦੇ॥

ਭਿਅ ਫਤਾ ਦ ਦੇਵੇ ਚ ਕਰਖੇ ਗਿਰਾਂ॥ ੭੦॥

ਭਿਗਿਆ ਦੇਵ ਜੇਸੇ ਅਟਰੀ ਭੰਗੀ ਭਿਗਦੀ ਹੈ ਅੰਝੇ ਗਿਰਾਂ॥

ਦਿਗਰ ਦੇਵ ਗਰ ਗਸਤ ਬਿਯਾਮਦ ਬਜਗਾ॥

ਦੁਸਰਾ ਦੇਵ ਇਲਦੀ ਤਾਂ ਆਇਆ ਵਿਚ ਜੀਗਦੇ॥

ਦੁਸਰੇ ਅਜੀਮੇ ਹਮਚੁ ਬੁਰਾਂ ਪਿਲੀਗਾ॥ ੧੧॥

ਜੇਸੇ ਸੇਰ ਭਰੀ ਅਤੇ ਜੇਸੇ ਉਡੇਵਾਲਾ ਚਿਤਾ ਉਦਾਏ॥

ਚਨਾਂ ਜੁਖਮ ਗੋਪਾਲ ਅੰਦਾਖਤ ਸਖਤਾ॥

ਐਸਾ ਫਟ ਗੋਪੀਏਦਾ ਸਖਤ ਮਾਰਿਆ

ਬਿਅਫਤਾਦ ਦੁਨੇ ਚ ਬੇਖ ਅਜ ਦਰਖਤਾ॥ ੧੨॥

ਬੁਗਿਆਦੇਵ ਜੇਸੇ ਜੜ ਕਟੀਸੇ ਦਰਖਤ ਬੁਗਦੇਏ॥

ਦਿਗਰ ਕਸ ਨਿਯਾਮਦ ਅਜੇ ਆਰਜੇ॥

ਦੁਸਰੇ ਕਿਸੇਨੂੰ ਚਾਨਾ ਆਈ ਉਸਸੇ

ਕਿਆਲਦ ਬਜੀਰੇ ਚੁਨੀ ਮਾਹਰੇ॥ ੧੩॥

ਜੇ ਆਏ ਵਾਸਤੇ ਜਧਦੇ ਐਸੇ ਚੰਦਮੁਖੀਸੇ

ਸਹੇ ਚੀਨ ਜਿਸ ਰਤਾ ਜ ਰੰਗੀ ਨਿਹਾਦਾ॥

ਬਾਦਸਾਹ ਚੀਨ ਦੇਵੇ ਸਿਰਜੇ ਮੁਕਟ ਰੰਗੀਨ ਬਖਿਆ

ਬਲਾਏ ਗੁਬਾਰਾ ਦੁਹਨ ਬਰ ਕੁਜਾਦਾ॥ ੧੪॥

ਬਲਾ ਗੁਬਾਰੇ ਨੇ ਮੁਹੱਬੇ ਲਿਆ (ਅ:) ਰਤ ਪੈਗਈ

ਸਬਾ ਅਮਦ ਮਕੇ ਫਤਿਹ ਰਾ ਸ਼ਾਜ ਕਰਦਾ॥

ਰਤ ਆਈ ਇਕ ਫੇਜ ਕੇਤਾਈ ਬਣਾਕੇ ਲਿਆਈ॥

ਜਿ ਦੀ ਗਰ ਵਜਹ ਬਾਜੀ ਆਗਾਜ ਕਰਦਾ॥ ੧੫॥

ਦੁਸਰੀ ਤਾਂ ਸੇ ਖੇਲ ਖੇਲ ਨਲਗਾ ਅਮਾਨ (ਅ:) ਚੰਦਮਾ

ਕਿ ਅਫਸੋਸ ਅਫਸੋਸ ਹੈ ਹਾਤੁ ਹਾਤੁ॥

ਫਤਾਮਈ ਕਹਿਦੀ ਹੈ ਜੇ ਅਸਚਰਜ ਹੈ ਅਸਚਰਜ ਹੈ ਨ ਉਮੇਦੀ ਪੈ ਬਖਸ਼ੇ ਮੇਨੂੰ

ਅਜੀ ਉਮਰ ਫਜੀ ਜੀ ਦਗੀ ਜੀ ਹਯਾਤੁ॥ ੧੬॥

ਇਸ ਉਮਰ ਥੀ ਅਤੇ ਇਸ ਜੀਵ ਦੇ ਥੀ ਇਸ ਜੀਵ ਦੇ ਸੇ ਅਫਸੋਸ ਹੈ॥

ਬਰੇ ਜੇ ਦਿਗਰ ਰਹਿਸੀ ਯਤੁ ਟਿਕਰਾ॥

ਦੁਸਰੇ ਇਨ ਪ੍ਰਕਸਰੇ ਆਸਰੇ ਵਾਲਾ (ਅਰਥਤ) ਸੂਰਜ

ਬਰਓਰੀਗ ਦਰਾਮਦ ਚੁਸਾਹੇ ਦਿਗਰਾ ॥ ੭੭ ॥

ਉਪਰ ਤਖਤ ਦੇ ਆਇਆ ਮਨੀਦ ਦੁਸਰੇ ਕਾਦੇ ਸਾਹਦੀ ॥

ਸਿਪਹ ਸੁਦ ਬਰਖਾਸਤ ਅਜ ਜੋਸ ਜੀਗਾ ॥

ਫੌਜ ਦੇਨੇ ਤੋਰਫ ਤੇ ਫਿਰੀਆ ਗੁਸੇ ਨਾਲ ਜੁਧ ਕੇ ॥

ਰਵਾਸੁਦ ਬਹਰ ਗੋਸ਼ਹ ਤੀਰੇ ਤੁਫੰਗਾ ॥ ੭੮ ॥

ਛੁਟੇ ਹਥ ਤਰਫ ਸੇ ਤੀਰ ਅਤੇ ਬੰਦ ਕਾ

ਰਵਾਂ ਰਵ ਸੁਦਹ ਕੋ ਬਰੇ ਕੀਨ ਹ ਕੋਸਾ ॥

ਰਵਾਨ ਹੋਏ ਤੀਰ ਦੁਸਮਾਨੀ ਦੀ ਕੋਸਸ ਕਰਨੇ ਵਾਲੇ

ਕਿ ਬਾਜੁਏ ਮਰਦਾ ਬਰਾਵਰ ਦ ਜੋਸਾ ॥ ੭੯ ॥

ਜੋ ਬਾਹ ਸੂਰਮਿਆਈ ਬਾਹਰ ਲਿਆਏ ਗੁਜਾ ॥

ਚਲਾਸਕਰ ਤੁਮਾਮੀ ਦਰਾਮਦ ਬਕਾਮਾ ॥

ਜੋ ਦੇ ਫੌਜ ਸਾਰੀ ਵਿਚ ਕੀ ਅਦੇ ਆਈਆ (ਅ) ਜੋ ਦੇ ਸਭ ਫੌਜ ਸਾਰੀ ਗਈਆ

ਯਕੇ ਮਾਂਦ ਓਰਾ ਅਸਤ ਸੁਭੁਟ ਸਿਪਨਾਮਾ ॥ ੮੦ ॥

ਇਕੋ ਰਿਹਾ ਸਿਸਕਾਏ ਸੁਭੁਟ ਸਿਪ ਨਾਮ

ਬਿਰੋਯਦ ਕਿਧੁਏ ਸਾਹਿ ਰੁਸਤਮ ਜਮਾਂ ॥

ਫੌਜਾਂ ਅਤੀ ਕਾਇਰੀ ਹੋ ਜੋ ਦੇ ਬਾਦਿ ਸਾਹ ਰੁਸਤਮ ਜਮਾਏ ਦੇ ॥

ਤੁਮਾਰਾ ਬਿਕਨ ਆ ਬਿਗੀਰੀ ਕਮਾਂ ॥ ੮੧ ॥

ਤੂੰ ਮੇਰੇ ਤਈ ਕਰ ਜੋਨੀ ਕਰਦਾ ਤਾਪ ਕੜਕ ਮਾਟ ਮੇਰੇ ਸਾਥ ਜੁਧ ਕਰਾ

ਬਜਜਬ ਅਦਰ ਆਮਦ ਚੁਸੇਰੇ ਫਿਸਮਾਂ ॥

ਵਿਚ ਗੁਸੇ ਦੇ ਆਇਆ ਜੋਸੇ ਸਿਪ ਗੱਜਣੇ ਵਾਲਾ ਭਾਰੀ ॥

ਨ ਪਸਤੇ ਦਿਹਮ ਬਾਨੁਏ ਹਮ ਚੁਨਾਂ ॥ ੮੨ ॥

ਨਹੀਂ ਪਠ ਦੇਊਗਾ ਹੇਇ ਸਤੀ ਜੋਸੇ ਔਰ ਗਜੇ ਬੁਜਗਾਏਏ ॥

ਬਕਸੀਦ ਖਿਫਤੁਨ ਜੋਸੀਦ ਜੀਗਾ ॥

ਪੇਕੀ ਸੀਜੇ ਅਤੇ ਜੋਸਕੀਤਾ ਲੜਾਈ ਦਾ ॥

ਬਕਸੀਦ ਚੰ ਸੇਰ ਮਰਦਾ ਨਿਹੰਗਾ ॥ ੮੩ ॥

ਚਲਾ ਕੀਕਿਤੀ ਜੋਸੇ ਸਿਪ ਸੂਰਮਾ ਜੋਸੇ ਸੀਸਾ ਰਸਮ ਦੇ ਆਉਦਾਏ

ਬਜਾਯਸ ਦਰਾਮਰ ਚੁਸ਼ੋਰ ਅਜੀਮ॥

ਟਿਚ ਜਾਗ ਜੁਧਦੀ ਦੇਆਯਾ ਸੋਸ ਸਿੰਘ ਭਾਰੀ ਆਉਦਾਹੋ॥

ਬਕੇਬਰ ਕਮਾਂ ਕਰਦ ਬਾਰਜ ਕਰੀਮ॥ ੮੬॥

ਸਾਬਕਾਨ ਦੇ ਤੀਗਦੀ ਬੜੀ ਬਰਖਾ ਕੀਤੀ॥

ਧੋਰਾਸਤ ਓਕਰਦ ਖਮ ਕਰਦ ਰਾਸਤਾ॥

ਖਬਾ ਹਥ ਸਿਧਾ ਕੀਤਾ ਉਸਨੇ ਅਤੇ ਏਕਾ ਕੀਤਾ ਸਸਾ ਹਥ॥

ਗਰੇਵੇ ਕਮਾਂ ਚਰਖ ਚੀਨੀ ਬਿਖਾਸਤਾ॥ ੮੭॥

ਸਬਰ ਚੀਨੀ ਕਮਦਦਾ ਆਕਾਸਤਕ ਗਿਆ॥

ਹਰਾਂਕਸ ਕਿਨੇਜਹ ਬਿਅਫਤਾਦ ਮਸਤਾ॥

ਜਿਸ ਕਿਸੀ ਨੂੰ ਨੇਜਾ ਲਗਾ ਪਥਤੇ (ਅ॥) ਫੁਲਪੁੀ ਦਾ ਨੇਜਾ ਜਿਸਨੂੰ ਲਗਾ

ਦੁਰਾ ਗਸਤ ਮਸਤੇ ਹੰਮੀ ਚਾਰ ਗਸਤਾ॥ ੮੮॥

ਫੋਗੀ ਹੋਈਆ ਮੁਠੀਆਂ ਅੰਸੇ ਹੀ ਚਾਰ ਹੋਈਆ॥

ਬਿਆਵੇਖਤ ਬਾਦੀ ਗਰੇਬਾਜ ਪਰਾ॥

ਲਟਕੇ ਸਾਬ ਇਕ ਦੂਸਰੇ ਦੇ ਜੋਸ ਬਾਜ ਅਤੇ ਜੁਰਾਜ॥

ਚ ਸੁਰਖ ਅਯਾਦਹਾ ਬਰ ਹੰਮੀ ਜੇਚ ਨਰਾ॥ ੮੯॥

ਜੋਸੇ ਸੁਰਖ ਸੁਰਖ ਸੇ ਨਗ ਨਗਦ ਸੇ ਸਿੰਘ ਸਿੰਘ ਦੀ ਸੇ ਜੁਧਾਈ ਮੇਜੇ

ਚਨ ਬਾਨ ਅਫਤਾਦ ਤੀਰੇ ਤਫੰਗਾ॥

ਫੋਨੇ ਫਸੇ

ਅੰਸੇ ਬਾਦ ਗਿਰੇ ਤੀਰ ਅਤੇ ਬੰਦੂਕਾਵੇਚੇ॥

ਜਿਮੀ ਕਸਤ ਗਾਨਸੁ ਸੁਦਹ ਲਾਲਹ ਰੰਗਾ॥ ੯੦॥

ਜਿਮੀਨ ਮੁਹਦਿਆ ਉਨਕੇ ਸੋ ਹੋਈ ਲਾਲ ਰੰਗਦ ਲੀ (ਅ॥) ਮੁਹਦਿਆ ਕੋਈ

ਕਨਦ ਤੀਰ ਬਾਰਾਂ ਹੋਜੇ ਤੁਮਾਮਾ॥

ਫੁਲਾਏ ਤੀਰੀ

ਕਰਦੇ ਰਹੇ ਤੀਗਦੀ ਬਰਖਾ ਸਾਹਾਇ ਰਸਾ ਅਤੇ ਫੁਲਾਂ ਮਤੀ॥

ਕਜੇ ਰਾਨ ਗਸਤੀ ਦਮ ਕਸੁਦ ਕਾਮਾ॥ ੯੧॥

ਕਿਸੇ ਦਾ ਨਾਹੋਇਆ ਪ੍ਰਮੇਜਨ ਦਿਲਦਾ ਪੂਰਾ॥

ਅਜੇ ਜੰਗ ਜੇ ਮਾਂਦਗੀ ਮਾਂਦਹ ਗਸਤਾ॥

ਉਸ ਜੁਧਵੇ ਬਕੇਵੇ ਸੇ ਅੰਸੇ ਬਕ ਗਏ॥

ਬਿਅਫੁਤਾਦੁ ਹਰਦੇ ਦੁਰਾ ਪਹਿਨ ਦਸਤਾ ॥੯੦॥

ਭਿਗਪਏ ਦੇਨੇਹੀ ਅੰਦਰ ਮੇਵਨ ਜੁਧਦੇ

ਸਾਹਿਨੁ ਸਾਹਿ ਰੁਮੀ ਸਿਪਰ ਦਾਦ ਰੋਇ ॥

ਬਾਦਸਾਹੋ ਕੇ ਬਾਦਿਸਾਹ ਰੁਮੀ ਨੇ ਦਾਸ ਦਿਤੀ ਮੰਗ ਅਠੇ ॥ (ਅ) ਰਬ ਪੇਗ

ਦਿਗਾਰ ਸਾਹਿ ਪੇਦਾ ਸੁਦਹ ਨੇਕ ਪੋਇ ॥੯੧॥

੬੧

ਦੁਜਾ ਬਾਦਸਾਹ ਪੇਗ ਹੋਆ ਭਲੇ ਸੁਭਾ ਵਿਵਾਲ (ਅ:) ਚੰਦਮਾ

ਨ ਦਰ ਜੀਗ ਅਸੁਦਹ ਸੁਦ ਘਕ ਜਮਾ ॥

ਨਹੀ ਵਿਚ ਜੀਗਦੇ ਅਗਮ ਕੀਤਾ ਇਕ ਸੁਆਸ ਬੀ

ਬਿਅਫੁਤਾਦੁ ਹਰਦੇ ਚੁਨੀ ਕੁਸਤੁ ਗਾਂ ॥੯੨॥

ਭਿਗਪਏ ਦੇਨੇਹੀ ਜੇਸੇ ਮਰਦੇ ਉਦੇਹੇ

ਦਿਗਾਰ ਰੇਜ ਬੁਰਖਾ ਸਤ ਹਰਦੇ ਬਜੀਗਾ ॥

ਦੁਸਰੇ ਦਿਨ ਉਠੇ ਦੇਨੇਹੀ ਫਾਸਤੇ ਜੁਧਦੇ ॥

ਬਿਅਫੁਤਾਦੁ ਪਤ ਬਾਘਕ ਦਿਗਾਰ ਚੀਨੀ ਹੀਗਾ ॥੯੩॥

ਫਸੇ ਸਾਬ ਇਕ ਦੁਸਰੇ ਦੇ ਜੇਸੇ ਸੀਸਾਰ ਪੁਲ ਦੇਹੇ ਦਰੀਆ ਵਿਚ ॥

ਫਜ਼ਾ ਹਰ ਦੁਤਨ ਕੁਜਾਹ ਗਾਨੇ ਸੁਦਹਾ ॥

ਉਨ ਦੇਨਾ ਦੇ ਸਰੀਰ ਕੁਬੇ ਹੋਗਾਏ ॥

ਕਜਾ ਸੀਨਹ ਗਾਹੀਨ ਅਰਰਾ ਸੁਦਹਾ ॥੯੪॥

ਜੇ ਉਨਾ ਦੇ ਸਰੀਰ ਜਖਮਾ ਨਾਲ ਲਾਲ ਹੋਗਾਏ ॥

ਬਰਖਸ ਅੰਦਰ ਅਮਦ ਚ ਮੁਸਕੀ ਨਿਹੀਗਾ ॥

ਵਿਰਕੁ ਦਫੇ ਦੇ ਆਏ ਜੇਸੇ ਕਾਲੇ ਰੰਗ ਦੇ ਸੀਸਾਰ ਉਦੇਹੇ ॥

ਬਸੇ ਬੀਗਾ ਸੀ ਬੋਜ ਬੀਗੇ ਪਿਲੀਗਾ ॥੯੫॥

ਬਹੁਤ ਬੀਗਾ ਸਦੇਸ ਦੇ ਘੋੜੇ ਬਕਰੀ ਅਤੇ ਚਿੜੇ ਦੇ ਰੰਗ ਵਾਲੇ ॥

ਬਿਅਬਲਕ ਸਿਨਹਿ ਅਬਲਕ ਬੋਜ ਬੀਗਾ ॥

ਸੁਫੇਦ ਘੋੜੇ ਖੁਸਕੀ ਘੋੜੇ ਅਤੇ ਸੁਫੇਦ ਤਾਬੇ ਕੇ ਰੰਗ ਦੇ ਘੋੜੇ ॥

ਬਰਖਸ ਅੰਦਰ ਅਮਦ ਚੁਤਾ ਸਿਸ ਮੋਰਾ ॥੯੬॥

ਚਮਕਦਾਰ ਆਏ ਜੇਸੇ ਸੋਰ ਪਾਇਲ ਪਾਇਦੇ ॥

ਜਿਹਰ ਪਾਰਹ ਸੁਦਖੇਲ ਟੁਖਿਠਤਾ ਬਜੰਗਾ।

ਸੰਜਿਆ ਟੁਕੜੇ ਹੋਈਆ ਸੋਰਦੇ ਮੁਕਟ ਅਤੇ ਕੁੜਤੀਆ ਜੁਧਵਿਚਾ।

ਜਿ ਬਕਤਰ ਜਿ ਬਰਿ ਗਸਤਰਵਾ ਬਾਖਦੀਗਾ। ੯੭

ਚਿਲਤਿਆਸੇ ਪਖਰਾ ਘੜਿਆ ਦੀਆਂ ਸਾਥ ਤੀਰਾ ਦੇ ਪਾਟਗਈਆ।

ਚਨਾਂ ਤੀਰ ਬਾਰਾ ਸਵਦ ਕਾਰ ਜਾਰਾ।

ਅੰਸੇ ਤੀਰ ਚਲਦੇ ਤੇ ਜੁਧ ਵਿਚ

ਜਿ ਬਕਤਰ ਜਿ ਜਿਹਰ ਬਰਾਰਦ ਸਰਾਰਾ। ੯੮

ਚਿਲਤੇਸੇ ਅਤੇ ਸੰਜਿਆਸੇ ਬਾਹਰ ਅਉਦੇ ਤੇ ਚੰਗਿਆਵੇ।

ਬਰਖਸ ਅੰਦਰ ਅਮਦ ਚ ਸੇਰੇ ਨਿਹੰਗਾ।

ਵਿਚ ਕੁਦਣੇ ਦੇ ਆਏ ਘੋੜੇ ਮਾਨਿਦ ਸੇਹਾਂ ਦੀ ਅਤੇ ਮਾਨਿਦ ਸੰਸਾਰ ਦੀ।

ਜਿਮੀ ਗਜਤ ਬੁਮਹ ਮਚ ਪਸਤੇ ਪਿਲੀਗਾ। ੯੯

ਪ੍ਰਿਥੀ ਘੋੜਿਆ ਦੇ ਪੇਰ ਨਾਲ ਅੰਸੀ ਤੰਗਈ ਜੋਸੇ ਚਿੜੇ ਦੀ ਖਲ ਹੁੰਦੀ ਤੇ।

ਚਨਾਂ ਜਿਹਾ ਦਹ ਸੁਦਆਤੁਸੇ ਤੀਰ ਬਾਰਾ।

ਅੰਸੇ ਕੁਧੇਰੇ ਹੋਈਆਗ ਤੀਰਾਂ ਦੀ ਬਰਖਾ ਦੀ।

ਕਿਅਕਲ ਅਜ ਮਗਜ ਰਠਤੋ ਹੋਸ ਅਜ ਦਿਆਗਾ।

ਜੇ ਅਕਲ ਮਗਜ ਵਿਚ ਅਤੇ ਹੋਸ ਅਸਲੋਂ ਬਾਹਰ ਗਈ। (੧੦੦)

ਚਨਾਂ ਆਵੇਖਤ ਹਰਦੇ ਹੁਮਾਂ ਜਾਇ ਜੀਗਾ।

ਅੰਸੇ ਲਿਪਟੇ ਹਰਦੇ ਉਸੀ ਜਾਗਾ ਜੁਧਵਿਚਾ।

ਕਿਤੇਗ ਅਜ ਮਿਯਾਂ ਗਸਤ ਤਰਕਸ ਖਤੀਗਾ। ੧੦੧

ਜੇ ਤਲਵਾਰ ਮਿਆਨਸੇ ਅਤੇ ਤੀਰ ਤਰਕਸ ਸੇ ਬਾਹਰ ਰਹੇ।

ਚਨਾਂ ਜੀਗ ਕਰਦੇ ਸਬਹ ਤਾ ਬਸਾਮਾ।

ਅੰਸੀ ਲੜਾਈ ਕੀਤੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਵੇਲੇਸੇ ਸੰਧਿਆ ਤੇਈ।

ਬਿਅਠਤਾ ਦ ਮੂਰਛਤ ਨਖਰਦੇ ਦੁਆਮਾ। ੧੦੨

ਡੁਗਪਏ ਮੁਚਛਾਧਕੇ ਨਹੀਖਾਦੀ ਰੋਟੀ।

ਜਿਖਦ ਮਾਂਦਹ ਸੁਦ ਹਰਦੁ ਦਰਜਾਇ ਜੀਗਾ।

ਅਖਬਕਗਏ ਦੇਨੇਹੀ ਵਿਚ ਜਾਗਾ ਜੁਧਦੇ।

ਚੁਸੇਰੋਨੀਅਨੇ ਦੁਬਾਜ਼ਾ ਪਿਲੀਗਾ॥ ੧੦੩॥

ਜੈਸੇ ਦੇਸੇਰ ਨੁਕਸਾਨ ਕਰਨੇ ਵਾਲੇ ਅਥਵਾ ਦੇਬਸ ਅਥਵਾ ਦੇਚਿਤੇਲ

ਚੁਹਾਸੀ ਬਰਦ ਦੁਜਰ ਦੀਨਾਰ ਜੁਰਦਾ॥ ੧੦੪॥

ਜੈਦੇ ਕਾਲਾ ਚੇਰ ਲੇਗਿਆ ਮੁਹਰ ਪੀਲੀਨੀ॥

ਜਹਾਂ ਗਸਤ ਚੰਗੀ ਬਜੇ ਦੁਦ ਗਰਦਾ॥ ੧੦੫॥

ਜਹਾਂ ਨਹੋਇਆ ਸ਼ੇਸ਼ੇ ਹੀ ਬੋਜ ਪੁਏਦਾ ਅਤੇ ਗਰਦੇ ਵਾਹੀ ਦਾਹੇ॥

ਸਿਆਮਰੇਜ ਚੰਗਾਂ ਬਿ ਬਰਦ ਅਫਤਾਨਾ॥

ਤੀਸਰੇ ਦਿਨ ਖੁਸ਼ੀ ਕਿਸਾਨ ਮੋਗਿਆ ਸੂਰਜ (ਅ:) ਤੀਜੇ ਦਿਨ ਪ੍ਰਕਾਸ ਲੈਕੇ ਸੂਰ

ਜਹਾਂ ਗਸਤ ਚੰਗੇ ਜਨ ਸਮਾਹਿ ਤਾਬਾ॥ ੧੦੬॥

ਜਹਾਂ ਨਹੋਇਆ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਵਾਲਾ ਜੈਸੇ ਚਾਂਦਕੀ ਚਾਂਦਨੀ ਹੋਈ॥

ਬੁ ਬਰਖਾਸਤ ਹਰਦੇ ਅਜੀ ਜਾਇ ਜੀਗਾ॥

ਉਠੇ ਦੇਵੇ ਹੀ ਉਸੀ ਜਗ ਜੁਧ ਕੀਸੇ॥

ਰਵਾਂ ਕਰਦ ਹਰ ਬੁਇ ਤੀਰੇ ਤਫੰਗਾ॥ ੧੦੭॥

ਰਵਾਈਆ ਹਰਤਰਫ ਤੀਰ ਅਰ ਬੰਦ ਕੋ॥

ਚੁਨ ਗਰਮ ਸਦ ਅਤਸੇ ਕਾਰ ਜਾਰਾ॥

ਐਸੀ ਗਰਮ ਹੋਈ ਅਗਨ ਲੜਾਈ ਦੀ॥

ਕਿਫੀਲੇ ਦ ਦਹਿ ਹਜਾਰ ਅਮਦ ਬਕਾਰਾ॥ ੧੦੮॥

ਜੇ ਤਾਬੀ ਬਾਰਾਂ ਪੰਜਾਰ ਜੁਧ ਵਿਚ ਮਾਰਿਆ॥

ਬਕਾਰ ਅਮਦ ਹ ਅਸਪ ਹਫਤ ਸਦ ਹਜਾਰਾ॥

ਵਿਚ ਕੀਮਦੇ ਆਇਆ ਸਤ ਲਖ ਘੋੜਾ (ਅ:) ਜੁਧ ਮੇ ਸਤ ਲਖ ਘੋੜਾ ਮੇ

ਹਮ ਹਜ਼ੂਨ ਸਾਇਸਤ ਹੇ ਨਾਮਦਾਰਾ॥ ੧੦੯॥

ਉਤਨੇ ਹੀ ਜੁਰਮੇ ਬੜੇ ਬੜੇ ਨਾਮਦਾਰ (ਅ:) ਸਤ ਲਖ ਜੁਰਮਾ ਮਾਰਾ॥

ਜਿ ਸਿਧੀ ਵ ਅਰਈ ਵ ਮੇਰਾ ਕ ਜਾਇ॥

ਸਿਧੀ ਘੋੜੇ ਅਤੇ ਅਰਈ ਘੋੜੇ ਅਤੇ ਮੇਰ ਬਦੇ ਜੈਸੇ ਹੋਏ॥

ਬਕਾਰ ਅਮਦ ਹ ਅਸਪ ਚੰਗਾ ਦਿ ਪਾਇ॥ ੧੧੦॥

ਵਿਚ ਕੀਮਦੇ ਆਏ ਹੀ ਘੋੜੇ ਮਾਰਿਚ ਪਉਣ ਦੀ ਉਡਦੇ ਵਾਲੇ॥

ਬਸੇਕਸਤੁਹ ਸਰਹੰਗ ਸਾਇਸਤੁਹ ਜੇਰਾ।

ਬਹੁਤ ਆਰੇਹੋ ਸੁਪਾਹੀ ਸੇਰਾ ਵਰਗੇ

ਬ ਵਕਤੇ ਤਰਦੁਦ ਬਕਾਰੇ ਦਲੇਰਾ। ੧੧੦॥

ਵੇਲੇ ਲੜਾਈ ਦੇ ਵਿਚ ਜੁਧ ਦੇ ਦਲੇਰਾ।

ਬ ਗੁਰਗੀਦਨ ਆਮਦ ਦੁਅਬਰੇ ਜਿਆਹ।

ਵਿਚ ਗਜਵੇਦੇ ਆਏ ਦੇ ਬਦਲ ਕਾਲੇ।

ਨਮੇਖੁੰਨ ਆਹੀ ਤੁਫੇ ਤੇਰਾ ਮਾਹਿ। ੧੧੧॥

ਗਿਲ ਪਤਾਲ ਤੇ ਕੀਪੁਜੀ ਅਤੇ ਚਮਤਕਾਰ ਕਲਵਾਰ ਦਾ ਸੂਰਜ ਤੇ ਕੀਪ

ਬ ਜੀਗ ਅੰਦਰੁ ਗਉਗਹੇ ਗਾਜੀਆਂ।

(ਤੁਰਾ)

ਵਿਚ ਜੁਧ ਦੇ ਅੰਦਰ ਸੇਰ ਸਰਾਬਾ ਸੂਰਮਿਆ ਦਾ ਪਿਆਰੇ ਹੋਇਆ।

ਜਿਮੀਤੀਗ ਸਦ ਅਜ ਜਮੇ ਤਾਜੀਆਂ। ੧੧੨॥

ਪ੍ਰੀਤ ਅਉਖੀ ਹੋਈ ਧੋਇਆ ਦੇ ਸੁੰਬਾਂ ਨਾਲ। (ਅ:) ਟੇਢੇ ਪੈਗਏ।

ਜਮੇ ਬਾਦ ਪਾਯਾਨ ਫੇਲਾ ਦ ਨਾਲ।

ਸੁੰਬ ਘੜੇ ਸੇ ਉਡਵੇ ਵਾਲਿਆ ਧੋਇਆ ਦੇ ਪੁਲਾਦੀ ਨਾਲ ਨਾਲ।

ਜਿਮੀ ਗਸਤੁ ਪੁਜਤੇ ਪਿਲੰਗੀ ਮਿਸਾਲ। ੧੧੩॥

ਪ੍ਰੀਤ ਹੋਈ ਪਿਰ ਚਿੜੇ ਜੇਹੀ। (ਅ:) ਸੇਰੇ ਚਿੜੇ ਦੀ ਪੁਲ ਪੁਡ ਬਹੁੰਦੇ ਤੇ।

ਚਰਗੇ ਜਹਾਨੇ ਖੁਮੇ ਬਾਦਹ ਪੁਰਦਾ।

ਦੀਵੇ ਜਹਾਨ ਦੇ ਨੇ ਸਾਬਦਾ ਪਿਆਲਾ ਪੀਤਾ। (ਅ:) ਸੂਰਜ ਫਿਪ ਗਿਆ।

ਸਰੇ ਤਾਜ ਦੀ ਗਰ ਬਿਰਾਦਰ ਸਪੁਰਦਾ। ੧੧੪॥

ਜਿਹ ਪ੍ਰਿਥਮ ਕੁਟ ਬੁਝੇ ਭਾਈ ਦੇ ਸੋ ਪਿਆਰ। (ਅ:) ਚੰਦਮਾ ਚੜ੍ਹਿਆ।

ਬਰੇਜੇ ਰਹਾਰਮ ਤੁਪੀਦ ਆਫ ਤਾਬਾ।

ਚੰਬੇ ਦਿਨ ਚਮਕਿਆ ਸੂਰਜ। (ਅਥਾਤ) ਸੂਰਜ ਚੜ੍ਹਿਆ।

ਬ ਜਿਲਵਹ ਦਰਾਵੇ ਖਤ ਜਰਗੀ ਤਨਾਬਾ। ੧੧੫॥

ਵਿਚ ਜਜਵਟ ਦੇ ਬਟਕਾਈ ਸੇਨੇ ਦੀ ਰਸੀ। (ਅ:) ਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਫਤੀਆ

ਦਿਗਰ ਰਵਸ ਮਰਦਾਨ ਬਸਤੀ ਦ ਕਮਰਾ।

ਦੂਸਰੀ ਤਾਂ ਸੂਰਮਿਆਨੇ ਲਕਬੀਨੇ।

ਯਮਨੀਕਮਾਂ ਦਸਤੁ ਬਰੇ ਸਿਪਰਾ ॥੧੧੬॥

ਯਮਨੀਕਮਾਂ ਹਥਵਿਚ ਅਤੇਦਾਲ ਮੂੰਹ ਅਗੇਰਖੀ॥

ਚੁਹੇਸ ਅੰਦਰਆਮਦ ਬੁਜੇਸੀਦ ਜੀਗਾ॥

ਜੇਹੇਹੇਸਵਿਚਆਏ ਜੇਸਕੀਤਾ ਵਾਸਤੇ ਜੁਧਦੇ॥

ਬਰੇਸ ਅੰਦਰਆਮਦ ਚੁਕੇਸਸ ਪਿਲੀਗਾ ॥੧੧੭॥

ਵਿਚ ਗੁਸੇਦੇਆਏ ਜੇਸੇ ਚਿਤੇ ਚਲਾਕੀਕਰਦੇਹੈ ਜੁਧਵਿਚ॥

ਚੁਅਮ ਰੇਜ ਕੁਸਤੀਦ ਦਹ ਹਜਾਰ ਫੀਲਾ॥

ਚੋਥੇਦੇਨਮਾਰੋ ਜੁਧਵਿਚ ਦਸਹਜਾਰ ਹਾਥੀ॥

ਦੁ ਦਾਹਿ ਹਜਾਰ ਅਸਪੋ ਚੁਦਰੀਯਾਇ ਨੀਲਾ ॥੧੧੮॥

ਬਾਰਾਂਹਜਾਰਘੋੜਮਾਰਿਆਐਸਾ ਚਾਲਾਕ ਜੇਸੇਦਰਅਸੀਲਛੇਤੀਤੇਥੇਅਸੁ

ਬਕਾਰਆਮਦਹਿ ਪਿਯਾਦਹ ਸੀਸਦ ਹਜਾਰ॥ (ਤੁਰਦੇ)

ਵਿਚ ਜੁਧਦੇਮਾਰਿਆ ਸਿਪਾਹੀ ਤੀਸ ਲਾਖ॥

ਜੁਮਾਰਦ ਸ਼ੇਰਾਂਨ ਅਜਮੁਦਹ ਕਾਰਾ ॥੧੧੯॥

ਸੂਰਮੇਬਾਦੁ ਅਤੇਜੁਧ ਜੀਕ ਜਾਨਵੇਵਾਲੇ॥

ਕੁਨਦ ਜਰਹੇ ਰਬ ਚਹਾਰੇ ਹਜਾਰ॥

ਕਰਦੀਹੈ ਟੁਕੜੇ ਟੁਕੜੇ ਚਾਰ ਹਜਾਰ ਰਬਦੇ॥

ਬਸੇਰ ਅਫਕਨੇ ਜੀਗਾ ਆਪਪੁਤਹ ਕਾਰਾ ॥੧੨੦॥

ਵਿਚੇਰਬਾਦੇ ਸੂਰਮੇ ਸੇਰਾਨੂੰ ਮਾਰਨੇਵਾਲੇ ਕੰਮਜੁਧਦਾ ਜਿਖਤਿਏ॥

ਕਿਅਜ ਚਾਰ ਤੀਰ ਅਸਪ ਕੁਸਤਸ ਚਹਾਰਾ॥

ਜੇਚਾਰਤੀਰਾਂਸੇਘੋੜੇਚਾਰੇਐ ਉਸਦੇ॥ (ਅ:) ਰਾਜੇ ਸੁਭਟਸਿਘਦੇ॥

ਦਿਗਰਤੀਰ ਕੁਸਤਸ ਸਰੇ ਬਹਿਲ ਦਹਾ ॥੧੨੧॥

ਦੁਸਰੇਵੇਨਾਲ ਮਾਰਿਆ ਰਬਦਾ ਰਬਵਾਹੀ ਹਕਵੇਵਾਲਾ॥

ਸਿਯਮਤੀਰ ਜਦ ਹਰਦੇ ਅਬਰੂ ਸਿਕੀਜਾ॥

ਤੀਸਰਾਤੀਰ ਮਾਰਿਆ ਦੋਹਾਂ ਭੁਟਾਇਆਏ ਵਿਚਾ (ਅ:) ਮਥੇਵਿਚ

ਕਿਮਾਰੇ ਬਿਪੋਚੀਦ ਜਿ ਸਉਦਾਇ ਰੀਜਾ ॥੧੨੨॥

ਜੇਸੇਸਰਪ ਕੰਡਲਖਾਦਾਹੈ ਖਜਾਨੇਊਪਰਾ॥ =

ਰਹਰਮ ਬਿਜਦ ਤੀਰਖ ਬਰਜ ਨਿਯਤੁਤੁ।
ਚੰਬ ਤੀਰ ਜਦਮਾਰਿਆ ਛਤਮਤੀਨੇ ਸੁਤੁਤ ਸਿਘਨੂੰ ਕੁਛ ਖਬਰਾਹੀ

ਕਿਰੁਰਮਸ ਬ ਬਰਖਾ ਸੁਤੁਤ ਧਰਮਸਨਤੁਤੁ॥੧੨੩॥

ਜੇ ਰਹਮਉਸਦ ਉਠ ਗਿਆ ਅਤੇ ਆਪਣੇ ਧਰਮਦੀ ਖਬਰਾਹੀ॥ ਭੁੱਖ

ਬਿਜਦ ਚੰਚਾਮ ਮਕੋਬਰੇ ਨਾਜਨੀ॥

ਮਾਰਿਆ ਜਦੋਂ ਚੰਬ ਤੀਰ ਇਸਤੀ ਨੇ ਰਾਜੇਰੇ॥

ਬਖਰਦੇਦ ਸਹਰਗ ਬਿਅਫਤਦ ਜਮੀ॥੧੨੪॥

ਪੀਰਾ ਸਿਘ ਰਗਦਾ ਖੰਨ ਤੀਰਨੇ ਅਤੇ ਰਾਜਾ ਡਿਗਪਿਆ ਪ੍ਰਥੀਪਰ

ਬਿਦਲਸਤੁ ਕਿਣੀ ਮਰਦਪੁਮ ਮਰਦਹ ਗਸਤੁ॥

ਛਤਮਤੀਨੇ ਜਾਇਆ ਜੇਏਹ ਅਦਮੀਆਂ ਏਥੇ ਰੋਹੀਆਂ॥

ਬਿਅਫਤਦ ਬੁਮਹਮ ਚੁਨੀ ਜੇਰਮਸਤੁ॥੧੨੫॥

ਬਿਗਿਆਪੇ ਪ੍ਰਿਥ ਪ੍ਰਥੀਦੇ - ਜੇਸੇ ਸਿਘ ਮਸਤ ਹੁੰਦਾਰੇ॥

ਬਿਅਜਰਬ ਬਿਅਮਦ ਬਰਮਦ ਜਿਮੀ॥

ਛਤਮਤੀ ਜੇਰਬਸੇ ਆਈ ਉਪ ਪ੍ਰਥੀਦੇ ਰਾਜੇ ਸੁਤੁਤ ਸਿਘ ਪਾਜਾ॥

ਖਰਮੀਦਹ ਸਦਪੇ ਕਰੇ ਨਾਜਨੀ॥੧੨੬॥

ਦਹਲਦਾ ਹੁਇਆ ਸਰੀਰ ਇਸਤੀਦਾ॥ (ਅ॥) ਛਤਮਤੀ

ਬਖਰਦਸਤੁ ਬਰਦਾਸਤੁ ਯਕਪਿਆਲਹਮਾ॥

ਸਬ ਇਕ ਹਬਦੇ ਉਠਾਏਆ ਇਕ ਪਿਆਲ ਪਾਣੀਦਾ

ਬਨਿਜਦੇ ਸਹਆਮਦ ਰੁਪਰਾ ਚਿਕਾਬਾ॥੧੨੭॥

ਪਾਸਰਾਜੇ ਸੁਤੁਤ ਸਿਘਦੇ ਆਈ - ਜੇਸੇ ਉਤੁਟੇਦਲ ਚਿਕਾਬਾ ਤੀਦੇ

ਬਗੋਯਦ ਕਿਏ ਸਹਆਮਦ ਮਰਦਾ॥

ਛਤਮਤੀ ਕਾਹਦੀਓ ਜੇ ਏਥਾਦੇਸਾਹ ਬਿਆਰੇ ਮਰਦਾ

ਚਰਾਖਫਤੁਹ ਹਸਤੀ ਤੁਦਰਖੰਨ ਗਰਦਾ॥੧੨੮॥

ਬਿਸਵਾਸਤੇ ਸੁਤੁਹੇਤੁ ਦਿਹ - ਖੰਨ - ਅਤੇ ਸੁਰਦਾ॥

ਹਮਾਜਨ ਜਨੀ ਤੁਮਮੋਨੇ ਜੁਮਾ॥

ਹੀ ਇਸਤੀ ਮੇਤੇਰੀਹ ਨਵੀਨ

ਬਦੀਦਨ ਤਰਾਅਮਦਮਈ ਜਮਾ ॥ ੧੨੮ ॥

ਵਸਤੇ ਦੇਖਦੇ ਦੇਆਈਆਂ ਦੇਵੇਲਾ

ਬਰੋਯਦ ਕਿਏ ਬਾਹੁਏ ਨੇਕ ਬਖਤਾ ॥

ਰਾਜਾ ਸੁਭਾ ਸਿੰਘ ਕੋ ਦਾਸੇ ਜੇਏ ਇਸਤੀ ਭਲੇ ਭਾਗਾ ਵਾਈ ॥

ਚਰਾਤੇ ਬਿਅਮਦ ਦਰੀ ਜਾਇ ਸਖਤਾ ॥ ੧੨੯ ॥

ਕਿਸਵਾਸਤੇ ਤੂੰ ਅਈ ਵਿਚ ਇਸ ਜਾਗ ਸਖਤ ਦੇ ॥

ਅਰਾਰ ਮਹਦਹ ਬਾਸੀ ਬਿਯਾਰੇ ਮਲਾਜਾ ॥

ਫਤਾਮਤੀ ਕਾਹਦੀਓ ਜੇਕਰ ਤੂੰ ਮਗਰਿਅਹੋਵੇ ਤਮੇਤੇਗੀ ਲੇਖਕੋ ਜਵਾ ॥

ਟਗਰ ਜਿੰਦਹ ਹਸਤੀ ਬਖਜਦ ਸੁਪਾਸਾ ॥ ੧੩੦ ॥

ਜੇਕਰ ਤੂੰ ਸਹੀ ਸਲਾਮਤ ਹੋਵੇ ਵਾਹਗੁਰੂ ਦਾ ਪੰਨਵਾਰ ਕਰਾਗੀ ॥

ਅਜਾ ਗੁਫਤਨੀ ਹਾਂ ਖਸਮਾ ਮਦ ਸਖਨਾ ॥

ਇਸਪ੍ਰਕਾਰ ਦੇ ਕਹਿਣੇ ਸੇ ਬਾਦਸਾਹਨੂੰ ਸੁਖਨ ਪਾਇਆਇਆ ॥

ਬਰੋਯਦ ਕਿਏ ਨਾਜਨੀ ਸੀਮ ਤਨਾ ॥ ੧੩੧ ॥

ਰਾਜਾ ਪਸੀਨ ਹੋਕੇ ਕੋਦਹੋ ਜੇਏ ਇਸਤੀ ਚਾਦੀ ਜੇਸੇ ਸਰੀਰ ਵਾਲੀ ॥

ਹਰਾਂ ਕੁਸਕਿ ਖਾਹੀ ਬਰੋਮਨੁ ਦਿਹਾ ॥

ਜੇਕੁਛ ਤੂੰ ਮੇਰੇ ਸੇ ਮੰਗੇ ਮੰਗ ਮੇਤੋਂ ਦਿਵਾ ॥

ਕਿਏ ਸੇਰ ਦਿਲ ਮਨ ਗਲਾਮੇ ਤੁਅਮਾ ॥ ੧੩੨ ॥

ਫਤਾਮਤੀ ਸੇਰ ਸੇਰੇ ਕਹਾ ਜੇਏ ਸੇਰ ਦਿਲ ਮੇਤੇਰਾ ਟਹਲੂਆਹਾ ॥

ਖੁਦਾਵੰਦ ਬਾਸੀ ਤੁਏ ਕਾਰ ਸਖਤਾ ॥

ਫਤਾਮਤੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਮਾਲਕ ਤੇਵੇਤੂੰ ਮੇਰਾ ਇਸਕੰਮ ਸਖਤ ਵਿਚਾ ॥

ਕਿਮਾਰ ਬਯਕਬਾਰ ਕੁਨ ਨੇਕ ਬਖਤਾ ॥ ੧੩੩ ॥

ਜੇਮੇਰੇਤਾਈ ਇਕਬਾਰ ਕਰਨੇਕ ਨਸੀਬੇ ਵਾਲੀ (ਅ:) ਜਾਦੀਕਰ ਮੇਰੇ ਨਲ ॥

ਬਿਜਦ ਪਸਤ ਪਾਚਿ ਕੁਸਾਦਸ ਬਚਸਾਮਾ ॥

ਰਹਿਆ ਪਿਛੇ ਪਠਦੇ ਪੈਰਾਂ ਪਕੜਕੇ ਖੋਲੇ ਨੇਤ ॥

ਹਮਰਵਸ ਸਾਹਨ ਪੇਸੀਨ ਰਸਾਮਾ ॥ ੧੩੪ ॥

ਤੁਅਮ ਪਛਲੇ ਪਾਤਿਸਾਹ ਕੀਰਤ ਕੀਤੀ (ਅ:) ਦਿਹਾ ਕਰ ਲਿਖਾ ॥

ਇਅਫਤਾਰ ਬਰਹਬ ਬਿਖਾਵਰ ਦਜਾਂ॥

ਪਿਆਉ ਪਰਬ ਦੇ ਅਤੇ ਇਆਈ ਰਾਜਨੂੰ ਛੜਾਮਤੀ ਆਪਣੇ ਭੇਰੇ॥

ਬਿਜਦਨੋ ਬਤਸ ਸਾਹ ਸਾਹੇ ਜਾਮਾਂ॥੧੩੬॥

ਬਜਾਏ ਨੋ ਬਤਾ ਨਗਾਰੇ ਬਾਦਸਾਹੋ ਕੇ ਬਾਦਸਾਹ ਛੜਾਮਤੀ ਦੇ ਬਾਪਨੇ॥

ਬਹੋਸ ਅੰਦਰਾਮਦ ਦੁਰਸਾਮ ਸੁਕੁਸਾਦਾ॥

ਰਾਜਾ ਸੁਕੁਸਾਮੀ ਪਨੂੰ ਹੋਸਾਆ - ਈ ਅਤੇ ਦੇਵੇ ਨੇੜੇ ਖੜੇ॥

ਗੋਰਾਦ ਰਿਰਾਜਾਇ ਮਾਰ ਨਿਹਾਦਾ॥੧੩੭॥

ਰਾਜਾ ਕੇ ਹਵਾਹੋ ਜੋ ਮੇਰੇ ਤਾਈ ਬਿਥੇ ਇਆ ਰਖਿਆਹੇ॥

ਬਗਾਵਤ ਰਾਜਾਫਰ ਜੰਗ ਪਾਫਤਮਾ॥

ਛੜਾਮਤੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਮੇਰੇ ਤਾਈ ਜਾਪੇ ਜਿਤਿਆਹੇ॥

ਬਕਾਰੇ ਸਮਾਂ ਕਤ ਪਦਾ ਪਾਫਤਮਾ॥੧੩੮॥

ਵਿਰਕੀ ਮੇਰੇ ਤੇਰੇ ਤਾਈ ਖੜੇ ਦ ਬਣਾਇਆਹੇ॥

ਪਸੇਮਾਨ ਸੁਦ ਸਖਨ ਗਾਫਤਨ ਫਜਲਾ॥

ਛੜੀ ਮਤੀ ਨੇ ਕਹਾ ਸੁਮਿਦੇ ਤਾਈ ਦਾਹੇ ਬਹੁਤ ਬਤਾ ਕਰਨੇ ਨਾਲ ਹੁਕਮ ਪਕਰੀਏ

ਹਰਾਕਸ ਤੁਗਈ ਬਿਬਰਮਨ ਕਬਲਾ॥੧੩੯॥

ਰਾਜਾ ਨੇ ਕਿਹਾ ਜੋ ਕੁਛ ਤੂੰ ਮੇਰੇ ਕੁਛ ਮੇਰੇ ਕਬਲ ਹੈ॥

ਬਿਦਿਹ ਸਾਕੀਆ ਜਾਮ ਫੇਰੇ ਜਫਾਮਾ॥

ਦੇਹ ਸੁਖਈਆ ਪਾਲਾ ਫੀਰੇ ਜੀ ਰੰਗਵਾਲਾ (ਅ:) ਸੁਖਾਨੀ ਪਾਲ

ਰਿਮਾਰਾ ਬਕਾਰ ਅਸਤ ਰੇਜੇ ਤਮਾਮਾ॥੧੪੦॥

ਜੋ ਮੇਰੇ ਤਾਈ ਚਾਹੀਦਾਹੇ ਹਮੇਸ਼ਾ॥

ਤਮਾਰਾ ਬਿਦਿਹ ਤਾਸੁਦਮ ਤਾਜਹ ਦਿਲਾ॥

ਤੂੰ ਮੇਰੇ ਤਾਈ ਦੇਹ ਤਾਹੇ ਵਾਸੇ ਕਰਾਰ ਦਿਲਵਾਲਾ

ਕਿਰੀਹਰ ਬਿਮਾਰੇ ਮਮਾਲ ਦਹ ਗਿਲਾ॥੧੪੧॥

ਜੋ ਮਤੀ ਇਆਵਾਂ ਮੇ ਚਿਕੜ ਸੇ ਬਾਹ ਗ। (ਅ:) ਹੋਸੀ ਰੰਗ ਜੇ ਬ

ਤਾਤ ਪੁਜ ਇਸ ਹਿਕਾਸਤ ਜੇ ਬੇਹੋਤੇ ਬੇਹ ਇਸਤੀ ਹੀ ਤੇਰੇ ਸੇ ਧਰਮ ਰਾਨੇ ਜੋ ਸੇ ਕਹਾ ਤੇਰੇ

ਕੀਆ ਅਰਾਜੇ ਨੇ ਅਧਕ ਵਕ ਕਹਾ ਬਾਸੇ ਤਿਸਨੇ ਕੋਜਾ ਫਲ ਪਾਇਆ ਤੇ ਸੇ ਤੂੰ ਭੀ ਪਾਵੇਗਾ॥

ਹਿਕਾਯਤੁ ਪਜਿਵੀ
ਚਲੀ॥
੧੬ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫਤਹੁ॥

ਤੁਈ ਰਹਨੁ ਮਾਓ ਤੁਈ ਦਿਲੁ ਕੁਸਾਇ॥
ਉਹੁ ਹਿਕਾਯੁ ਤੁਹੀ ਰਸਰਾ ਦੇਖ ਲਾਏ ਵਾਲਾ ਪੈ ਅਤੇ ਤੁਹੀ ਦਿਲ ਦੇ ਪੈਲ ਟੇ ਵਾਲਾ ਪੈ॥
ਤੁਈ ਦਸਤਗੀਰ ਅੰਦਰ ਹਰੇ ਸਰਾਇ॥੧॥
ਤੁਹੀ ਹਥ ਦੇ ਪਕੜ ਨੇ ਵਾਲਾ ਪੈ ਵੇਚ ਲੋਕ ਅਤੇ ਪੁੱਛੇ ਕਹੈ ਘਰੇ॥
ਤਰਜਾ ਕਰੇ ਜੀ ਦਿਹੋ ਦਸਤਗੀਰ॥
ਤੁਹੀ ਚਿਜ ਕੇ ਦੇਣੇ ਵਾਲਾ ਪੈ ਤੁਹੀ ਕੀ ਦੇਣੇ ਵਾਲਾ ਪੈ ਹਥ ਦੇ ਪਕੜ ਨੇ ਵਾਲਾ ਪੈ॥
ਕਰੀ ਮੇਖਤਾ ਬਖਸ਼ ਦਾਨੁ ਪੁਜੀਗ॥੨॥
ਕਿ ਪਾਕੇ ਕਰਨੇ ਵਾਲਾ ਅੰਤੁ ਹਰੇ ਬਖਸ਼ ਦੇਣੇ ਵਾਲਾ ਪੈ ਬਧ ਦੇ ਬਖਸ਼ ਦੇਣੇ ਵਾਲਾ ਪੈ॥
ਹਿਕਾਯਤੁ ਸਨੀ ਦਮ ਅਕੈ ਕਾਜੀ ਅਸਾ॥
ਕਹਾਣੀ ਸੁਣੀ ਹੈ ਤਮਨੇ ਇਕ ਕਾਜੀ ਦੀ॥
ਕਿ ਬਰਤਰ ਨਵੀ ਦਮ ਕੋਯੇ ਦੀ ਗਹਸਾ॥੩॥
ਜੇ ਉਸਸੇ ਵਰਾ ਨਹੀ ਦੇਖਿਆ ਤਮਨੇ ਕੋਈ ਦੂਸਰਾ
ਅਕੈ ਖਾਨਹ ਰਿਬਾਨ ਦੇ ਨੇ ਜਵਾ॥
ਇਕ ਉਸਦੇ ਘਰ ਵਿਚ ਇਸਤਰੀ ਸੁਵਾ ਅਵਸਤਾਈ
ਕਿ ਕੁਵਰਾ ਸੁਵਰੁ ਹਰ ਕਸੇ ਨਾਜੁ ਦਾ॥੪॥
ਜੇ ਹਰ ਨੇ ਜਾਵੇ ਉਸ ਉਪਰੇ ਹਰ ਇਕ ਇਸਤਰੀ॥
ਕਿ ਸੋਸਨ ਸਰੋਰਾ ਫਰੇ ਮੇਜੁ ਦਾ॥
ਸੋਸਨੀ ਫੁਲਨੇ ਸਿਰ ਕੇ ਤਈ ਮਾਰਿਆ ਹੈ॥ (ਅ॥)
ਗੁਣੇ ਲਾਲਹਰਾ ਦਾਗ ਬਰ ਦਿਲ ਸੁਦਾ॥੫॥
ਗੁਲਾਲੇ ਦੇ ਫੁਲ ਦੇ ਤਈ ਕਾਲਾ ਦਾਗ ਉਪਰ ਦਿਲ ਦੇ ਹੋਇਆ ਹੈ॥
ਕਸਾ ਸੁਰਤੇ ਮਾਰਾ ਬੀਮ ਜੁਦਾ॥
ਉਸ ਇਸਤਰੀ ਦੀ ਸੁਰਤ ਜੇ ਚੰਦਾ ਕੇ ਤਈ ਤੋ ਹੋਇਆ॥

ਰਸਕੋਸੇਖਤਰ ਅਜਮੀਆਂ ਨੀਮਜਦਾ ॥ ੬ ॥

ਗੁਜੇ ਜੇਜਗਤਿਆ ਅਤੇ ਦਰਮਿਆਨ ਤੇ ਅਧਾਰੇ ॥

ਬਕਾਰ ਅਜ ਸੁਏ ਖਾਨ ਹ ਬੇਰੇ ਰਵਦਾ ॥

ਬਜਤੇ ਕਿਸੀਕਿਮਦੇ ਘਰੇ ਸੇ ਭਾਰੇ ਜਾਵੇ ॥

ਬਦੇਸੇ ਜਲਦ ਸੋਰ ਸੰਬਲ ਸਵਦਾ ॥ ੭ ॥

ਜਲਦੇ ਸੇਢੇ ਪਰ ਜਲਫ ਸੁਕਦੀਆਂ ਦੇਖੇ ਬਲ ਵਟਖਾਵੇ ॥

ਗਰ ਅਬ ਬਦਰੀਆ ਬਸੇਲਦ ਰੁਖਸਾ ॥

ਜੇਕਰ ਪਈ ਵਰੀਆਂ ਦੇਇਬ ਮੂੰਹ ਪੈਵੇ ਓਇਸਤੀ ॥

ਹਮਰ ਖਰ ਮਾਹੀ ਸਵਦ ਗੁਲ ਰੁਖਸਾ ॥ ੮ ॥

ਭਾਮਕੀਤੇ ਮਛੀਆਂ ਦੇ ਟੁਲੇ ਜਵਾਨ ਉਸਤੀ ਦੇ ਪਤਾ ਪਕਰੇ ॥

ਬਕਮ ਓਟਿਤਾ ਦਰ ਹਮਾਂ ਸਾਨਹ ਮਾ ਬਾ ॥

ਵੇਰੇ ਮਈ ਦੇ ਉਸਦਾ ਪਇਆਂ ਪੜਫਾਵੇ ਉਸਪਨੀਦਾ ॥

ਜਿਸਤੀ ਸਵਦ ਨਮ ਨਰਗਸ ਸਰਾਬਾ ॥ ੯ ॥

ਬਸਬਸ ਮਸਤੀ ਦੇ ਰੋਇਆਂ ਦੇ ਨਮ ਉਸਦਾ ਨਰਗਸ ਸਰਾਬਾ ॥

ਬਦੀਦ ਸਪਕੇ ਰਾਜਹ ਨੇ ਜੁਗ ॥

ਉਸਤੀ ਦੇਇਕ ਰਾਜਾ ਸੁੰਦਰ ਜੁਗ ਅਜਤ ਵਾਲਾ ਦੇਖਿਆ ਨਮ ਸਬਲ ਲਿਪ ॥

ਕਿਹੁਸਨਲ ਜਮਾਲ ਅਸਤ ਜਾਹਰ ਜਹਾਂ ॥ ੧੦ ॥

ਜੇ ਸੁੰਦਰ ਸਰੂਪੇ ਅਤੇ ਪਸੇਧ ਜਹਨਾਵੇਰਾ ॥

ਬਗਫਤਾ ਕੀਏ ਰਾਜਏ ਨੇਕ ਬਖਤਾ ॥

ਉਸਤੀ ਦੇਇਕ ਰਾਜਾ ਜੇਏ ਗਜੇ ਭਲੇ ਨਜੀਬੇ ਟਾਲੇ ॥

ਤੁਮਾਰਾ ਇਹ ਜਾਇ ਨਜਵੀਕ ਤਖਤਾ ॥ ੧੧ ॥

ਤੁਮੇਰੇ ਤਈ ਦੇਹ ਜਾਗਾ ਨੇੜੇ ਤਖਤ ਦੇ ॥ (ਅ) ਅਪਣੀ ਰਾਣੀ ਬਣਾਉ ॥

ਨਖਸਤੀ ਜਰੇ ਕਾਜੀਆਵਰ ਤੁਰਾਸਤਾ ॥

ਪੇਂਡੇ ਸਿਰ ਕਾਜੀਦਾ ਇਆਉ ਤੁਮ ਵਰੇ ॥

ਵਜਾ ਪਸਕਿਣੀ ਖਾਨਹ ਮਾ ਅਜਤੁਰਾਸਤਾ ॥ ੧੨ ॥

ਉਸਤੀ ਦੇਇਕ ਘਰ ਮੇਰਾ ਘਰ ਤੇਰਾ ॥

ਜੇਕਰ ਪਈ ਵਰੀਆਂ ਦੇਇਬ ਮੂੰਹ ਪੈਵੇ ਓਇਸਤੀ

(ਖੁਸ਼ੀਆ ਬਦੇ ਮਦਾ ਨਮਤੇ)

੧੫
ਮਤੇ)

ਸੁਨੀਦੀ ਸਾਖਨ ਰਾਹਿਲ ਅੰਦਰ ਨਿਹਾਦਾ।

ਇਸਤੀਨੇ ਏਹ ਗਲ ਸੁਣੀ ਉਸਕੋਤਾਈ ਅੰਦਰ ਦਿਲਦੇ ਰਖਿਆ।

ਨਰਾਜੇ ਦਿਗਾਰ ਪੇਸ ਅਭਿਰਤ ਕੁਸਾਦਾ। ੧੩॥

ਨਹੀ ਭੇਤ ਦੁਸਰੀ ਇਸਤੀ ਦੇ ਅਗੇ ਖੋਲਿਆ।

ਬਟਕਤੇ ਸਹਰਰਾ ਰੁਖਸ ਖਟਤ ਹਦੀਦਾ।

ਜਿਸਵੇਲੇ ਪਸਮੰਨੂੰ ਜੋ ਭਲੀ ਪੁਕਾਰ ਸੁਤਾ ਹੋਇਆ ਵੇਖਿਆ

ਬਿਜਦ ਤੇਗ ਖੁਦ ਦਸਤ ਸਰ ਓ ਬੁਰੀਦਾ। ੧੪॥

ਮਾਰੀ ਤਲਵਾਰ ਅਪਣੇ ਹਥਨਾਲ ਉਸਦਾ ਸਿਰ ਕਟਿਆ।

ਬੁਰੀਦ ਹਸਰ ਚਿਰ ਰਵਾਂ ਜਾਇਗਾ ਸੁਤਾ।

ਕਟਕੇ ਸਿਰ ਉਸਦੇ ਤਾਈ ਤੁਰਪਈ ਉਸੀ ਜਾਗਾਨੂੰ।

ਦਰ ਜਾ ਸਬਲ ਸਿੰਘ ਕਿ ਬਿਨਸ ਸਤੁਹ ਅਜਤਾ। ੧੫॥

ਜਿਸ ਜਾਗਾ ਰਾਜਾ ਸਬਲ ਸਿੰਘ ਜੋ ਬੈਠਾ ਹੋਇਆ ਹੋ।

ਤੁਰਾਫਤੀ ਮਰਾ ਹਮ ਇਨੀ ਕਰਦ ਹਮਾਮਾ।

ਕਾਜੀਦੀ ਇਸਤੀਨੇ ਰਾਜੇਨੂੰ ਕਹਾ ਤੁਜੇਸਾ ਮੇਨੂੰ ਕਹਾ ਮੇਸਾਹੀ ਮੇਨੇ ਕੀਤਾ।

ਬਪੇਸੇ ਤਈ ਸਰ ਮਨ ਆਵਰਦ ਹਮਾਮਾ। ੧੬॥

ਅਗੇ ਤੇਰੇ ਏਹ ਸਿਰ ਲਿਆਈਹਾਂ ਮੇ

ਅਗਰ ਸਰਤ ਖਾਹੀ ਸਰਤ ਮੇਦਿਹਾਮਾ।

ਜੇਕਰਤੁ ਸਿਰ ਮੇਰਾ ਮੰਗੇ ਤਾ ਮੇਰੀ ਦਿਦੀਹਾਂ।

ਬਜਨੇ ਦਿਲੇ ਬਰਤੁ ਅਸਕ ਸੁਦਮਾ। ੧੭॥

ਸਾਬਜਨ ਅਤੇ ਦਿਲਦੇ ਮੇ ਤੇਰੇ ਉਪਰ ਅਸਕ ਹੋਈਹਾਂ।

ਕਿਉਮ ਸਬ ਕੁਨ ਅਮਾਹਦ ਤੇ ਬਸਤੁ ਹਈ।

ਜੇ ਅੰਜਦੀ ਰਾਤ ਕਰਤੂੰ ਜੇਤੇ ਕਰਾਰ ਬਿਨਿਆ ਪੈ ਮੇਰੇ ਸਾਬਾ।

ਬਗਮਜਹ ਰਜਮ ਜਨ ਮਨ ਕੁਸਤੁ ਹਈ। ੧੮॥

ਸਬ ਕਹਾ ਖਮ ਨੇਕਾਂ ਦੇ ਮੇਰੀ ਜਨ ਕੁਠੀ ਪੈ ਤੇਨੇ

ਚਦੀਦ ਸਸਰੇ ਰਾਜਦੇ ਨੌਜਵਾਂ।

ਜੇਦੇ ਵੇਖਿਆ ਉਸਦਾ ਸਿਰ ਰਾਜੇ ਜੁਦ ਅਸਤਵਲੇ।

ਬਤਰਸੀਦੁਗੁਫਤਾ ਕਿਏ ਬਦ ਨਿਸ਼ਾ ॥੧੮॥
 ਕੀਖਿਆ ਅਤੇ ਕਿਹਾ ਜੋ ਦੇਇਸਤੀ ਤੇਰੇ ਨਿਸ਼ਾਨ ਵਾਲੀਏ ॥

ਚਨਾ ਬਦ ਤੁਕਰਦੀ ਖੁਦਾਵੰਦ ਖੇਸਾ ॥
 ਐਸਾ ਬੁਰਕੀਮ ਕੀਤਾ ਭੈ ਖੁਸਮ ਆਪਣੇ ਨਾਲ ॥

ਕਿਮਾਰਾ ਚਿਮਾਰੀ ਅਜੀਕਾਰ ਬੇਸਾ ॥੨੦॥
 ਜੇ ਮੇਰੇ ਤਾਈ ਕਿਮਾਲਿਆ ਦੇਗੀ ਤੂੰ ਇਸੇ ਤੁਲਾ ਕੀਮ

ਜਿਤੇ ਦੇਸਤੀ ਮਨ ਬਬਾਜ ਆਮਦਮਾ ॥
 ਤੇਰੀ ਪੀਤੀਸੇ ਮੇ ਬਿਨਾਹੀ ਅਛਾਹਾ ॥

ਜਿਕਰਦਹ ਤੁਮਨ ਦਰ ਨਿਯਾਜ ਆਮਦਮਾ ॥੨੧॥
 ਕਰਤਬਾਂ ਤੇਇਆ ਜੇ ਮੇ ਵੇਰ ਭੇਦੇ ਆਇਆਹਾ ॥

ਚਨੀ ਬਦ ਤੁਕਰਦੀ ਖੁਦਾਵੰਦ ਕਾਰਾ ॥
 ਐਸਾ ਬੇਟ ਕੀਤਾ ਤੂੰ ਆਪਣੇ ਮਾਲਕ ਨਾਲ

ਮਰਾ ਕਰਦਹ ਬਾਸੀ ਚਿਨੀ ਰੋਜ ਗਾਰਾ ॥੨੨॥
 ਮੇਰੇ ਤਾਈ ਭੀ ਕਰੇਗੀ ਤੂੰ ਐਸਾ ਹੀ ਹਾਲਾ ॥

ਬਾਅੰਦਾਖਤ ਸਰਰਾਂ ਦਰਾਂ ਜਾਂ ਜਿ ਦਸਤਾ ॥
 ਸਿਟਿਆ ਸਿਰਦੇ ਤਾਈ ਉਸੀ ਜਾਰਾ ਹਬਸੇ ॥

ਬਰੇ ਸੀਨਹ ਓਸਰ ਬਿਜਦ ਹਰਦ ਦਸਤਾ ॥੨੩॥
 ਫਤੀ ਉਪਰ ਅਤੇ ਸਿਰ ਉਪਰ ਉਸ ਦੇਸਤੀ ਨੂੰ ਦੇਨੇ ਹਬਮਾਰੇ ॥

ਮਰਾ ਪਸਤੁ ਦਾਦੀ ਤੁਰਾ ਹਕ ਦਿਹਦਾ ॥
 ਏਹੁ ਕੀਹ ਮੇਰੇ ਤਾਈ ਪਿਠ ਦਿਤੀ ਤੂੰ ਤੇਰੇ ਤਾਈ ਵਾਹਗੁਰੂ ਦੇਵੇ ॥

ਵਜਾ ਰੋਜ ਮੇਲਾ ਇਕਾਜੀ ਸਵਦਾ ॥੨੪॥
 ਜਿਸਦਿਨ ਵਾਹਗੁਰੂ ਨਿਆਉ ਕਰਨੇ ਵਾਲਾ ਹੋਵੇ ॥

ਬਿਅੰਦਾਖਤ ਸਰਖਾਨਹ ਆਮਦ ਬਬਾਜਾ ॥
 ਸਿਟਿਆ ਸਿਰਨੂੰ ਅਤੇ ਘਰਨੂੰ ਆਈ ਫੇਰਾ ॥

ਬਾਅੰਦਾਖਤ ਕਾਜੀ ਬਖਸਪੀਦ ਦਰਜਾ ॥੨੫॥
 ਜਾਬ ਉਸੀ ਕਾਜੀ ਦੀ ਲਿਖਦੇ ਨਾਲ ਸੁਤੀ ਪੈਰ ਪਸਾਰਕੇ ॥

ਬਿਅੰਦਾਪਤ ਬਰ ਸਰ ਜਿਖੁ ਦ ਵਸਤੁ ਖਾਕਾ।
 ਫੇਰ ਭਰੇ ਕਿਹੀ ਭਿਖਾ ਸਿਰ ਆਪਣੇ ਮਿਟੀ ਆਪਣੇ ਹਥੀ॥

ਬਗੁਫਤੁ ਕੈ ਖੇਜੇ ਦ ਘਰਾਨ ਪਾਕਾ। ੨੬॥

ਜਾਬ ਭੇਰ ਦੇ ਬਿਹਾ ਏ ਪਿਆਰਿ ਅਤੇ ਪਵਿਤ੍ਰੇ ਚਿੰਨ੍ਹ॥

ਚਿਬਦ ਕਾਰ ਕਰ ਦਈ ਕਸੇ ਸੋਰ ਸਾਖਤਾ।

ਲਿਖਾ ਧਰਾ ਕੰਮ ਕੀਤਾ ਏਹ ਕਿਸੀ ਬੁਰੇ ਭਾਗਾ ਵਾਸਤੇ॥

ਕਿ ਕਾਜੀ ਬਜਾ ਕਸਤੁ ਘਰ ਜਖਮ ਸਾਖਤਾ। ੨੭॥

ਜੋ ਕਾਜੀਨੂੰ ਜਨ ਸੇ ਮਾਰਿਆ ਇਕ ਫਟ ਭਾਰੀ ਨਾਲਾ॥

ਬਹਰ ਜਾਂ ਕਿ ਘਾਬੇ ਦ ਖੰਨ ਸੁ ਨਿਜਾ।

ਵਿਚ ਜਿਸ ਜਾਗਾ ਦੇ ਪਾਉ ਤੁਸੀਂ ਘੁਰੀਆ ਨਿਜਾਨੀਆਂ॥

ਹੁਮਾਂ ਰਾਹ ਰੀਰੀ ਦ ਹਮਾ ਮਰਦਮਾਂ। ੨੮॥

ਇਹੀ ਰਸਤਾ ਪਾਛਿਆ ਸਬੁ ਅਦਮੀ ਅਸੇ ਉਸ ਇਸਤ੍ਰੀ ਨਾਲਾ॥

ਬ ਅਜਾ ਜਹਾਂ ਖਲਕ ਵਿਸਤਾਰ ਦ ਹ ਕਰਦਾ।

ਇਹ ਜਿਸ ਜਾਗਾ ਦੇ ਭੇਰ ਖਲਕਤ ਦੇ ਖੜੇ ਜਾ ਕੀਤੇ॥

ਬਜਾਏ ਸਰ ਕਾਜੀ ਅਫਤਾ ਦ ਹ ਕਰਦਾ। ੨੯॥

ਵਿਚ ਜਿਸ ਜਾਗਾ ਦੇ ਸਿਰ ਕਾਜੀ ਦ ਸਿਰ ਗਈ ਹਈ ਫੀ॥

ਜਿਵਾਨਿ ਸਤੁ ਹਮਾ ਮਰਦਮਾਂ॥

ਜਾਇਆਂ ਸਬੁ ਇਸਤ੍ਰੀਆਂ ਅਤੇ ਅਦਮੀਆਂ॥

ਕਿਈ ਰਾ ਬਕਸਤੁ ਹ ਅਸਤੁ ਰਾਜ ਹ ਹੁਮਾਂ। ੩੦॥

ਜੋ ਇਸਕੇ ਤਈ ਮਾਰਿਆ ਏ ਇਸੀ ਰਾਜਨੇ॥

ਗਰਿਫਤੀ ਦ ਚਿਰਾ ਬਕਸਤੀ ਦ ਸਾਖਤਾ।

ਪਕੜਿਆ ਉਸ ਰਾਜਨੂੰ ਅਤੇ ਬੰਨ ਲਿਆ ਸਾਥ ਕਰ ਦਾਈਏ॥

ਕਜਾਏ ਜਹਾਂ ਗਰਿਫ ਇਨ ਸਸਤੁ ਹ ਤਖਤਾ। ੩੧॥

ਜਿਸ ਜਾਗਾ ਜਹਾ ਗੀਰ ਖੋਠਾ ਦਿਹਾ ਲਤ ਦੇ ਤਖਤ ਉਤੇ ਬੈਠਾਈ॥

ਬਗੁਫਤੀ ਦ ਕਿਈ ਰਾ ਹਵਾਲ ਹ ਕਨ ਦਾ।

ਜਹਾਂ ਗੀਰੇ ਕਿਹਾ ਜੋ ਇਸਕੇ ਤਈ ਇਸ ਇਸਤ੍ਰੀ ਹਵਾ ਕੇ ਕਰੇ॥

ਬੁਢਿਲ ਹੁਰ ਚਿ ਦਾਰਦ ਭੁਜਾਇ ਸੁਦਿਹ ਦੁ॥ ੩੨॥
ਵਿਚ ਦਿਲ ਦੇ ਜੋ ਕੁਛ ਰਖੇ ਇਸਤੀ ਸੋ ਰਾਜਾਨੂੰ ਤਬ ਨ ਕਰੇ॥

ਬਠਰ ਮੁਦ ਜਲਾਦ ਰਾਜੇਰ ਬਖਤੁ॥
ਹੁਕਮ ਦਿਤਾ ਚੰਡਾਲ ਕੇਤਾਈ ਬੁਰੇ ਭਾਗਾ ਵਾਲੀ ਇਸਤੀ ਨੇ॥
ਕਿਈ ਸਰਜ ਦਾ ਕੁਨ ਬਯਕ ਜਖਮ ਸਖਤੁ॥ ੩੩॥
ਜੇ ਇਸਰਾਜਾ ਦਾ ਸਿਰ ਜੁਦਾ ਕਰ ਸਾਬਾਇ ਕਫਟ ਕਰ ਦੇ॥

ਰਸਮ ਸੇਰ ਰਾ ਦੀਵ ਅੰਨ ਉ ਜਦੁ॥
ਜੇ ਤਲਵਾਰ ਕੇਤਾਈ ਦੇਖਿਆ ਉਸਰਾ ਜੇ ਜੁਫਾ ਅਵਸਤਾ ਵਾਲੇ ਨੇ॥
ਬਲਰਜ ਹ ਦਰਾਮਦ ਚੁਜਰਵੈ ਗਿਰਾ॥ ੩੪॥
ਵਿਚ ਕੰਬਦੇ ਦੇ ਆਇਆ ਜੇਸੇ ਸਰੂ ਬਾਗ ਵਿਚ ਕੰਬਦਾ ਹੋ॥ (ਅ) ਸਰੂ ਵਾਭੀ ਤੁਰਿਆ॥

ਬਗਾਫਤਾ ਕਿਮਨ ਕਾਰ ਬਦ ਕਰਦੁ ਅਮਾ॥
ਰਾਜਾ ਲੋਕਿਹਾ ਜੇ ਮੇਨੇ ਕੰਮ ਬੁਰਾ ਕੀਤਾ ਹੋ॥
ਬਕਾਰੇ ਸੁਮਾ ਤੋਰ ਖੁਦ ਕਰਦੁ ਅਮਾ॥ ੩੫॥
ਵਿਚ ਤੇਰੇ ਕੰਮ ਦੇ ਆਪਣਾ ਚੁਭਾਉ ਕੀਤਾ ਹੋ ਮੇਨੇ॥

ਨਮੁਦੁ ਇਸਾਰਤ ਬਚ ਸਮੇ ਬਾਮਾ॥
ਕੀਤੀ ਸਾਬ ਨੇੜਾ ਦੇ ਇਸਾਰਾ ਜੇ ਇਸ ਇਸਤੀ ਨੂੰ॥
ਕਿਉ ਬਾਨੂਏ ਸਰਵਰੇ ਬਾਨੁ ਅਮਾ॥ ੩੬॥
ਜੇਏ ਇਸਤੀ ਸਰਦਾਰ ਇਸਤੀ ਆ ਦੀਏ

ਜਿ ਹੁਕਮੇ ਸੁਮਾ ਮਨ ਖਤਾ ਕਰਦੁ ਅਮਾ॥
ਜੇ ਤੇਰੇ ਹੁਕਮੇ ਮੇਨੇ ਤਕਸੀਰ ਕੀਤੀ ਹੋ॥
ਕਿਕਾਰਈ ਬਬੇ ਮਸਲਹਤ ਕਰਦੁ ਅਮਾ॥ ੩੭॥
ਜੇਏ ਕੰਮਾ ਬਿਨਾ ਸਲਾਹ ਦੇ ਕੀਤਾ ਹੋ ਮੇਨੇ

ਖਲਾਸਮ ਬਿਦਿਹ ਅਹਦ ਕਰਦੁ ਮਕਸੂਲ॥
ਤੂੰ ਮੇਨੂੰ ਖਲਾਸੀ ਦੇਹ ਜੇ ਕੋਲ ਮੇਕ ਬੁਲ ਕਰਦਾ ਹਾ॥
ਕਿ ਅਹਦੇ ਖਰਾ ਅਸਤੁ ਕਸਮੇ ਰਜਲਾ॥ ੩੮॥
ਜੇ ਸੁਰੀਦ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਦੀਏ ਅਤੇ ਸੁਰੀਧ ਪੰਗੋ ਬਰਦਾ ਹੋ॥

੬੬ ਗੁਨਾਹ ਬਖਸ਼ ਤੇ ਮਨ ਖਤਾ ਕਰ ਦਹ ਮਮਾ॥
 ਭੰਡੁਲ ਬਖਸ ਮੇਰੀ ਮੇਰੇ ਤਕਸੀਰ ਕੀਤੀ ਹੈ॥
 ਕਿਏ ਜਿਗਰ ਜਨਮ ਗੁਣਾ ਮੇ ਤੁਆਮਾ॥ ੩੯॥
 ਜੇ ਮੇ ਜਿਗਰ ਅਤੇ ਜਨਮੇਰੀ ਮੇਰੇ ਹਰ ਲੋਆਹਾਂ
 ਬਗੁਨਾਹ ਗਾਰੀ ਰਜਹ ਪਸਦ ਕੁਸਮਾ॥
 ਇਸਤੀਨੇ ਕਿਹਾ ਜੇ ਕਰ ਇਸ ਜੇਸੇ ਰਾਜੇ ਪਾਜੇਸੇ ਮਾਰਾ ਮੇ॥
 ਨਕਾਜੀ ਮਰਾ ਜਿੰਦਹ ਦਸਤੁਆਪਦਮ॥ ੪੦॥
 ਨਹੀ ਕਾਜੀ ਮੇਰੇ ਤਾਈ ਜੀਵਦਾ ਹਥ ਮਾਵੇਗਾ ਮੇਰੇ॥
 ਕਿਓ ਕੁਸਤੁਹ ਸਦ ਰਚਾਈ ਰਾ ਕੁਸਮਾ॥
 ਜੇ ਓਹਤਾ ਮਾਰਿਆ ਗਿਆ ਕਿਸਦਾ ਸਤੇ ਇਸਕੋ ਤਾਈ ਮਾਰਾ ਮੇ॥
 ਕਿਖੁਨੇ ਅਜੀ ਬਰ ਸਰੇ ਖੁਦ ਕੁਨਮਾ॥ ੪੧॥
 ਜੇ ਖੁਨ ਇਸਦਾ ਉਪਰ ਸਿਰ ਆਪਣੇ ਕਰਾ ਮੇ॥
 ਚਿਖੁਸਤਰ ਕੀ ਵੀਰਾ ਖਲਾਸੀ ਦਿਹੀ ਮਾ॥
 ਕਿਆ ਬਹੁਤ ਭਲਾ ਹੈ ਜੇ ਇਸਕੋ ਤਾਈ ਖਲਾਸੀ ਦੇਵਾ ਮੇ॥
 ਵਮਨ ਹਜਰਤੇ ਕਾਬਹ ਅਲਹ ਵਫਾਮਾ॥ ੪੨॥
 ਅਤੇ ਮੇ ਦਰਗਾਹ ਕਾਬੇ ਖੁਦਾ ਦੇ ਨੂੰ ਚਲੀ ਜਾਵਾ ਮੇ॥
 ਬਗੁਨਾਹ ਈ ਚੁਖਨ ਰਾਟ ਕਰ ਦਸ ਖਲਾਸਾ॥
 ਕਹਾ ਏਸ ਬਾਤ ਕੇ ਤਾਈ ਅਤੇ ਰਾਜਾ ਨੂੰ ਫਰਾਦਿਤਾ॥
 ਬਖਾਨਹ ਖੁਦ ਆਮਦ ਜਮੇ ਕਰ ਦਖਾਸਾ॥ ੪੩॥
 ਇਹ ਘਰ ਆਪਣੇ ਦੇ ਆਈ ਅਕਰੀ ਕੀਤੀ ਰੋਕੜ ਆਈ॥
 ਬਖਸਤੀ ਦੇ ਬਾਰੇ ਤੁਯਾਰੀ ਕਨਦਾ॥
 ਬੀਤੇ ਬਾਰ ਪਦਾਰਥ ਦੇ ਅਤੇ ਉਆਹੀ ਕਰਦੀ ਹੈ॥
 ਕਿਏ ਜਦ ਮਰ ਕਾਮ ਗਾਰੀ ਦਿਹਦਾ॥ ੪੪॥
 ਜੇ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਮੇਰੇ ਤਾਈ ਪ੍ਰਯੋਜਨ ਦਿਲਦਾ ਪੁਰਾਕਰੇ॥
 ਦਰੇਗਾ ਅਸੁ ਕਥਾ ਬਿਲ ਜੁਦਾ ਮੇ ਸੁਣਿਆ॥
 ਅਨੁਸਾਰੇ ਜੇ ਕੋਈ ਕਥੀ ਲੇਖੇ ਜੁਦੀ ਹੋਈ ਹਾਂ ਮੇ॥

ਅਗਰ ਜਿਹੁ ਬਾਜਾ ਬਾਜਾ ਅਮਦਮਾ ॥ ੪੫ ॥ ੬੭
ਜੇਕਰ ਜੀਵਦੀਰਾਤੀਐ ਫੇਰ ਆਵਾਗੀਐ ॥

ਮਤਾਏ ਨਕਦ ਜਿਨਜਰਾ ਬਾਰ ਬਸਤਾ ॥
ਪਦਾਰਥ ਰੇਕਰਦੇ ਅਤੇ ਜਿਨਜਾਦੇ ਤਾਈ ਬਾਰ ਬੰਨੇ ॥

ਬਦਾਨਹ ਸੁਏ ਕਾਬਹ ਅਲਹ ਸਦਹ ਅਸਤਾ ॥ ੪੬ ॥
ਰਵਾਨਾ ਤਫ ਕਾਬੇ ਖੁਦਾਦੇ ਰੇਈਐ ॥

ਚੁਖੇਰੁ ਬੁਦਾਮਦ ਦੁਸੇ ਮੰਜਲ ਸਾ ॥
ਜੇਦੇ ਬਾਹਰਾਥੀ ਵੇਚਾਰ ਮੰਜਲਾ ਉਸਥਾਨ ਤੇ ਹਿ ਵਿਸਤੀ ॥

ਬੁਖਾਦ ਅਮਦਹ ਖਾਨਹ ਜਾਂ ਦੇਸਤ ਸਾ ॥ ੪੭ ॥
ਵਿਚ ਖਾਦਦੇ ਆਇਆ ਘਰ ਉਸ ਪਿਆਰੇ ਰਾਜਾਦਾ ॥

ਬੁਬਾਜ ਅਮਦਹ ਨੀਮ ਸਬ ਖਾਨਹ ਅੰ ॥
ਫੇਰਾਈਐ ਅਧੀਰਾਤਨੂੰ ਘਰ ਉਜੀ ਰਾਜਾਦੇ ॥

ਚਿਨਿਆਮਤ ਅਜੀਸੇ ਚਿਦੋਲਤ ਰਿਚਾ ॥ ੪੮ ॥
ਕਿਆ ਪਦਾਰਥ ਭਾਰੀ ਅਤੇ ਕਿਆ ਦੋਲਤ ਤਾਈ ਸਾਬ ਲਿਆਈ ॥

ਬਿਦਾਨਸਤੁ ਆਲਮ ਕਜਾ ਜਾਇ ਗਸਤਾ ॥
ਜਾਇਆ ਜੰਸਥ ਨੇ ਜੇ ਕਿਸਥਾ ਗਈ ਹਿ ਵਿਸਤੀ ॥

ਚਿਦਾਨਦ ਕਿਕਸ ਹਾਲ ਬਰ ਸਰ ਗੁਜਸਤਾ ॥ ੪੯ ॥
ਕੋਲਜਾਣ ਦਾਏ ਕਿਆ ਹਾਲ ਉਪ ਜਿਹ ਉਸਰੇ ਗੁਜਰਿਆ ॥

ਬਿਦਿਹ ਸਾਕੀਯਾ ਪਿਆਲਹ ਫੇਰੇ ਜਠਾ ॥
ਦੋਹਏ ਸੁਖਈਆ ਪਿਆਲਾ ਫੀਰੇ ਜੇ ਰੰਗਦਾ ॥

ਕਿਆਰ ਬਕਾਰ ਅਸਤ ਦਰਵਕਤੁ ਅਮਾ ॥ ੫੦ ॥
ਜੇਮੇਰੇ ਤਾਈ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਵਿਚ ਹਰਫੇਰੇ

ਬਾਮਨ ਦਿਹ ਕਿਖਸਤਰ ਦਿਮਾਰੇ ਕੁਨਾ ॥
ਸਾਬ ਮੇਰੇ ਦਿਹ ਜੇ ਸਤੁਤ ਬਲਾ ਸੁਧੀਦੇ ਬੇਕਰਾਐ ॥

ਕਿਰੋਸਨ ਤਥੇ ਚੁਚਾਰੀ ਕੁਨਾ ॥ ੫੧ ॥
ਜੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਦਾ ਲੁਕਾਵੁ ਮਸੀਹ ਮਸਾਲ ਦੀ ਕਰਾਐ ॥ (ਅਰਥਾਤ)

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਨਾਨਕ ਕੀ ਮਤਿ ॥ ਏਕਿ ਓਨਕਾਰ ॥ ਸਾਧੂ ਸੰਗ ॥
ਦੀਆ ਅਦਾਲਤ ਕਰਵੇ ਰਹੇ ॥ ਜੇਹਾਇ ਇਸ ਤਿਕਾਸ ਤਸੇ ਪ੍ਰਗਟ ਹੋਇ ॥

ਹਿਕਾਯਤ ਛੀਵੀ
ਚਲੀ
੧ ਚਿਟਾਹਗੁਜੀ ਕੀ ਠਤਹਾ ॥

ਖੁਦਾਵੰਦ ਬਖਸਿਸ਼ ਦੇ ਦਿਲ ਕੁਸਾਇ ॥
ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਬਖਸਿਸ਼ ਦੇਵਾਲਾ ਅਤੇ ਦਿਲ ਦੇ ਪ੍ਰਸੰਨ ਕਰ ਦੇਵਾਲਾ ॥

ਚਜਾ ਬਖਸਿਸ਼ ਜੀ ਦਿਹੋ ਰਹਨੁ ਮਾਇ ॥ ੧ ॥
ਪ੍ਰਸੰਨ ਕੇ ਬਖਸਿਸ਼ ਕਰ ਦੇਵਾਲਾ ਚਜਾ ਬਿੰਦੇ ਦੇਵਾਲਾ ਅਤੇ ਦੇਵਿ ਪਲ ਦੇਵਾਲਾ ॥

ਨ ਫੌਜੀ ਨ ਫੌਜੀ ਨ ਫੌਜੀ ਨ ਫੌਜੀ ॥
ਨਾ ਫੌਜ ਨਾ ਗਾਹੀ ਦੇ ਨਾ ਪ੍ਰਭਤ ਨਾ ਜੋਰ ਤੇ

ਖੁਦਾਵੰਦ ਬਖਸਿਸ਼ ਜਾਹਰ ਜੁਹੂਰ ॥ ੨ ॥
ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਦੇਵੇਵਾਲਾ ਪ੍ਰਭਾਪਤ ਪ੍ਰਸੰਨ ॥

ਹਿਕਾਯਤ ਬੁਨੀਦੇ ਮੁਖਤਰ ਫਜੀਰ ॥
ਕਬਾਬੁਲੀ ॥ ਅਤੇ ਪ੍ਰਤੀ ਫਜੀਰ ਕੀ ॥

ਕਿ ਹੁਸਨਾਲ ਜਮਾਲ ਸੁਰੇ ਰਸਨ ਜਮੀਰ ॥ ੩ ॥
ਜੇ ਸੰਸਾਰ ਪ੍ਰਭੂ ॥ ਉਸਦਾ ਅਤੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਵਾਧੀ ਦਿਲਵੀ ॥

ਵਜਾ ਕੈਸਰੇ ਸਾਹ ਰੂਮੀ ਕੁਲਾਹ ॥
ਜਿਸਦਾ ਬਾਦਸ਼ਾਹ ਨਾਮ ਕੈਸਰ ਰੂਮੀ ਦੇ ਪੀਰ ਕੁਲਦਾਸੀ ॥

ਦਰਖਸ਼ਿਦ ਹੁਸਨੀ ਦਰਖਸ਼ਿਦ ਹੁਸਨੀ ॥ ੪ ॥
ਰਾਜ ਦੇਵਾਲਾ ਸੁਰਜਵੀ ॥ ਅਤੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਦੇਵਾਲਾ ਜੋਸਾ

ਖਰੇ ਰੋਜ਼ ਰੋਸਨ ਕਰਾਮਤ ਸਿਕਾਰ ॥
ਇਕ ਦਿਨ ਰੋਸਨ ਨਾਮ ਬਾਦਸ਼ਾਹ ਵਾਸਤੇ ਸਿਕਾਰ ਹੋ ॥

ਹਮ ਹਮ ਅਜ ਬਾਜ ਬੁਹਾਰੀ ਹਜ਼ਾਰ ॥ ੫ ॥
ਤਾਮ ਚਿਤ੍ਰੇ ਅਤੇ ਬਸ ਅਤੇ ਬਹਾਰੀਆ ਹਜ਼ਾਰਾਂ ਨਾਲ ਲਈਆ ॥

ਬਪਹਨ ਅੰਦਰ ਮਾਦ ਬਨ ਪ੍ਰਜੀਰ ਗਾਹ॥

ਵਿਚ ਮੇਦਲ ਦੇ ਆਇਆ ਕਸਤੇ ਸਕਾਰ ਖੇਲਦੇ ਦੇ॥

ਬਿਜਹ ਗਾਰ ਆਹੁ ਬਜੇ ਜੇਰ ਸਾਹ॥ ੬॥

ਮਥੇ ਰੋਪ ਰਾਮ ਦੇ ਹਟਨ ਮਤੇ ਬਹੁਤ ਹੀ ਘੋਰ ਭਾਵਨਾ ਹੋ॥

ਦਿਗਰ ਜਾਹ ਮਾਰ ਦਿਖਾ ਦਾਹੁ ਮਾਮੁ ਦੁਲੇਰ॥

ਦੁਸਰਾ ਬਾਦਸਾਹ ਏਵੇ ਦਾ ਆਇਆ ਵਧੇਰੇ ਤੋਰੇ॥

ਚਰਖ ਸਿੰਦਹ ਮਾਹੇ ਚੁ ਗਾਰ ਰਿੰਦਹ ਜੇਰ॥ ੭॥

ਜਿਸੇ ਦਿਖਾ ਪ੍ਰਕਾਸ ਦਾ ਲੋਹੇ ਤੋਰੇ ਮਤੇ ਮਾਨਿਦ ਗਜ਼ਟੇ ਦਾ ਬੇ ਸਿੰਘ ਦੀ॥

ਦੁਸਾਰੇ ਦਰਾਮਦ ਬਖਸ਼ ਜਾਇ ਸਖਤ॥

ਦੇਖੇ ਦਸਾਹ ਆਏ ਵਿਚ ਇਕ ਅਸਥਾਨ ਸਖਤ ਦੇ॥

ਕਿਰਾ ਤੇਗ ਮਾਰੀ ਦਿਹਦ ਨੇਕ ਬਖਤ॥ ੮॥

ਕਿਸਕੇ ਤਾਈ ਤਲਵਾਰ ਮਦਦ ਦੇਵੇ ਭੁਲਿਆਈ ਨਸੀਬੇ ਦੀ॥

ਕਿਰਾ ਰੋਜ ਇਕ ਬਾਲ ਮਾਰੀ ਦਿਹਦ॥

ਕਿਸਕੇ ਤਾਈ ਦਿਨ ਪਤਾਪਦ ਮਿਤਾਈ ਦੇਵੇ॥

ਕਿ ਮਜ਼ਦਾਂ ਕਿਰਾ ਕਾਮ ਗਾਰੀ ਦਿਹਦ॥ ੯॥

ਜੇਵਾਹਿਗੁਰੂ ਕਿਸਕੇ ਤਾਈ ਪ੍ਰਯੋਜਨ ਪ੍ਰਗਥਰੇ॥

ਬਜੇ ਬਸ ਦਰਾਮਦ ਦੁਸਾਰੇ ਦੁਲੇਰ॥

ਵਿਚੋਂ ਗੁਮੇ ਦੇ ਆਏ ਦੋ ਬਾਦਸਾਹ ਸੁਰਮੇ॥

ਕਿ ਬਰ ਆਹੁ ਏ ਮਕ ਬਰਾਮਦ ਦੁਸੇਰ॥ ੧੦॥

ਜੇਐ ਉਪਰ ਇਕ ਹਰਨ ਦੇ ਆਉਣ ਦੇ ਸਿੰਘ॥

ਬਗ਼ੈਰ ਰੀਦਨ ਆਮਦ ਦੁਅਬਰੇ ਸਿਨਾਹ॥

ਵਿਚ ਗਜ਼ਟੇ ਦੇ ਆਏ ਦੋ ਬਾਦਸਾਹ ਪਟਾ ਸਿਮਾਹ ਦੀ ਤਰਾਂ॥

ਸੁਨਾਨੇ ਭੀ ਮੇਦਾ ਪਤ ਨੇਜਹ ਚਕਾਹ॥ ੧੧॥

ਨੇਜਾ ਮਿਦੀਆਂ ਨੇਜਾ ਆਈਆ ਜੇਐ ਘਾਹ ਦੇ ਪੁਲੇ ਮਿਦੀ ਦੇ॥

ਚੁਨਾਂ ਤੀਰ ਫਾਦਨ ਪਰਚਾਂ ਸੁਦਹ॥

ਮੇਐ ਤੀਰ ਦੀ ਫਰਖ ਪਰਵਾਹਿ ਆਈ ਰੇਈ॥

ਜਿਸੀ ਅਸਾਪੁ ਪਰ ਜਿ ਕਰ ਗਸ ਜੁਦਹਾ ॥ ੧੩ ॥

ਜਿਸੀ ਅਤੇ ਅਕਾਸ਼ ਭਰਿਆ ਹੋਇਆ ਉਲਾਹਾ ਹੋਇਆ ਹੈ ॥

ਚਕਾ ਚਕ ਬਰਖਾਸਤ ਨੇਕੇ ਸਿਨਾ ॥

ਸਬਦ ਉਠਦੇ ਨੇਜਿਆ ਦੇ ਅਤੇ ਤਲਵਾਰ ਦੇ ॥

ਅਕੇਰੁਸਤਖੇਜ ਅਜ ਬਰਾਮਦ ਜਹਾ ॥ ੧੩ ॥

ਇਕ ਪ੍ਰੋਕਾਸ਼ ਬਾਹਰ ਮਾਇਆ ਤੇ ਸਿਰਾ ਦੇਹਾ ॥

ਚੁਰੇ ਸਰਾਫੀਲ ਦਮ ਮੇਜ ਦਹਾ ॥

ਜੇ ਸੇ ਸੁਰ ਸਰਾਫੀਲ ਨੇ ਬਜਾਇਆ ਹੈ ॥ (ਅ. ੧) ਸੁਰ ਸਿਰਾ ਦਾ ਵਜਾਏ ਜਿਸਨੂੰ

ਕਿਰੇਜੇ ਕਿਆ ਮਤ ਬਹਮ ਮੇਜ ਦਹਾ ॥ ੧੪ ॥

ਜੇ ਦਿਨ ਪ੍ਰੋਕਾਸ਼ਦਾ ਅਜ ਕਰ ਤੇਰਿਆ ਹੈ ॥

ਗਰੇਜਸ ਦਰਾਮਦ ਬ ਅਰਬੀ ਜਿਪਾਹਾ ॥

ਭਾਜਖਾਵਾਵਲੀ ਹੋਈ ਅਰਬੀ ਫੌਜ

ਬਗਾਲ ਬ ਦਰਾਮਦ ਹੁਮ ਗਰਬ ਸਾਹਾ ॥ ੧੫ ॥

ਪ੍ਰੋਕਾਸ਼ ਹੋਇਆ ਹਿੰਦੀ ਉਤਰਾ ਬਾਦਸਾਹਾ ॥

ਕਿਤਨਾ ਬਿਆਦਹ ਅਸਤੁ ਸਹੇ ਅਰਬਾ ॥

ਜੇਕਨਾ ਰਿਹਾਈ ਬਾਦਸਾਹ ਅਰਬਦਾ

ਬਵਕਤੇ ਚ ਪੀਜੀਨ ਸਮਸ ਚ ਗਰਬਾ ॥ ੧੬ ॥

ਵਿਚਕੋਈ ਸੰਘਿਆ ਦੇ ਸੁਰਜ ਸੇਸੇ ਲੋਹਾ ਹੈ ॥

ਚੁਤਾ ਬਸ ਨਮਾਨ ਦ ਸਵਦ ਦਸਤ ਗੀਰਾ ॥

ਸਹੇ ਤੇਜ ਉਸਮੇਨਾਰੇ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕੋਈ

ਹ ਦਜ ਦੇ ਸਵਦ ਰੁਕਤ ਸਬ ਰਾ ਅਸੀਰਾ ॥ ੧੭ ॥

ਜੇਸੇ ਰੋਹ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਟੋਲੇ ਰਾਹ ਦੇ ਕੋਦ

ਬ ਬਸਤੀ ਦ ਬਰਵੀ ਦ ਸਹ ਨਿਜ ਦ ਸਾਹਾ ॥

ਬਨਿਆ ਅਤੇ ਲੋਹਾ ਦੇ ਬਾਦਸਾਹਨੂੰ ਪਾਸ ਬਾਦਸਾਹ ਦੇ ॥

ਚ ਮਾਹ ਅਫਕਨੇ ਹਮਚ ਬਰਵੀ ਦ ਮਾਹਾ ॥ ੧੮ ॥

ਜੇਸੇ ਹੋਵਾ ਮਨੂੰ ਸਿਟਵੇਵਾਲ ਰਾਹੁ ਲੋਜਾਵਾ ਦੇ ਹੋਮਾਨੂੰ ਸੁਰਜ ਪਾਸ ॥

ਬਖਾਨਹ ਖਬਰ ਆਮਦਹ ਸਾਹ ਬਸਤੁ॥

ਵਿਚ ਪਾਥਦੇ ਖਬਰ ਆਈ ਜੋ ਬੰਨਿਆ ਗਿਆਹੇ ਬਾਦਸਾਹ॥

ਹਮ ਹਕਾਰ ਦੁਜ ਦੀ ਵਮਰ ਦੀ ਰਾਜ ਸਤੁ॥੧੯॥

ਤਮਾਸ ਕੀਮ ਹੋਈ ਅਤੇ ਬੁਰਮਤ ਦੇ ਹੋਰ ਕੋਈ ਪੇਸ਼ ਨਾਗਈ॥

ਨਜ ਸਤੰਦ ਬਮਜਲਸ ਸਿ ਦੁਨਾਇ ਦਿਲਾ॥

ਥੋੜੇ ਵਿਚ ਸਭਾ ਦੇ ਸਿਆਲੇ ਚਿਤਾਵਾਲੇ॥

ਸਾਖਨ ਰਾਂਦੁ ਪਿਨਹਾ ਵਜਾ ਸਾਹ ਖਿਜਲਾ॥੨੦॥

ਬਜਾ ਕੀਤੀਆਂ ਰੋਰੀ ਰੋਰੀ ਅਤੇ ਬਾਦਸਾਹੀ ਤੋਂ ਸਰਮੀਦੇ

ਦੁ ਬਿਸੁਨੀ ਦਈ ਖਬਰ ਦੁਖਤਰ ਵਜੀਰਾ॥

ਜਦੋਂ ਸੁਣੀ ਏਹ ਖਬਰ ਬੇਦੀ ਵਜੀਰ ਦੀਨੇ॥

ਬਖਸਤੰਦ ਜਮਸੇਰ ਜੁਸਤੰਦ ਤੀਰਾ॥੨੧॥

ਬੰਨੀ ਤਲਵਾਰ ਲਕਨਾਲ ਅਰ ਦੁੰਦੇ ਤੀਰ

ਬਪੇਸੀ ਦ ਜਰ ਬਠਤ ਰੁਮੀ ਕਬਾਇ॥

ਪੋਹਨੀ ਸੁਨੇਗੀ ਬਣੀ ਹੋਈ ਰੁਮੀ ਪੁਸ਼ਕਾ॥

ਬਜੀ ਬਰਨਸੁ ਸੁਤੇ ਬਿਆਮਦ ਬਜਾਇ॥੨੨॥

ਉਪਰ ਘੋੜੇ ਦੀ ਜੀਨਵੇ ਬੈਠੀ ਤੇ ਆਈ ਵਿਚ ਜਾਗਾਦੇ॥

ਰਵਾਂ ਸਦ ਬੁਏ ਸਾਹ ਮਗਰ ਬ ਚੁ ਬਾਦਾ॥

ਤੁਰਪਾਈ ਤਰਫ ਬਾਦਸਾਹ ਏਰੀ ਮਾਨਿਦ ਪਵੇਦੀ ਛੇਤੀ॥

ਕਮਾਨੇ ਕਿਆਨੀ ਬਤਰਕਸ ਨਿਹਾਦਾ॥੨੩॥

ਬਨਸੇ ਧਲਖ ਕੇਆ ਵਾਲੇ ਦੇ ਚਿਲੀ ਤੀਹ ਰਖਿਆ॥

ਬਪੇਸੇ ਸਹੇ ਮਗਰ ਬ ਆਮਦ ਦਲੇਰਾ॥

ਅਗੇ ਬਾਦਸਾਹ ਏਦੇਦੇ ਆਈ ਬੁਰਮਤ ਨਾਲ

ਬਰਕਰੀ ਦਹ ਅਬਰੇ ਚੁ ਦਰ ਰਿਦਹ ਜੇਗਾ॥੨੪॥

ਜੇਸੇ ਗਜ਼ਵੇਦਾਲਾ ਬਦਲ ਅਤੇ ਜੇਸੇ ਬਰਵੇਦਾਲਾ ਸਿੰਘ

ਵਾਅ ਕਰਦ ਰਿਏ ਸਾਹ ਮਾਜਾ ਦ ਬਖਤੁ॥

ਉਸਤਤ ਕੀਤੀ ਜੋ ਅੰ ਬਾਦਸਾਹ ਸਿਰਾਲੇ ਤਾਗਾਵਾਲੇ॥

ਸੁਭਾਵਾਰ ਵੇਹੀ ਸੁਭਾਇਆਨ ਤਖਤਾ ॥ ੨੫ ॥

ਭਾਇਕ ਖੁਕਦੀ ਅਤੇ ਲਾਇਕ ਸਿਧਾਸਦ ਦੀ ॥

ਮਹਾਕਾਹੀਲਾਂ ਮਾਮਦ ਅਜ ਬਹਰ ਕਾਹਾ ॥

ਮੇਰੇ ਕਾਹੀ ਆਏਹਾ ਵਾਸਤੇ ਘਾਹ ਦੇ ॥

ਦੁਸੇ ਸਦੁ ਸਦਾਰੇ ਯਕ ਅਜ ਸੁਕਲ ਸਾਹਾ ॥ ੨੬ ॥

ਹੋਤਿ ਸੇ ਘੋੜ ਰਹੇ ਅਤੇ ਇਕ ਬਾਦਸਾਹ ਦੇ ਸਦੁਪਦਾਲ

ਕਿ ਬਿਹਤਰ ਹੁਮਾਨ ਸਤੁ ਆਰਾ ਬਿਦਿਹਾ ॥

ਜੇਭਲਾਈ ਦੇਹੈ ਉਨਾਕੇ ਤਾਈ ਤੂੰ ਮੇਰੇ ਤਾਈ ਦੇਵੇ ॥

ਵਾਰਾਚਨਹ ਖੁਦਜ ਮੇਤ ਬਰਜਰ ਬਿਨਹਾ ॥ ੨੭ ॥

ਜੇਕਰ ਲੀ ਦਿਵਾਤਾ ਤਾ ਆਪਣੀ ਮੇਤ ਸਿਰ ਉਪਰ ਰਖਣੇ ॥

ਸੁਨੀਦੀ ਜੁਖਨ ਸਾਹ ਪੀਲਾਦ ਤੁਨਾ ॥

ਸੁਨੀ ਜਦ ਦੇਹਤ ਬਾਦਸਾਹ ਸਾਰ ਜੇਮੇ ਸੁਨੀਰ ਵਾਲੇਕੇ ਵਜੀਰ ਦੀ ਬੇਦੀਸੇ ॥

ਬਲਰਜੀਦ ਬਰ ਖੁਦ ਚੁ ਬਰਗੇ ਸੁਮਨਾ ॥ ੨੮ ॥

ਕੋਬਿਆ ਆਪਣੇ ਆਪ ਵਿਚ ਜੇਮੇ ਕਵੀ ਦੇ ਪੜਾ ਚਿਲਦਾ ॥

ਸੁਨੀਦੀ ਜਿ ਮਨ ਸਾਹ ਰਾਰਈ ਸੁਖਨਾ ॥

ਸੁਣੀ ਜੇਕਰ ਮੇਰੇ ਬਾਦਸਾਹ ਨੇ ਦੇਹਤ ਵਜੀਰ ਦੀ ਬੇਦੀਨੇ ਕਿਹਾ ॥

ਹੁਮਾਨ ਤੁਰ ਬੇਖ ਬਰਕੰਦ ਬੁਨਾ ॥ ੨੯ ॥

ਨਿਸਚੇ ਕਰਕੇ ਤੇਰੀ ਜੜ ਅਤੇ ਮੂਲ ਪਰੇਗਾ ॥

ਚਨਾ ਜੀਗ ਕਰਦੀਦ ਈ ਕਾਹੀਲਾਂ ॥

ਮੋਗਰ ਬਦੇ ਬਾਦਸਾਹ ਨੇ ਜੋਚਾ ॥ ਮੇਰਾ ਸੁਧਕੀ ਤਾਹੈ ਦਿਨਾ ਖੁਸ਼ਿਆਰਨੇ ॥

ਨਦਾਨਮ ਮਗਰ ਸਾਹ ਬਾਸਦ ਜੁਨਾ ॥ ੩੦ ॥

ਮੇਰੀ ਜਾਣਦਾ ਸਾਹਿਬ ਬਾਦਸਾਹ ਦੇਵੁ ਈ ਭਾਵਾਹੈ ॥

ਨਦਾਨਮ ਕਸੇ ਸਾਹ ਹਜਤਸ ਜੁਵਾ ॥

ਨਹੀ ਜਾਣਦਾ ॥ ਜੇ ਕੋਈ ਬਾਦਸਾਹ ਜੋਰਾਵਰ ਹੁਣੇ ॥

ਕਿ ਮਾਰਾ ਬਿਕੀਰਦੁ ਬਿਮਾਨੀ ਦੁਰਾ ॥ ੩੧ ॥

ਜੇਮੇਰੇ ਤਾਈ ਪਸਰ ਨਿਸਚੇ ਅਈਰਾ ਜਾ ॥

ਜਿ ਪੋਸੀਨਹ ਏ ਯਹ ਫਜ਼ੀਰਾ ਬੁਖਾਂਦਾ॥

ਅਗੇ ਵਜੀਹਕੇਤਾਈ ਬਾਦਸਾਹਨੇ ਬੁਲਾਇਆ॥

ਸੁਖਨ ਹਾਇ ਪੋਸੀਦ ਬਾਰਿ ਬਰਾਂਦਾ॥ ੩੩॥

ਭਾਤ ਵਿਖੀਆਹੋਈਆਓਨਵੇਨਲਕੀਤੀਆ॥

ਤੁਵੀਦੀ ਚਨ ਕਾਹੀਆਂ ਜੀਗ ਕਰਦਾ॥

ਤੁਸੀਂਦੇਖਿਆਜੇ ਐਸਾਜੁਧ ਘਾਹੀਆਨੇਕੀਤਾਏ॥

ਕਿ ਅਜਮੁਲਕ ਮਜਦਾ ਬਰਵਰਦ ਗਰਦਾ॥ ੩੪॥

ਜੇਵਹਗੁਰੂ ਦੇਸੀਸਾਹਦਿਚੋ ਪੁਕਰਿਗਰਿਤੀਏ॥

ਮਬਾਦਾ ਕੁਨਦ ਤਾਖਤ ਬਰ ਮੁਲਕ ਸਖਤਾ॥

ਐਸਾਨਾਏਵੇ ਜੋ ਦੇਕਣਾ ਕਰੇ ਮੁਲਕਨੂੰਗਦੀਰਾ॥

ਦਿਹਮ ਕਾਹੀਆਂ ਰਾ ਅਜਾਨੇਕ ਬਖਤਾ॥ ੩੫॥

ਤਾਤੇ ਦੇਵਾਮੇ ਘਾਹੀਆਕੇਤਾਈ ਇਸਤਲੇਤਾਗਾਵਾ ਲੇਨੂੰ॥

ਹੁਮਾਂ ਸਾਹ ਮਹ ਬੁਜੀਆਂ ਪੇਸ਼ਖਾਂਦਾ॥

ਉਸੀਬਾਰਸਾਨੇਕੈਦੀਆਨੂੰ ਆਗੇਆਪਦੇਸਾਰਿਆ॥

ਹਵਾਲਹ ਨਮਦਸ ਕਿਓਰ ਨਿਸਾਂਦਾ॥ ੩੬॥

ਫਜ਼ੀਰਦੀਬੰਟੀਨੂੰਸੋਪਿਆ ਉਨਾਨੂੰ ਬੈਠਾਲਕੇ॥

ਤੁਆਜਾਵ ਗਸਤੀ ਅਜੀ ਸਹਲ ਚੀਜਾ॥

ਤੂੰਛੁਟਗਿਆ ਇਸਚੀਜਸੇਸੁਖਾਲਾਹੀ॥

ਬਗੀਰ ਏ ਬਿਰਵਰ ਤੁਅਜ ਜਾਂ ਅਜੀਜਾ॥ ੩੭॥

ਖਕਰੁ ਐਭਾਈ ਤੂੰਤਾ ਜਾਨ ਤੋਭੀਪਿਆਗਾਹੈ॥

ਜਨੇ ਪੇਰ ਦਸਤਾਰ ਰਾਤ ਬਦਾਦਾ॥

ਇਸਤੀਨੇ ਪਗੜੀ ਕੇਤਾਈ ਘਟਕੇ ਬੰਨਿਆ॥

ਦਿਗਰ ਦਸਤੁ ਬਰ ਮਸਤੁ ਤੇਗਸ ਨਿਹਾਦਾ॥ ੩੮॥

ਦਸਗਹਬ ਉਪਕਬਜੇਤਲਵਾਰਦੇਗਪਿਆ॥

ਬਿਜਦ ਤਾਜੀਆਨਹਿ ਬਹਰਿ ਰਾਰ ਚਾਰਾ॥

ਮਾਰੇ ਕੋਰੜੇ ਹਾਇਕਨੂੰ ਚਾਰ ਚਾਰ॥

ਬਗੁਣੁ ਕਿ ਦੇ ਬੇਖਬਰ ਬੇਮੁਹਾਰਾ ॥ ੩੮ ॥

ਅਤੇ ਕਹਾ ਕਿ ਮੇ ਬੇਖਬਰ ਅਤੇ ਬੇਮੁਹਾਰਾ ॥

ਕਿ ਮਾਮਰ ਦੀ ਜਾਂ ਵਜਾਂ ਕਾਹ ਨੇਸਤਾ ॥

ਕਿਉ ਆਏ ਏਥੇ ਦੁਬਰੀ ਜਗਤ ਘਾਹ ਨਹੀ ਥਾ ॥

ਕਿ ਏ ਜਦ ਗੁਣਾ ਅਸਤ ਮਜ਼ਦਾਂ ਅਕੇਸਤਾ ॥ ੩੯ ॥

ਜੇ ਵਹਿਗੁਰੂ ਜਾਣਦੇ ਵਹਿਗੁਰੂ ਇਕ ਹੋ ॥

ਦੋਹੇ ਮਰਾਬਰ ਗੁਣੇ ਗੁਣਾ ਸਤਾ ॥

ਸੁਭ ਮੇਰੇ ਕੇ ਤਾਂਈ ਵਹਿਗੁਰੂ ਜਾਣਦਾ ਹੋ ॥

ਬੋਹੀ ਯਦ ਕਿ ਮਾਰ ਪਨਾਹੇ ਖਦਾਸਤਾ ॥ ੪੦ ॥

ਅਤੇ ਬੋਹੀ ਜੋ ਮੇਰੇ ਤਾਂਈ ਵਹਿਗੁਰੂ ਦਾ ਅਸਾਰ ਹੋ

ਰਿਹਾਈ ਨਿਹਦ ਖਦ ਖਦਾਇਤ ਤਖਤਾ ॥

ਫਰਾਂ ਕਰਦੀ ਹੈ ਆਪ ਆਪਣੇ ਸ਼ਾਹਸਾਹ ਸਿਧਾਸਰ ਦੇਨੂੰ ॥

ਵਿਨ ਗਸਤ ਜੋ ਮੰਜਲੇ ਜਾਹੇ ਸੁਖਤਾ ॥ ੪੧ ॥

ਤੁਰਪਈ ਉਸ ਅਸਥਾਨ ਕਠਨ ਅਤੇ ਜਾਗਾ ਕਠਨ ਬੀ ॥

ਬਿਨਿਹ ਸਾਕੀਆ ਸਾਗਦੇ ਸੁਖਜ ਪਾਨਾ ॥

ਦੇਹੇ ਸੁਖਈਆ ਪਿਆਲਾ ਹਰੇ ਰੰਗ ਵਾਲਾ (ਅ) ਸੁਖਨਿਯਲ

ਹਿ ਸਾਹਿਬ ਸਉਰ ਅਸਤ ਜਾਹਰ ਜਹਾਨਾ ॥ ੪੨ ॥

ਜੋ ਮਾਲੇ ਕੁਝੀ ਦਾ ਹੋ ਪ੍ਰਗਟ ਸੰਸਾਰ ਵਿਚ ॥

ਬਿਨਿਹ ਸਾਕੀਆ ਸਾਮ ਟੇਰੇ ਜਹਰੰਗਾ ॥

ਦੇਹੇ ਸੁਖਈਆ ਪਿਆਲਾ ਫੀਦੇ ਜੋ ਰੰਗ ਵਾਲਾ ॥

ਕਿ ਬਰਵ ਕਾਤਿ ਸੁਖਰੀ ਖਸੇ ਰੋਸੁ ਬੀਗਾ ॥ ੪੩ ॥

ਜੋ ਵੇਰਵੇ ਰਾਤ ਦੇ ਜੁੜੇ ਅਤੇ ਟੁੱਟੇ ਹੋਏ ਨਜੁੰਬਦੇ ॥ (ਅਰਥਾਤ)

ਤੇ ਮੇਰੇ ਰਾਜੇਸ਼ ਵਹਿਗੁਰੂ ਰਾਹੇ ਤਾਂ ਸਾਕੀਆ ਵਸਾਹੀ ਵੀ ਅਕਲ ਲੜਕੀ ਵਿ

ਚ ਪਾਏ ਅਤੇ ਬਾਦਸਾਹ ਕੀਦੀ ਨੂੰ ਫੁਲਾ ਲਿਆਏ ਅਕਲ ਪੁਰਖ ਦਾ ਕਿਸੀ ਨੂੰ

ਅੰਤ ਨਹੀ ਮਾਇਆ ਹੋਤੁ ਮਾਏ ਆਪਣੀ ਕੀ ਬਣ ਬੀਗਾ ਤੇ ਹੀ ਅਕਲ ਪਰ

ਪੁਰਖ ॥ ਸਾਹਿਬ ਪਾਪ ਦਾਸ ਤੁਸਕ ਕਰ ਤਾਂ ਤੇਰੇ ਪੁਰਖਾ ਚੁਰ ਹੋਵੇਗਾ ॥

ਹਿਕਾਯਤ ਸਤੁਰੰ

ਗੁਣੀ

੧ ਓਹੁ ਗੁਰਗੁਰਨੀਕੀ ਰਤੁਹਾ

ਖਵਾਵੈ ਸਾਖੀ ਸਿੰਦੁ ਤੇ ਸੁਖਾਵੈ

ਗੁਰਗੁਰ ਸਾਖੀ ਸਿੰਦੁ ਕਰਨੇ ਵਾਲੇ ਦੇ ਅੰਤ ਤੇ

ਕਿ ਜਗਤਿ ਰਜਹੁ ਅਸਤੁ ਸੁਖੀ ਸੁਖੀ ਵਿਆਹੁ ੧

ਜੇ ਪ੍ਰਗਟ ਪਾਸਾ ਤੇ ਉਥੇ ਅਤੇ ਮਨਿ ਕਰੇ ਦੇਸਾ ਵਾ

ਤੁਝੀ ਅਤੁ ਬਹਾਲ ਅਸਤੁ ਰੁਖਨਲ ਜਮਾਤੁ

ਸਰਾਉ ਉਸਦਾ ਕਰਕਾਰ ਤੇ ਅਤੇ ਰੁਪ ਰੇ ਰੇ

ਦੁ ਰੁਖਨਲ ਜਮਾਤੁ ਅਸਤੁ ਰੁਖੀ ਅਤੁ ਕਮਾਤੁ ੨

ਕਿਆ ਰੁਪ ਰੇ ਤੇ ਅਤੇ ਰੁਖੀ ਅਤੁ ਕਮਾਤੁ

ਕਿ ਅਸਤੁ ਰੁਖੀ ਅਤੁ ਅਸਤੁ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ

ਜੇ ਦੇ ਇਸਤੀ ਦਾ ਅਸਤੁ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ

ਨਸਤੁ ਨਾਮ ਦੇ ਖੁਦ ਸੁਖਮਨ ਸੁਖ ਰੁਖੀ ੩

ਅਪਨੀ ਕਾਰਜਾ ਤੇ ਸੁਖ ਰੁਖਮ ਰੇ ਸੁਖ ਰੁਖਮ

ਅਸਤੁ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ

ਉਸ ਰੁਖਮਨ ਕਾਰਜਾ ਦੀ ਇਕ ਕਰਕੀ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ

ਰੁਖਮਨ ਜਮਾਤੁ ਅਸਤੁ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ ੪

ਕਿਆ ਰੁਪ ਰੇ ਤੇ ਉਸਦਾ ਅਤੇ ਪਨ ਦੇ ਰੁਪਾ ਦੇ ਦੇਵੀ

ਰੁਖਮਨ ਸੁਖ ਅਸਤੁ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ

ਜੇ ਦੇ ਰੁਖਮਨ ਕਾਰਜਾ ਤੇ ਇਸ ਸਿਸਾਰ ਥੀ ਅਸਤੁ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ

ਰੁਖਮਨ ਸੁਖ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ

ਸਾਥ ਲਗਕੀ ਦੇ ਸੁਖ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ

ਨਸਤੁ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ

ਕੋਈ ਉਪਰ ਸਿਖਾਸਣ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ

ਕਿ ਰੁਖਮਨ ਕਾਰਜਾ ਅਸਤੁ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ ੫

ਜੇ ਰੁਖਮਨ ਕਾਰਜਾ ਤੇ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ ਰੁਖੀ

੭੬ ਚੁ ਬਗਜ ਸਤ ਬਰਵੈ ਜਿ ਦਹਸਾਲ ਚਾਰਾ ॥
ਜਦੋ ਉਸਨੂੰ ਚੰਦਾ ਬਰਸ ਹੋਵੇ

ਕਿ ਪੈਦਾ ਸੁਦਹ ਸਬਜ ਉਨੋ ਬਹਾਰਾ ॥੭॥
ਜੇ ਜਮਪਈ ਹੋ ਹਗਆਈ ਨਵੀਨ ਜੁਆਨੀ ਦੀ ਉਸਨੂੰ

ਬਹਾਰੇ ਜੁਨੀ ਬਨੋ ਬਤ ਰਸੀਦਾ ॥
ਮੇਸਮ ਜੁਆਨੀ ਦੀ ਜਦੋ ਵਾਹੀ ਪਹਚੀ

ਚੁ ਬਸਤਾ ਗਲੇ ਸਰਖ ਬੇਰੁ ਕਸੀਦਾ ॥੮॥
ਮਾਨਿਰ ਬਾਗਵੇ ਫੁਲਦੀ ਲਾਲੀ ਬਾਹਰ ਕਸੀ

ਬਹੁਸਨ ਆਮਦਸ ਤੁਤੀ ਵੇਨੋ ਬਹਾਰਾ ॥
ਸਾਬਜੁਦਾ ਅਵਸਥਾਵੇ ਆਈ ਆਸਰੂ ਫਾਨ ਵੀਨ (ਅ) ਫੁਲ

ਚੁ ਮਾਹੇ ਕਿ ਬਰਖੁਦ ਕੁਨਦਨੋ ਬਹਾਰਾ ॥੯॥
ਜੇਸੇ ਚੰਦਮਾ ਉਪੁ ਆਪਣੇ ਕਰਵਾਏ ਨਵੀਨ ਰੋਣਕ

ਮਿਜਾਜਸ ਜਿ ਤਿਫਲੀ ਬਰੁ ਦਰ ਰਸੀਦਾ ॥
ਸੁਭਾਉ ਲੜਕੀ ਆਵਾਣਾ ਉਸਥੀ ਬਾਹਰ ਗਿਆ

ਜੁਵਾਨੀ ਸਿ ਆਗਾਜ ਬਰਵੈ ਕਸੀਦਾ ॥੧੦॥
ਜੁਵਾ ਅਵਸਥਾਵੇ ਉਸਉਪੁ ਆਵਣ ਕੀਤਾ

ਵਿਦਾਸੁਦ ਅਜੇ ਗਲ ਤਿਫਲੀ ਮਿਜਾਜਾ ॥
ਚਲੀ ਗਈ ਉਸਵਿਚੇ ਗਥਤ ਲੜਕੀ ਆਵਾਣੇ ਸੁਭਾਉਈ ॥

ਬਹਾਰੇ ਜੁਨੀ ਦਰਾਮਦ ਬ ਬਾਜਾ ॥੧੧॥
ਰੁਤ ਜੁਵਾ ਅਵਸਥਾਵੇ ਆਈ ਫੇਰ ਉਸਉਪੁ

ਕਿ ਬਿਨਸ ਸਤ ਬਰ ਤਖਤਿ ਸਾਹਨ ਸਹੀ ॥
ਜੇ ਬੈਰਗਈ ਉਪੁ ਸਿਘਾਸਣ ਸਾਹਨ ਸਾਹੀਦੇ

ਬਕਲਮ ਅੰਦਰ ਮਾਏ ਪਤ ਕਾਗਜ ਮਹੀ ॥੧੨॥
ਵਿਚ ਕਲਮਵੇ ਅੰਦਰ ਆਵਾ ਕਾਗਜ ਪ੍ਰਿਥਵੀਦਾ

ਨਸਰ ਕਰਦ ਬਰ ਬਰਹ ਗੋਹਰ ਨਿਗਾਰਾ ॥
ਨਿਗਾਰ ਕੀਤੀ ਉਪੁ ਬੈਟੇ ਜੁਆਹਰੀਦੇ

ਕਿ ਬਰਦ ਅੰਦਰੁ ਨਸ ਕੁਵਕਤ ਗੁਬਾਰਾ ॥ ੧੩ ॥ ੭੭

ਜੇ ਲੋਗਈ ਉਸਨੂੰ ਅੰਦਰ ਹੋਲਗਾਰੇ ਵਕਤ ਰਾਤਦੇ

ਬਿਆਵੇਖਤ ਬਾਓ ਦੁ ਸੇ ਚਾਰ ਮਾਹਾ

ਲਿਖਈ ਸਾਥ ਉਸਦੇ ਦੇਚਾਰੇ ਅਹੀਨੇ

ਕਿ ਸਿਕਮਸ ਫਰੇਮਾਦ ਅਜ ਤੁਖਮਿਸਾਹਾ ॥ ੧੪ ॥

ਜੇ ਗਰਬੁ ਠੋਗਰਿਆ ਹਮਾਨੂੰ ਬੀਕਜ ਜੇਹਰੀ ਦੇ ਬੇਟੇਸੇ

ਚ ਨਹ ਮਾਹ ਗਸਤੁਹ ਬਾਅੰ ਬਿਸਤਨੀ ॥

ਜੇਵੇ ਨੌਮੀਨੇ ਹੋਏ ਹੈਗਰਬੁ ਹੋਏਨਾ

ਬਕਸਸ ਦਰਮਾਦ ਰਗੇ ਖਸਤਨੀ ॥ ੧੫ ॥

ਵਿਚ ਖਿਚਣੇ ਦੇ ਆਈਆ ਨਾਹੀ ਠੱਲੇਤਨਵਾਲੀਦੀਆ

ਤਵੱਲਦ ਸੁਦਹ ਕੇਦਕੇ ਸੀਰ ਖਾਰਾ ॥

ਪੇਚਹੋਇਆ ਲੜਕਾ ਦੁਧਰੇ ਪੀਵਣੇ ਵਾਲਾ

ਕਿ ਖੁਦ ਸਾਹ ਸਾਹ ਅਫਕੂਨੇ ਨਾਮ ਦਾਰਾ ॥ ੧੬ ॥

ਜੇਆਪ ਸਾਹਬਾ ਅਤੇ ਬਾਦਸਾਹ ਨੂੰ ਸਿਟਣੇ ਵਾਲਾ ਅਤੇ ਨਾਮ ਵਾਲਾ

ਕਿ ਜਾਹਰ ਨ ਕਰਦੀਦ ਸਿਰਰੇ ਜਹਾਂ ॥

ਜੇ ਪ੍ਰਗਟ ਨਾ ਕੀਤਾ ਭੇਦ ਸੰਸਾਰਨੂੰ

ਬਸੀਦੁਕ ਓਰਾ ਨਿਗਹ ਦਾਸਤੁ ਮਾਂ ॥ ੧੭ ॥

ਵਿਚ ਸੀਦੁਕ ਦੇ ਉਸਕੇ ਤਾਈ ਬੈਠਾਇਆ

ਸਿਮਸਕੇ ਫਿਤਰ ਅੰਬਰ ਅਵੇਖਤੰਦਾ ॥

ਜੇਮੁਸਕ ਅਤੇ ਇਰ ਅਤੇ ਮਸਕੀਬਰ ਉਸਉਪਾਫਿਰਕਿਆ

ਕਰੇ ਉਦ ਅਜ ਜਾਫਰਾਂ ਰੇਖਤੰਦਾ ॥ ੧੮ ॥

ਫੇਰ ਉਸ ਉਪਾਮੁਸਕ ਉਦ ਅਤੇ ਕੇਸਹਯਾਇਆ ॥

ਬਦਸਤ ਅੰਦਰੀ ਦਾਸਤੁ ਓਰਾ ਅਕੀਕਾ ॥

ਵਿਚ ਉਸਦੇ ਹਥਦੇ ਅੰਦਰ ਅਕੀਕ ਸੁਚਾਰਖਿਆ

ਰਵਾਂ ਕਰਦ ਸੀਦੁਕ ਦਰਦਾ ਅਮੀਕਾ ॥ ੧੯ ॥

ਤੋਕਾਰੇਤਾ ਸੀਦੁਕ ਨੂੰ ਵਿਚ ਦੁਖਿਆਤਾਈਦੇ ॥

ਪ੍ਰਤਿਪਤਿ

ਰਾਗ ਕਰਦੁ ਚਿੰਤਾ ਕਨਕ ਜਾਮਹ ਚਾਕਾ ॥
 ਤੇਰੇ ਸੰਦ੍ਰਬ ਕੇਤਾਈ ਹਮ ਕਰੀ ਹੈ ਕਪੜੇ ਨੂੰ ਟੁਕੜੇ ਟੁਕੜੇ (ਅ) ਪੁਤ੍ਰ ਦੇ ਦੁ
 ਨ ਜਲਦਾ ਸਤੁ ਬਰ ਸੁਕਾਰਿ ਅਜ ਦਾ ਨਿਪਾਕਾ ॥
 ਠੇਰ ਨਜਰ ਕੀ ਉਪਰ ਖਿਪਾ ਦਾ ਹੋਗਾਰੁ ਅਵਤੀ ਪਵਿਤ੍ਰ ਦੇ
 ਨਸ ਸਤਿ ਰਬਾਰ ਰੇਦ ਲਬ ਰਾਗਿ ਜਿਹਾ ॥
 ਬੈਠੇ ਹੋਏ ਥੇ ਉਪਰ ਬਿਨਾਰੇ ਵਰਿਆ ਦੇ ਛੀਂਕੇ ॥
 ਨਜਰ ਕਰਦੁ ਸੰਦ੍ਰਬ ਵਰੀਆਂ ਰਵਾਂ ॥ ੨੧ ॥
 ਵੇਖਿਆ ਉਨ੍ਹੇ ਸੰਦ੍ਰਬ ਕੇਤਾਈ ਜਾਂਦਾ ਚਰਿਯਾ ਵਿਚਾ ॥
 ਹਮੀ ਖਾਸਤੁ ਕਿ ਚਿੰਤਾ ਬਦਸਤੁ ਮਾਵਰੀ ਦਾ ॥
 ਏਹ ਇਹ ਕੀਤੀ ਜੋ ਉਸ ਕੇਤਾਈ ਵਿਚ ਹਥ ਦੇ ਕੇ ਆਈਏ ॥
 ਕਿ ਸੰਦ੍ਰਬ ਕੇਤਾਈ ਸਿਕਸਤੁ ਮਾਵਰੀ ਦਾ ॥ ੨੨ ॥
 ਕਿ ਸੰਦ੍ਰਬ ਕੇਤਾਈ ਤੇਰੇ ਵਿਚ ਲਿਆਈਏ ॥
 ਚੁਕਾਨੁ ਬਕਸਸ ਦਰਾਮਦ ਅਜਾਂ ॥
 ਜਦੋਂ ਸਾਥ ਹਥ ਦੇ ਮੇਹਨਤ ਨਾਲ ਪੁਜੇ ॥
 ਬਦਸਤਿ ਦਰਾਮਦ ਮਤਾਏ ਗਿਰਾਂ ॥ ੨੩ ॥
 ਵਿਚ ਹਥ ਦੇ ਆਈ ਵੇਲਤ ਸਾਥੀ ॥ (ਅਥਾਤ) ਸੰਦ੍ਰਬ ॥
 ਸਿਕਸਤਿ ਦਮਾਰਸ ਬਰਾਏ ਮਤਾਇ ॥
 ਤੁਨੀ ਸੰਦ੍ਰਬ ਕੇਤਾਈ ਪਦਾਰਥ ਦਾ ॥
 ਪਦੀ ਦਮਾਰਸ ਜਾਂ ਚਰਖ ਸਿੰਦ੍ਰਬ ਮਾਰਾ ॥ ੨੪ ॥
 ਪਗਟੇ ਤੇ ਇਸ ਵਿਚੋਂ ਸੇਧੇ ਚੰਦ੍ਰਮਾ ਦੁਮਕਦੇ ਵਾਲਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ॥
 ਦੁਨੀ ਰਾਗਿ ਜਿਹਾ ਖਾਨਾ ਕਦ ਕਦੁਨ ਸਤਾ ॥
 ਅੰਤ ਉਹ ਪੰਥੀਆਂ ਦੇ ਪਰ ਕਰਕੇ ਜੋ ਨਹੀਂ ਸੀ ॥
 ਖੁਦਾ ਮਨ ਪ੍ਰਸਰਦਾ ਦੁਨੀ ਹਮ ਬੁਝੇ ਸਤਾ ॥ ੨੫ ॥
 ਉਨ੍ਹਾਂ ਕਹਾ ਲਹਿ ਭਰਨੇ ਮਾਨੀ ਬੇਟਾ ਦਿਤਾ ਹੈ ਬਹੁਤ ਫੁਲਦਾ ਹੈ ॥
 ਸਿਯਾਦੁ ਰਦ ਚਿੰਤਾ ਚਿੰਤਾ ਰਦੁਤ ਮੀ ਅਵੀਕਾ ॥
 ਤੁਸੀਂ ਚਾਹੀ ਜੋ ਨਕਦੇ ਤਾਈ ਮਾਤਾ ਇਸ ਉਸ ਹਥੀ ਕਦੇ ਤਾਈ ॥

ਸੁਕਰਕਰਦਮਜਦਾ ਨਿਯਾਜਮ ਅਜੀਕਾ ॥੨੬॥
ਕ੍ਰਿਪਾਵਾਹਿਗੁਰੂ ਦਾ ਪਿਰ ਬਾਦ ਕੀਤਾ ਜੋਬੇਅੰਤੀ ॥

ਕਨਕਪਦਵਹਿਸੁ ਰਾਚਪਿਸਰੇ ਅਜੀਮਾ ॥
ਕਰਦੋਪੰਘਲਣਾ ਉਸਕੀਕੇ ਤਾਂਈ ਜੋਸ ਬੋਧਾ ਆਪਣਾ ਅਜੀਮਾ ॥
ਬਖਾਏਖੁਦਾ ਕਿਸਲਾ ਕਾਬਹ ਕਰੀਮਾ ॥੨੭॥
ਜਾਥਾਵਗੀਰੀਵਾਹਿਗੁਰੂ ਕਿਸਲਾ ਕਾਬੇਵਾਕੇਦਾਤੇਦੇ ॥

ਚੁਸੁਗਜਸੁਤ ਕਰਦੈ ਦੁਸੇ ਸਾਲ ਮਾਹ ॥
ਜੋਵੇਗਜਰਗਏ ਓਪਰਇਸ ਗੱਲਦੇ ਦੋ ਤਿਨ ਵੇਖੇ ਅਤੇ ਮਹੀਨੇ ॥
ਕਜੇਦੁਖਤਰੇ ਖਾਨਹ ਆਟਰਦ ਸ਼ਾਹ ॥੨੮॥
ਧੋਬੀਆਂਦੀ ਲੜਕੀ ਭਾਵਸਾਹੀ ਘਰ ਵਿੱਚ ਲੈ ਆਈ ਲੜਕੇ ਨੂੰ ॥

ਨਜਰ ਕਰਦ ਕਰਦੈ ਹੁਮਾਏ ਅਜੀਮਾ ॥
ਨਜਰ ਕੀਤੀ ਓਪਰ ਉਸ ਲੜਕੇ ਦੇ ਹੁਮਾ ਵੱਡੀ ਨੇ (ਅ:) ਭਾਵਸਾਹ ਦੀ ਬੇਈ ॥
ਬਾਜਾਹ ਅਮਦਸੁ ਪਿਸਰ ਗਾਜੇਰ ਕਰੀਮਾ ॥੨੯॥
ਵਿੱਚ ਆਦੇ ਆਇਆ ਬੋਧਾ ਧੋਬੀ ਕਰੀਮਦਾ ॥

ਬਪੁਰਸੀਦ ਓਰਾਕਿਏ ਨੇਕ ਜਨ ॥
ਪੁਤ੍ਰਿਮਾ ਉਸ ਲੜਕੀ ਨੂੰ ਜੋ ਮੇਰਾ ਕੀਏ ਇਸਰੀਏ ॥
ਕਜੇ ਆਟੁਤੀ ਪਿਸਰ ਖਸ ਓਇ ਤਨਾ ॥੩੦॥
ਕਿਸੇ ਪੁਪਤ ਹੋਇਆ ਤੇਨੂੰ ਬੋਧਾ ਭੁੱਲੇ ਸੁਭਾਉ ਤੇ ਸੁਭਾਸਰੀਰਦਾ ॥

ਬਿਵਾਨੇ ਮਖਾਨੇ ਸੁਨਾ ਸੁਨਾ ਮਨ ॥
(ਵਿਲਾਇਚਕਿਹ) ਜੋ ਮੇਰਾ ਲਾਹੀ ਹਾਂ ਅਤੇ ਮੇਰੀ ਪਛਾਣਦੀ ਹਾਂ ॥
ਅਰੇ ਮਨ ਸੁਨਾ ਸੁਨਾ ਨਦੀ ਗਾਰ ਸੁਖਨਾ ॥੩੧॥
ਇਕ ਮੇਰਾ ਪਛਾਣਦੀ ਤੇਨੂੰ ਸੁਭਾ ਕੋਈ ਏਸ ਗੱਲ ਨੂੰ ਨਹੀਂ ਜਾਣਦਾ ॥

ਦੁਹੀਦੁਹੀ ਮਰਦਮ ਬਿਖਾਰੀਦ ਕਜੇ ॥
ਦੇਖੋ ਆਦਮੀ ਚਾਹਿਆ ਉਸਨੂੰ ਜੋ ਕਿਸ ਘਰ ਦੀ ਲੜਕੀ ਹੈ ॥
ਕਿ ਮਨ ਖਾਨਦੇ ਗਾਜੇਰ ਨਸ ਅਜੀਮਾ ॥੩੨॥
ਮਨੁਖ ਦਾ ਜੋ ਧੋਬੀਆਂ ਦੇ ਘਰ ਦੀ ਲੜਕੀ ਜੋ ਲੜਕੇ ਨੂੰ ਸਾਥ ਲਿਆਈ ॥

ਬੁਖਦੀ ਦ ਓਰਾ ਬੁਬਸਤੀ ਦ ਸਖਤਾ॥

ਸਾਵਿਆਉਧਧੋਬੀਕੇ ਤਾਈ ਅਤੇ ਬੀਨਿਆ ਕਹਾ ਕਹਕੇ

ਕਿਪੁਰਸੀ ਦ ਓਰਾ ਕਿਦੇ ਨੇਕ ਬਖਤਾ॥ ੩੩॥

ਫੇਰ ਪਾਛਿਆਉਧਧੋਬੀਕੇ ਤਾਈ ਜੇ ਅੰਤਸੇ ਭਾਗਾਵਲੇ

ਬੋਗੇਯਮ ਤੁਰ ਹਮ ਚੁਨੀ ਯਾਫਤੇ ਮਾ॥

ਧੋਬੀਨੇ ਕਿਹਾ ਸਾਥ ਤੇ ਰੇਕ ਹਮੇ ਜਿਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਮੇਰੇ ਏਹ ਸਫ਼ਕ ਪ੍ਰਧ ਤੋਹੀ

ਨਮਾਯਮ ਬੋਤੇ ਹਾਲ ਚੀ ਸਾਖਤ ਮਾ॥ ੩੪॥ ਨਾਹੀ॥

ਜਿੰਦੀਖਲਾਵਾਮੇ ਸਾਥ ਤੇ ਹਾਲ ਜਿਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਕੀਤਾ ਹੈ ਮੇਰੇ

ਕਿਸਾਲੇ ਫਲਾਂ ਮਾਹ ਦਰ ਫਕਤ ਜਾਂ ਮਾ॥

ਜੇ ਫਲਾਨੇ ਵਗਸ ਅਤੇ ਫਲਾਨੇ ਮਹੀਨੇ ਸੀਧਿਆ ਦੇਸਮੇ

ਕਿਈ ਕਾਰ ਰਾਕਰ ਦਹ ਅਮਮ ਤਮਾਮਾ॥ ੩੫॥

ਜੇ ਮੇ ਏਹ ਕੀਮ ਪ੍ਰਕਾਰ ਕਹਿਹਾ ਸੀ॥

ਗਿਰਫਤੇ ਮਸੀਦਕ ਦਰਯਾ ਅਮੀਕਾ॥

ਫਤਿਆ ਮੇਰੇ ਸੰਦੂਕ ਨੂੰ ਦਹਿਆ ਡੂੰਗੇ ਵਿਚੇ

ਮਕੇ ਦਸਤ ਜੇ ਯਾਫਤ ਮਈ ਅਕੀਕਾ॥ ੩੬॥

ਇਕੁ ਇਸਦੇ ਹਥ ਵਿਚੇ ਪ੍ਰਧ ਤੇ ਇਆ ਮੇਰੇ ਹਕੀਕ

ਬਦੀਦੀ ਦ ਗੋਹਰ ਗਿਰਿਫਤੀ ਦ ਜਾਂ॥

ਦੇਖਿਆ ਮੇਰੇ ਤੀਨੇ ਉਸਧੋਬੀ ਸੇਲੇ ਕੇ

ਸਨਾਸਦ ਕਿਈ ਪਿਸਰ ਹਸਤੁਆਂ ਹੁਮਾਂ॥ ੩੭॥

ਪੁਛਾਇਆ ਜੇ ਏਹ ਪੁਤ੍ਰ ਇਹ ਮੇਰਾ ਪੈ ਦਮਾਨੇ

ਬੋਰੇ ਤਾਂਜ ਹੁਮ ਦ ਸੀਰ ਪਿਸਤੁਨ ਅਜੀ॥

ਉਸ ਦੇ ਜਿੰਦੀਆਂ ਦਿਆ ਦੁਧ ਮੁਖਿਆਂ ਦੇਚੇ

ਬਿਜਦ ਸੀਨ ਹੁਮ ਦ ਹਰੇ ਦਸਤੁਾਂ ਅਜੀ॥ ੩੮॥

ਮਾਏ ਫੁਤੀ ਆਪਣੀ ਉਧ੍ਰੇ ਦੇ ਨੇ ਹਥ ਹਮਾਂ

ਸਨਾਸਦ ਅਜੇ ਹਰੇ ਲਖ ਬਾਰ ਕਸਾਦਾ॥

ਪੁਛਾਇਆ ਜੇ ਉਸ ਬਾਬ ਕਦੇ ਦੇਖੇ ਤੇਰੇ ਖਲੇ ਗੋਦੇ ਹੈ

ਕਿ ਜਾਹਰ ਨ ਕਰਦਸ ਦਿਲ ਮੀ ਦਰ ਨਿਹਾਦਾ ॥ ੪੭ ॥
ਜੇ ਪ੍ਰਗਟ ਨਾ ਕੀਤਾ ਏਹ ਭੇਦ ਦਿਲ ਵਚਹੀ ਰਖਿਆ

ਦਿਗਰ ਰੇਜ ਰਫਤ ਦੁਜੋ ਜਹ ਫਲਾ ॥
ਦੂਸਰੇ ਦਿਨ ਗਈ ਇਸਰੀ ਧੋਈ ਫਲਾਨੇ ਦੀ

ਮਰਾ ਪੁਸ਼ ਦਾ ਦੁਹ ਬਜਰਗੇ ਹਮਾ ॥ ੪੮ ॥
ਮੇਰੇ ਤਾਈ ਇਸਟਏ ਦਿਰ ਕਿਹਾਤੇ ਬਜਗੇ ਉਸਵਤੇ ਨੇ

ਤੁਰਾ ਮਨ ਕਿ ਫਰਜੀਦ ਬਖਸੀ ਦੁਹ ਮਮਾ ॥
ਤੇਰੇ ਤਾਈ ਜੋ ਹਮਨੇ ਬੇਟਾ ਦਿਤਾ ਹੈ

ਚਰਾਗੇ ਕਿ ਮਾਂਰਾ ਦੁਰਖਸੀ ਦੁਹ ਮਮਾ ॥ ੪੯ ॥
ਦੀਵਾ ਕੋ ਆਦਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਵਾਲਾ ਦਿਤਾ ਹੈ ਕੋ ਆਦਾ ਏਹ ਬਾਦਸਾਹ ਹੈ

ਜਿ ਰੀਜੇ ਜਰਜਰੀ ਹਰੇ ਤਖਤ ਦਾਦਾ ॥
ਖਜਾਨੇ ਸੇ ਅਤੇ ਜੋਨੇ ਸੇ ਅਤੇ ਸੋਗੀਆ ਸੇ ਅਤੇ ਸਿਧਾਸਣ

ਦੁਜਾਂ ਪਿਸ਼ਰ ਰਾਖਨਦੇ ਪੁਦ ਨਿਹਾਦਾ ॥ ੫੦ ॥
ਅਤੇ ਉਸ ਯਹ ਕੇਲੀ ਆਪਣੇ ਘਰ ਵਿਚ ਰਖਿਆ

ਬਗਾਫਤੁਸ ਕਿ ਟੀਰਾ ਜੋ ਦੁਰਟਾ ਫਤੁਸ ॥
ਦਸਾਨੇ ਕਿਹਾ ਸੇ ਇਸ ਨਾ ਰੁਕੇ ਨੇ ਤਾਈ ਮੇਰੇ ਦਰਿਆ ਸੇ ਪਾਉ ਆਏ

ਕਿ ਦਾਰਾ ਬਨਾ ਮਸ ਮਜੇ ਸਾਖਰੁਸ ॥ ੫੧ ॥
ਇਸ ਵਾਸਤੇ ਮੇਰੇ ਸਦਾਨਾਮ ਦਾਹਾ ਰਖਿਆ

ਕਿ ਸਾਧੀ ਸਹਾ ਰਾਬਰ ਮੇ ਦਿਹੀਸਾ ॥
ਜੇ ਪ੍ਰਗਟ ਬਾਕੀ ਮੇਰਾ ਰੀਕੇ ਤਾਈ ਮੇਰੇ ਇਸਟੇ ਦਿਵਾਤਾ

ਦੁਜਾਂ ਤਾਜ ਇਕਸਾਲ ਬਰਜਰ ਨਿਹੀਸਾ ॥ ੫੨ ॥
ਅਤੇ ਮੁਕਟ ਕਾਗਾਂ ਦਾ ਇਸ ਦੇ ਸਿਰ ਉਪ ਰਖਾਵੀਗਾਂ ਮੇ

ਮਰਾ ਪੁਸ਼ ਦੁਹ ਮਮਾ ਦ ਮਜਾ ਸਰਤਸਾ ॥
ਮੇਰੇ ਤਾਈ ਤੁਝੀ ਪਾਏਰ ਆਈ ਹੈ ਮੁਕਤ ਇਸ ਦੀ

ਕਿ ਹੁਸਨਲ ਨਮਾਲ ਮਸਤ ਪੁਸ਼ ਸਰਤਸਾ ॥ ੫੩ ॥
ਜੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਵਾਲਾ ਹੁਪੇਰ ਅਤੇ ਤਸੀ ਬੁਰਤ ਹੈ ਇਸ ਦੀ

੮੨ ਕਿ ਅਜ ਸਾਹ ਰ ਚੁ ਖਬਰ ਪਾਫਤ ਸਾਹ।
 ਜੇ ਬਦਸਾਹੀ ਸੇ ਉਸਨੇ ਜੇ ਖਬਰ ਪਾਈ॥
 ਕਿ ਦਾਰਾ ਬਨਾ ਮਸ ਮੁਕਰਰਾ ਸੁਦਾਸਾ॥੪੬॥
 ਜੇ ਦਾਰਾ ਬਨਾਮ ਉਸਦਾ ਮੁਕਰਰ ਰੋਇਆ॥
 ਅਜ ਸੇਰ ਸਦ ਸਾਹ ਦਾਰਾਇ ਦੀਨਾ॥
 ਉਸੀ ਸੇਰਦੀ ਉਲਾਹੇ ਸੇ ਰੋਇਆ ਪੈ ਦਾਰਾ ਪਰਮ ਫਾਲਾ (ਮੁ) ਦਾਰਾ ਜੇ ਫਾਰਾ ਸੁਦਾ
 ਹਕੀਰਤ ਸਨਾਸ ਅਸਤੁ ਮਨਲ ਮੁਕੀਨਾ॥੪੭॥
 ਹਕੀਕਤਾ ਹੈ ਪਛਾਨਣੇ ਫਾਲਾ ਤੇਸੀ ਅਤੇ ਪੁਰੀ ਪਰਤੀਤ ਫਾਲਾ ਤੇਸੀ॥
 ਬਿਦਿਹ ਸਾਕੀਯਾ ਜਾਗਰੇ ਸਰਖ ਫਾਮਾ॥
 ਦੋਹ ਮੇਸੁਖਈਆ ਪਿਆਲਾ ਲਾਲ ਰੰਗ ਫਾਲਾ॥
 ਕਿ ਮਾਰਾ ਬਕਾਰ ਅਸਤੁ ਫਕਤੇ ਮੁਦਾਮਾ॥੪੮॥
 ਜੇ ਮੇਰੇ ਤਾਈ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਤਰ ਵੇਲੇ॥
 ਬਿਦਿਹ ਪਿਆਲਾ ਫੇਰੇ ਜਹ ਰੰਗੀਠ ਰੰਗਾ॥
 ਦੋਹ ਪਿਆਲਾ ਫੇਰੇ ਜੇਦੇ ਰੰਗ ਫਾਲਾ ਹੀਰੀਆ ਰੋਇਆ॥
 ਕਿ ਮਾਰਾ ਪੁਸ ਮਾਮਦੁ ਬਸੇ ਫਕਤੁ ਜੰਗਾ॥੪੯॥
 ਜੇ ਮੇਰੇ ਤਾਈ ਤੁਲਾ ਆਇਆ ਪੈ ਅਤੇ ਕਰਕੇ ਵੇਲੇ ਲੜਾਈ ਦੇ॥ (ਤੇ ਅੰਗਰੇ)
 ਤੂੰ ਬਿਚਾਰਕੇ ਦੇਖ ਤੁਸੀਂ ਕੀਦੀ ਉਲਾਹੇ ਫੇਰੇ ਅੰਡਾ ਗਰਬ ਕਿਉਂ ਕਰਦੇ ਹੋ ਅਗਾ ਪਿਛਾ
 ਦੇਖੋ ਤੁਸਾਰੇ ਘਰਾ ਵਿਚ ਕੀ ਵਰਤਾਰਾ ਹੈ ਈਰਾਨ ਵਿਚ ਤਾਂ ਬੋਧੀ ਨਾਲ ਬੀ ਸਾਦੀ
 ਕਰ ਲੈਂਦੇ ਹੋ - ਜਿਸਨੂੰ ਭੁਖ ਤੇ ਉਨਾਦੀ ਤਵਰੀਖ ਦੇਖ ਲਵੋ॥
 ਹਿਕਾਸਤ ਮਾਠਵੀ ਚਲੀ
 ਬਿਦਾਹ ਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫਤਹ॥
 ਪਦਾਟੀਰ ਬਖਸ਼ਿਦੁ ਉਦੇਲ ਕਰਾਰਾ॥
 ਫਾਹਿਗੁਰੂ ਜਾਇਸ ਬਖਸ਼ੀਸਦਾ ਕਰਨੇ ਫਾਲਾ ਹੈ ਅਤੇ ਦਿਲਨੂੰ ਅਜਾਮ ਦੇਵੇ ਫਾਲਾ ਹੈ॥
 ਰਜਾ ਬਖਸ਼ ਰੋਜੀ ਵਿਹੋ ਨਉ ਬਹਾਰਾ॥੧॥
 ਖਸੀਦੇ ਦੇਵੇ ਫਾਲਾ ਅਤੇ ਰਿਜਕ ਕੇ ਦੇਵੇ ਫਾਲਾ ਅਤੇ ਪੁਰਲਤਾ ਦੇਵੇ ਫਾਲਾ ਨਵੀਨ
 ਬਹਾਰਦੀ॥

ਕਿ ਮੀਰ ਅਸਤ ਪੀਰ ਅਸਤ ਹਰੇ ਜਹਾ॥
ਜੇ ਵਹਿਗੁਰੂ ਬਾਦਸਾਹ ਤੇ ਪਦ ਦੀਨਹਾ (ਅ:) ਬਿਧੁ ਸੇ ਬਿਧੁ ਤੇ ਲੋਕ ਪੁਲੋਕ
ਪਦਾਵੈ ਦੁ ਬਖਸਿ ਦਹ ਹਰੇ ਸੁਕ ਅਮਾ॥ ੨॥

(ਵਹਿਗੁਰੂ) ਸਾਹਿਬ ਬਖਸੀ ਸਰਕੇਦਾਰ ਤੇ ਹਰ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਸੁਖ ਦਿਵਾਏ॥
ਹਿਕਾਯਤ ਬਨੀ ਦੇ ਮੁ ਜਾਹੇ ਅਜੀਮ॥
(ਸਾਹਿਬ ਕਹਾਤੇ ਤੇ) ਕਥਾ ਬੁਣੀ ਹੈ ਹਮਨੇ ਬਾਦਸਾਹ ਅਜਮ ਦੀ॥

ਕਿ ਹੁਸਨਲ ਜਮਾਲ ਅਸਤ ਸਾਹਿਬ ਕਰੀਮ॥ ੩॥
ਜੇ ਰੂਪ ਲੰਬੇ ਅਤੇ ਸਾਹਿਬ ਦਾਤ ਦਾਏ॥ (ਅ:) ਮਾਲਕ ਤੇ ਬਖਸੀਜ ਦਾ॥
ਕਿ ਸੁਰਤ ਜਮਾਲ ਅਸਤ ਹੁਸਨਲ ਤਮਾਮ॥
ਜੇ ਸਰੀਰ ਦਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਵਾਲਾ ਹੈ ਅਤੇ ਰੂਪ ਸੌਂਬੇ ਪ੍ਰਕਾਰ ਕਰਕੇ ਪੂਰਣ ਹੈ॥

ਹਮ ਹਰੇਜ ਅਸਾਇ ਜੇ ਰੇਦ ਜਾਮ॥ ੪॥
ਸਾਗੁਦਿਨ ਪ੍ਰਸੰਨ ਹੋਵੇ ਵਾਲ ਰਾਗ ਅਤੇ ਪਿਆਲੇ ਸੇ॥
ਕਿ ਸਰਹੰਗ ਦਾਨਸ ਜਿ ਫਰਜ਼ਨਗੀ॥
ਜੇ ਸੁਰਮਾ ਤੇ ਅਕਲ ਸੇ ਅਤੇ ਬੁਧਿ ਸੇ॥

ਕਿ ਅਜ ਮਸਲ ਹਰੇ ਮੋਜ ਮਰਦਾਨਗੀ॥ ੫॥
ਜੇ ਰੁਲਿਆਈ ਸੇ ਲੋਰ ਸੁਰਮਾ ਤੇ ਦੀਆ ਮਾਰ ਦਾਸੀ॥
ਟਜਾ ਬਾਨੂਏ ਹਮਰੁ ਮਾਰੇ ਜਵਾ॥
ਉਸਦੀ ਇਕ ਇਸਤ੍ਰੀ ਸੀ ਜੋ ਸਾਚੇ ਦਮਾ ਪੁਰਨ ਮਾਸੀ ਦਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ॥

ਕਿ ਕੁਰਬਾ ਸਟਰ ਹਰ ਕਸੇ ਨਾਜਦਾ॥ ੬॥
ਇਸੀ ਵਾਸਤੇ ਉਸ ਉਪਰ ਵਰਨੇ ਜਾਦਾ ਹੈ ਸਭ ਕੋਈ ਉਂਦ ਸਰੂਪ ਵਾਲਾ॥
ਕਿ ਖੁਸਰੀਗ ਖੁਸ ਮੋਇ ਓ ਖੁਸ ਜਮਾਲ॥
ਕਿਉ ਜੋ ਭੁਲ ਰੰਗ ਅਤੇ ਭੁਲ ਬੁਭਾਉ ਉਸਦਾਸੀ ਅਤੇ ਭੁਲ ਰੂਪ॥

ਖੁਸ ਮਾਟਾ ਜ ਖੁਸ ਖਾਰਗੀ ਖੁਸ ਪਿਆਲਾ॥ ੭॥
ਭਲੀ ਭੋਲੀ ਅਤੇ ਭੁਲੀ ਚਾਲ ਅਤੇ ਭੁਲਾ ਪਿਆਰ ਸੀ ਉਸਦਾ॥
ਬਦੀ ਦਨ ਕਿ ਖੁਸ ਮੋਇ ਖੁਬੀ ਜਹਾ॥
ਸਾਬਦੇ ਪਦੇ ਦੇ ਜੋ ਭੁਲੇ ਸੁਰਾਇ ਵਾਲੀ ਅਤੇ ਰੁਲਿਆਈ ਵਾਲੀ ਸੰਸਾਰ ਮੋਈ

੨੪ ਸਿ ਹਰਫਾਤ ਕਰਦਨ ਖਸੇ ਖਸ ਜਬਾ ॥੮॥
ਜੇ ਕੋਲਣ ਕਰੀਸੀ ਸੁਭੀ ਸੁਭ ਕੋਲਣੀ ਹਸਨਾ

ਦੁਪਿਸਰਸ ਅਜਾ ਬਦ ਚੰ ਸਮ ਸਮਾਹ ॥
ਜੇ ਪੁਰ ਇਸਦੇ ਜੇ ਸੋ ਸੁਭ ਅਤੇ ਚੰਦਮਾ ਹੋਵੇ

ਕਿਰੋਸਨ ਤਬੀਯਤ ਹਕੀਕਤ ਗਵਾਹ ॥੯॥
ਜੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਵਾਲਾ ਵਿਲਾਸ ਨਿਕਾ ਅਤੇ ਹਕੀਕਤ ਦੇ ਜਾਨਣੇ ਵਾਲੇ

ਕਿ ਗੁਸਤਾਖ ਦਸਤ ਅਸਤ ਚਾਲਾਕ ਜੀਗ ॥
ਜੇ ਹਥ ਦੇ ਦਲੇਰ ਹੋਸਨ ਅਤੇ ਚਾਲਾਕ ਹੋਸਨ ਜੁਧ ਵਿਚ

ਬਵਕਤੇ ਤਰਦੰਦ ਚ ਸੇਰੇ ਨਿਹੰਗ ॥੧੦॥
ਵੇਲੇ ਜੁਧ ਦੇ ਜੋਸ਼ੇਰ ਅਤੇ ਸੰਸਾਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਮੇਲੇ ਸੁਰਮੇ

ਦਪੀਲ ਅਫਕਨੇ ਹਮ ਚ ਸੇਰ ਅਫਕਨ ਅਸਤ ॥
ਹੋਰੇ ਹੀ ਹਾਥੀ ਨੂੰ ਸਿਟਕੇ ਵਾਲੇ ਅਤੇ ਜੋਸ਼ੇ ਸੇਰ ਨੂੰ ਸਿਟਕੇ ਵਾਲੇ

ਬਵਕਤੇ ਫਗਾਂ ਸੇਰੇ ਟੀਤਨ ਅਸਤ ॥੧੧॥
ਵੇਲੇ ਜੁਧ ਦੇ ਸੇਰ ਪਲਾਟੀ ਜਾਰੀ ਵਾਲੇ ਹੋ

ਅਕੇਖ ਬੋਰੇ ਓਦਿਗਰ ਤਨ ਚ ਸਮਾ ॥
ਇਕ ਸ਼ੀਤ ਸਰੂਪ ਅਤੇ ਦੁਸਰਾ ਚਾਰੀ ਜੋਸ਼ੇ ਜਾਰੀ ਵਾਲਾ

ਦਸਰਤ ਸਜਾਵਾਰ ਅਜਮ ਅਜਮ ॥੧੨॥
ਹੋਰੇ ਹੀ ਜੁਧ ਅਵਸਥਾ ਦੇਖਣੇ ਜੋਗ ਅਤੇ ਵਡੇ ਸੇ ਵਡੇ

ਫਜਾਂ ਮਾਦਰੇ ਬਰਕਸ ਅਸਫਤ ਹਗਸਤ ॥
ਨਿਗਰੀ ਮਾਈ ਉਪ ਕਿਸੀ ਆਵਲੀ ਦੇ ਮੋਹਤੀ ਹੋਗਈ

ਚਮਰਦ ਅਸਤ ਗਲ ਹਮ ਚਨੀ ਗਲ ਪਰਸਤ ॥੧੩॥
ਓ ਪੁਰਖਾਤੀ ਕਿਆ ਫਲ ਜੋਸ਼ਾ ਸਿਧ ਹੈ ਮੇਲੇ ਨੂੰ ਫਲਤੀ ਪੁਜਦੇ

ਸੰਬੀਗਾਂ ਹਰਖਾਬ ਗਾਹ ਅਮਦੀਦ ॥
ਗਤ ਦੇ ਵੇਲੇ ਜਦੋਂ ਜੋਟੇ ਦੇਵਾਸਤੇ ਪਲਘਾਂ ਉਪ ਆਏ

ਕਿ ਜੋਰ ਅਵਰਾਂ ਦਰ ਨਿਗਾਹ ਅਮਦੀਦ ॥੧੪॥
ਜੋ ਬਲਵਨ ਵਿਚ ਦੇਖਣੇ ਦੇ ਆਏ

ਬਖਾਰੀ ਦਪਸਪੇਸ਼ ਪੁਰਦੇ ਕਲਾਂ॥

ਉਸ ਇਸਤੀਨੇ ਜਾਇਆ ਅਗੇ ਪਿਛੇ ਵੇਰਾਂ ਬੇਟਿਆਨੀ

ਓਰੇ ਦਰਾਮਸ ਰਿਹਾਰਾ ਹੁਮਾਂ॥੧੫॥

ਸਰਾਬ ਅਤੇ ਰਾਗ ਦੇ ਨਾਲ ਉਨਕੇ ਤਾਈ ਮਸਤ ਕੀਤਾ

ਬਿਦਾਨਿਸਤੁ ਕਿ ਅਜਮਸਤੀ ਅਸਮਸਤ ਰਾਸਤਾ॥

ਜਾਇਆ ਉਨਦੀ ਮਾਨੇ ਜੋ ਮਸਤੀ ਸਰਾਬ ਸੇ ਓਹ ਮਸਤ ਹੋ ਗਏ ਹੋ

ਬਿਜਦ ਤੇਗ ਖਦ ਦਸਤੁ ਹਰਦੇ ਸਿਕਸਤਾ॥੧੬॥

ਉਨਦੀ ਮਾਨੇ ਮਾਰੀ ਤਲਵਾਰ ਆਪਣੇ ਹਥ ਨਾਲ ਦੇਹਾਨੂੰ ਮਾਰ ਸਿਟਿਆ

ਬਿਜਦ ਹਰਦੇ ਦਸਤੁਸ ਸਰੇਖੇ ਸਜੇ ਰਾ॥

ਅਤੇ ਫੇਰ ਮਾਰੇ ਵੇਰੇ ਹਥ ਆਪਣੇ ਸਿਰ ਉਪ੍ਰਯੋਗ ਨਾਲ

ਬਜੀਬਸ ਦਰਾਮਦ ਬਕਰਦੀਦ ਸੇਰਾ॥੧੭॥

ਟਪਟਲਾਨੀ ਅਤੇ ਰੋਤ ਪਾਕੇ ਸੋਰਕੀਤ

ਬਗੇਯਦ ਕਿਵੇ ਮੁਸਲਮਾਨ ਨਪਾਕ॥

ਆਖਦੀ ਹੈ ਜੋ ਅੰ ਮੁਸਲ ਮਾਨੇ ਅਪਾਵੇਰੇ

ਚਿਰਾ ਚੁ ਕਿਕਸਤੀ ਅਜੀ ਜਾਮਹ ਚਾਕਾ॥੧੮॥

ਕਿਆ ਹੁਆ ਕਿਸੇ ਦੇ ਮਾਰੇ ਇਨਾ ਦੇ ਕਪੜੇ ਫਾਟੇ ਕਹਾ ਤੂੰ

ਬਖਰਦੀਦ ਮੇ ਹਰਦੇ ਅੰ ਗਸਤੁ ਮਸਤੁ॥

ਪੀਤੀ ਸਰਾਬ ਦੇਹਾਨੇ ਅਤੇ ਮਸਤੇ ਹੋਏ

ਗਿਰਫਤੀਦ ਸਮਸੇਰ ਪੇਲਾਦ ਦਸਤਾ॥੧੯॥

ਫੜੀ ਫਲਾਦੀ ਤਲਵਾਰ ਵਿਚ ਹਥ ਦੇ

੧੧੩ ਕਿਈਰ ਬਿਜਦ ਅੰ ਬਈਹਾਂ ਜਦੀਦਾ॥

ਜੋ ਇਸਨੇ ਉਨਕੇ ਤਾਈ ਮਾਰਿਆ ਅਤੇ ਇਸਨੇ ਇਸਕੇ ਤਾਈ ਮਾਰਿਆ

ਬਦੀਦਹ ਮਰਾਹਰਦੁ ਈ ਕਸਤੁ ਹਅੰਦਾ॥੨੦॥

ਮੇਰੇ ਨੇੜਾਂ ਦੇ ਜਾਮਣੇ ਏਹ ਵੇਰੇ ਹੀ ਮੌਰੇ ਹੋ

ਦਰੇਗਾ ਮਰਾ ਜਾਂ ਜਿਮੀ ਹਮ ਨਦਾਦਾ॥

ਅਫਸੋਸ ਹੈ ਮੇਰੇ ਤਾਈ ਪ੍ਰਿਥਵੀਨੇ ਭੀ ਵੇਲ ਨਹੀ ਦਿਤਾ

੮੬ ਨ ਦਹਲੀਜ ਦੇ ਜਖ ਮਰ ਰਹ ਕਸਾ ਦਾ ॥ ੨੧ ॥
ਨ ਨਰਕ ਦੇ ਦਰਵਾਜੇ ਨੇ ਮੇਰੇ ਤਾਈ ਰਸਤਾ ਦਿਤਾ ॥

ਦੁਰਸਮੇ ਮਰ ਬੀਚਿ ਗਰਦੀ ਦੁਈ ॥
ਦੇਹਾਂ ਨੇੜਾ ਮੇਰਿਆ ਦੇ ਦੇਖਦੇ ਦੇਖਦੇ ਕਿਆ ਹੋਇਆ ਹੋ ॥

ਕਿਈ ਦੀ ਦਹੁ ਖੁੰਨ ਦੀ ਦੀ ਦੁਈ ॥ ੨੨ ॥
ਜੇ ਇਨ ਨੇੜਾ ਨੇ ਏ ਏ ਖੁੰਨ ਦੇਖਿਆ ਹੋ ॥

ਬਿਹਜ ਮਨ ਤਨੇ ਤਰਕ ਦਨੀਆ ਕਨਮਾ ॥
ਭਲੀਏ ਏ ਬਾਤ ਮੇਨੂੰ ਛਡਵਾ ਦਨੀਆ ਦਾਰੀ ਦਾ ਕੰਗ ਮੇ ॥

ਫਕੀਰੇ ਸੁਫਲ ਮੁਲਕ ਦੀ ਮੇਰਵਾ ॥ ੨੩ ॥
ਅਤੀਤ ਹੋਵਾ ਮੇ ਅਤੇ ਚੀਨ ਦੇ ਮੁਲਖ ਨੂੰ ਤੁਰ ਜਾਵਾ ਮੇ ॥

ਬਾਫਤਈ ਸੁਖ ਨਰਾ ਕਨ ਦਜਾ ਮਹ ਚਾਕਾ ॥
ਕਹਾ ਇਸ ਬਾਤ ਕੇ ਤਾਈ ਅਤੇ ਕਪੜੇ ਫਾਵਦੀ ਹੋ ॥

ਰਵਾਂ ਸੁਦ ਸੁਏ ਵਸਤੁ ਖਤੁ ਚਾਕੁ ਚਾਕਾ ॥ ੨੪ ॥
ਤੁਰਗਈ ਤਰਫ ਬਦਲੀ ਅਤੇ ਸਹੀਰ ਨੂੰ ਪਾਉ ਕੀਤੇ ਥਾਉ ਥਾਉ ॥

ਕਿਓ ਜਾ ਬਦੀ ਦੇ ਦਖਸ ਖਾਬ ਗਾਹਾ ॥
ਜੇ ਉਸਨੇ ਉਸ ਜਾਗਾ ਭਲੀ ਸੁੰਦਰ ਅਸਥਾਨ ਦੇਖਿਆ ॥

ਨਸ ਸਤੁਹ ਮਾਨੁਤ ਬੁਰਗਾਉ ਬਾਜਨ ਚਮਾਹਾ ॥
ਬੇਠਾ ਹੋਆ ਹੋ ਉਪਰ ਬੈਠ ਦੇ ਸਿਵਲੀ ਲਾਥ ਪਾਰ ਬਤੀ ਦੇ ॥ ੨੫ ॥

ਬਪੁਰਸੀ ਦਓਰਾ ਕਿਏ ਨੇਕ ਜਨਾ ॥ ਚੰਦਮਾ ਦੀ ਮਸਤਕ ॥
ਸਿਵ ਜੀ ਨੇ ਉਸ ਇਸਤਰੀ ਕੇ ਤਾਈ ਪਾਇਆ ਜੇ ਏ ਭਲੀ ਏ ਲੋਕੇ ॥

ਹਮਾਲੀ ਦਰਖਤੇ ਚਸਰਵੇ ਚਮਨਾ ॥ ੨੬ ॥
ਉਂਦਰ ਬਿਰਫ ਕੀਆ ਨੇ ਦੇ ਜੇਠੇ ਨਰੁ ਬਾਗ ਮੇ ਸੁੰਦਰ ਲਗਾ ਦਾਏ ਅੰਮੇ ਸੇਭ ॥

ਕਿਹੁ ਪਰੀ ਤੇ ਚਨਰੇ ਜਹਾਨ ॥ ਭੂ ਪਾਵਤੀ ਹੋ ॥
ਕਿਆ ਭੂ ਪਾਵਤੀ ਹੋ ਅਥਵਾ ਪਰੀ ਹੋ ਕਿਆ ਭੂ ਸੂਰਜ ਦੀ ਇਸਤਰੀ ਹੋ ॥

ਕਿਹਾ ਹੋ ਫਲਕ ਮਾਫਤੁ ਬੇ ਮਮਾ ॥ ੨੭ ॥
ਕਿਆ ਭੂ ਚੰਦਮਾ ਅਕਾਸ ਦਾਏ ਅਥਵਾ ਸੂਰਜ ਮਾਸ ਫਲਾਇਤ ਦਾਏ ॥

ਨਹਰੇ ਪਰੀ ਅਮਨ ਨਹਰੇ ਜਹਾਂ॥

ਨਾਮੋ ਅਪਦਰਾਂ ਹਾਂ ਨਾਮੋ ਪਰੀ ਹਾਂ ਨਾਮੋ ਸੁਰਜ ਦੀ ਇਸਤੀ ਹਾਂ॥

ਅਨਮ ਦੁਖਤਰੇ ਸਾਹ ਜਾਂ ਬਿਲਸਿਤਾ॥ ੨੮॥

ਮੇਰਾ ਬੇਰੀ ਬਾਦਸਾਹ ਜਾਂ ਬਲਬਤਾਨ ਵਾਲੇ ਦੀ॥

ਬੁਪਰਸਸ ਦਰਾਮਦ ਪਰਸਤਸ ਨਮੂਦਾ॥

ਜੇ ਉਸਨੇ ਪਛਕੇ ਜਾਣਿਆ ਤਾਂ ਉਸਨੇ ਸਿਵਜੀ ਦੀ ਪੁਜਾਰੀਤੀ

ਬਨਿਜਦਸ ਰੁਬਾਂ ਰਾ ਬੁਤਰਸਤ ਕਰੂਦਾ॥ ੨੯॥

ਪਾਸਜ ਕੇ ਸਿਵਜੀ ਦੇ ਅਧੀਨਗੀ ਨਾਲ ਬੇਨਤੀ ਕੀਤੀ॥

ਬਦੀਦਨ ਤੁਰਾਮਨ ਬਸ ਅਜਰਦਹ ਅਮਾ॥

ਸਿਵਜੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਤੇਰੇ ਤਾਈ ਦੇਖਕੇ ਮੇ ਅਤਸੇ ਕਰਕੇ ਦੁਖੀ ਹੋਇਆ

ਬਗਈ ਤੁ ਹਰਚੀਜ ਬਖਸੀਦਹ ਅਮਾ॥ ੩੦॥

ਤੂੰ ਜੇ ਚੀਜ ਕਰੇ ਮੇ ਤੇਨੂੰ ਦਿਤੀ ਹੈ॥

ਬਹਿਗਾਮ ਪੀਰੀ ਜੁਮੇ ਸੁਮਾ॥

ਉਸਨੇ ਕਿਹਾ ਮੇ ਬੁਦੀਸੇ ਜਵਾਨ ਹੋ ਜਾਵਾਂ॥

ਬਮਲਕੇ ਹਮਾਂ ਧਾਦ ਮਨ ਮੇਵਟਮਾ॥ ੩੧॥

ਵਿਚੋਂ ਮੁਲਕ ਉੱਸੀ ਪਿਆਰੇ ਆਪਣੇ ਦੇ ਜਾਵਾਂ ਮੇ॥

ਬਦਨਸਤੁ ਦਾਨੀ ਵਗਰਈ ਵਟਾ॥

ਸਿਵਜੀ ਨੇ ਜਾਣਿਆ ਤੂੰ ਜਾਣ ਜੇਕਰ ਵੇਰੋ ਰੁਇਆਈ॥

ਬਪਾਦਾਮਦਸ ਬਦ ਤਰੀ ਬੈਵਟਮਾ॥ ੩੨॥

ਵਿਚਾਰ ਗੀਰੀ ਤੇ ਗੀਰੇ ਆਇਆ ਬਹੁਤ ਬੋਲਾਂ ਕੀਆ॥

ਦੁਜਾਂ ਜਾਂ ਬਿਆਮਦ ਬਗਿਰਦੇ ਚੁਚਾਹਾ॥

ਉਥੇ ਵਰ ਲੋਕੇ ਆਈ ਜੇਦੇ ਖੁਹੇ ਪਾਸ॥

ਕਜਾਂ ਜਾਂ ਅਜੇ ਬਦਨ ਖਚੀਰ ਗਾਹਾ॥ ੩੩॥

ਉਸਥਾ ਉਸਦੇ ਯਾਰਦੀ ਸਫਾਰ ਗਾਹਈ॥

ਬਸੇਰੇ ਦਿਗਰ ਰੋਜ਼ ਅਮਦ ਸਿਕਾਹਾ॥

ਵਸਤੇ ਸੇਲਦੇ ਦੂਸਰੇ ਦਿਨ ਉਸਦਾ ਯਾਰ ਆਇਆ॥

੮੮ ਚੁ ਮਿਨਕਾਲ ਅਜ ਬਾਸਦੇ ਨੋ ਬਹਾਰਾ ॥ ੩੪ ॥
ਜੋਸੇ ਲਾਲ ਉਜਾਵਾਲੇ ਬਾਸੇ ਨਵੀਨ ਬਹਾਰ ਵਾਲੇ ॥

ਕਿ ਬਰਖਸਤੁ ਪੈਸਸਗਵ ਜਨੇ ਅਜੀਆ ॥
ਜੇ ਉਨਿਆ ਅਗੇ ਉਸਦੇ ਬਾਰਾਂ ਸਿੱਖਾਂ ਭਾਰੀ ॥

ਰਵਾਂ ਕਰਦ ਅਸਪਾਮ ਚ ਬਾਦੇ ਨਸੀਆ ॥ ੩੫ ॥
ਫੁਡਿਆ ਘੋੜਾ ਉਸਨੇ ਉਸਦੇ ਪਿਛੇ ਜੋਸੇ ਪਉਣ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਵੇਲੇ ਦੀ ਪੁੰਦੀ ॥

ਬਸੇ ਦੂਰ ਗਸਤੁਸ ਨਮਾਦਹ ਦਿਗਰਾ ॥
ਬਹੁਤ ਦੂਰ ਚਲਿਆ ਗਿਆ ਅਤੇ ਕੋਈ ਦੂਸਰਾ ਪਾਸ ਨਾ ਰਹਾ ॥

ਨਾ ਆਬੇ ਨ ਤੇਸਹ ਨ ਅਜ ਖਦ ਖਬਰਾ ॥ ੩੬ ॥
ਨ ਉਸ ਪਾਸ ਪਈ ਅਤੇ ਨਾ ਖਾਣ ਦੀ ਕੋਈ ਚੀਜ਼ ਨਾ ਆਪਣੀ ਉਸਨੂੰ ਖਬਰ ਰਹੀ ॥

ਫਜ਼ਾਂ ਓ ਸਵਦ ਬਾਤੁਨੇ ਨ ਓ ਜਵਾਂ ॥
ਬੀਚ ਉਸ ਜਗਾ ਦੇ ਰਹਦੀ ਹੈ ਭੁਲੇ ਸਰੀਰ ਵਾਲੀ ਨਵੀਨ ਜੋ ਬਨਵਾਲੀ ਉਸਤੀ ॥

ਨ ਹੁਰ ਪਰੀ ਆਫਤਾ ਬੇ ਜਹਾਂ ॥ ੩੭ ॥
ਨ ਐਸੀ ਅਪਛਰਾ ਪੁੰਦੀ ਹੈ ਨ ਸੁਰਜ ਐਸਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਵਾਲਾ ਪੁੰਦਾ ॥

ਬਦੀ ਦਨ ਫਜ਼ਾਂ ਸਾਹ ਆਸੁ ਫਤਹ ਗਸਤਾ ॥
ਸਾਥ ਦੇਖਦੇ ਉਸਕੇ ਸੇ ਬਾਦਸਾਹ ਮੋਹਤ ਹੋ ਗਿਆ ॥

ਕਿ ਅਜ ਖਦ ਖਬਰ ਰਫਤ ਫ ਅਜ ਹੋਸ ਦਸਤਾ ॥
ਕਿਉਂ ਜੋ ਆਪਣੇ ਸੇ ਖਬਰ ਨਾ ਰਹੀ ਅਤੇ ਹੋਸ ਹਥ ਤੇ ਚਲੀ ਗਈ ॥

ਕਿ ਕਸਮੇ ਖੁਦਾ ਮਨ ਤੁਰਾ ਮੇ ਕਨਮਾ ॥
ਬਾਦਸਾਹ ਨੇ ਕਿਹਾ ਜੇ ਸੁਰੀਰ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਦੀ ਤੇ ਮੇਰੇ ਤਾਈ ਤੁਰਰ ॥

ਕਿ ਅਜ ਜਾਨ ਜਾਨੀ ਤੁ ਬਰਤਰ ਕਨਮਾ ॥ ੩੮ ॥
ਜੇ ਤੂੰ ਜਾਨ ਸੇ ਪਿਆਰੀ ਤੇ ਤੂੰ ਮੇਰੇ ਅਤੇ ਮੇਰੇ ਪਰਗਣੀ ਕਰੁੰਗਾ ॥

ਉਜਰ ਕਰਦ ਓ ਦੀ ਦੁਸੇ ਦੁਹਾ ਬਾਰਾ ॥
ਉਸ ਉਸਤੀ ਨੇ ਦੇਖਿ ਚਾਹ ਵੇਖੀ ਮੋੜ ਕੀਤਾ ॥

ਹਮ ਆਖਰ ਬੁਗਾ ਫਤਹ ਫਜ਼ਾਂ ਕਰਦ ਕਾਗਾ ॥ ੪੦ ॥
ਭੀਉ ਕਰਨੂੰ ਸਾਥ ਕਹਦੇ ਬਾਦਸਾਹ ਦੇ ਓਹੀ ਕੰਮ ਕੀਤਾ ॥

ਬੰਦੀ ਗਰਦਸੇ ਬੇਵਫਾਈ ਜਮਨਾ॥

ਦੇਖ ਫਿਰਦਾ ਬੇਵਫਾਈ ਜਮਨੇ ਦੇ ਨੂੰ

ਕਿਖੀਨੇਸਤੁ ਦਸ ਨਮਾ ਦਸ ਨਿਸ਼ਾਂਨਾ॥ ੪੧॥

ਜੇ - ਖੂਨ ਉਸ ਉਪਰ ਰਿਹਾ ਅਤੇ ਉਸਦੀ ਕੋਈ ਨਸ਼ਾਨੀ ਨਾ ਰਹੀ॥

ਕੁਜਾ ਸਾਹ ਕੈ ਕਿਸਰਵੇ ਜਾਮ ਜਮਾ॥

ਕਿਥੇ ਤੇ ਬਾਦਸਾਹ ਕੈ ਕਿਸਰੇ ਅਤੇ ਕਿਥੇ ਜਮਸੈਦ ਅਤੇ ਕਿਥੇ ਤੇ ਸੁਲੇਮੀ

ਕੁਜਾ ਸਾਹ ਅਹਮਦ ਮਹਮਦ ਖਤਮਾ॥ ੪੨॥

ਕਿਥੇ ਤੇ ਅਹਮਦ ਸਾਹ ਕਿਥੇ ਤੇ ਮਹਮਦ ਸਭ ਮਰਮੁਕੇ

ਫਰੋ ਦੀ ਕੁਜਾ ਬਹਮਨ ਇਸਟੈਦ ਯਾਰ॥

ਫਰੋ - ਕਿਥੇ ਗਯਾ ਬਹਮਨ ਕਿਥੇ ਤੇ ਅਸਟੈਦ ਯਾਰ ਕਿਥੇ

ਨਦਾਰਾ ਬਦਾਰਾ ਦਰਾਮਦ ਸਮਾਰਾ॥ ੪੩॥

ਨਦਾਰਾ ਬਹਿਰਾ ਨਦਾਰਾ ਹੀ ਰਿਹਾ ਕਿਸੀ - ਗਿਣਤੀ ਵਿਚ

ਕੁਜਾ ਸਾਹ ਅਸਕੰਦਰੇ ਸੇਰਸਾਹ॥

ਕਿਥੇ ਗਿਆ ਸਾਹ ਸਿਕੰਦਰ ਅਤੇ ਸੇਰਸਾਹ ਕਿਥੇ ਤੇ॥

ਕਿਯਕ ਹਮਨ ਮਾਂਦ ਅਸਤੁ ਜੀਦਹ ਬਜਾਹ॥ ੪੪॥

ਜੇ ਇਕ ਭੀ ਜੀਵਦਾ ਨਹੀ ਰਿਹਾ ਤੇ ਪਿਰਥੀ ਉਪਰ ਅਸਥਿਰ

ਕੁਜਾ ਸਾਹ ਤੇ ਮੁਰ ਬਾਬਰ ਕੁਜਾ ਸਤੁ॥

ਕਿਥੇ ਤੇ ਮੁਰ - ਸਾਹ ਅਤੇ ਬਾਬਰ - ਕਿਥੇ ਤੇ॥

ਹਮਾਯੁ ਕੁਜਾ ਸਾਹ ਅਕਬਰ ਕੁਜਾ ਸਤੁ॥ ੪੫॥

ਹਮਾਯੁ - ਕਿਥੇ ਤੇ ਅਕਬਰ ਸਾਹ ਕਿਥੇ ਤੇ॥ (ਤਾਂ ਤੇ ਤੋਰ ਭੀ ਕੁਛ ਨਹੀ ਰਹੇ ਪਰਮ

ਬਿਦਿਹ ਸਾਕੀਯਾ ਸੁਰਖਰੀਰੇ ਫਰੀਗਾ॥ ੪੬॥

ਦੇਹ ਸੁਖਣੀਆ ਪਿਆਲਾ ਬਾਲੀਰੀਗਾ ਫਿਰੀਗਾ ਵਾਲਾ॥

ਖਸਮਾਮਦ ਮਰਾ ਫਕਤ ਜਦ ਤੇ ਗਜੀਗਾ॥ ੪੭॥

ਖਸਮਾਮਦ ਮਰੇ ਮੇਰੇ ਤਾਈ ਫਕਤ ਤਲਵਾਰ ਮਾਰਨੇ ਚੁੱਪਦੇ॥

ਬਮਨ ਦਿਹ ਕਿਖਦਰਾ ਪੁਜਿਹਸ ਕੁਨਮਾ॥

ਸਾਖ ਮੇ ਦੇਹ ਜੋ ਅਪਣੇ ਤਾਈ ਫੁਫਾਣਾ ਕਰਮੇ॥

੯੦ ਬਤੇਗਆਜਮਾਈਸੋਕਹਸਕੁਨਮਾ॥੪੭॥

ਸਾਬ ਤਲਵਾਰ ਪਹਤਾਉਦੇਵੇ ਆਪਣਾ ਦਬਦਬਾ ਕਰਾਏ॥(ਅ:) ਨਾਮੁਪ੍ਰੀ
ਪਿਆਲਾਪੀਕੇਸਭਨਾ ਉਪਰਹੁਕਮਕਰੀਏ॥ ਹੇਯੋਰੰਗੇ ਦੇਖਜਦ ਪ੍ਰਮੇਸਰਵੀਰ
ਪਾਨਹੀ ਹੋਵੀਏ ਤਾਂ ਉਲਟਾਹੀ ਕੀਮ ਉਸਨੂੰ ਸੁੱਧਦਾਏ ਚਾਹੇਮਹਾਂਦੇਵਦਾਭੀ ਇਸਤ੍ਰੀ
ਵਸਨੇ ਹੋਇਆ ਫੇਰ ਬੀ ਉਸਨੇ ਖੋਟਾ ਕੰਮ ਹੋਮੀਗਿਆ ਇਸੀ ਪ੍ਰਕਾਰ ਤੂੰ ਬਾਦਸਾਹ ਹੋਕੇ
ਖਿਟੇਹੀਕੀਮਕੀਤੇਏ ਦੇਖਤੇ ਬਾਪਤੇਭਰਾਵਾਂ ਨੂੰ ਪੁੱਤਨੂੰ ਕੇਦਕਰਕੇ ਮਾਰਿਆਏ

ਹਿਕਾਯਤ

ਨਾਵੀ ਚਲੀ

੧੬ਵਾਹਗੁਰੂਜੀਕੀਫਤਹ॥

ਕਮਾਲਸ ਕਰਾਮਤੁਆਜਮਕਰੀਮਾ॥

ਮੰਪੁਰਦ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਦੀ ਕਰਾਮਤ ਅਤੇ ਸਭਬੀ ਵਡਾਏ ਅਤੇ ਵਤਾ ਤੇ॥

ਰਜਾ ਬਖਸ਼ ਰਾਜਕ ਹੋਕੇਰਹੀਮਾ॥੧॥

ਭੁਵੇਦੇਬਖਸ਼ਦੇਵਾਲਾਏ ਰਿਜਕਦੇਦੇਵੇ ਵਾਲਾਏ ਖੁਲਾਸੀਦੇ ਹੋਵੇਵਾਲਾਏ
ਅਤੇਕੋਰਪਾ ਕਰਨੇ ਵਾਲਾ ਏ॥

ਬਜਾਕਰਦਿਹੀਦਈਜਮੀਨੇਜਮਾਨਾ॥

ਸਾਬ ਭਜਨਕਰਨੇ ਵਾਲਿਆਂਦੇ ਇਹਾਏਵਾਹਿਗੁਰੂ ਏਹੁਪ੍ਰੀਅਤੇ ਅਕਸ

ਮਲਕ ਮਲਾਕਹਮਾਅਜਹਾਨਾ॥੨॥

(ਵਾਹਿਗੁਰੂਮਲਕਏ) ਬਾਦਸਾਹਾਅਤੇ ਦੇਵਤਿਆਂ ਅਤੇ ਸਭ ਸੰਸਾਰਦਾ॥

ਹਿਕਾਯਤ ਸੁਨੀਦੇਮਸਾਹੇਫਿਰੀਗਾ॥

ਕਥਾਸੁਣੀਏ ਹਮਨੇ ਬਾਦਸਾਹ ਫਿਰੀਗ ਦੀ॥

ਰੋਬਾਜਨਨਸਸਤੀਦਪੁਸਤਪੁਲੀਗਾ॥੩॥

ਜੇ ਸਾਹ ਇਸਤ੍ਰੀ ਦੇ ਬੈਠਾਏ ਉਪਰ ਮੰਜੇ ਦੇ

ਨਜਰਕਰਦ ਬੂਬਚੁਗੋਹਰਨਿਗਾਰਾ॥

ਉਸ ਇਸਤ੍ਰੀਨੇ ਦੇਖਿਆਂ ਉਪਰ ਬੈਠੇ ਜੋਹਗੀਏ॥

ਬਦੀਦਨਹਮਾਈਜਵਾਂਉਸਤੁਵਾਰਾ॥੪॥

ਸਾਬ ਦੇਖਦੇ ਸੁਭ ਸੁੰਦਰ ਸਰੂਪ ਅਤੇ ਰਿਸ਼ਟ ਪਸਰ

ਬਦਕਤੇਸਬਓਰਾਬਖਾਦੀਦਪੇਸਾ॥

ਵਿਚਵਖਤ ਰਾਤ ਦੇ ਉਸਕੇ ਤਾਂਈ ਬਣਾਇਆ ਆਪਣੇ ਪਾਸਾ॥

ਬਦੀਦਨੁ ਹਮਾਨੀ ਬਬਾਲਾਇ ਬੇਸਾ॥੫॥

ਸਾਬ ਦੇਖਦੇ ਸੁਭ ਅਤੇ ਵਡਾ ਸੁੰਦਰ॥

ਬਿਆਵੇਖਤ ਬਾਓ ਹਮਾਨ ਯਕੁ ਦਿਗਰਾ॥

ਲਪਟੀ ਸਾਬ ਓਸਦੇ ਤਮਾਮ ਤਰਾਂ ਇਕ ਦੂਸਰੇ ਨਾਲਾ॥

ਕਿ ਜਾਹਰ ਸਵਦ ਹੋਸ਼ ਪੈ ਬਤ ਹਨਗਾ॥੬॥

ਜੇ ਪ੍ਰਗਟ ਹੋ ਜਾਵੇ ਅਕਲ ਅਤੇ ਭੁੰਦਰ ਹੋਵੇ ਅਤੇ ਦਲਾਈ ਪ੍ਰਗਟ ਹੋਵੇ॥

ਯਕੁ ਮੁਇ ਚੀਰ ਬਖਾਵੇ ਦਪੇਸਾ॥

ਇਕ ਨਾਈ ਕੇਤਾਈ ਸਦਿਆ ਆਪਣੇ ਪਾਸਾ॥

ਕਿ ਅਜ ਮੁਇ ਚੀਨੀ ਬਰਾਵਰ ਦਰੁ ਸਾ॥੭॥

ਜੇ ਮੋਚਨੇ ਨਾਲੋਂ ਇਸਦੇ ਸਭਰੇ ਮ ਉਸਨੇ ਪਰ ਸਿਰੇ॥

ਬਰੇ ਹਰ ਕਿ ਬੀਨ ਦੁ ਦਾਨ ਦ ਸੁਖਨਾ॥

ਉਪਰ ਉਸਦੇ ਜੋ ਕੋਈ ਦੇਖੇ ਨਹੀ ਜਾਣਦਾ ਹੋਵਾਰਤਾ॥

ਕਿ ਅਜ ਰੋਇ ਮਰਦੇ ਸਦਹ ਸਕਲ ਜਨਾ॥੮॥

ਜੇ ਆਦਮੀ ਦੇ ਮੂੰਹ ਸੇ ਹੋਇਆਂ ਸੇ ਸਰੂਪ ਇਸ ਬੀ ਦਾ॥

ਬਿਦੀਦੀ ਹਰਕਸ ਕਿ ਵੀ ਹਮ ਜਨ ਅਸਤਾ॥

ਜਾਣ ਲਿਆ ਸਭ ਨਨੇ ਜੇ ਵੇਹਰੀ ਇਸਤਰੀ ਹੈ॥

ਕਿ ਦਰ ਪੇਕਰੇ ਚੰਪਰੀ ਰੋਸਨ ਅਸਤਾ॥੯॥

ਜੇ ਵੇਰ ਸੁਰਤ ਦੇ ਮਾਨਿੰਦ ਪਰੀਆ ਦੀ ਪਕਾਸ਼ ਵਾਲੀ ਹੈ॥

ਬਦੀਦੀ ਦ ਓਰਾ ਯਕੁ ਰੋਜ ਸਾਹ॥

ਦੇਖਿਆ ਉਸ ਮਰਦ ਕੇ ਤਾਈ ਇਕ ਦਿਨ ਬਾਦ ਸਾਹਨੇ॥

ਕਿ ਮਕ ਬੁਲ ਸੁਰਤ ਚਰਖ ਸਿੰਦਹ ਮਾਹ॥੧੦॥

ਜੇ ਪਵਾਣੀ ਕੇ ਸੁਰਤ ਹੈ ਮਾਨਿੰਦ ਪਕਾਸ਼ ਵਾਲੇ ਚੰਦ ਮਾਦੀ॥

ਬਿ ਪੁਰਸੀ ਦ ਓਰਾ ਕਿ ਵੇਨੇ ਕ ਬਖਤਾ॥

ਬਾਦ ਸਾਹਨੇ ਪਛਿਆ ਉਸ ਕੇ ਤਾਈ ਜੇ ਵੇ ਭਲੇ ਭਾਗ ਵਾਲੀ ਹੈ॥

ਸੰਜਾਵਾਰ ਸਾਹ ਅਸਤੁ ਸਾਯਾ ਨ ਤਖਤਾ॥੧੧॥

ਜੇ ਇਕ ਬਾਦ ਸਾਹ ਵੇਹੋਤੁ ਅਤੇ ਲਾਇਕ ਬਾਦ ਸਾਹੀ ਦੇ ਖੇਤੂ॥

ਕਿ ਜਨ ਤੇ ਕੁਦਾਮੀ ਕਿਰਾ ਦੁਖਤਰੀ॥

ਜਿਤੂੰ ਕਿਸਦੀ ਇਸਤੀ ਤੇ ਅਤੇ ਕਿਸਦੀ ਤੂੰ ਪੁਤੀ ਤੇ॥

ਕਿ ਮੁਲਕੇ ਕਿਰਤੁ ਕਿਰਾ ਖਾਹਰੀ॥੧੨॥

ਜੇ ਕੇਹੜੇ ਮੁਲਕਦੀ ਤੇ ਤੂੰ ਅਤੇ ਕਿਸਦੀ ਤੂੰ ਭੁੱਟੇ ਤੇ॥

ਬਨ ਜਰ ਅੰਦਰ ਬਹਰ ਹਮੀਦ ਅਮਦਸ॥

ਵਿਚ ਨਜਰ ਦੇ ਤੂੰ ਭਾਗ ਫਾਲੀ ਦਿਖਾਲੀ ਦਿਦੀ ਤੇ॥

ਬਦੀ ਦਨ ਸਹੇ ਦਿਲ ਪਸੰਦ ਅਮਦਸ॥੧੩॥

ਦੇਖਣੇ ਸੇ ਬਾਦਸਾਹ ਦੇ ਦਿਲਨੂੰ ਭਾਉਦੀ ਤੇ॥

ਸਬੀ ਗਾਹ ਬੁਰਦਸ ਦਰੁ ਪਨਹ ਪੇਸ॥

ਹਾਤ ਦੇ ਵਕਤ ਲੋਗਿਆਂ ਉਸਨੂੰ ਆਪਣੇ ਪਾਹ ਵਿਚ॥

ਕਨੀਜਕ ਯਕੇਰ ਬੁਖਾਵੰਦ ਪੇਸ॥੧੪॥

ਇਕ ਵੇਲੇ ਕੇ ਤਾਈ ਆਪਣੇ ਪਾਸ ਸਾਦਿਆ॥

ਬਿਗਾਫਤ ਹ ਕਿਏ ਸਰਵ ਕਦ ਸੀਮਤਨ॥

ਬਾਦਸਾਹ ਨੇ ਕਿਹਾ ਜੇ ਵੇ ਸਰੂ ਜੇ ਸੇ ਕਦ ਫਾਲੀਏ ਅਤੇ ਪਾਰੇ ਜੇ ਸੇ ਤਨ ਫਾਲੀਏ

ਚਰਾਗੇ ਫਲਕ ਆਫਤਾ ਬੈਯਾਮਨ॥੧੫॥

ਦੀਵਾ ਅਕਾਸਦੀ ਤੇ ਅਤੇ ਚੁਰਜ ਯਮਨਦੀ ਤੇ ਇਸਤੀ ਕਿਸਨੂੰ ਮੇਰੇ ਦੇਖਿ ਆਏ॥

ਵਜਾ ਬਹਰ ਮਾਰ ਬਿਤ ਪੁਸ਼ੀ ਦੁ ਦਿਲ॥

ਉਸਦੇ ਵਾਸਤੇ ਮੇਰਾ ਦਿਲ ਤਪਦਾ ਤੇ॥

ਕਿ ਮਾਰੀ ਬਿਅਫਤਾਵ ਅਜਮਾ ਬੁ ਗਿਲ॥੧੬॥

ਜਿਸ ਪਕਾਰ ਮਛੀ ਪਾਣੀ ਸੇ ਬਾਹਰ ਜਾ ਪੈਦੀ ਤੇ॥

ਬਹੇ ਸਬਾ ਪੈਕ ਗੁਲਜਾਰ ਮਾ॥

ਜਾਤੁੰ ਵੇ ਪਵਣ ਜੇਸੇ ਪੈਰ ਫਾਲੀਏ ਫੁਲ ਫਾਲੀ ਮੇਰੀ ਨੂੰ॥

ਕਿ ਦਰ ਪੇਸ ਸਾਰੇ ਵਫਾ ਦਾਰੀ॥੧੭॥

ਜੇ ਅਗੇ ਪਿਆਰੀ ਨਫਾ ਦੇਵੇ ਫਾਲੀ ਮੇਰੀ ਦੇ॥

ਤਗਰ ਪੇਸ ਚਿਰਾ ਬਿਯਾਰੀ ਮਾਰ॥

ਵੇਦੁਤੀ ਤੂੰ ਜੇਕਰ ਚਿਸਕੇ ਤਾਈ ਮੇਰੇ ਪਾਸ ਲਿਆਵੇ॥

ਕਿ ਬਖਸਾ ਮੁਰੇ ਬਸਤਰ ਠੀਜੇ ਤੁਰਾ ॥ ੧੮ ॥

ਜੇ ਬਖਸੀ ਜ ਕਰ ਮੇਤੇਰੇ ਤਾਈ ਖਜਾਨ ਤੁਰਿਆ ਹੋਇਆ ॥

ਰਵਾਂ ਸਰ ਕਨੀਜਕ ਸੁਨੀਦੀ ਰੁਖਨਾ ॥

ਤੁਹਪਈ ਦਾਜੀ ਜਦੋ ਸੁਣੀ ਏਹ ਬਾਤ

ਬੋਲੇ ਸਰ ਸਮਨਰਾ ਜਿਸਰ ਤਾਬ ਬਨਾ ॥ ੧੯ ॥

ਪ੍ਰੇਦੀਏ ਉਸ ਇਸਤਰੀ ਕੇ ਤਾਈ ਬਾਤ ਆਦਮੇ ਅੰਤ ਤੋੜੀ ॥

ਜਬਾਨ ਦੀ ਕਨੀਜਕ ਸੁਨੀਦੀ ਰੁਖਨਾ ॥

ਦਾਜੀ ਦੀ ਹਸਨਾਬੀ ਜਦ ਸੁਣੀ ਏ ਬਾਤ ਉਸਨੇ ॥

ਖਿਪੇ ਦੀ ਦ ਬਰਖਦ ਜਿਪੇ ਸਕ ਜਨਾ ॥ ੨੦ ॥

ਫਟ ਖਾਵਾ ਆਪਣੇ ਆਪ ਵਿੱਚ ਜਿਸਨੇ ਇਸਤਰੀ ਦੇ ਕਪੜੇ ਪਾਏ ਤੇਏਥੇ ॥

ਕਿ ਜਾਹਰ ਕੁਨਾਨੀ ਦ ਅਸ ਬਾਬ ਖੇਸਾ ॥

ਜੇ ਪ੍ਰਗਟ ਹੋ ਜਾਊਗਾ ਅਸ ਬਾਬ ਮੇਰਾ (ਅ) ਮੇਰਾ ਪਹਰਾਵਾ ਪ੍ਰਗਟ ਹੋ ਜਾਊਗਾ

ਕਿ ਦੀਵਨ ਜਹਾਰਾ ਬਕਿਰਦਾਰ ਖੇਸਾ ॥ ੨੧ ॥

ਜੇ ਦੇਖੇਗਾ ਜਹਾਨ ਕਰਤਬ ਮੇਰਾ (ਅ) ਮੇਰਾ ਫਰੇਬ ਮਾਝੂ ਮੇਰੇ ਜਾਊਗਾ ॥

ਬਖਾਹਦ ਮਰਾਜਾਹ ਦੇ ਲਾਰਾਮਾ ॥

ਬਲਾਇਰ ਤੇ ਮੇਰੇ ਤਾਈ ਬਾਦਸ਼ਾਹ ਦੇ ਖਿਆਲੀਏ ॥

ਮਰਾ ਮਸਲਹਤੁ ਵਿਹ ਵਟਾ ਦਾਰਾਮਾ ॥ ੨੨ ॥

ਮੇਰੇ ਤਾਈ ਸਰਾਹ ਦਸ ਨਵਾਂ ਲੀਏ ਮੇਰੀਏ ॥

ਤੁਗਈ ਮਨ ਇਜਾ ਗੁਰੇਜਾਂ ਸਵਾਮਾ ॥

ਤੁਨੇ ਤੁਮੇ ਇਥੇ ਤੁਜ ਜਾਵਾਂਐ ॥

ਕਿ ਇਸੇ ਜਾਮਨ ਜਾਇ ਖੇਜਾਂ ਸਵਾਮਾ ॥ ੨੩ ॥

ਜੇ ਅਜੀ ਇਸ ਜਾਗਾਸੇ ਉਠ ਜਾਵਾਂਐ ॥

ਨਤਰੀ ਦਿਲ ਜੇ ਤੁਰਾ ਮਨ ਕੁਨਾਮਾ ॥

ਮਨੀ ਕਰਤੂ ਤੇਰਾ ਇਲਾਜ ਕਰਦੀ ਹਾਂਐ (ਅ) ਬਾਦਸ਼ਾਹ ਦੀ ਇਸਤਰੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਤੁਡਕਨ ਮੇਰੇ ਇਲਾਜ ਕਰ

ਬਦੀ ਦਨ ਵਜਾਂ ਰਾਰ ਮਾਰੇ ਨਿਹਾਮਾ ॥ ੨੪ ॥

ਬਾਦਸ਼ਾਹ ਦੇ ਸੱਖ ਦੇਖੇ ਚਾਹ ਮਜੀਨੇ ਰੁੱਗੀਐ ॥

ਬਖਸ਼ੀ ਦਯਕ ਜਾਇਚੀ ਬੇਖਬਰ
ਜੋ ਸੁਤੀਆ ਇਕ ਜਾਗਾ ਬੇਖਬਰ ਹੋਕੇ॥

ਖਬਰਗਾਸਤਹ ਸਦ ਸਾਹਿਬੇਰ ਨਗ॥ ੨੫॥
ਖਬਰ ਕਰਨੇ ਗਈ ਬਦਸਾਹ ਸੇਰ ਨਰਨੀ॥

ਦਹਾਨੇ ਸੁਨੀਦਈ ਕਨੀਜਕ ਬੁਖਨਾ॥
ਬਹਿਰੀ ਦੀ ਜੁਬਲੀ ਸੁਣੀ ਵੇਹ ਬਾਤ

ਬਜੀਬਸ ਬਲਰਜੀਦ ਸਰਤਾਬ ਬੁਨਾ॥ ੨੬॥
ਸਾਬ ਸੋਸਦੇ ਕੀਬਿਆ ਸਿਰ ਪੇਰਾ ਤੇੜੀ॥

ਬਿਆਮਦਕਜੇ ਜਾਇਚੀ ਖੁਫਤਹ ਦੀਦਾ॥
ਬਦਸਾਹ ਆਇਆ ਸਿਥੇ ਹਿ ਦੇਨੇ ਸੁਤੀਆ ਹੋਈਆਈ ਅਤੇ ਵੇਖਿਆ ਉਸਨੂੰ॥

ਜਿਸਰਤਾਂ ਕਦਮ ਹਮਚੁ ਮਿਹਰਜ ਤੁਪੀਦਾ॥ ੨੭॥
ਸਿਰਸੇ ਪੇਰਾਂ ਤੀਕਰ ਮਾਨਿਦ ਸੁਰਜ ਵੀ ਤਪਾਗਿਆ॥

ਬਿਦਾਨਦ ਕਿਈਰਾ ਖਬਰਦਾਰ ਸੁਦਾ॥
ਬਦਸਾਹ ਨੇ ਜਾਣ ਲਿਆ ਜੇ ਇਸਕੇ ਤਾਈ ਖਬਰ ਹੋਗਈ॥

ਬਰੇਜੇ ਅਜਾਈ ਖਬਰਦਾਰ ਸੁਦਾ॥ ੨੮॥
ਉਸੀ ਦਿਨ ਤੇ ਏ ਖਬਰਦਾਰ ਹੋਗਈ॥ (ਅ॥) ਲੋਕੀ ਵੇਕਰ ਫੇਰ ਰੁਖਿਆ

ਬਖਸ਼ੀ ਦਯਕ ਜਾਯਕੇ ਖਾਬਗਾਹ॥ ਰਹੇਗਈ॥
ਸੁਤੀਆ ਏ ਇਕ ਜਾਗਾ ਇਕ ਪਲੰਘ ਉਪਰਾ॥

ਮਰਾਦਾਵ ਅਫਤਦ ਨਯਜਦਾਂ ਗਵਾਹ॥ ੨੯॥
ਮਰਾਦਾ ਉਨਹੀ ਪੇਦਾਤੇ ਫਾਰਿਸ਼ਾਦ ਜਾਣਦਾ ਏ॥

ਜੁਦਾਗਾਰ ਬਖੀਨਮ ਅਜੀ ਖਾਬਗਾਹ॥
ਏਕਲੀ ਜੇਕਰ ਦੇਖਾਏ ਇਸਨੂੰ ਸਫਿਦੇਦੀ ਜਾਗਾਏ॥

ਯਕੇ ਜੁਫਤ ਬਾਸਮ ਚੁਖਰਸੇਦਮਾਹ॥ ੩੦॥
ਏਕੇਵਾਹੀ ਜੁੜਨੇਵਾਲਾ ਹੋਵਾਏ ਜੋਸੇ ਸੁਰਜ ਅਤੇ ਚੰਦਮਾ॥

ਟਜਾਰੇਜ ਗਾਸਤੋ ਬਿਆਮਦ ਦਿਗਰਾ॥
ਹਿਦਨ ਬਤੀਤ ਹੋਇਆ ਵੁਸਰਾਵਿਨ ਆਇਆ॥

ਹਮਾਂ ਖੁਫਤੁਹ ਦੀਦੀਵ ਯਕ ਜਾ ਬੁਥਰਾ॥ ੩੧॥

ਇਸੀ ਤੋਂ ਖੁਫਤੁਹ ਦੀਦੀਵ ਯਕ ਜਾ ਬੁਥਰਾ॥

ਦੁਦੇਗਾ ਅਸੀਗਾਰ ਜੁਦਾ ਯਾਫਤੇਮਾ॥

(ਬਰਸਾਯੇ ਵਿਚ) ਅਫਸੋਸ ਇਸੇ ਜੇਕਰ ਜੁਦੀ ਪਾਉਦਾ ਮੇ॥

ਯਕੋਹ ਮਲਹ ਦੀ ਸੇਹ ਨਰ ਸਾਖਤੇਮਾ॥ ੩੨॥

ਇਕੋ ਹਲਾ ਮਲੇਹ = ਸਿੰਘ ਨਰਦੀ ਕਰਦਾ ਮੇ॥

ਦਿਵਰ ਰੋਜ ਰਫਤੁਸ ਸਿਯਮ ਅਮਦਸਾ॥

ਦਸਰ ਦਿਨ ਗਿਆ ਤੀਸਰ ਦਿਨ ਆਇਆ॥

ਬਦੀਦੀਵ ਯਕ ਜਾਇ ਬਰਤਾਫਤੁਸਾ॥ ੩੩॥

ਦੇਖਿਆ ਇਕੋ ਜਗ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਕਰਦੀਆਂ ਤੇ॥ (ਅ॥) ਬਦਸਾਹਦੀ ਇਸਤ੍ਰੀ ਤੇ ਰੋਹੀ
ਦੇਖੇਦਾ ਇਕੋ ਪਲਾਘ ਪਰ ਜੁਤੇ ਤੇ॥

ਬਰਜੇ ਚੁਆ ਮਦ ਬਦੀਦੀਵ ਜਫਤੁ॥

ਦੇਖਾ ਦਿਨ = ਆਇਆ ਦੇਖਿਆ ਉਨਕੇ ਜੁੜੀਆਂ ਤੇਈਆ॥

ਬਖੇਰਤੁ ਰੋਰਫਤੁ ਫ ਬਾਦਿਲ ਬਗੁਫਤੁ॥ ੩੪॥

ਵਿਚ ਅਫਸੋਸ ਦੇ ਰੂਥਿਆ ਅਤੇ ਸਾਥ ਦਿਲ ਦੇ ਕਿਹਾ॥

ਕਿ ਪੈਫ ਅਸਤੁਆਰਾ ਜੁਦਾ ਯਾਫਤੇਮਾ॥

ਜੇ ਅਜਰਜ ਪੈ ਇਸਕੇ ਤਾਈ ਕਲੀ ਪਾਉਦਾ ਮੇ॥

ਕਿਤੀ ਰੋਕਮਾਂ ਅੰਦਰੁ ਸਾਖਤੇਮਾ॥ ੩੫॥

ਜੇ ਤੀਰਕਮਾਂ ਦੇ ਅੰਦਰ ਕਰਦਾ = ਮੇ॥ (ਅ॥) ਤੀਰਕਮਾਂ ਵਾਹੀ ਇਸੀ ਪ੍ਰਕਾਰ ਭੋਗ
ਕਰਦਾ॥

ਨਦੀਦੇਮ ਦੁਸਮਨ ਕਿਦੇਜਮ ਬਤੀਰਾ॥

ਨਦੀ ਦੇਖਿਆ ਸਤ੍ਰੁ ਕੋ ਮੇਲੇ ਅਤੇ ਨਾ ਪਰੇਤਾ ਸਾਥ ਤੀਰਦੇ॥

ਨਕਸਤੁਮ ਅਦੁਰਾ ਨਕਰਦਮ ਅਸੀਗਾ॥ ੩੬॥

ਨਕਸਤੁਮ ਮੇਲੇ ਸਤ੍ਰੁ ਕੇ = ਤਾਈ ਅਤੇ ਨਾ ਮੇਲੇ ਕੋਰੀ ਕੀਤਾ॥

ਸਸਮਰੋਜ ਅਮਦ ਬਦੀਦੁਹ ਫਜਾ॥

ਛੀਵਾ ਦਿਨ ਆਇਆ ਦੇਖਿਆ ਉਨਹੂੰ ਉਸੀ ਪ੍ਰਕਾਰ॥

ਬਖੇਰਜ ਦਰਾਵੇਖਤੁ ਗੁਫਤੁ ਅਜਜੁਬਾ॥ ੩੭॥

ਵਿਚ ਗੁਸੇ ਦੇ ਆਇਆ ਅਤੇ ਗਸਨ ਬੀ ਕਿਹਾ॥

ਨਦੀ ਦੇ ਮੁਸਾਮਨ ਰਿਹੋ ਜੇ ਮਖੀ॥

ਨਹੀ ਦੇਖਿਆ ਮੇਰੇ ਸੂਰ੍ਹੇ ਅਤੇ ਨਹੀ ਉਸਦਾ ਤੁਲਿਆ ਲਾਹਾ॥

ਦਰੇਗਾ ਨ ਕੋਬਰ ਕਮਾਂ ਅੰਦਰੁ॥ ੩੮॥

ਅਸਚਰਜ ਹੈ ਨਹੀ ਕੀਤਾ ਤੀਰ ਅੰਦਰ ਕਮਾਂ ਵੇਦੇ॥

ਦਰੇਗਾ ਬੁਦਸਾਮਨ ਦਰਾਵੇਖਤਮਾ॥

ਅਸਚਰਜ ਹੈ ਸਾਥ ਸੂਰ੍ਹੇ ਨ ਲਿਪਟਿਆ ਮੇ॥

ਦਰੇਗਾ ਨ ਬਾਯਰ ਦਿਗਰ ਰੇਖਤਮਾ॥ ੩੯॥

ਅਸਚਰਜ ਹੈ ਨ ਸਾਥ ਇਕ ਦੂਸਰੇ ਦੇ ਵੀਟਿਆ ਮੇ॥ (ਅ:) ਮੇਰੇ ਤੇਗਨਾ ਕੀਤਾ॥

ਹਕੀਕਤ ਸਨਾਸਦ ਨ ਹਾਲੇ ਦਿਗਰ॥

ਬਾਦਸਾਹ ਹਕੀਕਤ ਨਹੀ ਪਛਾਣਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਹਾਲ ਨਹੀ ਪਛਾਣਦਾ ਜੇ ਕੀਤੇ ਦੁਖੇ॥

ਕਿ ਮਾਇਲ ਬਸੇ ਗਸਤੁ ਓਤਾ ਬਸਰ॥ ੪੦॥

ਜੇ ਮਸਤ ਬਹੁਤ ਹੋਇਆ ਓਹ ਸਿਰ ਪੈਰ ਤੇੜੀ॥

ਬਬੀ ਬੇਖਬਰ ਰਾਇਕਾਰੇ ਕੁਨਦਾ॥

(ਹੋਮੋਰੰਗ) ਦੇਖਤੂੰ ਉਸ ਬੇਅਕਲ ਕੇ ਤਾਈ ਜੋ ਕਿਆ ਕੰਮ ਕਰਦਾ ਹੈ॥

ਕਿਕਾਰੇ ਬਦਸੁ ਇਖਤਿਆਰੇ ਕੁਨਦਾ॥ ੪੧॥

ਜੇ ਕੰਮ ਬਹਾ ਅਖਤਿਆਰ ਕਰਦਾ ਹੈ॥

ਬਬੀ ਬੇਖਬਰ ਬਦ ਪੁਰਾਸੀ ਕੁਨਦਾ॥

(ਹੋਮੋਰੰਗ) ਦੇਖਤੂੰ ਬੇ ਸਮਝ ਬਦ ਢਿਲਦਾ ਕਰਦਾ ਹੈ॥

ਕਿ ਬੇਆਬ ਸਰਖੁ ਦੁਰਾਸੀ ਕੁਨਦਾ॥ ੪੨॥

ਜੇ ਬਿਨਾ ਪਾਣੀ ਬੀ ਆਪਣਾ ਸਿਰ ਖੁਨਾਉਂਦਾ ਹੈ॥

ਬਿਦਿਹ ਸਾਕੀਯਾ ਜਾਮ ਸਬਜੇ ਮਰਾ॥

ਦੇਹ ਸੁਖਈਆ ਪਿਆਲਾ ਹਰੇ ਰੰਗਦਾ ਮੇਰੇ ਤਾਈ॥

ਕੁੰਸਰ ਬਸਤੁ ਮਨਰੀਜ ਬਖਸਮੁ ਤਰਾ॥ ੪੩॥


ਜੇ ਤਾਰਿਆ ਹੋਇਆ ਖਜਾਨਾ ਮੇ ਬਖਸੀਸ ਕਰਾਮੇ ਤੇਰੇ ਤਾਈ॥

ਬਿਦਿਹ ਸਾਕੀਯਾ ਸਾਗਰੇ ਸਬਜ ਫਾਮਾ॥

ਦੇਹ ਸੁਖਈਆ ਪਿਆਲਾ ਹਰੇ ਰੰਗਦਾ ਲਾਹਾ॥

ਕੇ ਖਸਮ ਅਫਕਨੀ ਵਕਤ ਹਸਤ ਸੁਬਕਾਮ ॥੪੪॥

ਜੇ ਸਤ੍ਰਾ ਆਰੇ ਸਿਟਵੇ ਦੇ ਵੇਲੇ ਖੁਭਾ ਦੀ ਜਰੂਰਤ ਮੇਰੇ ਤਾਈ
ਤੂੰ ਆਰੰਗ ਜੇਬ) ਜੇਸੇ ਇਸ ਬਾਦਸਾਹਨੇ ਬਿਨਾਸ ਮਝਤੇ ਕੀਮਤੀ ਤਾਸੀ ਇਸੀ ਤੇ
ਤੂੰ ਭੀ ਬੇਸਮਝੀ ਸੇ ਕੀਮ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੈ ਦੇਖ ਤੇਨੂੰ ਇਸ ਦਾ ਭੀ ਬੁਰਾ ਫਲ ਮਿਲੇਗਾ

ਹਿਕਾਯਤ  ਦਸਵੀ ਚਲੀ ੧੦
ਕਥਾ ੧ ਓਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫਤਹ ॥

ਗੁਰੂ ਗੁਨਹ ਬਖਸ਼ ਗਾਫਲ ਕੁਸ ਅਸਤ ॥
ਗੁਰੂ ਗੁਨਾ ਹੋ ਕੇ ਬਖਸ਼ ਦੇਵਾਲਾ ਹੈ ਭੁਲਿਆ ਹੋਇਆ ਕੇ ਤਾਈ ਮਾਰਨੇ ਵਾਲਾ ਹੈ

ਜਹਾ ਰਾਤੁਈ ਬਸਤੁ ਹਈ ਬੰਦੁ ਬਸਤ ॥੧॥
ਜਹਾਨ ਦਾ ਰੋਜੋ ਬੰਦੋ ਬਸਤ ਬੰਨਿਆ ਹੈ ॥

ਨ ਪਿਸਰੇ ਨ ਮਾਦਰ ਬਰਾਦਰ ਪਦਰ ॥
ਪ੍ਰਮੇਸਰ ਦਾ ਨਾ ਪੁਤ੍ਰ ਤੇ ਨਾ ਮਾਤਾ ਹੈ ਨਾ ਭਾਈ ਪੈ ਨਾ ਧਿਤਾ ਹੈ

ਨ ਦਾ ਮਾਦ ਦੁਸਮਾਨ ਨ ਯਾਰੇ ਦਿਗਰ ॥੨॥
ਨਾਉ ਸਦਾ ਕੇਈ ਜੁਆਈ ਹੈ ਨਾ ਸਤ੍ਰੂ ਹੈ ਨਾਉ ਸਦਾ ਕੇਈ ਦੁਸਹਾ ਯਾਗੀ ਹੈ ॥

ਸੁਨੀਦ ਮਸੂਖਨ ਸਾਹ ਮਯੀ ਦਰਾ ॥
ਸੁਨੀਤੋ ਹਮਨੇ ਬਤ ਬਾਰ ਸਾਹ ਮਯੀ ਵਾਦੀ ਅਥਾਤ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬ ਕਰ ਦੇਖੋ ਜੇ ਹਮਨੇ
ਮਾਯੀ ਤੇ ਬਾਹਰ ਸਾਹਾਦੀ ਗਲ ਤੁਰੇ

ਕਿ ਰੋਸਨ ਦਿਲੇ ਨਾਮ ਬਰਦਸ ਜੁਬਾ ॥੩॥
ਜੇ ਰੋਸਨ ਦਿਲ ਉਸਦਾ ਨਾਮ ਸੀ ਅਤੇ ਪ੍ਰਗਟ ਬਾ ਵਿਚ ਜਾਨੇ ਦੇ

ਕਿ ਨਾਮ ਸਟ ਜੀਰ ਅਸਤੁ ਸਾਹਿਬ ਸਭਿਰਾ ॥
ਜੇ ਉਸਦੇ ਵਜੀਹ ਦਾ ਨਾਮ ਸਾਹਿਬ ਸਭਿਰਾ ਸੀ ॥

ਕਿ ਸਾਹਿਬ ਦਿਮਾਗ ਅਸਤੁ ਜਹਰ ਜਹੂਰ ॥੪॥
ਜੇ ਮਾਲਕ ਮਗਜ਼ ਹੈ ਪ੍ਰਸਿਧ ਸੰਸਾਰ ਦੇਖੇ

ਕਿ ਪਿਸਰੇ ਅਜਾ ਬੰਦ ਰਸਨ ਜਮੀਰ ॥
ਜੇ ਬੰਦਾ ਉਸਦਾ ਬਾ ਰਸਨ ਦਿਲ

ਕਿ ਹੁਸਨਲ ਜਮਾਲ ਅਸਤੁ ਸਾਹਿਬੁ ਅਮੀਰਾ ॥ ੫ ॥
ਜੇ ਪ੍ਰਕਾਸਵਾਲੇ ਸਰੂਪ ਵਾਲਾ ਹੋਸੀ ਮਾਥਕ ਅਮੀਰਾਦਾਸੀ

ਕਿ ਰੋਸਨ ਦਿਲੇ ਸਾਹਿਬ ਨਾਮ ਬੂਦਾ ॥
ਜੇ ਰੋਸਨ ਦਿਲ ਬਾਦ ਸਾਹਿਬ ਦਾ ਨਾਮ ਬਾ

ਅਦਰਾ ਸਿਮਰਦੀ ਬਰਾਵਰਦ ਦੂਦਾ ॥ ੬ ॥
ਸਤੁ ਅਕੋਭਾਈ ਸੁਰਮਤੀ ਬਾਹਰਲਿਆਇਆ ਸੁਮਿਆ ॥ ਅਰਬਤ ਜਿਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਪਉਟ ਖੂਏ ਨੀ

ਵਜੀਰੇ ਯਕੇ ਬੁਦੇ ਜੋ ਰੋਸਾ ਮੀਦਾ ॥ ੭ ॥
ਵਜੀਰ ਇਕ ਉਸਦਾ ਖੋ ਨਾਮ ਉਸਦਾ ਹੋ ਸਮਦਿਬਾ

ਰਈਯਤ ਨਿਵਾਜ ਅਸਤੁ ਦਸਮਨ ਗਜੀਦਾ ॥ ੮ ॥
ਪਰਗਾਨਾ ਨਿਵਾਜਿਏ ਦਾਸਤ ਸਤੁਆਨੁ ਮੋਰਨੇ ਵਾਲਾ

ਵਸਾ ਦੁਖਤਰੇ ਹਸਤੁ ਰੋਸਨ ਚਰਾਗਾ ॥
ਉਸਦੀ ਗੋਰੀ ਇਕ ਪ੍ਰਕੀਸੀ ਮਾਨਿ ਰਮ ਸਾਲਦੀ

ਕਿ ਨਾਮੇ ਅਜਾ ਬੁਦੇ ਰੋਸਨ ਦਿਮਾਗਾ ॥ ੯ ॥
ਇਸਦਾ ਸਤੇ ਉਸਦਾ ਨਾਮ ਬਾ ਰੋਸਨ ਦਿਮਾਗ

ਬਾਮਕਤਬ ਸਪਰਦੀਦ ਹਰਦੇ ਤਿਫਲਾ ॥
ਬਾਦਸਾਹ ਨੂੰ ਬੇਟ ਅਤੇ ਵਜੀਰ ਨੇ ਬੇਟੀ ਪੜ੍ਹਨੇ ਭੇਜੇ ਮਫ਼ਿਸੇ

ਕਿ ਤਿਫਲਸ ਬਸੇ ਰੋਜ ਗਸਤੀਦ ਖਿਜਲਾ ॥ ੧੦ ॥
ਜੇ ਬਾਲਕੇ ਬਹੁਤ ਦਿਨ ਹੋਏ ਪ੍ਰਕਾਸ

ਨਸਸਤੀਦ ਦਾਨਾਇ ਜੋਲਾਇ ਗੁਮਾ ॥
ਇਕ ਦਿਨ ਬੈਠਾ ਦਾਨਾ ਮੁਲਾਣਾ ਗੁਮਾਦਾ

ਕਿ ਦਿਹਾਮਸ ਬਾਬਖਸੀਦ ਅਮਰਜ ਗੁਮਾ ॥ ੧੧ ॥
ਜੇ ਪਦਾਰਥ ਦਿਤਾ ਅਤੇ ਉਸਦਾ ਲਾਭ ਹੋਸੇ ਜਿਮੀਨ ਵਿਭੀ ਬਾਦਸਾਹ ਦੇ

ਨਿਸਸਤੀਦ ਦੁਰਾ ਜਾਇ ਤਿਫਲੇ ਬਸੇ ॥
ਬੈਠੇ ਉਸ ਜਾਗਾ ਲੜਕੇ ਬਹੁਤ

ਬਖਾਵੇ ਬਾਖਸ ਅਜ ਕਿਤਾਬ ਹਰ ਕਸੇ ॥ ੧੨ ॥
ਪੜ੍ਹਦੇ ਬੈ ਕਹਾਣੀਆ ਅਤੇ ਕਤਾਬਾਂ

ਬਾਗਲ ਮੰਦਰ ਆਇਓ ਹਰਯਕ ਕਿਤਾਬਾ।

ਇਹ ਬਾਗਲਾਂ ਦੇ ਲਿਆਵੇ ਦੇਹੈ ਨ ਸਤ ਕਿਤਾਬਾਂ॥

ਸੁ ਤੇਰੇਤ ਅੰਜੀਲੁ ਫਜਰੇ ਅਵਾਬਾ॥੧੩॥

ਹੋਰੇਤ ਅੰਜੀਲ ਅਤੇ ਵਾਸਤੇ ਆਵਾਗਾਧਿਏਕੇ ਹੋਰਤੀ ਕਿਤਾ॥

ਦਮਕਤ ਬਕਨੀ ਦ ਹਫਤ ਅਜ ਜੁਬਾ॥

ਹੋਮੰਦਰੇ ਕੀਰੇ ਤੇਏਸੇ ਸਭਾ ਵਲਾਇਓ ਦੀਆਂ ਜੁਬਾਨਾਂ ਦੇ

ਅਕੇ ਮਰਦ ਖਾਂਦੀ ਦ ਵੀਗਰ ਜਨਾ॥੧੩॥

ਇਕ ਵਿਚਲ ਨਕੇ ਪਨ ਵੇਸਨ ਦੁਸਰੇ ਵਿਚਲ ਨਕੀਆਂ

ਕਿਤਿਫਲਾਂ ਬਖਾਂਦੀ ਦ ਮੁਲਾਂ ਖੁਸ਼ਸਾ॥

ਲਕੜੀਆਂ ਨੂੰ ਪਨਾਉਦੀਆਂ ਮੁਲਾ ਤੁਲੇ ਸੁਤਾਉਦੀਆਂ

ਜਨਾਰ ਬਖਾਨ ਦ ਜਨੇ ਫਜਲ ਸਾ॥੧੪॥

ਲਕੜੀਆਂ ਨੂੰ ਪਨਾਉਦੀਆਂ ਉਸ ਦੇਵ ਵਾਨਰੀ ਇਸਤੀ

ਵਸੀ ਦਰੀ ਮਨਾ ਬੁਦ ਦੇਵਾ ਰਜੀ॥

ਉਨਾ ਦੇਵਿਚ ਕੀ ਪਸੀ ਇਕ

ਯਕੇ ਤਰਫ ਆਂ ਬੁਦ ਯਕੇ ਤਰਫ ਏਈ॥੧੫॥

ਇਕ ਪਾਸੇ ਓਹਥੀ ਅਤੇ ਦੂਜੇ ਪਾਸੇ ਓਹਥੀ

ਸਬਕ ਬਰਦ ਹਰਦੇ ਜਿਹਰ ਯਕ ਹੁਨਰ॥

ਸਭਾ ਲੇਵੇਸੇ ਦੇਨੇ ਹੀ ਸਤੁਦਿਦਿਯਾ ਦੇ

ਇਲਮ ਕਸਮ ਕਸ ਕਰ ਦਬਾ ਯਕ ਵਿਗਾਰ॥੧੬॥

ਵਿਦਿਆ ਦੀ ਚਰਚਾ ਕਰਦੇ ਸੀ ਇਕ ਦੂਸਰੇ ਨਾਲ

ਸੁਖਨ ਹਰਯਕੇ ਰਾਂਦ ਹਰਯਕ ਕਿਤਾਬਾ॥

ਸ਼ਾਤ ਸਤੁਕੇ ਏੀ ਚਲਾਵ ਦਾਸੀ ਹਰੀ ਇਕ ਕਿਤਾਬ ਦੀ

ਜੁਬਾ ਫਰਸ ਅਰਬੀ ਬਰਗਯ ਦ ਜਵਾਬਾ॥੧੭॥

ਹਿੰਦੀ ਫਰਸੀ ਅਤੇ ਅਰਬੀ ਵਿਚ ਕੋਰੇ ਸੇ ਉਸ

ਇਲਮ ਰਾ ਸੁਖਨ ਰਾਂਦ ਬਾਯਕ ਵਿਗਾਰ॥

ਵਿਦਿਆ ਦੀ ਸ਼ਾਤ ਕਰਦੇ ਥੇ ਇਕ ਦੂਸਰੇ ਨਾਲ

ਜਿਕਾਮਲ ਜਿਜਾਹੀਲ ਜਿਨ ਦਰ ਸਿਅਰਾ ॥੧੮॥

ਕਾਮਲ ਸੇਜਾਹੀਲ ਸੇ ^{ਦੇ ਸੁਣਦੇ ਸੇ} ਜਿਅਰ ਸੇ ਕਵੀ ਸਰਸੇ ਅਥਾਤ ਕਾਮਲ ਜਾਹਲ ਉਮਦੇ ਕਵੀ ਸਰਸੇ

ਕਿਸਮਸੇਰ ਇਲਮੇ ਅਲਮਬਰ ਕਸੀਦਾ ॥

ਜੋਤਲਵਾਰ ਵਿਦਿਆਦੀ ਨੂੰ ਖਿਚਕੇ ਕਠਿਆ

ਬਹਾਰੇ ਜਵਾਨੀ ਬਹਾਰੇ ਰਸੀਦਾ ॥੧੯॥

ਬਸੰਤਰਤ ਜੁਵਾ ਅਵਸਥਾਦੀ ਦੇਹਾਉ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋਈ

ਬਹਾਰਸ ਦਰਾਮਦ ਗੁਲੇ ਬੋਸਤਾਂ ॥

ਬਸੰਤਰਤ ਆਈ ਫੁਲਾਬਾਗਿ ਟਿਯਾਨੁ ਅਰਥਾਤ ਵਜੀਹਦੀ ਬੋਟੀ ਜੁਬਾ ਅਵਸਥਾ ਵਧੀ ਹੋਈ

ਬਜ਼ੀਬਸ ਦਰਾਮਦ ਸਹੇ ਚੀ ਸਤਾਂ ॥੨੦॥

ਵਿਚੋ ਜੋਸਦੇ ਆਇਆ ਬਾਦਸਾਹਾ ਜੀਸਤਾਨਦਾ ਅਥਾਤ ਬਾਦਸਾਹਦਾ ਬੋਟਾ ਸੁਆਨੀ ਵਿਚਮ

ਬਰਖਸ ਅੰਦਰਾਮਦ ਸਹਿਨਸਾਹ ਚੀਨਾ ॥

ਵਿਚ ਸੋਰਕਰਨੇ ਦੇ ਆਇਆ ਸਾਹਨਸਾਹ ਚੀਨਦਾ

ਬਖੂਬੀ ਦਰਾਮਦ ਤਨੇ ਨਾਜਨੀਨਾ ॥੨੧॥

ਵਿਚ ਬਖੂਬੀ ਦੇ ਆਇਆ ਰਨ ਉਸਾਇਸਤੀਦਾ

ਬਖੂਬੀ ਦਰਾਮਦ ਗੁਲੇ ਬੋਸਤਾਂ ॥

ਵਿਚ ਬਖੂਬੀ ਦੇ ਆਇਆ ਫੁਲ ਗੁਲਾਬਦਾ

ਬਾਮੇਸ ਅੰਦਰਾਮਦ ਵਿਲੇ ਰੋਸਤਾਂ ॥੨੨॥

ਵਿਚ ਬਾਮੇਸ ਦੇ ਆਇਆ ਵਿਲਾਖਿ ਆਰਿਆਹਾ ॥

ਜਿਦੇਵਾਰੋਜੇ ਅੰਦਰੂ ਮੁਸ ਹਸਤਾਂ ॥

ਉਸਕੀਧਦੇ ਅੰਝ ਇਕ ਚੁਹਾ ^{ਨੱਸੀ ਰਹਿਦਾ}

ਜਿਦਿਵਾਰ ਓਹਮ ਰ ਸੁਰਾਖ ਗਸਤਾਂ ॥੨੩॥

ਕੰਧ ਵਿਚ ਉਸਸੇ ਮੇਸੇਹੀ ਫੇਕ ਸਾਤੋ ਗਿਆ ॥

ਬਦੀਦੇ ਅਜਾ ਅੰਦਰੂ ਹਰੇ ਰਤਨਾਂ ॥

ਦੇਖਿਆਉ ਸਾ ਵਿਚੋ ਵੇਨੇਹੀ ਤਨ ਅਥਾਤ ਬਾਦਸਾਹਦਾ ਬੋਟਾ ਅਤੇ ਵਜੀਹ ਦੀ ਲਕੜਕ

ਚਰਾਰੇ ਜਹਾਂ ਆਫਤਾ ਬੇ ਯਮਨਾ ॥੨੪॥

ਸੂਰਜ ਅਤੇ ਸੂਰਜ ਯਮਨਦਾ

ਚੁਨਾਇਸਕਆਵੇਖਤੁਹਰਦੋਨਿਹਾਂ॥

ਅਸੀਪ੍ਰੀਤਿਦਿਚਲਟਕੇਦੋਨੋਗੀ ਚੁਪਕੇਚੁਪਕੇ

ਇਲਮਸਰਵਦਰਸਤੁਹਸਅਜਜਹਾਂ॥੨੫॥

ਜੇਦਿਦਿਆਹਸੇਗਈਅਤੇਅਕਲਜਾਨਦੀਭੁਲਗਈ॥ ਅਥਤ ਮਸਤਹੋਗਏ

ਚੁਨਾਹਰਦੋਆਵੇਖਤੁਬਾਹਮਰਗੇਬਾ॥

ਅਸੇਦੋਨੋਗੀਲਟਕੇ ਆਪਸਦਿਚ ਪ੍ਰੀਤੀਨਾਲ

ਕਿਦਸਤੁਅਜਇਨਾਰਫਤੁਪਾਅਜਰਕੇਬਾ॥੨੬॥

ਜੇਹਸੇਵਾਂਗਾਛੁਟਗਈਆਂ ਅਤੇਪੈਗਤੇ ਰਗਾਂਬਾਨਿ ਕਲਗਈਆ

ਬਿਪਰਸੀਦਹਰਦੋਕਿਏਨੇਕਪੋਇ॥

ਪੁਛਿਆ ਹਰਿਦੇ ਨੂੰ ਜੋ ਏਭਲੇਸੁਭਾਉਦਾਥਿਓ ਮੁਲਾਦੀਲੜਕੀਨੇ

ਕਿਏਅਫਤਾਬੇਜਹਾਮਾਹਰੇਇ॥੨੭॥

ਜੋਏ ਸੂਰਜ ਸੀਸਾਰਦੇ ਅਤੇ ਏਰੰਦਮੁਖੀਏ

ਕਿਈਹਾਲਗੁਜਰਦਬਾਹਰਦੋਤਨਾ॥

ਜੋਏਹਾਲ ਗੁਜਰਦਾਏਉਪ੍ਰਇਨਾਧਰਦੇਸਰੀਰਾਰੇ

ਬਿਪਰਸੀਦਅਖਵੀਦਅਖਵੀਦਜਨਾ॥੨੮॥

ਲੜਕੇਨੂੰਮੁਲਾਂਨੇਪੁਛਿਆ ਅਤੇਲੜਕੀਨੂੰਮੁਲਾਣੀਨੇਪੁਛਿਆ॥

ਚਰਾਗੇਮਲਕਅਫਤਾਬੇਜਹਾਂ॥

ਦੀਵੇਅਕਾਸਦੇ ਅਤੇਸੂਰਜਸੀਸਾਰਦੇ॥

ਚਿਰਾਲਾਗਰੇਗਸਤਵਜਹੇਹੁਮਾਂ॥੨੯॥

ਕਿਸਦਾਸਤਮਾਵੇਹੋਗਏਹੋ॥ ਸਬਬਾਕਿਆਂਹੋ

ਚਿਆਜਾਹਜਾਸਤੁਹਬਿਰੋਜਾਨਮਾ॥

ਕਿਆਦਖੋਹੇਗਿਆਏ ਤੋਕੋਕਤੁ ਏਮੇਜੀਜਾਨਾ॥

ਕਿਲਾਗਰਚਿਰਾਗਸਤੀਏਜਾਨਮਾਂ॥੩੦॥

ਜੋਮਾਵੇਕਿਸਦਾਸਤਹੋਏਹੋਤੁਸੀ ਮੇਰੇਪਿਆਰੇਓ॥

ਅਜਾਰੇਬਿਰੋਤਾਇਲਾਜੇਕੁਨਮਾ॥

ਦੁਖਓਹਕੋਤੇ ਤੋਮਾਂ ਉਸਦਾ ਉਪਾਉਕਰਨਾ॥

ਕਿਰੋਗੇ ਸੁਮਾਰਾ ਖਰਾਜੇ ਕਰੁਮਾ ॥ ੩੧ ॥

ਦੁਖਤਾਮਾਰੇ ਕੇਤਾਈ ਖਾਰਜ ਕਰਾਮੇ

ਸੁਨੀਦਈ ਸੁਖਨ ਰਾਨ ਦਾ ਦਸ ਜੰਦਾ ॥

ਲਾਕੇ ਨੇ ਸੁਲੀਧਾਤ ਅਤੇ ਭੁਭੁਦਾ ਕਰਾਮੇ

ਫਰ ਬਰਦ ਹਰਦੇ ਤੁਨੇ ਇਸਕ ਤੁਧਾ ॥ ੩੨ ॥

ਨੀਚੇਲੇ ਹਰੇ ਨੇ ਗੀਸਰੀ ਰਮੁ ਭਰਦੇ ਰਮ ਕਾਰੇਨੂੰ ਅਥਾਤ ਕਰਨਾ ਅਤੇ ਲਾਕੀ ਵੇਨੇ

ਚੁਚੁਸਰੀਦ ਬਰਦੇ ਦੁਸੇ ਚਾਰੇ ਰੰਜਾ ॥ ੩੩ ॥

ਜੇਦੁਸਰਗਦੇ ਉਸ ਗਲਨੂੰ ਵੇ ਤਿਨਚਾਹ ਦਿਨਾ

ਬਰਾਮਚੁਦੇ ਤੁਨਹਰ ਚੁਰੇਤੀ ਫਰੇ ਜਾ ॥ ੩੪ ॥

ਥਾਰਾ ਆਈ ਦੇ ਨੇਤਲੀ ਸਿਆਰਦਿਖੇ ਪੀਤੀ ਅਥਾਤ ਉਤਾਰੀ ਪੀਤੀ ਪਧੇਗਈ

ਬਹੁਦਰ ਗਲਤੀਦ ਤਿਫਲੀ ਕੁਫਲਾ ॥

ਉਨਾਉਧੁੰ ਤੇ ਦੁਰਗਈਆ ਬਾਲਕਾਵਾ ਨਾ ਗਲਾਹ

ਕਿਮੁਹਰਸ ਬਰਦਵਰਦੇ ਸੁਨੇ ਬਰਦਾ ॥ ੩੫ ॥

ਜੇਪਿਆਰੀ ਅਵਸਥਾਉਨਦੀ ਥਾਰਾ ਆਈ ਸੀਨਿ ਨਵੀਨ ਸੁਗਰੀ

ਵਜਾ ਵਜਲਸ ਬੁਦ ਦੁਖਤਰ ਯਕੇ ॥

ਉਸਲਾਵੀ ਇਕਥੇਈਕੀ

ਕਿ ਸੁਰਤੁ ਜਮਾਲ ਅਸਤਵ ਦਨਸ ਬਾਜੇ ॥ ੩੬ ॥

ਜੇਸੁਹੇ ਸੁਪਦੀਪ ਅਤੇ ਵਰੀ ਬੁਧਵਾਨੀ

ਸੁਨਾਸੀਦ ਓਰਾ ਸਿਹਾਲਤੁ ਵਜਾ ॥

ਪਛਾਨੀਉਨਾਦੀ ਗਲਤ ਅਤੇ ਰਾ ਅਥਾਤ ਸਾਹਕਵਦ ਅਤੇ ਵਰੀ ਜਦੀਦੀ ਪਛਾਣੀ

ਬਗਾਫਤਸ ਦੁਵੀ ਖਲਵਤਸ ਖੁਸ਼ ਜੁਧਾ ॥ ੩੭ ॥

ਕਿਹਾਉਨਾਵਨੀਹਦੀ ਸ਼ੰਦੀਨੂੰ ਇਕਤ ਦਿਰਭਲੀ ਹਸਨਾਖੀ

ਕਿਵੇ ਸਰਵਕਦ ਮਾਰੀਓ ਸੀਮਤਨਾ ॥

ਜੇ ਏਹਸੁਰਜੇ ਸੇਕਦਵਾਲੀ ਦੇਹ ਮੁਖੀਏ ਪਾਠੇ ਜੀਓ ਰੰਤਲ ਸਰੀਕਦਾ ਲਾਏ

ਚਰਾਗੇ ਫਲਕ ਅਫਤਾਬੇ ਯਮਨਾ ॥ ੩੮ ॥

ਦੀਵਾ ਅਕਸਰ ਅਤੇ ਸੁਰਜ ਯਮਨਵਲਾ ਇਤਦੀਪਤੀ

ਜੁਦਾਈ ਮੁਰਾਮ ਸਜ ਤੁਰਾ ਕਤਹਰ ਨੇ ਸਤਾ॥

ਜੁਤਮੇਰਾ ਤੇ ਭੋਇਕ ਰੰਗ ਮਾਤ ਨਹੀਂ॥

ਬਦੀ ਦੁਨ ਦੁਕਾਲ ਬ ਬਗੁਫਤਨ ਯਕੇਸਤਾ॥੩੮॥

ਸਾਧ ਦੇਖਣੇ ਦੇ ਸਾਹੀਰ ਅਤੇ ਦੇਖ ਕਾ ਦੇਵੇ ਇਕਰੇ

ਕਮਲ ਹਾਲ ਹੀਤਾ ਦਿ ਗੁਰਜਰ ਤੁਰਾ॥

ਸਾਧ ਮੇਰੇ ਆਪਣਾ ਹਾਲ ਕਰੇ ਜੋ ਕਿ ਆਗੂ ਜਹਦਾ ਹੈ ਮੇਰੇ ਤਾਈ

ਕਿਸੇ ਜਦ ਹਮ ਹ ਜਾਨ ਸਿਰਗਰੇ ਮਰਾ॥੩੯॥

ਕਿਉ ਜੇਸ ਲਵਾਈਤ ਮਜਾਨ ਅਤੇ ਜਿਗਰ ਮੇਰਾ

ਕਿ ਪਿਨਹਾ ਸੁਖਨ ਕਰਦ ਯਾਰਾ ਖਤਾਸਤਾ॥

ਜੇ ਪੜਦਾ ਬਾਤਦਾ ਕਰਨਾ ਯਾਰਾ ਮੇਰੇ ਅਹਿਰਾਦੇ॥

ਮਗਰ ਰਾਸੁਤੁ ਗਈ ਤੁ ਬਰਮਨ ਰਵਾਸਤਾ॥੪੦॥

ਜੇ ਕਰਤੁ ਮਦ ਕਰੇ ਤੇ ਰੋਕੇ ਕੁਲਾਹੇ॥

ਕਿ ਦੀਗਰ ਬਗਿਆ ਮ ਮਰਾ ਰਾਸੁਤੁ ਟਾ॥

ਜੇ ਦੂਜੇ ਪਾਸ ਮੇਰੀ ਕੁਤੁਹੀ ਮੇਰੇ ਤਾਈ ਤੁਸਰ ਕਰੇ

ਕਿ ਮਾਜ ਖੁਨ ਸਿਰਗਰੇ ਮਰਾ ਤੇ ਬਿਸੇ॥੪੧॥

ਜੇ ਦੂਨਿ ਸਿਰਗਰੇ ਮੇਰੇ ਤਾਈਏ ਮੁਥਾ ਆਪਣੇ ਸਿਰਗਰ ਦੀ ਗਲ ਦਸ ਮੇਰੇ॥

ਸੁਖਨ ਦੁਜ ਦਗੀ ਕਰਦ ਯਾਰਾ ਖਤਾਸਤਾ॥

ਸਾਧ ਦੀ ਚੋਗੀ ਕਰਨੀ ਯਾਰਾ ਬੇ ਕੁਲਾਹੇ

ਅਮੀਰਾਨ ਦਜ ਦੀ ਫਜੀਰਾ ਖਤਾਸਤਾ॥੪੨॥

ਸਰਦਾਰ ਜੇਕਰ ਪੜਦਾ ਬਾਤਦਾ ਦਜੀਰਾ ਤੇ ਮੇਰੇ ਅਹਿਰਾਦੇ ਹੈ

ਸੁਖਨ ਗੁਫਤਨ ਰਾਸਤੁ ਗੁਫਤਨ ਖੁਸ ਅਸਤਾ॥

ਬਾਤ ਦੀ ਚੋਗੀ ਕਰਨੀ ਦੇਹ ਬੇਲਾਤਾ ਹੀ ਕੁਲਾਹੇ॥

ਕਿ ਹਕ ਗੁਫਤਨ ਹਮ ਚ ਜਾਨੀ ਦਿਲ ਅਸਤਾ॥੪੩॥

ਜੇ ਸਚ ਕਹਾਂ ਦੇ ਦਲ ਅਨਿਰਸਾ ਹੋਵੇ ਲਈ ਮੇਰੇ॥

ਬਸੇ ਬਾਜ ਗੁਫਤਸ ਜਵਾਬੇ ਨਦਾਦਾ॥

ਬਾਤ ਦੇਵੇ ਪਿਤਾ ਕੁਝ ਏਸ ਬੁਲਾਨੇ ਨਾ ਦਿਤਾ ਮੁਲਾਵਾ ਦੇਵੀ ਲਾਹੀ॥

ਜਵਾਬੇ ਜਬਾਂ ਸੁਖਨ ਸੀਰੀ ਕਸਾਵਾ ॥ ੪੪ ॥

ਜਵਾਬ ਹਸਨਾਂ ਮਿਠੀਥੀ ਮਿਠੀਆ ਮਿਠੀਆ ਬੋਤਾ ਕੀਤੀਆ ਪ੍ਰਾਅਸਲੀ ਤੁਛਨਾ
ਦਸਿਆ ॥

ਯਕੇ ਮਜਲਸ ਅਰਾਸਤੁ ਬਾਰੇ ਦੁ ਜਾਮਾ ॥

ਇਕਮੇਲਾ ਕੀਤਾ ਲੁਕੁਕਿਆਵਾਂ ਸਾਬੁਸਗਾਬ ਅਤੇ ਗਵਈ ਇਕਰੇ ਕੀਤੇ ਅਰਥਤ ਮੁਲਾ
ਦੀਲ ਨਹੀਨੇ ਇਕਮਜਲਸ ਗਾਹੀਆਨਾ ਲੁਕਾਵਾਂ ਸਗਾਬਨਾਲਸਜਾਈ ॥

ਕਿਹਮ ਮਸਤ ਸੁਦ ਮਜਲਸੇ ॥ ੪੫ ॥

ਜੋਤਮਾਮ ਬੇਸੁਪੋਗਏ ਮਜਲਸ ਵਾਸੇ ॥

ਥਕੇ ਫਸ ਹਮ ਹਮ ਚੁਨ ਵੇਖਤੰਦਾ ॥

ਸਾਬਸਗਾਬਦੇ ਅੰਸੋਪੀਕੇ ਬੇਸੁਪ ਤੇਇਗਏ ॥

ਕਿਜਖਮੇ ਸਿਰਾਰ ਬਾਜਬਾ ਰੇਖਤੰਦਾ ॥ ੪੬ ॥

ਜੋਅੰਦਾ ਦੁਖਸਾਬ ਆਪਣੀਜੁਬਾਨਦੇ ਕਿਹਾ

ਸੁਖਨ ਬਾਂਜਬਾਂ ਹਮ ਚੋਗਲਦੁ ਮੁਦਾਮਾ ॥

ਸਾਬਰਸਨਾਦੇ ਅੰਸੋ ਕੋਹਦੇ ਹੋ ਹਮੇਸਾ ॥

ਨਗੇਯਦ ਬਜੁਜ ਸੁਖਨ ਮਹਬੂਬ ਨਾਮਾ ॥ ੪੭ ॥

ਨਗੇਕੋਦੇਥੇ ਸਿਵਾਂ ਨਾਮ ਪਿਆਰੇਦੇ ਵਸੇ ਦਾਨਾਮ

ਦਿਗਰ ਮਜਲਸ ਅਰਾਸਤੁ ਬਾਰੇ ਦੁ ਰੰਗਾ ॥

ਦੁਸਰੀ ਮਜਲਸ ਬਟਾਈ ਸਾਬ ਸਗਾਬ ਅਤੇ ਰਾਗਦੇ ॥

ਜਵਾਨ ਨਸਾਇਸਤੁ ਰੇਖੁ ਬਰੰਗਾ ॥ ੪੮ ॥

ਗਬਰੂ ਲਾਇਕ ਅਤੇ ਸਰੂਪ ਵਾਲਿਆਦੀ ॥

ਹਮ ਹਮ ਮਸਤੁ ਮਸਤੁ ਹਮ ਹਮ ਮਸਤੁ ॥

ਤਮਾਮ ਮਸਤੁ ਸੁਭਾਉਹੋਵੇ ਸਭਮਸਤੀ ਸੇ ਭਰਪੂਰ

ਇਨਾਨੇ ਫਜੀਲਤ ਸਰੂ ਸੁਦ ਜਿਦਸਤੁ ॥ ੪੯ ॥

ਲਾਗਾਮ ਦਸਾਈਦੀ ਬਾਹਰ ਤੇਈ ਹਥਸੇ

ਹਰਕਸ ਕਿਅਜ ਇਲਮ ਸੁਖਨ ਸਬਰਾਦਾ ॥

ਜਿਸਕਿਸੀਨੇ ਵਿਦਿਆ ਦੀ ਬਾਤ ਉਸਕੇ ਸਾਬ ਚਲਾਈ ਸਾਹਜਾਦੇਨਾਲ

ਕਿਅਜ ਬੇਖੁਦੀ ਨਾਮ ਹਰਦੇ ਬਖਾਵਾ ॥ ੫੦ ॥

ਜੇਮਸਤੀਥੇਦੇ ਨਾਮ ਆਪਣੇ ਯਾਰਦਾ ਤੋਲਦੇਸੇ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ਜਦ ਦਿਹਾਤਿਆ ਅਤੇ

ਵਿਸ਼ਨੂੰ ਪ੍ਰਸਾਦੀ ਤੁਲਗਾਰੀ ॥

ਬਖਾਂਦੀਰ ਬਾਯਕ ਵਿਗਾਰ ਕਮਲ ਸਤ ॥੫੯॥

ਸਦਾ ਦੇਸੇ ਵਿਕਾਸ ਰੇ ਦਾਸਮ ਮਸਤ ਹੋਵੇ ਤੇ ਦੇਸੇ

ਹਰਾਂ ਕਾ ਸੁ ਕਿ ਦੇ ਚੀ ਨਹੁ ਏ ਰਾ ਸਤੁ ਦੇ ਸਤਾ॥

ਜਿਸ ਕਿਸੀਰਾ ਜੋ ਪੁਰਾਣਾ ਹੋਸਤ ਹੈ।

ਜਥਾ ਪੁਰ ਕੁਸੁਇਰੁ ਅਜ ਨਮ ਚਿਤੁ ਪਤਾ

ਆਪਣੀ ਰਸਨਾਈ ਬੋਲਦਾ ਜੀ ਨਾਮ ਉਮਦਾ॥

सुन सुनरथी बाल सुपुन भाग्य ॥ सुन ॥

ਪਛਾਣਦੀ ਹੈ ਜੇ ਹੋਰ ਕੁਝ ਕੁਝ ਹੋਰ ਮੋਹਤ ਦੇ ਆਖੇ (੫੫) ਮਲਕ ਦੇ ਦੀ

ਬੁਧਾਫਤਨ ਤਾਮਰੀ ਸਬਕਤਨ ਖਾਸ ਅਖਤਾ ੫੩

ਸਾਧਕ ਪਾਤਲ ਦੇ ਪ੍ਰਭਾਵਾਂ ਅਤੇ ਨਾਸ਼ਕ ਤਰੀਕੇ ਵੇਖੋ ॥

विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् ॥ १ ॥

ਜੇ ਇਸਕਸੇ ਅਤੇ ਅਸਰ ਅਤੇ ਸਰਾਫ ਸੇ ਅਤੇ ਮਨਿ ਕੀਤੇ ਸੇ

विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् ॥ ५४ ॥

ਜਿਹੜਾ ਮਾਨਸੀ ਤੇਰਾ ਤੇਰੇ ਹੁਰ ਸਚ ਪ੍ਰਗਟ ਹੋ ਜਾਵੇ।

ਭਗਤ ਅੰਗਦੀ ਦਾਸ ਦਾ ਉਪਦੇਸ਼ ਪਾਈ ਦਾ।

ਦਿਖਾਏਗੇ ਤੇ ਹੋਰ ਚਰਚਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼

੨॥ ਅੰ ਜਾਦਰੇ ਸਾਰ ਵ ਦੁਖਤਰ ਕਜੀਗ। ੫੫॥

ਜੇ ਸਾਹਜਾਦਾਹ ਅਜਾਦ ਅਤੇ ਵਜ਼ੀਰ ਦੀ ਬੇਟੀ ਆਸ਼ਕ ਹੈ॥

ਸੁਨੀਰ ਈ ਸੁਖਦਸਾਰ ਦਿਸਤੀ ਬਾਬਾਂਦਾ)

ਸਤਿਗੁਰੋ ਜੀ ਸਾਡੇ ਮਨ ਮੇਂ ਰਹਿਣਾ ॥

ਜਦਾ ਬੁਰ ਜਦਾ ਹਰਦੇ ਕਿਜਤੀ ਨਿਜਾ ਦੁਆਪੁ ॥੬॥

ਇਕਲੇ ਇਕਲੇ ਵੇਹਾਂ ਬੋਲੀਆ ਉਪਰ ਖਿੱਲ ਦਿਤੀ॥

ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ॥

ਰਵਾਨਾ ਕੀਤਾ ਉਸ ਬੇਕੀਆਨੇ ਤਾਈਂ ਜੁਗੇ ਵਾਨਿਆਂ ਦੇ ਚਾ।

੧੦੬ ਦੁਕਿਸਤੀ ਯਕੇ ਸੁਦਹ ਮਹਿ ਮੋਜ ਬੀਮਾ ॥੫੭॥
ਦੋਨੋ ਬੇੜੀਆਂ ਇਕਥਾ ਕਠੀਆ ਰੋਗਈਆ ਤਮਾਸ ਲੈਰਾਸੋ॥

ਦੁਕਿਸਤੀ ਯਕੇ ਗਸਤ ਹੁਕਮੇ ਮਲਾਹਾ ॥
ਦੋਨੋ ਬੇੜੀਆਂ ਇਕਠੀਆ ਰੋਈਆ ਸਾਥ ਹੁਕਮ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਦੇ॥

ਬਯਕਜਾ ਦਰਾਮਦ ਹੁਮਾਂ ਸਮਸਮਾਹਾ ॥੫੮॥
ਵਿਚੋ ਇਕ ਜਾਗਾਦੇ ਆਏ ਹਿ ਸੂਰਜ ਅਤੇ ਚੰਦ੍ਰਮੁਖੀ (ਅ:) ਸਾਹਜਾਦਾ ਅਤੇ ਵਜ੍ਹਾ

ਬਬੀ ਕਦਰਤੇ ਕਿਰਦਗਾਰੇ ਮਲਾਹਾ ॥
(ਰੋਮੈ ਰੋਮੈ) ਦੋਖਤੂ ਕੁਦਰਤ ਕਾਰਸਾਜ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਦੀ॥

ਦੁਤਨ ਰਾ ਯਕੇ ਕਰਦ ਮਜ਼ ਹੁਕਮ ਸਾਹਾ ॥੫੯॥
ਦੋਨੋ ਸਰੀਰ ਕੋ ਤਾਈ ਇਕਥਾ ਕੀਤਾ ਹੁਕਮ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਸੋ॥

ਦੁਕਿਸਤੀ ਦਰਾਮਦ ਬਯਕਜਾ ਦੁਤਨਾ ॥
ਦੁਹਾਂ ਬੇੜੀਆਂ ਵਿਚੋ ਇਕ ਵਿਚ ਆਏ ਦੋਨੋ ਸਰੀਰੋ॥

ਚਰਾਰੇ ਜਹਾਂ ਆਫਤਾ ਬੇਯਮਨਾ ॥੬੦॥
ਮਜਾਬ ਅਰਬ ਦੇਸ ਦੀ ਅਤੇ ਸੂਰਜ ਯਮਨ ਦਾ॥

ਬਰਫਤੀ ਦੁਕਿਸਤੀ ਬਦਰਯਾਇ ਗਾਰਾ ॥
ਫੇਰਗਈ ਬੇੜੀ ਵਿਚ ਦਾਰਿਆ ਭ੍ਰੰਗੇ ਦੇ॥

ਬਮੋਜ ਅੰਦਰ ਮਾਮਦ ਚ ਬਰਾਰੇ ਬਹਾਰਾ ॥੬੧॥
ਵਿਹ ਲੈਰਾਦੇ ਆਈ ਮਾਨੀਦ ਪਤੇ ਬਹਾਰ ਦੇ ਦੀ॥

ਯਕੇ ਅਯਦਹਾ ਬੁਦ ਮਾਜਾ ਨਿਸਸਤਾ ॥
ਇਕ ਭਾਰੀ ਸਰਪਥਾ ਉਥੇ ਬੈਠਾ ਹੋਇਆ॥

ਬਖਰਦਨ ਦਰਾਮਦ ਵਜਾਂ ਕਰਦ ਜੁਸਤਾ ॥੬੨॥
ਵਾਸਤੇ ਖਾਵੇ ਦੇ ਆਇਆ ਅਤੇ ਓਥੋਂ ਹੀ ਛਾਲ ਮਾਰੀ

ਦਿਗਰ ਪੇਸਤਰ ਬੁਦ ਕਹਿਰੇ ਬਲਾ ॥
ਦੂਸਰੇ ਪਾਸੇ ਅਗੇ ਭਾਰੀ ਬੀ ਕਹਰ ਰੂਪ ਬਲਾ॥

ਦੁਦਸਤ ਸਸਤੀ ਕਰਦ ਪਏ ਸਰ ਹੁਮਾਹਾ ॥੬੩॥
ਦੋਨੋ ਹਥ ਉਸਨੇ ਬੰਨ੍ਹੇ ਵਾਹੁੰ ਖੜੇ ਕੀਤੀ ਉਪਰ ਸਿਰ ਉਨਵੇ॥

ਮਿਆਰਫਤੁ ਸੁਦ ਕਿਸਤੀਏ ਹਰਦੇ ਦਸਤਾ॥

ਵਿਚ ਦੇ ਲੰਘ ਗਈ ਬੇੜੀ ਏਨਾਂ ਦੇਹ ਦੇ ਹਥਾਏ॥

ਬਨੇ ਸੇਵਾ ਮੰਨਦਾ ਅਜੇ ਮਾਰ ਮਸਤਾ॥੬੪॥

ਰੂਹ ਸਰਪਸੇ ਦੇਨ ਬਚ ਗਏ॥

ਚਿਰਫਤੁ ਓਰਾ ਬਦਸਤੁ ਅੰਦਰੂ॥

ਬਲਾਨੇ ਪਕੜਿਆ ਉਸ ਸਰਪ ਕੋਤਾਈ॥

ਬਖਸ਼ੀ ਦ ਓਰਾ ਬਖਰਦੀ ਦ ਖੰਗ॥੬੫॥

ਬਖਸ਼ਿਆ ਉਨ ਕੋਤਾਈ ਨਹੀ ਖਾਵਾ ਖੰਨ (ਅ:) ਸੋਹ ਜਾਵਾ ਤੇ ਬੇਟੀ ਵਜੀਰਦੀ ਬਚ ਗਈ॥

ਦਨ ਜੀਗ ਸੁਦ ਅਯਵਹਾ ਬਾਬਲਾ॥

ਅੰਸਾ ਜੁਧ ਹੋਇਆ ਸਰਪਦਾ ਸਾਂਝ ਬਲਾਵੇ॥

ਕਿ ਬੇਰੁ ਨਿਆਮਦ ਬਹੁਕਮੇ ਖਦਾ॥੬੬॥

ਜੇ ਬਾਹਰ ਨ ਆਇਆ ਉਨ ਵਿਚ ਕੋਈ ਸਾਂਝ ਹੁਕਮ ਰਬਾਵੇ॥

ਚਨ ਮੰਜ ਬੇਜਦ ਨਿਦਰੀਯਾ ਅਜੀਮਾ॥

ਅੰਸੀਆ ਲੋਰ ਉਠਦੀਆਂ ਭਾਰੀ ਦਰਿਆਸੇ॥

ਕਿ ਦੀਗਰਨ ਦਾਨਸਤੁ ਜਜਲ ਕਰੀਮਾ॥੬੭॥

ਜੇ ਦੁਸਰਾ ਕੋਈ ਨਹੀ ਜਾਣਦਾ ਸਿਟੋ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਕ੍ਰਿਪਾਲੂ ਸੇ॥

ਰਵਾਂ ਗਸਤੁ ਕਿਸਤੀ ਬਮੋਜੇ ਬਲਾ॥

ਤੁਹਧਈ ਬੇੜੀ ਵਿਚ ਲੋਰਾ ਬਲਾ ਜੋਸੀਆ ਦੇ॥

ਬਰਾਹੇ ਖਲਾਸੀ ਨਿਰਹਮਤੁ ਖਦਾ॥੬੮॥

ਵਿਚ ਰਸਤੇ ਖਲਾਸੇ ਦੇ ਕ੍ਰਿਪਾ ਵਹਿਗੁਰੂ ਸੇ॥

ਬਾਮਾਖਰ ਹਮਾਮਜ ਹੁਕਮ ਪਰਵਰਦ ਗਾਰਾ॥

ਕਿਰਨੂੰਤੀ ਹੁਕਮ ਪਾਲਦੇ ਵਾਝੇ ਬਿਅੰਤ ਕੇ ਸੇ॥

ਕਿ ਕਿਸਤੀ ਬਰਾਮਦ ਨਿ ਦਰਯਾ ਕਿਨਾਰਾ॥੬੯॥

ਜੇ ਬੇੜੀਆਈ ਉਪਰ ਚਰਿਆਵੇ ਕਿਨਾਰੇ ਦੇ॥

ਕਿ ਬੇਰੁ ਬਰਾਮਦ ਅਜਾ ਹਰਦੇ ਤਨਾ॥

ਜੇ ਬਾਹਰ ਆਏ ਬੇੜੀ ਸੇ ਦੇਨੇ ਸਫੀਰਾ॥

ਨਿਸਸਤਹ ਲਬੀਆਂ ਬਦਰਯਾ ਸਮਝਾ ॥ ੧੦ ॥

ਬੈਠੇ ਕੰਢੇ ਉਸੀ ਦਰਿਆ ਯਮਨ (ਅ:) ਉਸੀ ਥਾਂ

ਦਰਾਮਦ ਯਕੇ ਸੇਰ ਵੀ ਦਨ ਸਿਤਾਯਾ ॥

ਬਾਹਰ ਆਇਆ ਜੰਗਲਾਂ ਦੇ ਇਕ ਸੇਰ ਦੇ ਖਕੇ ਛੇਤੀ ਨਾਲਾ ॥

ਬਖ਼ਰਦਨ ਅਜਾਹਰ ਦੁਤਨ ਰਾਕ ਬਾਯਾ ॥ ੧੧ ॥

ਵਾਸਤੇ ਖਾਢੇ ਉਨ ਦੇਹਾ ਤਨਾਏ ਕਾਬਾਬ ਦੇ ॥

ਸਿਦਰਯਾ ਬਰਾਮਦ ਸਿਮਰਾਰੇ ਅਜਾਇਆ ॥

ਦਰਿਆ ਸੇ ਬਾਹਰ ਆਇਆ ਸੰਸਾਰ ਭਾਰੀ

ਖਰਮਾਹਰੇ ਤਨ ਰਾ ਬਹੁ ਕਮੇ ਕਰੀਆ ॥ ੧੨ ॥

ਖਾਵਾਮੇ ਹਰਦੇ ਕੇ ਸਰੀਰ ਕੇ ਤਾਈਂ ਸਾਥ ਤੁਕਮ ਸੁਖੀ ਦੇ ॥

ਬਜਾਇਸ਼ ਦਰਾਮਦ ਜਿਜੇਰੇ ਸਤਾਯਾ ॥

ਵਿਚ ਉਸੀ ਬਾਢੇ ਆਇਆ ਸੇਰ ਸਿਤਾ ਬੀਸੇ ॥

ਸਕੰਦਸ਼ ਹਮੀ ਬੁਰਦ ਬਰਦੇਰੇ ਆਯਾ ॥ ੧੩ ॥

ਫਾਲ ਮਾਰੀ ਸੰਚਨੇ ਉਪਰ ਕੰਢੇ ਦਰਿਆ ਦੇ ॥

ਬਪੇਚੀ ਦਸ ਰਚਿ ਖਤਾ ਗਾਯਤ ਸੇਰਾ ॥

ਉਸ ਦਹਾਨੇ ਸਿਰ ਨੀਵਾ ਕੀਤਾ ਸੇਰਵੀ ਭੁਪਟ ਖਾਲੀ ਗਈ ॥

ਬਦਹਾਨੇ ਵਿਚਾਰ ਦੁਸਮਨ ਅਫਤਦ ਦਲੇਰਾ ॥ ੧੪ ॥

ਵਿਚ ਮੂਹ ਦੂਸਰੇ ਸਤੁ ਸੁਰਮੇ ਦੇ ਜਾਇਆ (ਅ:) ਸੇਰ ਸੰਸਾਰ ਦੇ ਮੂਹ ਵਿਚ ਜਾਇਆ ॥

ਬਿਗੀਰਦ ਮਗਰ ਦਸਤੁ ਸੇਰੇ ਸਿਤਾਯਾ ॥

ਪਕੜ ਲਿਆ ਭੀਸਾਨੇ ਪੜਾ ਅਤੇ ਸਿਰ ਸੇਰਦਾ ਛੇਤੀ ਨਾਲਾ ॥

ਬਾਬਰਦੇਰੇ ਦਰਿਆ ਕਰੀ ਦੁਹ ਦਰ ਆਯਾ ॥ ੧੫ ॥

ਲੇਗਿਆ ਉਸੇ ਰਾਹੀਂ ਯਮਨ ਦੇ ਵਿਚ ਪਾਈ ਦੇ ॥

ਬਾਈ ਕਰਾਰੇ ਵਿਚ ਦ ਗਾਰੇ ਜਹਾਂ ॥

(ਤੇਰੇ ਕੰਢੇ ਦੇ ਖਤ ਕਾਬਾਬ ਜਾਹਾਜ ਵਿਚ ਦਾਇਆ)

ਗਿਈ ਦਾ ਨਿਰਾਖਾਰੇ ਕਾਬਾਬ ਅਜਾਇਆ ॥ ੧੬ ॥

ਵਿਚ ਕੇਰੀ ਸਾਹਿਬਾ ਅਤੇ ਉਨ ਦੇ ਭਾਰੀ ਮਾਰਿਆ ॥

ਬਿਗਫਤੰਦਹਰਦੇਬਹੁਕਮੇਅਮੀਰ॥
ਗਏਦੋਨੋਹੀਸਾਥਹੁਕਮਅਮੀਰਦੇ॥ (ਅ:) ਰਬਦੇ॥
ਯਕੇਸਾਹਜਾਦਹਰਦੁਖਰਦਜੀਰ॥ ੭੭॥
ਇਕਸਾਹਜਾਦਾ ਅਤੇਬੇਦੀ ਵਜੀਰਦੀ॥
ਬਿਅਫਤਾਦਹਰਦੇਬਦਸਤੇਅਜੀਮਾ॥
ਪੇਗਏਦੋਨੋਹੀਵਿਚ ਰਸਤੇ ਜੰਗਲ ਤਾਹੀਦੇ॥
ਨਜਾਨਾਦਵਿਗਰਦੀਦਜੁਜਯਕਰੀਮਾ॥ ੭੮॥
ਨਹੀਥਾ ਸਾਧਦ ਦੂਸਰਾ ਦੇਖਣੇਵਾਲਾ ਸਿਵਾ ਵਾਹਿਗੁਰੂਤੇ॥
ਬਮੁਲਕੇਹਬਸਅਮਦ ਆਨੇਕਖੋਇ॥
ਵਿਚਮੁਲਕਹਬਸੀਆਦੇਆਏਓ ਫੁਲੇ ਸੁਗਾਉਵਾਲੇ॥
ਯਕੇਸਾਹਜਾਦਹਰਦਿਗਰਖੁਬਰੋਇ॥ ੭੯॥
ਇਕਸਾਹਜਾਦਾਹ ਅਤੇ ਦੂਸਰੀ ਖੁਬਰੂਇਵਾਲੀ
ਦਰਾਂਜਾਇਮਾਮਦਕਿਬਿਨਸਸਤੁਹਸਾਹ॥
ਵਿਚਉਸਜਾਗਾਦੇਆਏਜੋਜਿਥੇ ਬਾਦਸਾਹ ਬੈਠਾਹੈ॥
ਨਿਸਸਤੰਦਸਬਰੰਗਜੁਰਗੀਕੁਲਾਹ॥ ੮੦॥
ਬੈਠਾਹੈਸਿਆਮਸੂਰਤ ਸੁਨੇਗੀ ਫੁੜਸਿਰ ਪਰਤੇ॥
ਬਦੀਦੀਦਰਿਗਬਖਾਂਦੀਦਪੇਸਾ॥
ਬਾਦਸਾਹਨੇਉਨਕੇਤਾਈ ਦੇਖਕੇਆਪਣੇਪਾਸਬੁਲਾਇਆ॥
ਬਿਗਫਤੰਦਵੇਸੇਰਆਜਾਦਕੇਸਾ॥ ੮੧॥
ਕਹਾ ਜੋਵੇਸੇਰਜੁਦੇ ਮਗਜਵਾਲੇ॥
ਜਿਮੁਲਕੇਕੁਦਾਮੀਤੁਈਬੁਰਖਿਰੋ॥
ਕਿਸਮੁਲਕਸੇਤੇਤੂੰ ਸਾਥਮੇਰੇਕਹੁ॥
ਚਿਨਾਮੇਕਿਰਾਤੇਬਈਤਰਫਜੋ॥ ੮੨॥
ਕਿਆਨਾਮਤੇਰਾਅਤੇਕਿਸਦਫ਼ਤਬੈਠਾਹੈਵੇਧਰਕੀਕੰਮਅਤੇਕੀਫੁੜਦਾਹੈ
ਵੰਗਾਰਨਹਮਰਾਤੇਨਹੀਚਰਾਸਤਾ॥
ਮਰਜੇਕਰਮੇਰੇਤਾਈ ਨਹੀਕਹੇਗਾ ਐਸਾਸਚੁ॥

ਕਿ ਮੁਰਦਨ ਸਤੁ ਬਾ ਅਸਤੁ ਏ ਜਦ ਗਵਾਹ ਸਤੁ॥
ਜੋ ਮੋਤ ਤੇਰੀ ਛੋਤੀ ਹੀਰੇ ਵਹਿ ਗੁਰੂ ਜਾਣਦਾਰੇ॥ ੮੩॥

ਸੁਹਨ ਸਾਹ ਪਿਸਰੇ ਮਮਾਨੀ ਦਰਸ॥
(ਸਾਹਜ ਦੇ ਨੇਕੀ) ਸਾਹਨ ਸਾਹ ਮਾਨਦਾਰ ਦਾ ਮੇ ਬੋਲਾਰਾ॥

ਕਿ ਦੁਖਤਰ ਵਜੀਰ ਅਸਤੁ ਏ ਨਉ ਜਵਾਂ॥ ੮੪॥
ਏਹੁ ਬੋਲੀ ਵਜੀਰ ਦੀ ਖੇ ਏ ਨਵੀਨ ਜੁਵਾਨੀ ਵਾਲੀ

ਹਕੀਕਤ ਬਗੁਫਤ ਸੁਜਿ ਪੇਸੀ ਨਹ ਹਾਲ॥
(ਹੋਸਨ ਜਮੀਰਨੇ) ਹਕੀਕਤ ਕਹੀ ਅਗਲੇ ਹਾਲ ਦੀ॥

ਕਿ ਬਰਵੈ ਚ ਬਗਜ ਸਤੁ ਚੰਦੀ ਜਵਾਲਾ॥ ੮੫॥
ਜਿਸਤਾ ਉਪਰ ਉਸਦੇ ਗੁਜਰੀ ਇਤਨੀ ਕੰਮੀ

ਬਮਿਹਰਸ ਦਰਾਂ ਮਦ ਬਗੁਫਤ ਅਜ ਜਬਾਂ॥
ਬਾਦ ਸਾਹ ਕਿਰਪਾਲ ਗੀ ਵੇਚ ਆਇਆ ਅਤੇ ਰਸਨਾ ਸੋ ਕਿਹਾ॥

ਸਰਾਜਾਇ ਗਾਹੇ ਜਿਖੁ ਦੁਖਾਨੁ ਹੁੰਦਾ॥ ੮੬॥
ਮੇਰੇ ਘਰਕੇ ਤਾਈ ਤੂੰ ਆਪਣੇ ਘਰ ਜੇ ਜਾਣਾ॥

ਵਜਾਰਤ ਖਦ ਸਰਾ ਤੁਰਾਂ ਮੇਹਿ ਹਮਾ॥
ਵਜੀਰੀ ਆਪਣੇ ਕੇ ਤਾਈ ਮੇ ਤੇਰੇ ਤਾਈ ਦਿਦਾਰਾ॥

ਕੁਲਾਰੇ ਮੁਮਾਲਕ ਤੁ ਬਰਸਰ ਨਿਹਮਾ॥ ੮੭॥
ਛੋੜ ਮੁਲਕ ਦਾ ਤੇਰੇ ਸਿਰ ਉਪਰ ਰਖਦਾਰਾ ਮੇ॥

ਬਗੁਫਤੀ ਦਈ ਰਾਵ ਕਰਵੇ ਦ ਵਜੀਰਾ॥
ਕਿਹਾ ਇਸਕੇ ਤਾਈ ਅਤੇ ਕਰਾਵੇਤਾ ਵਜੀਰਾ॥

ਕਿਨਾ ਮੇ ਵਜੀ ਬਦ ਰਉਸਨ ਜ਼ਿਮੀਰਾ॥ ੮੮॥
ਕਿਸਵਾਸਤੇ ਜੋ ਉਸ ਕਨਾ ਮਸਾ ਹੋਸਨ ਜਮੀਰਾ॥

ਬਹਰਜਾ ਕਿ ਦੁਸਮਨ ਸਨਾਸਦ ਅਜੀਮਾ॥
ਦਿਚ ਜਿਸ ਜਾਗਦੇ ਜੋ ਸੁਰ ਪੁਰਾਇਆ ਵਡਾ

ਦਵੀਦੀ ਦ ਬਰਵੈ ਬਹੁਕਮ ਕਰੀਮਾ॥ ੮੯॥
ਏਹੀਆ ਉਪਰ ਉਸਦੇ ਸਾਬਹੁਕਮ ਵਹਿ ਗੁਰੂ ਦੇ॥

ਕਿ ਖੁਨਿਸ ਬਰੇਜੀਵ ਵ ਕਰਦੀ ਜੋਰਾ।

ਜੇਖੁਨਿ ਉਸਦਾ ਤੋਲਿਆ ਅਤੇ ਕੀਤਾ ਉਸਨੂੰ ਹੁਕਮਾਵੇਰਾ।

ਦਿਗਰਜਾ ਸੁਨੀਦੇ ਦਵੀਦੇ ਦਲੇਰਾ। ੯੦॥

ਦੁਸਰੀ ਜਾਗਾ ਸੁਣੀਦਾ ਦਉੜਿਆ ਦਲੇਰ ਹੋਕੇ।

ਬਹਰਜਾ ਕਿ ਤਰਕਸ ਬਰੇਜੀਵ ਤੀਰਾ।

ਵਿਚ ਜਿਸ ਜਾਗਾਵੇ ਜੇ ਤੀਰ ਤਰਕਸ ਸੇ ਮਾਰਿਆ।

ਬਕਸਤੇ ਅਦੁਰਾ ਬਕਰਦੇ ਅਜੀਰਾ। ੯੧॥

ਮਾਰਤਾ ਬਤੂਕੇ ਤਾਈ ਅਤੇ ਕਰਦਾ ਕੋਈ

ਬਮੁਦਤੁ ਯਕੇ ਸਾਲ ਤਾ ਚਾਰ ਮਾਹਾ।

ਵਿਚ ਅਰਸੇ ਇਕ ਸਾਲ ਅਤੇ ਚਾਰ ਮਹੀਨੇ ਦੇ।

ਦਰਖਾਸਿ ਦਹ ਮਾਮਦ ਚਰਖਾਸਿ ਦ ਮਾਹਾ। ੯੨॥

ਚਮਕਣ ਵਿਚ ਅਉਆ ਮਾਨੀਦ ਚੰਦਮਾ ਚਮਕਣੇ ਫਲੇਦੀ।

ਬਦੇਜੀਵ ਦੁਸਮਨ ਬਸੇਜੀਵ ਤਨਾ।

ਪੋਰਤਾ ਬਤੂਆਨੂੰ ਅਤੇ ਜਲਾਇਆ ਉਨਾਦਾ ਸਹੀਰਾ।

ਬਯਾਦ ਮਾਮਦ ਸੁਰੇਜ ਗਾਰੇ ਕਹਨਾ। ੯੩॥

ਵਿਚ ਮਾਦਗੀਰੀ ਦੇ ਮਾਇਆ ਉਸਨੂੰ ਦਿਨ ਪਿਛਲਾ

ਬਗੁਫਤੁ ਸੁਯਕੇ ਰੋਜ ਦੁਖਤਰ ਵਜੀਰਾ।

ਕਿਹਾ ਇਕ ਦਿਨ ਰੋਸਨ ਜਮੀਰਨੂੰ ਬੇਰੀ ਵਜੀਰਦੀ ਨੇ।

ਕਿਏ ਸਾਹ ਸਾਹਨ ਰਉਸਨ ਜਮੀਰਾ। ੯੪॥

ਜੇਏ ਬਦਸਾਹੇ ਦੇ ਬਦਸਾਹ ਰੋਸਨ ਜਮੀਰਾ।

ਬਯਕ ਬਾਰ ਮੁਲਕਤੁ ਫਰਮਸ ਗਸਤਾ।

ਇਕ ਬਾਰਹੀ ਮੁਲਕ ਅਪਣਾ ਤੇ ਭੁਲਾਇਤਾ

ਕਿ ਅਜ ਮਸਤ ਮਸਤੀ ਹਮ ਹੋਸ ਗਸਤਾ। ੯੫॥

ਜੇ ਗਜਦੀ ਮਸਤੀ ਸੇ ਮਸਤ ਹੋਕੇ ਸਭ ਅਕਲ ਭੁਲਾਇਤੀ ਤੇ।

ਬਮਾ ਮੁਲਕ ਪੇਸੀਨ ਹਰ ਯਾਦ ਕੁਨਾ।

ਤੂੰ ਉਸ ਮੁਲਕ ਅਗਲੇ ਅਪਣੇ ਕੰਤਾਈ ਯਾਦ ਕਰਾ।

ਕਿਸਹਰੇ ਪਦਰ ਰਾ ਤੁਆ ਬਾਦ ਨਾਨਾ ॥੯੬॥

ਜੇ ਸਹਰ ਬਾਪ ਆਪਣੇ ਦਾ ਤੂੰ ਆ ਬਾਦ ਕਰ

ਨਿਗਾਹ ਦਾ ਸੁਤ ਅਜ ਫੁੱਲੋਂ ਲਸਕਰ ਤੁਆ ਮਾ ॥

ਨਿਗਾਹ ਰਖਿਆ ਫੰਜ ਅਤੇ ਸੁਪਾਹ ਕੇ ਸਭ ਤਾਂ ॥

ਬਸੇ ਰੀਜ ਬਖਸੀ ਦ ਬਰਵੇ ਮੁਦਾ ਮਾ ॥੯੭॥

ਬਹੁਤ ਖਜਨੇ ਬਖਸੀ ਸ ਕੀਤੇ ਉਸ ਉਪਰ ਸਦੀਵ ਕਾਢ

ਯਕੇ ਲਸਕਰ ਮਾਰਾ ਸੁਤ ਚੰਨੋ ਬਹਾਰਾ ॥

ਇਕ ਲਸਕਰ ਸਫਾਰਿਆ ॥ ਨਿੰਦ ਨਵੀਨ ਬਸੰਤ ਰੁਤ ਸੀ

ਸਿਖ ਜਿਹ ਵ ਗੁਰਜੇ ਵ ਬਖਤਰ ਹਜਾਰਾ ॥੯੮॥

ਤਲਵਾਰ ਸੇ ਅਤੇ ਗੁਰਜਾ ਸੇ ਅਤੇ ਸੰਜੇ ਆਂ ਹਜਾਰਾ ਹੀ ਬਣਾਈ ॥

ਜਿਹ ਹੋ ਪਦ ਪਿਛਤਾਂ ਵ ਬਰ ਗਿਜਤ ਵਾਂ ॥

ਢਿਲੇ ਅਤੇ ਸਿਰਦੇ ਦੇ ਪ ਕੁੜਤੀਆ ਅਤੇ ਘੋੜੇ ਦੀ ਗਰਦਣੀ ਜੋੜੇ ਦੀ

ਜਿ ਸਮਝੇਰ ਹਿੰਦੀ ਗਿਰਾ ਤਾਂ ਗਿਰਾ ॥੯੯॥

ਤਲਵਾਰ ਹਿੰਦੀ ਦੀਆ ਭਾਰੀ ਭਾਰੀ ਮੁਲਦੀਆਂ ॥

ਜਿ ਬੰਦਕ ਮਸਹਦ ਵ ਚੀਨੀ ਕਮਾਂ ॥

ਬੰਦਕ ਸਹਰ ਮਸਹਦ ਦੀਆ ਅਤੇ ਕਮਾਣਾ ਚੀਨ ਦੀਆਂ

ਜਿਹ ਹਿਰਮ ਸਮਝੇਰ ਹਿੰਦੇ ਸੁਤਾਂ ॥੧੦੦॥

ਸੰਜੇ ਆਂ ਹੂਮ ਦੀਆਂ ਅਤੇ ਤਲਵਾਰਾਂ ਹਿੰਦੇ ਸਤਲ ਦੀਆ ਪਰੀ ਦੀਆਂ ॥

ਚਿ ਅਜਤਾਜੀ ਅਸਪਾਨੋ ਫੇਲਾ ਦ ਨਾਲਾ ॥

ਕਿਆ ਘੋੜੇ ਤਾਜੀ ਪੁਲਾਵੀ ਨਾਲ ਜਿਨ ਦੇ ਪੈਰਾਂ ਨੂੰ ਲਗੇ ਹੋਏ ਹੋ ॥

ਹਮ ਹ ਯਿਹ ਹ ਫੀਲਾਂ ਅਜਿ ਸਬ ਮਿਸਾਲਾ ॥੧੦੧॥

ਸਭ ਮਸਤ ਹਾਥੀ ਮਾਨਿੰਦ ਕਾਲੀ ਗਤ ਦੇ ॥

ਹਮ ਹ ਸੇਰ ਮਰਦਾਂ ਵ ਜੋਰਾਂ ਵਰਾ ॥

ਸਭ ਸੁਰਮੇ ਮਰਦ ਅਤੇ ਅਤਸੇ ਜੋਰ ਵਾਲੇ ॥

ਕਿਸੇਰ ਅਫਕਨਾਂ ਰਾ ਬਸਫ ਅਫਕਨਾ ॥੧੦੨॥

ਜੇ ਸੁਰਮਿਆ ਦੇ ਪਰੇ ਕੋਤਾਈ ਸਿਰਦੇ ਵਾਲੇ ਅਸੇ ਸੁਰਮੇ ਕਤੇ ਕੀਤੇ ॥

ਬਰਜਮ ਅੰਦਰੂ ਹਮਚੁ ਫੀਲ ਅਫਕਰ ਅਸਤਾ ॥ ੧੧੩ ॥

ਵਿਚ ਜੁਧਦੇ ਮਾਨਿਦੇ ਹਾਥੀ ਸਿਟਣੇ ਵਾਲੇਦੀ ਹੋ ॥

ਬ ਬਰਜਮ ਅੰਦਰੂ ਚਰਬ ਚਾਲਕ ਦਸਤਾ ॥ ੧੦੩ ॥

ਵਿਚ ਸੁਭਾਵੇ ਤੇਜਾ ਮਤੇ ਚਾਲਾਕ ਹਥਾਵੇ ਹੋਨ

ਨਿਸਾਮੇ ਦਿਹਦ ਨੇਜਰਾ ਨੇਕ ਖੀ ॥

ਨਿਸਾਨ ਦੇਵੇ ਹੋਨ ਨੇਜਰਾ ਕੇਤਾ ਏਹੀ ਠੋਕ ਖੀਨਦੇ

ਕਸੀਦੀਦ ਅਜ ਤੇਗ ਜਹਰਾ ਬਰੀ ॥ ੧੦੪ ॥

ਖੀਰੀ ਤਲਵਾਰ ਜਹਰਦੀ ਮਾਥਵਾਲੀ

ਯਕੇ ਫਉਜ ਮਾਰਾ ਸਤੁਹ ਹਮਚੁ ਕੋਹ ॥

ਇਕ ਫਉਜ ਸਦਾਗੀਰੇ ਮਾਥਵ ਪਹਾੜਦੀ ॥

ਜਵਾਨ ਨਸਾਇਸਤੁਹ ਏ ਯਕ ਗੋਰੇਹਾ ॥ ੧੦੫ ॥

ਜੁਗਮੇ ਲਾਇਕਦੀ ਇਕ ਤਮਲ

ਕਿਯੋਸੀਦ ਦਸਤਾਰ ਦਖਤਰ ਵਜੀਰਾ ॥

ਪਹੀ ਪਛੜੀ ਬੇਟੀ ਵਜੀਰਦੀ ਕੇ ਮਰਦਾਨਾ ਭੇਸ਼ਕੀਤਾ ॥

ਬਿਬਸਤੀਦ ਸਮਸੇਰ ਜਸਤੀਦ ਤੀਰਾ ॥ ੧੦੬ ॥

ਬੀਨੀ ਤਲਵਾਰ ਲਕਨਾਲ ਰੁਣਕੇਦੀ ਤੀਰ

ਬ ਸਰਦਾਰੀ ਏ ਕਰਦ ਪੇਸੀ ਨਹ ਫਉਜ ॥

ਸਰਦਾਰੀ ਕੀਤੀ ਉਸਨੇ ਪੈਲੀ ਫਉਜਦੀ

ਰਵਾ ਕਰਦ ਲਸਕਰ ਚ ਦਰੀਆਇ ਮਉਜ ॥ ੧੦੭ ॥

ਰਵਾਨਾ ਕੀਤੀ ਫੌਜ ਮਾਨਿਦ ਲਹਿਰੇ ਦਰੀਆਇਦੀ

ਯਕੇ ਗੋਲ ਬਸਤੁਹ ਚਮਬਰੇ ਸਿਆਹਾ ॥

ਇਕ ਤਮਲ ਬਣਾਇਆ ਮਾਨਿਦ ਪਾਹੁਦੀਦੀ

ਬਿਲਰਜੀਦ ਬੁਮੇਬਲ ਗਜੀਦ ਮਾਹਾ ॥ ੧੦੮ ॥

ਪਿਥਵੀ ਕੰਧੀ ਅਤੇ ਚੰਦਮਾ ਗਿਲਿਆ

ਬਿਅਵਰਦ ਲਸਕਰ ਚ ਕਰਵੈ ਹਦੁਦਾ ॥

ਲਿਆਈ ਫੌਜਕੇਤਾਈ ਜੇਹੇ ਉਪਹਰਦੇ

- ੧੧੪ ਸਲਾਹੇ ਵਿਗਰ ਤੀਰ ਤੇਰੇ ਨਮਦਾ ॥੧੦੮॥
 ਸਲਾਹਤ ਲਵਾਰ ਅਤੇ ਤੀਰ ਤੇਰੇ ਭਾਗਿਨੀ ਕੀਤੀ ਆਖਿਤੁ ਭੀ ਨਾਲ ਨਾਈ ਰੋਹੇਗਲ ਨਹੀ
 ਕਰਨੀ
- ਬਿਆਰਾ ਸਤੁ ਲਸਕਰ ਬਸਾਜੇ ਤਮਾਮਾ ॥
 ਬਣਾਇਆ ਫੋਜਨੂ ਸਾਬ ਸਬ ਅਸਬਾਬ ਦੇ ਪੂਰਣ
- ਹਮ ਹ ਖੰਜਰੇ ਗੁਰਜੇ ਗਪਾਲ ਨਾਮਾ ॥੧੧੦॥
 ਤਮਾਮ ਤਲਵਾਰੀ ਅਤੇ ਗੁਰਜੀ ਅਤੇ ਗੋਪੀਆ ਕੇ ਨਾਲ
- ਬਬਰਦੰਦ ਅਕਲੀ ਮਤਾਰਾ ਸਖਤਾ ॥
 ਲੋਹਾਈ ਵਲਾਇਤੋ ਕੁਟ ਵਲਾਇਤ ਅਖਤ ਵਲਾਇਤ ਨੂੰ ਅਖਤੀ ਨਾਲ ਲੁਟਿਆ
- ਬਿਬਰਦੰਦ ਸਹੇ ਬਾਦ ਪਾਯਾਨ ਰਖਤਾ ॥੧੧੧॥
 ਲੋਹਾਈ ਬਾਦਸਾਹੀ ਘੋੜੇ ਪਵਣੂ ਪਾਨੂ ਅਤੇ ਅਸਬਾਬ ਉਨਾਦਾ
- ਚਨਾਜੀਗ ਕਰਦੰਦ ਅਜਾ ਮੁਲਕਰਾ ॥
 ਅੰਸਾਜੁਧਕੀਤਾ ਉਸਮੁਲਕਕੇ ਤਾਈ
- ਚੁ ਬਰਗੇ ਦਰਖਤਾ ਨਿਬਾਦੇ ਸਬਾ ॥੧੧੨॥
 ਜੋਸੇ ਪਰੇ ਦਰਖਤਾ ਦੇ ਸੁਰ ਪੇਦੇ ਪੈਨ ਸੁਧੇਰੇ ਪਵਣ ਨਾਲ
- ਬਿਕੁਸਤਨ ਅਦਰਾ ਕੁਸਾਇਦ ਬਪੇਸਾ ॥
 ਸਾਬਮਾਰਨੇ ਸਤੁ ਅਦੇ ਪੇਲਿਐ ਆਪਣੇ ਅਗੇ ਕੇ
- ਬਬੇਰੂ ਜਿ ਮੁਲਕ ਸਹਿ ਮਹਿਰਹ ਰੇਸਾ ॥੧੧੩॥
 ਬਾਰਗਲਿਆ ਦਮੁਲਕ ਸੇ ਤਮਾਮ ਜੋਤਾਈ ਪਾਇਲ ਅਖਤ ਸਤੁ ਮੁਲਕ ਨੂੰ ਪਾਇਲ ਕੀਤਾ
- ਪਰੀ ਚਿਹਰਹ ਏ ਹਮਚੁ ਸੇਰੇ ਨਿਯਾਦਾ ॥
 ਪਰੀਜੈਸਾ ਮੁਹਿਰੇ ਮਹਿਦਸਿਘਰੀ ਬੇਈਦੀ (ਫਾਕਾ ਫਾਟੇ ਵਾਲੀ ਹੈ) ਵਜੀਰਦੀ ਲੜਕੀ
- ਬਿਕੁਸਤਨ ਅਦਰਾ ਕਿ ਪੰਜਰ ਕੁਸਾਦਾ ॥੧੧੪॥
 ਦਸਤੇ ਮਾਰਨੇ ਸਤੁ ਅਦੇ ਜੋ ਤਲਵਾਰ ਬੇਲੀਐ
- ਬਹਰਜਾ ਦਵੀਦੇ ਬਿਕੁਸਤੇ ਅਜਾ ॥
 ਬੀਚ ਜਿਸ ਜਾਗਾਦੇ ਦਉ ਕੇ ਜਾਈ ਉਥੇ ਹੀ ਮਾਰਦੀ
- ਬਹਰਜਾ ਰਸੀਦੇ ਬਿਕੁਸਤੇ ਅਜਾ ॥੧੧੫॥
 ਬੀਚ ਜਿਸ ਜਾਗਾਦੇ ਪਹਰਦੀ ਬੰਨ ਲਿਆਉਂਦੀ ਉਥੇ ਹੀ ਸਤੁ ਆਨੂੰ

ਸੁਏ ਦਵੀਅਜਾਂ ਸਾਹਮਾਨੀਦਰਾਂ॥

ਸੁਏ ਦਵੀਅਜਾਂ ਸਾਹਮਾਨੀਦਰਾਂ॥

ਬਤੀਦੀ ਦਰਾਮਦ ਬਜਾਇਸ ਹੁਮਾਂ॥੧੧੬॥

ਵਿਚਗੁਲੇਦੇਅਭਇਆ ਉਸੀਜਾਗਾਤੇ

ਬਰਾ ਰਾਸਤਹ ਫਉਜ ਰੂ ਨਉਬਹਾਰ॥

ਬਨਾਈਫਜਮਾਨਿਦ ਨਾਨਕ ਰਤਤੀ

ਜਿਤੋਪੋਤਪਕਖੰਜਰੇਆਬਦਾਰ॥੧੧੭॥

ਤੋਪਾ ਅਤੇ ਬੰਦੂਕਾਂ ਅਤੇ ਤਲਵਾਰਾਂਆਬਦਾਰਲਈਆਸਾਬ

ਬਪੇਸੇਸਫਾਮਦਚ ਦਰਯਾਅਮੀਕਾ॥

ਅਗੇਜੁਧਦੇਆਇਆ ਜੈਸੇ ਦੌਰਿਆ ਗੁਰੀਹੋਤਾਹੈ

ਜਿਸਿਰਤਾਕਦਮਹਮਚਅਹਨ ਗਰੀਕਾ॥੧੧੮॥

ਸਿਰਸੇਪੈਗੋਤੇਰੀ ਜੈਸੇ ਬੋਹੇ ਸੇਮਾਨਿਅੰਤਦਾਰੇ

ਬਅਵਾਜ਼ਤੋਪੋਤਮਾਚਹਤੁਫੰਗਾ॥

ਸਾਬਆਵਾਜ਼ਾ ਤੋਪਾ ਅਤੇ ਤਮਚੇ ਅਤੇਬੰਦੂਕਾਦੇ॥

ਜਿਮੀਗਸਤਹਮਚੀ ਗੁਲੇਲਾਲਹਰੰਗਾ॥੧੧੯॥

ਪ੍ਰੀਤੀਹੋਈਏ ਮਾਨਿਦ ਗੁਲੇਲਾਲੇਦੀ ਲਾਲ

ਬਮੇਦਾਂ ਦਰਾਮਦਕਿ ਦੁਖਤਰਵਜੀਰਾ॥

ਵਿਚਜੁਧਦੇ ਆਈਜੋਖਟੀ ਵਜੀਰਦੀਸੀ

ਬਯਕਦਸਤਚੀਨੀਕਮਾਂ ਦਸਤਤੀਰਾ॥੧੨੦॥

ਵਿਚ ਇਕ ਹਥਦੇਕਮਾਣਚੀਨੀਦੁਸਰੇ ਹਥਵਿਚਤੀਰਲਿਆਹੋਇਆ

ਬਹਰਜਾਕਿਪਰਾ ਸਵਦਤੀਰਦਸਤਾ॥

ਵਿਚਜਿਸਜਾਗਦੇ ਜੋ ਉਡਤੀਰ ਉਸਦੇਹਥਸੇ

ਬਸਦਪਹਿਲਵੇਪੀਲਮਰਦਾਂ ਗੁਜਸਤਾ॥੧੨੧॥

ਵਿਚ ਸੇਕਰੇਪਸਲੀਆਗਾਖੀਜੈਸੇਅੰਗਾਂਦਮੀਆਨੂੰਤੇਨਰੇਪਾਸਪਏ

ਚੰਨਮਓਜਖੇਜਦਜਿਦਰੀਆਬਸੀਰਾ॥

ਜੈਸੇਲੋਹਗਛੋਠਦੀਆਰੇ ਜੈਸੇਦੁਆਪਥਰਸੇਖਾਹੋਨੇਤੁਰਦਾਹੀ॥

ਬਰਖਸਾ ਅੰਦਰਾਮਦ ਚੁਤੇਗੇ ਨਿਰੰਗਾ ॥੧੨੩॥

ਵਿਚ ਪ੍ਰਕਾਸ ਦੇ ਆਈ ਤਲਵਾਰ ਸੁਰੀਆ ਦੇ ਪ੍ਰਕਾਸ ਤੇ ਜੋ ਮੰਦ ਆਵਿਚ ਸੀ ਮਾਰ ਪਵਾਏ ਤੇ ਸੋ ਸੁਰੀਆ ਦੇ
ਮਾਤਲਵਾਰ ਚਮਕਦੀਆਂ

ਬਤਾ ਬਸ ਦਰਾਮਦ ਯਕੇਤਾ ਬਨਾਕਾ ॥

ਪ੍ਰਕਾਸ ਵਿਚ ਮਲਇਆ ਇਕ ਪ੍ਰਕਾਸ ਹੀ ਸਾਰੇ

ਬਰਖਸੀ ਦਰਾਮਦ ਯਕੇਖੀਨ ਖਾਕਾ ॥੧੨੩॥

ਵਿਚ ਪ੍ਰਕਾਸ ਦੇ ਆਈ ਮਿਠੀ ਲਹੂ ਵਾਲੀ ਮਰਥਾਉ ਉਸਮੁਲਕ ਵਿਚ ਮਿਟੀ ਖੂਨ ਦੇ ਰੰਗ ਹੋ ਗਈ

ਬਤਾ ਬਸ ਦਰਾਮਦ ਹਮਹ ਹਿਦ ਤੇਗਾ ॥

ਵਿਚ ਪ੍ਰਕਾਸ ਦੇ ਆਈਆਂ ਸਭ ਹਿੰਦੀ ਤਲਵਾਰਾਂ

ਬਗਰੀਦ ਲਸਕਰ ਚੁਦਰੀਆਇ ਮੇਗਾ ॥੧੨੪॥

ਵਿਚ ਗਜਣ ਦੇ ਆਇਆ ਲਸਕਰ ਮਾਨਿਦ ਰੀਆਈ ਅਤੇ ਬਦਲਦੀ

ਬਰਖਸਾ ਅੰਦਰਾਮਦ ਬਚੀਨੀ ਕਮਾਂ ॥

ਵਿਚ ਪ੍ਰਕਾਸ ਦੇ ਆਈਆਂ ਚੀਨਦੀਆਂ ਕਮਾਦਾ ॥

ਬਤਾ ਬਸਾਮਦਸ ਤੇਗਾ ਹਿੰਦੇ ਸਤਾਂ ॥੧੨੫॥

ਵਿਚ ਪ੍ਰਕਾਸ ਦੇ ਆਈਆਂ ਤਲਵਾਰਾਂ ਹਿੰਦੇ ਸਤਾਂ ਦੀਆਂ

ਗਰੇਵਹ ਬਰਾਵਰਦ ਚੰਦੀ ਕੋਰੇਹਾ ॥

ਸਕਦ ਕਮਾਦਾ ਦਾ ਬਾਰਾ ਆਇਆ ਕਈ ਕੋਸ ਖੁੰਕ

ਬਗਦਰੀਦ ਦਰੀਆ ਬਦਰੀਦ ਕੋਹਾ ॥੧੨੬॥

ਵਿਚ ਕੰਬਣ ਦੇ ਆਇਆ ਦਰੀਆ ਅਤੇ ਪਾਟੇ ਪਹਾੜ

ਬਰਖਸੀ ਦਰਾਮਦ ਜਮੀਨੇ ਜਮਾਂ ॥

ਵਿਚ ਸੋਰ ਦੇ ਆਈ ਪ੍ਰਿਥਵੀ ਅਤੇ ਸਿੰਧਾਹਾ ॥

ਬਤਾ ਬਸ ਦਰਾਮਦ ਚੁਤੇਗੇ ਯਮਾਂ ॥੧੨੭॥

ਵਿਚ ਪ੍ਰਕਾਸ ਦੇ ਆਈ ਜਿਸਦੇ ਲੋਕ ਤਲਵਾਰ ਯਮਨ ਦੇ ਵਲਾਇਤ ਦੀ

ਬਤਾ ਬਸ ਦਰਾਮਦ ਨੇਜਹ ਏ ਬਾਸਤੀ ॥

ਵਿਚ ਤੇਜੀ ਦੇ ਆਇਆ ਨੇਜਹ ਬਾਸ ਦੇ ਛੋਕਾ ਵਾਲਾ

ਬਰਖਸਾ ਦਰਾਮਦ ਤੁਨੇ ਨਾਜਨੀ ॥੧੨੮॥

ਵਿਚ ਜੋਸ ਦੇ ਆਇਆ ਸਹੀਰ ਇਸਤੀਦਾ

ਬਸਰਸ ਦਰਾਮਦ ਨਫੀਰ ਹਾਇਕਹਰਾ)

ਵਿਚਰੇਲੇਕਰਨੇਦੇਆਏ ਨਗਾਰੇ ਕਹਰਕਰਨੇ ਵਾਲੇ

ਸਿਤੋਪੋਸਿਨੇਜਹ ਬਿਪੋਸੀਦ ਦਹਰਾ ॥੧੨੮॥

ਤੋਪਾ ਅਤੇਨੇਸਿਆਸੀ ਮੰਦਾਨਭਰਯੀਆ

ਬਜੀਬਸ ਦਰਾਮਦ ਕਮਾਨੇ ਕਮੀਦਾ)

ਵਿਚ ਜੋਸਦੇਆਈਆ ਕਮਾਣਾ ਅਤੇ ਕਮੀਦਾ ਅਰਥਤ ਫਾਰੀਆ

ਦਰਖਸਾ ਲਦਹ ਤੇਗਸੀਆ ਬਹਿਦਾ ॥੧੨੯॥

ਗਮਕਫੇ ਵਿਗਸਾਈਆ ਤਲਵਾਰ ਪਾਰੇਦੀਤਾਂ

ਖਜੇਸਅਮਦਹ ਖਜਰੇ ਖਾਰਖੀ)

ਵਿਚ ਜੋਸ ਦੇ ਆਈ ਤਲਵਾਰ ਲਹੁਖਾਣਵਾਲੀ

ਜੁਬਾਨੇਜਹ ਮਾਰਸ ਬਰਾਮਦ ਬਹੁੰ ॥੧੩੦॥

ਜੁਬਾਨ ਨੇਜੇਦੀ ਸੁਪਦੀਜੀਤਦੀਤ ਬਾਹਰਆਈ

ਬਤਾਬਸਦਰਾਮਦ ਤੁਫੇਤਾਬਨਾਕਾ)

ਵਿਚਪ੍ਰਗਸਦੇਆਈਆਚਾਗਾਰਗਮਕਫੇਵਾਲਾ ਅਰਥਤ ਤੋਪਾਤੇਬੰਦੂਕਾਦੀਆਨੀਆਨੇ
ਜੁਪਦਿਹਾਗਨੇਸੀਬਰਜਾਈ

ਯਕੇਸਰਖੋਗੇ ਗਿਰਦ ਜੁਦ ਗਰਦ ਖਾਕਾ ॥੧੩੧॥

ਵਿਕੀਲਾ ਲੰਗਪ੍ਰਿਥੀ ਅਤੇ ਗੀਧਕਲਾਵਾਰੀਆ ਅਰਥਤ ਖਿਥੀਲਾਤਨਾਨੇਸੀਲਾ
ਜੋਪ੍ਰਿਥੀਪਕਲਾਨਾਂਲੇਦੀਦਮੀਕਰੇਈ

ਦਹਾਦਿਹ ਦਰਾਮਦ ਸਿਤੀਰੇਤੁਫੰਗਾ)

ਸਬਦਕਰਨ ਵਿਚਆਏ ਤੀਰਾ ਅਤੇਬੰਦੂਕਾਸੇ

ਹਯਾਹਯ ਦਰਾਮਦ ਨਿਹੀਰੇ ਨਿਹੀਗਾ ॥੧੩੨॥

ਧਰਖ ਬਰਸਾਉਣਲਗੇ ਸੁਰਮੇ ਉਪਰਸੁਰਮਿਆਏ

ਚਕਾਚਕ ਬਰਖਾਸਤ ਤੀਰੇਕਮਾਂ)

ਸਬਦਉਫੇਤੀਰਾ ਅਤੇ ਕਮਾਣਾਏ

ਬਰਾਮਦਯਕੇ ਰੁਸਤਖੇਜ ਅਜਜਹਾਂ ॥੧੩੩॥

ਬਾਹਰਆਈ ਪਹਲੇ ਸੰਸਾਰਸੇ ਇਕੇ ਬਾਰ

ਨੋਪੋਇਦੁਰ ਬਰਜਿਮੀਬੁਦਜਾਂ)

ਨਤੁਭਨੇਵਾਲੇ ਨੂਬੀਉਪ੍ਰ ਪ੍ਰਿਥਵੀਦੇ ਜਾਗਾ

ਨਪਾਰਿਦਰਾ ਦਰਹਵਾ ਬੁਦ ਰਾਹਾ ॥੧੩੫॥
ਨਾ ਉਤਰੇ ਵਾਲੇ ਪੰਛੀ ਨੂੰ ਵਿਚ ਪਉਣੇ ਸਭਤਾ ਰਹਿਆ

ਚਨਾਤੀਰ ਬਾਰਦਮੀਆਨੇ ਮਜਾਫਾ ॥
ਅੰਜੀ ਤਲਵਾਰ ਬਰਸੀ ਵਿਚ ਜੁਧਦੇ ॥

ਕਿਅਜਕੁਸਤਗਾਂ ਸੁਦਜਿਮੀ ਕੋਹਕਾਫਾ ॥੧੩੬॥
ਜੇਮਰਦਿਆਨਾਲਹੋਈ ਪਿਥਵੀ ਪਹਾਨਕਾਫਜ਼ੀ ਕੋਹਕਾਫ ਪਹਾਨਕੇ ਹੁਸਾਵੇਚ

ਕਿਪਾਰਿਸਰੀ ਬੋਹਰੀਦਾਂ ਸੁਦਹਾ ॥
ਜੇਪੋਹਾਅਤੇ ਸਿਰਾਵਾਫੇਰ ਇਤਨਾਹੋਇਆ

ਕਿਮੇਦਾਪਰਅਜਗੋਇਚਉਗਾ ਸੁਦਹਾ ॥੧੩੭॥
ਜੇਮੇਦਾਨਭਗਨੋਆਖਦੇ ਅਤੇਖੁੜਿਆਸੇ

ਰਵਾਰਵ ਦਰਾਮਦ ਬਤੀਰੇਤਫੰਗਾ ॥
ਫੇਤੀਫੇਰੀ ਤੁਰਵੇਵਿਚਆਏਤੀਗਅਤੇ ਬੰਦੂਕਾ

ਕਿਪਾਰਹਸੁਦਹਖੇਦਖਿਫਤਾਂਨਜੰਗਾ ॥੧੩੮॥
ਜੇ ਪਾਦ ਗਏ ਟੋਪ ਅਤੇ ਰਿਸਤੇ ਵਿਚ ਜੁਧਦੇ ॥

ਚਨਾਤੀਰ ਤਾਬਸਤਪੀਦਮਾਫਤਾਬਾ ॥
ਮੋਸੇਤਲਵਾਰਦਾਪ੍ਰਕਾਸਹੋਏਜੋ ਸੂਰਜ ਤਪਾਗਿਆ ॥

ਦਰਖਤਾਂਨਸੁਦਹਖਸਕ ਦਰਲਾਇਆਬਾ ॥੧੩੯॥
ਦਰਖਤ ਸੁਕਗਏ ਅਤੇ ਰਗਿਆਦਾ ਪਾਣੀ ਸੁਕਾਗਿਆ ॥

ਚਨਾਤੀਰ ਬਾਰਾਂਸੁਦਹਹਮਦੁਬਰਕਾ ॥
ਅੰਜੀਤੀਰਾਦੀਬਰਖਾਹੋਈ ਜੋਸੇ ਬਿਜਲੀ ਹਮਕਦੀਏ

ਬਿਅਫਤਾਦਸੁਦਫੀਲਚੰਫਰਕਫਰਕਾ ॥੧੪੦॥
ਹੁਥਗਏ ਹਾਥੀ ਵਿਚ ਲਹੁਣੇ ਰੋਟੀ ਰੋਟੀ ਤਕ

ਬਹਰਬਅਦਿਰਾਮਦਵਜੀਰੇਚੁਬਾਦਾ ॥
ਵਿਚਜੁਧ ਅੰਝਮਾਇਆ ਵਜ਼ੀਰ ਜੋਸੇ ਪਵਣਆਵਦੀਏ ॥

ਲਕੇਤੀਰਮਾਈਦਰਨੀਕੁਸਾਦਾ ॥੧੪੧॥
ਇਕ ਤਲਵਾਰ ਮਾਯੀਵਾਦਾਲੀ ਬੋਲੀਹੋਈਹਥਾਵੇਚ

ਦਿਗਰ ਤਰਫ ਆਮਦ ਬਦਖਤਰ ਅਜਾਂ।

ਦੁਸਰੇ ਪਾਸੇ ਤੇ ਆਈ ਵਜੀਰਦੀ ਨੌਜਵਾਨੀ

ਬਰਹਮਾ ਯਕੇ ਤੇਗ ਹਿੰਦੁਸਤਾਂ ॥੧੪੨॥

ਨਗੀ ਇਕ ਤਲਵਾਰ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨੀ ਹਥ ਵਿਚ

ਦਰਖਸ਼ਾ ਸਦਹ ਹਮਰੂਨ ਤੇਗ ਤੇਜ਼।

ਚਮਕਣੇ ਵਾਲੀ ਹੋਈ ਅੱਖੀ ਤਲਵਾਰ ਤਿਖੀ

ਅਦਰਾ ਅਜੇ ਦਿਲ ਸੁਫ ਦ ਰੇਜ ਰੇਜ ॥੧੪੩॥

ਸੁਰ ਵੇਉ ਸਸੇ ਦਿਲ ਹੋਵੇ ਟੁਕੜੇ ਟੁਕੜੇ

ਯਕੇ ਤੇਗ ਜਦ ਬਰ ਜਰੇ ਫਿਸਮੀਦਾ।

ਇਕ ਤਲਵਾਰ ਮਾਗੀ ਉਪਾਸਿਰ ਹੋਸਮੀਦ ਵਜੀਰਦੇ ਉਸਦੀ ਥੋਟੀ ਨੇ

ਜਿਮੀਨ ਸਦਰਾਮਦ ਰੁਕੇ ਰੁਕੇ ॥੧੪੪॥

ਪ੍ਰਥਵੀ ਉਪਰ ਆਇਆ ਜੈਸੇ ਪਹਾੜ ਭਾਰੀ ਗਿਰਦਾਰੇ।

ਦਿਗਰ ਤੇਗ ਓਰਾ ਬਿਜਦ ਕਰਦ ਨੀਮਾ।

ਦੁਸਰੀ ਤਲਵਾਰ ਸੇ ਉਸਕੇ ਤਾਈ ਮਾਰਕੇ ਕੀਤੇ ਉਸਦੇ ਦੋ ਟੁਕੜੇ।

ਬਿਉਫਤਾਦ ਬੀਮ ਸਚ ਕਰਖੇ ਅਜੀਮਾ ॥੧੪੫॥

ਤਿਗ ਪਿਯਾ ਪ੍ਰਥਵੀ ਉਪਰ ਜੈਸੇ ਚੁਬਾਰਾ ਭਾਰੀ ਤਿਗ ਦਾਰੇ।

ਦਿਗਰ ਮਰਦ ਆਮਦ ਰਪਰਰਾ ਉਕਾਬਾ।

ਦੁਸਰਾ ਮਰਦ ਆਇਆ ਜੈਸੇ ਉਰਦੇ ਵਾਲਾ ਉਕਾਬ ਪੰਛੀ ਆਵਰਾਹੇ।

ਬਿਜਦ ਤੇਗ ਓਰਾ ਬਕਰ ਦਸ ਖਰਾਬਾ ॥੧੪੬॥

ਮਾਗੀ ਤਲਵਾਰ ਉਸਕੇ ਤਾਂਈ ਅਤੇ ਕੀਰਾ ਉਸ ਨੂੰ ਖਰਾਬ

ਚਕਾਰੇ ਵਜੀਰਸ ਬਰਾਹਤ ਰਸੀਦਾ।

ਜਦੋਂ ਕੀਮ ਵਜੀਰਦਾ ਸਾਥ ਅਗਮ ਦੇ ਪਹੁੰਚਿਆ ਅਥਾਹ ਵਜੀਰ ਜਦੋਂ ਮਾਰ ਗਇਆ

ਦਿਗਰ ਮਿਹਨ ਤੇ ਸਿਲਮ ਆਮਦ ਪਦੀਦਾ ॥੧੪੭॥

ਦੁਸਰਾ ਮਾਰਿਆ ਤੀਜਰਾ ਸੂਰਮਾ ਆਇਆ ਪ੍ਰਗਟ ਹੋਇਕੇ

ਸਿਲਮ ਦੇਵ ਆਮਦ ਬਗਲਤੀ ਦ ਖੁੰ।

ਤੀਸਰਾ ਦੇਵ ਆਇਆ ਇਹ ਲੜੇ ਦੇ ਲਿਖਤ ਗਿਆ ਓਹ ਥੀ।

ਜਿ ਦਹਲੀਜ਼ ਦੇ ਜਖ ਬਰਾਮਦ ਬਰੀ॥੧੪੮॥
ਦਹਲਾ ਜੇ ਨਰਕਸੇ ਆਇਆ ਬਾਹਰ ਫੇਰ ਓਥੇ ਹੀ ਰਹੇ॥

ਬਿਕਸਤੀ ਦ ਓਰਾ ਦੁਕਰੀ ਦ ਤਨਾ॥
ਮਾਧਿ ਉਸਕੇ ਗਾਂਈ ਅਤੇ ਵੇਟਕਣੇ ਉਸਦੇ ਕੀਤੇ ਸਗੀਰਦੇ॥

ਚੁਸੇ ਰੇ ਲਿਆਹਮ ਚੁਗੇ ਰੇ ਕਹਨਾ॥੧੪੯॥
ਮਾਧਿ ਦੁਗੀਧੀ ਪਦੀ ਜੋਸੇ ਗੋਰਖ ਨੂੰ ਪਾਣ ਨਿਟਵਾਏ॥

ਚਹਾਰਮ ਦਰਾਮਦ ਚੁਸੇ ਰੇ ਬਜੀਰਾ॥
ਚੋਥਾ ਪੁਰਮਾ ਆਇਆ ਜੋਸੇ ਸਿੰਘ ਜੁਧ ਕੇ ਆਵਦਾਏ॥

ਚੁਬਰ ਬਚਹੁ ਏ ਗੋਰ ਗਰਗਾਂ ਪਿਲੀਰਾ॥੧੫੦॥
ਜੋਸੇ ਉਪੁ ਬਰੇ ਗੋਰਖ ਦੇ ਗਜ ਕੇ ਰਿਹਾ ਆਵਦਾਏ॥

ਚੁਨਾ ਤੇਗ ਬਰਦੈ ਬਿਜ ਦ ਨਜ਼ਨੀ॥
ਮਾਂਸੀ ਤਲਵਾਰ ਉਪੁ ਉਸਦੇ ਮਾਗੀ ਇਸਤੀਨੇ॥

ਕਿ ਅਜ ਪੁਸਤ ਮਸਪਸ ਦਰਾਮਦ ਜਿਮੀ॥੧੫੧॥
ਜੋ ਪਿਠ ਘੋੜੇ ਸੇ ਆਇਆ ਪਿਥਵੀ ਉਪੁ॥

ਕੈ ਪਜਿਮ ਦਰਾਮਦ ਚਦੇਵੇ ਅਜੀਮਾ॥
ਜੋ ਪੰਜਵਾ ਪੁਰਮਾ ਆਇਆ ਜੋਸੇ ਵੇਤਗੀਰੇ ਦੇ॥

ਕਕੇ ਜਖ ਮਜਦ ਕਰਦ ਹੁਕਮੇ ਕਰੀਮਾ॥੧੫੨॥
ਇਕ ਦਾਟ ਉਸਕੇ ਤਾਈ ਕੀਤਾ ਹੁਕਮ ਵਾਹਗੁਰੂ ਸੇ॥

ਚੁਨਾ ਤੇਗ ਬਰਦੈ ਜਦਹ ਖ ਬਰੀਰਾ॥
ਮਾਂਸੀ ਤਲਵਾਰ ਮਾਗੀ ਉਪੁ ਉਸਦੇ ਤਲੇ ਰੰਗ ਵਾਈ॥

ਜਿ ਸਹਤੁ ਕਦਾਮ ਆਮਦ ਹ ਜੇਰ ਤੀਰਾ॥੧੫੩॥
ਸਿਰਸੇ ਪੀਰਾ ਤੇ ਕੀਕਟ ਕੇ ਆਈ ਹੇ ਨਤੀਗਾਘੇੜੇ ਤਲਵਾਰਾ॥

ਸੁਮਸਦੇਵ ਆਮਦ ਚ ਅਫਰੀਤ ਮਸਤੁ॥
ਫੀਵਾਂ ਦੇਵ ਸਾਇਸਾ ਸਾਨਿਦ ਦੇਵ ਸਸਤਦੀ॥

ਸਿਤੀਰੇ ਕਮਾਹਾ ਚੁ ਕਬਜਹ ਰਜਸਤੁ॥੧੫੪॥
ਤੋਰਿ ਜਿਸਤਰਾ ਕਸਟੁ ਸ ਅਤੇ ਜੋਸੇ ਕਬਜੇ ਸੇ ਤਲਵਾਰ ਨਿਕਲਦੀ ਹੈ॥

ਇਸਦੇ ਤੇਰੇ ਚਿਰਾ ਕਿਚਿਨੀ ਮਸੁਦਾ।

ਮਾਰੀ ਤਲਵਾਰ ਉਸਦੇ ਤਾਈ ਅਤੇ ਉਸਦੇ - ਦੋ ਟੁਕੜੇ।

ਕਿ ਦੀਗਰ ਬਲਾਰ ਮਜੇ ਬੀ ਮਸੁਦਾ। ੧੫੫

ਜਿ ਦੁਸਰੀਆ ਬਲਾਵ ਕੇ ਤਾਈ ਉਸਦੇ ਮਰਨੇ - ਤੇਰੇ ਹੋਇਆ।

ਚਿਨੀ ਤਾਬ ਮਿਕਦਾਰ ਹਫਤਾ ਦਮਰਦਾ।

ਇਸੀ ਪ੍ਰਕਾਰ ਸਤ ਆਦਮੀ ਨੂੰ ਮਾਰਿਆ।

ਬੁਤੇਗ ਮੰਦਰ ਮਾਏ ਪਤ ਪਾਸ ਜਨ ਬਰਦਾ। ੧੫੬

ਇਹ ਤਲਵਾਰ ਦੇ ਲਫਕਾਏ ਜੁਧ ਵਿਚ (ਅ:) ਤਲਵਾਰ ਨਾਲ ਮਾਰੇ।

ਦਿਗਰ ਕਸ ਨਿਆ ਮਦ ਤੁਮ ਨਿਏ ਜੰਗ।

ਦੁਜੇ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਨਾ ਆਈ ਇਛਾ ਜੁਧ ਦੀ।

ਕਿ ਬੇਰ ਨਿਆ ਮਦ ਦਿਲਾਵਰ ਨਿਹੰਗ। ੧੫੭

ਜੇਬਾਹਰ ਨਾ ਆਇਆ ਕੋਈ ਸੁਰਮਾ ਸਿੰਘ ਜੁਧ ਨੂੰ।

ਬਹਰ ਬਾ ਮਦਸ ਸਾਹ ਮਾਯੀ ਦਰਾ।

ਇਹ ਜੁਧ ਦੇ ਆਇਆ ਬਾਦਸਾਹ ਮਾਯੀ ਦਾ ਵਾਸ।

ਬਤਾ ਬਲ ਤਪੀ ਦਨ ਦਿਲੇ ਮਰਦਮਾਂ। ੧੫੮

ਜੇਸ ਵਿਚ ਆਇਆ ਦਿਲ ਸੂਰੀ ਮਾਯਾ ਦਾ।

ਰੁਮ ਬਰਸ ਤੁਗ ਮੰਦਾ ਪਤ ਦੋਰੇ ਯਲਾਂ।

ਮਾਯੀ ਦੇ ਬਦਲ ਦੀ ਪੈਰ ਸਿਟੇ ਸੂਰਮਿਆ ਦੇ ਤੁਮਰ ਨੇ।

ਬਰਖਸੀ ਦਰਾ ਮਦ ਜਹੇ ਮਾਯਮਾਂ। ੧੫੯

ਇਹ ਪ੍ਰਕਾਰ ਦੇ ਆਇਆ ਵਾਹ ਵਾਹ ਮਕਾਸ਼

ਬਤਾ ਬਲ ਦਰਾ ਮਦ ਜਿ ਮਨਿ ਜਮਨਾ।

ਇਹ ਪ੍ਰਕਾਰ ਦੇ ਆਇਆ ਪ੍ਰਭਾਵੀ ਅਤੇ ਸੰਸਾਰ।

ਦਰਖਸਾ ਜੁਦਹ ਤੇਗ ਹਿੰਦੀ ਯਮਨਾ। ੧੬੦

ਰਾਮਕਟੇ ਵਾਲੀ ਹੋਈ ਤੇ ਤਲਵਾਰ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਦੀ ਯਮਨ ਵਲਾਇਤ ਵਿਚ

ਰਲ ਚਲ ਦਰਾ ਮਦ ਕਮਨੇ ਕਮੀਦਾ।

ਦੇਹ ਦੇਹ ਦੇ ਵਿਚ ਆਈਆ ਕਮਾਵ ਅਤੇ ਫਾਹੀਆ।

ਹਯਾਹਯਾ ਦਰਾਮਦ ਬਗਰਜੇ ਗਾਜੀਦਾ ॥੧੬੧॥
 ਬਾਰਸ ਕਰਨੇ ਲਗੇ ਸੂਰਮੇ ਸਾਥ ਗੁਰਜਾ ਪੀੜਾ ਦੇਵੇ ਵਾਲੀਆ ਸੇ

ਚਕਾ ਚਕ ਬਰਖਾਸਤ ਤੀਰੇ ਤੁਫੰਗਾ ॥
 ਸਬਦ ਉਠੇ ਤੀਰਾਰੇ ਅਤੇ ਬੰਦੂਕ ਦੇ ॥

ਜਿਮੀਲਾਲ ਬੁਦ ਚੰਗਲੇ ਲਾਲ ਹਰੀਗਾ ॥੧੬੨॥
 ਪ੍ਰੀਤੀਲਾਲ ਹੋਈ ਸੋਸੇ ਫੂਲ ਗੁਲ ਲਾਲੇ ਦਾ ਰੰਗ ਹੁੰਦਾ ਤੇ ॥

ਹਾਹੁ ਦਰਾਮਦ ਚੁਪੁਹਨ ਅੰਦਰੀ ॥
 ਹਾਇ ਹਾਇ ਦੇਵਿਚ ਆਇ ਜਦ ਫਟੇ ਹੋਏ ਜੁਧ ਵਿਚ

ਦਹਾਇਹ ਸਦਹ ਖੰਜਰੇ ਖਾਰਹ ਪ੍ਰੀ ॥੧੬੩॥
 ਦੋਹ ਦੇਹ ਹੋਈ ਤੁਲਵਾਰ ਲਾਹੁ ਖਾਵੇ ਵਾਲੀਦੀ ॥

ਬਰਖਸੀ ਦਰਾਮਦ ਯਕੇ ਤਾਬ ਹੀਗਾ ॥
 ਵਿਚ ਪ੍ਰਕਾਸ ਦੇ ਆਇ ਇਕਹੀ ਰੰਗ ਦੇ ਸੂਰਮੇ ॥ (ਅ:) ਵਜੀਹ ਅਤੇ ਵਜੀਹ

ਬਰਖਸੀ ਦਰਾਮਦ ਦੁ ਤਾਲਾਕ ਜੀਗਾ ॥੧੬੪॥
 ਵਿਚ ਰਮਕਾਰੇ ਦੇ ਆਇ ਦੋਹਾਂ ਤਰਫਾਂ ਦੇ ਸੂਰਮੇ ਜੁਧ ਵਿਚ ॥

ਬਸਰਸ ਦਰਾਮਦ ਸਰਫੀਲ ਸੂਰਾ ॥
 ਵਿਚ ਗਜਵੇ ਦੇ ਆਇਆ ਸਿਵਜੀ ਦਾ ਸੰਖ ॥

ਬਰਖਸੀ ਦਰਾਮਦ ਤਨੇ ਖਾਸ ਹੁਗਾ ॥੧੬੫॥
 ਵਿਚ ਰਮਕਾਰੇ ਦੇ ਆਇਆ ਸਰੀਰ ਇੰਦ੍ਰ ਕਰ ਕੇ ਇਸਤਰੀ ਦਾ ॥

ਬਸਰਸ ਦਰਾਮਦ ਸਿਤੁ ਦਰਖਰਸਾ ॥
 ਵਿਚ ਸੇਰਕਰਨੇ ਦੇ ਆਇਆ ਸਰੀਰ ਸੇ ਸੇਰੇ ॥ (ਅ:) ਗੁਸਾ ਸਰੀਰ ਬਾਹਰਿਆ ॥

ਬਬਾਜਾਇ ਮਰਦਾ ਬਰਾਵਰ ਦਜੀਸਾ ॥੧੬੬॥
 ਗਾਂ ਸੂਰਮਿਆਈ ਬਾਰ ਆਇਆ ਉਬਾਲਾ ॥

ਯਕੇ ਫਰਮ ਮਾਰਾਸਤਿ ਸਰਖ ਮਾਤਿਲ ਸੇ ॥
 ਇਕ ਫਰਸ ਸਵਾਰਿਆ ਲਾਲ ਅਤੁਲਸ ਦਾ ॥ (ਅ) ਜੁਧ ਭੂਮੀ ॥

ਬਖੰਨਦ ਚਮਕਤ ਬਜਬਾ ਪਹਲੂਏ ॥੧੬੭॥
 ਪੜਦੇ ਸੋਸੇ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਮੇ ਵਿਦਿਆ ਪਹਿਲਵੀ ॥

ਕਮਰਦਮਚਨਕਸਤਹਸਦਕਾਰਜਾਰਾ।

ਮਾਦਮੀਇਤਨੇਮਾਰੇਗਏ ਜੁਧਵਿਚ ਮੇਦਾਨ ਦੇ

ਸਬਾਦਰਗਜਾਰਮਨਿਯਾਯਦਸੁਮਾਰਾ॥੧੬੮॥

ਰਿਸਨਾ ਮੇਰੀ ਗਿਣਤੀ ਨਹੀ ਕਰ ਸਕਦੀ ਤੇ॥

ਗਰੇਜਾਇਦਸਾਹਮਾਯੀਦਰਾਂ॥

ਭੁਜਵੇਵਾਲਾ ਹੋਇਆ ਬਾਦਸਾਹਮਾਯੀਦਰਾਂ

ਕੁਸਤਦਲਸਕਰਗਿਰਾਂਤਾਗਿਰਾਂ॥੧੬੯॥

ਹਿਰਿਆਲਸਕਰਭਾਰੀਸੇਭਾਰੀ (ਅ:) ਬਹੁਤਮੋਏ॥

ਕਿਪੁਸਤਸਬਅਫਤਾਦਦੁਖਤਰਵਜੀਰਾ॥

ਕਿਸਵਾਸਤ ਜ ਪਿਛੇਊਸਦੇ ਪਈ ਬੇਈ ਵਜੀਰ ਦੀ॥

ਬਿਬਸਤੀਦਓਰਾਵਕਰਦੀਦਅਜੀਰਾ॥੧੭੦॥

ਬੀਨਿਆ ਉਸਬਾਦਸਾਹਕੇਤਾਈਅਤੇਕਰਲਿਆਕੇਦਾ॥

ਬਿਨਿਜਦੇਬਮਾਵਰਦਜੇਸਾਹਖੇਸਾ॥

ਪਾਸਲਿਆਈ ਉਸਨੇ ਮਾਪਦੇਬਾਦਸਾਹਦੇ॥

ਬਿਗਫਤਹਕਿਏਸਾਹਸਾਹਨਵੇਸਾ॥੧੭੧॥

ਕੋਹਦੀਜੇਏਸਾਹਸਾਹ ਬਤੇ

ਬਿਗਯਦਕਿਏਸਾਹਮਾਜੀਦਰਾਂ॥

ਕਿਹਾਜੇਇਹ(ਕੇਦੀ) ਸਾਹਨਸਾਹ ਮਾਯੀਦਰਾਂਦਾਹੇ॥

ਬਿਬਸਤਹਬਮਾਵਰਦਨਿਜਦੇਸੁਮਾਂ॥੧੭੨॥

ਬੀਨਕੇ ਬਿਮਾਈਹੋ ਪਾਸ ਤੇਰੇ॥

ਅਗਰਤੇਬਿਗਈਬਜਾਈਬਰਮਾ॥

ਸੇਕਰਤੁਕਹੇਮੇਰੇਕੇ ਤਾਇਸਕੇਤਾਈ ਜਾਨਸੇ ਮਾਰੂ

ਦਗਰਤੇਬਿਗਈਬਜੀਦਾਂਦਿਹਮਾ॥੧੭੩॥

ਸੇਕਰਤੁਕਹੇਮੇਰੇਕੇ ਤਾਇਸਨੂੰ ਕੇਦਵਿਚਵੇਵਾ॥

ਬਾਜੀਦਾਂਸਪਰਦੀਦਓਰਾਅਜੀਮਾ॥

ਵਿਚਕੇਦਖਾਨੇ ਵੱਡੇਦੇਸੀਪਾਉਸਕੇਤਾਈ॥

੧੨੪ ਸਿਤਾਨਦ ਅਜੇ ਤਾਜ ਸਾਹੀ ਕਲੀਆ ॥੧੭੪॥
ਭੇਦੋ ਉਸਸੇ ਛੜ ਬਾਦਸਾਹੀ ਦੀ ਵਲਾਇਤਦਾ ॥

ਸਾਹਨ ਸਾਹਗੀਆ ਫਤਹੁਕਮੇ ਰਜਾਕਾ ॥
ਸਾਹਨ ਸਾਹੀਪਾਈ ਹੁਕਮ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਤੇ

ਕਸੇ ਦਸਮਨ ਰਾਕੁਨਦ ਚਾਕ ਚਾਕਾ ॥੧੭੫॥
ਜੇਕੋਈ ਮੁੜਾਕੇਤਾਈ ਕਰੇ ਟੁਕੜੇ ਟੁਕੜੇ

ਚਨਕਰਦਸਦ ਕਸਦੀ ਮਿਹਨਤ ਕਸੇ ॥
ਮੇਸੀਕੀਤੀ ਤੇ ਕਾਈ ਅਤੇ ਮਿਹਨਤ ਕਿਸੀਨੇ ॥

ਕਿਰਹਮਤ ਬਿਬਖਸੀਦੇ ਜੇ ਕਮਤੇ ॥੧੭੬॥
ਜੇ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਕਿਰਪਾ ਕਰਦਾ ਤੇ ਅਪਣੀ ਕੋਰਪਾਸ

ਕਿਰਸਾਹ ਬਾਨੀ ਸਦੇ ਮਲਕ ਸਾਹ ॥
ਜੇਹੋ ਫਜੀਰਦੀ ਬੇਰੀ ਰੋਲੀ ਰੋਲੀ ਅਤੇ ਹੋ ਮਲਕਦਾ ਬਾਦਸਾਹ ਹੋਇਆ

ਕਿ ਸਾਹੀ ਹਮੀਆ ਫਤਹੁਕਮੇ ਇਲਾਹ ॥੧੭੭॥
ਜੇ ਬਾਦਸਾਹੀ ਮੇਸੀਪਾਈ ਹੁਕਮ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਤੇ ॥

ਕਿ ਦਿਹ ਸਾਕੀਆ ਸਾਗਰੇ ਸਬਜ ਮਾਕਾ ॥
ਦੇਹ ਸੁਖਈਆ ਪਿਆਲਾ ਹਰੇ ਪਾਣੀ ਵਾਲਾ (ਅ:) ਸੁਖਨਿਯਨਦ

ਕਿ ਬੋਰ ਬਿਅਫਤਾਦ ਪਰਦਹ ਨਿਕਾਸ ॥੧੭੮॥
ਕਿਸਦਾਸਤੈ ਜੇ ਬਾਹਰ ਪਿਆਏ ਪੜਦਾਇ ਪੈਰੇਤੈ ॥

ਕਿ ਦਿਹ ਸਾਕੀਆ ਸਬਜ ਰੀਰੀ ਟਿਰੀਗਾ ॥
ਦੇਹ ਸੁਖਈਆ ਪਿਆਲਾ ਹਰੇ ਰੀਰੀ ਟਿਰੀਗਵਾਲਾ (ਅ:) ਟਿਰੀਗੀਤੁ ਦੀ ਰਸਮ

ਕਿ ਟਕਤੇ ਬਕਾਰਸਤ ਅਜ ਰੇਜ ਜੀਗਾ ॥੧੭੯॥
ਜੇ ਫਿਰ ਕੇਲੇ ਚਾਹੀਦਾ ਤੇ ਇਨ ਜੋਧ ਸੇ (ਅ:) ਜੋਧਦੇ ਵੇਲੇ ਸੀਮਾ ਵਦਾਏ

ਜੇਕੋਈ (ਅ:) ਦੇਖ ਇਸੀ ਪੁਰਾਣ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਚਾਹੇ ਤਨਕੀਆਨੂੰ ਬਾਦਸਾਹੀ
ਜੇਕੋਈ ਜੇਕੋਈ ਸਹੀਰਾਖਾ ਜੇ ਪ੍ਰਗਟ ਹੋਵਾਨੇ ॥

ਕਿ ਕਾਟਤ ਯਾਰਵੀ ਚਲੀ
੧੮ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫਤਹਾ ॥

ਤੁਈ ਰਾਜੁ ਤੀਰਮਾਸੁ ਤੁਵਤਮਾ ਦੁਗਾ॥
(ਤੇ ਵਾਹਿਗੁਰੂ) ਤੁਹੀ ਰਾਜੁ ਪਾਸੁ ਕਰੇ ਵਾਲਾ ਪੈ ਮਾਦਗੀ ਵਾਲਿਆ ਦੇ॥

ਤੁਈ ਕਾਰ ਸਾਜ ਅਸਤੁ ਬੈਰਾਰਗਾ॥੧॥
(ਤੇ ਵਾਹਿਗੁਰੂ) ਤੁਹੀ ਕੀਰਨ ਕਰੇ ਵਾਲਾ ਪੈ ਬੈਰਾਰਿਆ ਦੇ॥

ਸਾਹ ਸਾਹ ਬਖਸ਼ਿ ਦੁਏ ਬੇ ਨਿਆਸੁ॥
(ਤੇ ਵਾਹਿਗੁਰੂ) ਤੂੰ ਬਾਦਸਾਹ ਦਾ ਬਾਦਸਾਹ ਅਤੇ ਬਖਸਸ ਕਰਦੇ ਵਾਲਾ ਅਤੇ ਬੇ

ਜਿਮੀਨੇ ਜਮਾਨਾ ਤੁਈ ਕਾਰ ਸਾਜ॥੨॥ ਪ੍ਰਵਾਰ ਪੈ
(ਤੇ ਵਾਹਿਗੁਰੂ) ਪ੍ਰਿਥੀ ਦਾ ਅਤੇ ਅਕਸਰ ਤੁਹੀ ਕੀਰਨ ਸਵਾਲੇ ਵਾਲਾ ਪੈ॥

ਹਕ ਯਤੁ ਜਨੀ ਦੇ ਮਸਾਹੇ ਕਾਲਿਜਰਾ॥
(ਮਹਾਬਹਾਦਰ) ਕਸਾਬਦੀ ਤੇ ਹਮਨੇ ਬਾਦਸਾਹ ਕਾਲਿਜਰਦੀ॥

ਕਨਕੀ ਦਯਕ ਦਰ ਚੁ ਅਜ ਕੋਹ ਮਜਿਰਾ॥੩॥
ਕੀਤਾ ਉਸੇ ਇਕ ਦਰਵਾਜਾ ਘਰ ਦਾ ਮਜ਼ਿਦ ਪਹਾੜ ਦੀ ਖਿਚ ਕੇ॥

ਸਰੇ ਪਿਸਰ ਓ ਬੁਦ ਹੁਸਨਲ ਜਮਾਲਾ॥
ਇਕ ਬੇਰਾ ਸਿਦਕੀ ਰੂਪਰਾ ਭੰਦ

ਕਿਲਾਇਕ ਜਹਾ ਬੁਦ ਅਜ ਮੁਲਕ ਮਾਲਾ॥੪॥
ਜਿਲਾਇਕ ਸੀਸਾਰ ਦੇ ਮੁਲਕ ਅਤੇ ਮਾਲ ਦੇ ਅ॥ ਬਾਦਸਾਹੀ ਦੇ ਜੋਗ

ਸਰੇ ਸਾਹ ਓ ਜਾਉ ਦਖਤਰ ਮਜੀ॥
ਇਕ ਸਾਹੂਕਾਰ ਓਸੀ ਜਾਗਾ ਦਾ ਉਸ ਦੇ ਘਰ ਬੈਠੀ ਸੀ॥

ਕਿ ਦੀਗਰ ਨਜਨ ਬੁਦ ਸਮਨ ਬਰਕਜੀ॥੫॥
ਜੇ ਦੂਸਰੀ ਇਸਕੀ ਨਹੀਥੀ ਉਸ ਜੇਸੀ ਹੁੰਦ ਕਲੀ ਦੇ ਪਤੇ ਜੇਸੀ

ਦਸ ਦਖਤਰੇ ਸਾਹ ਪਿਸਰੇ ਸਿਸਾਹ॥
ਉਸ ਸਾਹੂਕਾਰ ਦੀ ਬੇਰੀ ਬਾਦਸਾਹ ਦੇ ਬੈਠੇ ਸੀ॥

ਸੁਦ ਮਾਸ ਦਤੁਹ ਬਰਦੇ ਚ ਬਰਸਾ ਮਸ ਮਾਤਾ॥੬॥
ਪੇਸ਼ ਕਰਨੇ ਵਾਲੀ ਤੇਈ ਉਸ ਉਪਰ ਜੇਸੇ ਸੁਰਜ ਉਪਰ ਚੰਦਰਾ ਰਹਿੰਦੇ॥

ਬਿਗੋਲਦ ਕਿਉ ਸਾਹ ਮਾਰਾ ਬਿਕਨਾ॥
ਸਾਹੂਕਾਰ ਦੀ ਬੇਰੀ ਕੋਲੀ ਜੇਏ ਬਾਦਸਾਹ ਅਤੇ ਤੁਈ ਤੁਹੀ ਆਪਣੀ ਬਣਾਏ

੧੨੬ ਕਿ ਦਹਸਤ ਕਸ ਮਰਦ ਦੀ ਗਰਮ ਕੁਨਾ ॥ ੭ ॥
ਜੇ ਭਰ ਕਿਸੀ ਆਦਮੀ ਦੁਸਰੇ ਦਾ ਨਾਕਰ

ਸਨੀਦਮ ਕਿ ਦਰਸਾਹਿ ਦੋਸਤਾਂ ॥
(ਉਹ) (ਸਹਜਾ ਦੇ ਨੇ ਕਿਹਾ) ਮੇਲੇ ਸੁਣਾਏ ਜੇ ਇਹ ਬਾਦਸਾਹੀ ਦੋਸਤਾਨ ਦੇ ॥
ਕਿ ਨਾਮੇ ਫਜਾ ਜੇਰ ਸਾਹੇ ਫਜਾ ॥ ੮ ॥
ਸਿਸਦਾ ਨਾਮ ਸੇਰ ਸਾਹਏ ਉਸਸੇ

ਚਨਾਨ ਸਤ ਦਸਤੁਰ ਮੁਲਕੇ ਖੁਦਾ ॥
ਮੇਸਾਹੇ ਕਾਨੂਨ ਮੁਲਕ ਖੁਦਾ ਦੇ ਉਸਨੇ ਕੀਤਾ

ਬਯਕ ਦਾਨਾ ਬੇਗਸਾ ਹੇਜਦ ਜਦਾ ॥ ੯ ॥
ਇਕ ਦਾਨਾ ਹੋਵੇ ਕਿਸੀ ਦਾ ਤਾਂ ਦੁਸਰਾ ਜੁਦਾ ਕਰ ਦਿਵਾਏ ॥

ਬਿਗੀਰਦ ਸਾਹੀ ਬਿਅਫਤਾ ਦ ਤੁਰਗਾ ॥
ਪਕੜਦਾਏ ਸਾਹੀ ਕੀ ਤਾਂ ਤੁਲਿਆ ਘੋੜਾ ਸਿਸਦੇ ਉਪਰ

ਬਪੇਸੇ ਗਰੇਜਦ ਚ ਅਜ ਬਜ ਮਰਗਾ ॥ ੧੦ ॥
(ਸਤ੍ਰ ਉਸਦੇ) ਅਗੇ ਤੇ ਭਜ ਜਾਦਾਏ ਜੇਸੇ ਬਾਜਤੋ ਪੰਛੀ ਭਜਦਾਏ ॥

ਬਿਗੀਰਦ ਅਜੇ ਹਰਦ ਅਸਪੇ ਕਲਾਂ ॥
ਖਰੀਦੇਏ ਉਸਨੇ ਦੋਘੋੜੇ ਫੜੇ ਭਥੀ

ਕਿ ਮੁਲਕੇ ਅਰਾਕਸ ਬਿਯਾਮਦ ਅਜਾ ॥ ੧੧ ॥
ਜੇ ਮੁਲਕ ਅਰਾਕਸੇ ਆਏਏ ਉਸਪਾਸ

ਬਿਬਖਸੀ ਦਓਰਾ ਬਸੇ ਜਰਦ ਫੀਲਾ ॥
ਬਖਸੀਸ ਕੀਤੇਏ ਉਸ ਲਿਆ ਉਫੇ ਵਾਲੇ ਕੇਤਾਈ ਦੇ ਗਾਥੀ ਵਿਲਤੇ

ਕਿ ਬੇਰੀ ਬਿਯਾਵਰਦ ਦਰੀਯਾ ਦਿਨੀਲਾ ॥ ੧੨ ॥
ਕਿਸਵਾਸਤੇ ਜੇ ਇਹ ਬਾਹਰ ਨੇ ਆਇਆ ਹੈ ਦਰਯਾ ਨੀਲਤੋ ॥

ਯਕੇਨਾਮ ਗਹ ਸਗਹ ਦਿਗਰਾ ॥
ਇਕ ਦਾਨਾਮ ਗਾਹਏ ਅਤੇ ਦੁਸਰੇ ਦਾਨਾਮ ਸੁਗਾਹ ਏ ॥

ਚਮਾਹ ਕਲਾਂ ਪਾਇ ਅਜੀਮੇ ਦਨਗਾ ॥ ੧੩ ॥
ਜੇਸੇ ਜੇਰੇ ਹਰਨ ਹੁੰਦੇਏ ਤੇ ਪੇਰੇ ਵਡੇ ਵਡੇ ਅਤੇ ਵੇਰੇਹੀ ਨਰਏ ॥

ਅਗਰ ਅਸਪ ਹਰਦੇ ਅਜਮੇ ਦਿਹਦਾ।

ਜੇਕਰ ਘੋੜੇ ਵੇਨੇਗੀ ਇਸਸੇ ਤੂੰ ਲੇ ਆਵੇਵੇ

ਵਜਾ ਪਸਤੁਰਾ ਖਲਹ ਬਾਨੁ ਕਨਦਾ। ੧੪॥

ਫੇਰ ਇਸਸੇ ਪਿਛੇ ਤੇਰੇ ਤਾਈ ਮੇ ਘਰੇ ਦਾ ਇਸਤੀ ਕਹਾਯਾ

ਸਨੀਦੀ ਸਖਨਰਾ ਹਮੀ ਸਦਰਵਾਂ।

ਸਾਹੁ ਕਾਰਦੀ ਝੋਟੀ) ਸੁਣਨੇ ਏਸ ਬਾਤ ਕੇ ਤਾਈ ਤੁਰ ਪਈ ਉਥੇ

ਬਿਯਾਮਦ ਬਸਹਰ ਸਾਹ ਹਿੰਦੇ ਸਤਾਂ। ੧੫॥

ਆਈ ਵਿਚ ਸਹਰ ਬਾਰ ਸਾਹ ਹਿੰਦੇ ਸਤਾਨੇ

ਨਿਸਸਤੰਦ ਬਰਰੇਦ ਜਮਨਾਲ ਆਬਾ।

ਝੋਟੀ ਉਪੁ ਦਰਆ ਜਮਨਾਵੇ ਕਨਾਰੇ

ਬਿਬਰਦੀਦ ਬਾਦ ਹਦ ਖਰਦਨ ਕਬਾਬਾ। ੧੬॥

ਪੀਤਾ ਸਹਾਬਦਾ ਪਿਆਲਾ ਅਤੇ ਖਾਏ ਕਬਾਬ

ਪਸੇਵੇ ਬਰਾਮਦ ਸਬੇਦੁ ਸਿਆਹ।

ਵੇ ਪਹਰ ਆਈ ਗੜ ਜੜੇ - ਕਾਲੀ

ਰਵਾਂ ਕਰਦ ਆਬਾਸ ਬਸੇ ਪਸਤੁਰਾਹ। ੧੭॥

ਰਵਾਨਾ ਕੀਤੇ ਪਾਣੀ ਵਿਚ ਬਹੁਤ ਖੁਲੇ ਘਾਹਰੇ

ਬਿਦੀਦੀਦ ਰਿਰਾ ਬਸੇ ਪਾਸ ਬਾਂ।

ਰੋਖਿਆ ਉਨਾ ਪੁਸਿਆਵੇ ਤਾਈ ਬਹੁਤ ਝੋਟੀ ਦਾਗਾਨੇ

ਬਤੁ ਦੀਦਰਾਮਦ ਬਤਾ ਬਸ ਹੁਮਾਂ। ੧੮॥

ਵਿਚ ਗੁਜ਼ਰੇ ਆਏ ਅਤੇ ਬੰਦੂਕ ਚਲਾਈਆਂ

ਬਸੇ ਬਰਦੈ ਬੰਦ ਕਬਾਰਾਂ ਕਨਦਾ।

ਬਹੁਤ ਉਨਾ ਪਾਲਿਆ ਉਪੁ ਬੰਦੂਕ ਮਾਰੀਆ

ਚਬਾ ਬਰਕ ਅਬਰਸ ਬਹਾਰਾਂ ਕਨਦਾ। ੧੯॥

ਮੌਸੇ ਬਿਜਲੀ ਬਦਲਾਏ ਜਮਕਦੀ ਹੈ ਮਾਫ਼ ਸੁਣੇ

ਹਮੀ ਵਜਹ ਕਰਦੀਦ ਦਸੇ ਚਾਰ ਬਾਰ।

ਇਸੀ ਪ੍ਰਯਾਨ ਕੀਤਾ ਉਨਾਨੇ ਵੇਚਾਰੋ ਕਾਗੀ

੧੨੮ ਹਮ ਅਖਰ ਕੁਨਦ ਖਬ ਖੁਫਤੁ ਇਕਤਿਆਰਾ॥ ੨੦॥
ਮਤੀ ਸੇਵਾ ਇਕਤਿਆਰ ਕੀਤਾ

ਬਿਦਾਨਦੁ ਰਿਖੁਫਤੁਹ ਸਵਦਪਸੁਬਾ॥
ਜਾਣ ਲਿਆ ਜੇ ਜੇ ਕਏ ਰੋਗੇ ਚੋਕੀਦਾਰ

ਬਪਸਮੁਰਦੁਹਮਦ ਹਮਰ ਜਖਮੇਲੁਲੁ॥ ੨੧॥
ਭਕ ਗਏਹੋ ਜੇਠੇ ਜਖਮੀ ਤੇਰੇ ਤੇਰੇ ਜਧਮੇ ਪੇਲਵਾਨ

ਰਵਾਂ ਕਰਦੁਉਜਾ ਬਿਯਾਮੁਦਮਜਾ॥
ਤੁਹੀਉਸ ਜਾਗਹੋ ਜੇ ਅਤੇ ਆਈਓਏ

ਕਿ ਬੁਨਗਾਹ ਅਜਸਾਹ ਕਰਖੇਗਿਰਾਂ॥ ੨੨॥
ਜਿਥੇ ਜਹਾਸੀ ਬਾਦਸਾਹਰੀ ਅਟਾਹੀ ਭਾਗੀਦਿਆ

ਪਾਰੀਹਾ ਬਿਕੇਬਦ ਪਾਰੀਆ ਪਾਰੀਆ॥
ਘਰਮਾਲ ਕੇ ਤਾਈ ਬਜਾਉਦਾਹੇ ਘਰੀਵਾਲਾ ਘਰੀ ਘਰੀ

ਵਜਾ ਮੇਕੇਬਦ ਬਪਸਤੇ ਦਿਵਾਰ॥ ੨੩॥
ਉਸੀ ਤਾ ਮੇਥਾ ਰੋਕਦੀਓ ਫਿਰ ਇਠ ਕੰਧਰੇ ਘਾਹੁ ਕਾਹ ਦੀ ਬੇਟੀ

ਚਨਤਾ ਬਰਾਮਦ ਦਿਵਾਰੇ ਮਜੀਮਾ॥
ਇਸੀਰਾ ਬਾਹਰ ਆਈ ਕੇਧ ਤੁਰੀਸੇ

ਦਮਸਪਸਨਜਰ ਕਰਦ ਹੁਕਮੇਕਰੀਆ॥ ੨੪॥
ਦੋਜੋ ਘੋਰੇ ਦੇਖੇ ਹੁਕਮ ਦਾਹੁ ਗੁਰੂਸੇ

ਯੇਰਾ ਬਿਜਦ ਤਾ ਮਜੇ ਨੀਮਕਰਦਾ॥
ਇਕ ਚੋਕੀਦਾਰ ਕੇਤਾਈ ਮਾਰਿਆ ਉਸਦੇ ਦੇਵਕਹੇ ਕੀਤੇ

ਦਰੇ ਪਾਸੁਬਾਨੇ ਕਰਜਨੀਮ ਕਰਦਾ॥ ੨੫॥
ਦੁਰਵਾਜੇ ਚੋਕੀਦਾਰੀਸੇ ਬਾਹਰ ਦੇ ਟੁਕੜੇ ਕਰਕੇ ਕਹਿਆ

ਦਿਹਾਰਾ ਬਿਜਦ ਤਾ ਜਦਾ ਕਸਤੁਸਰਾ॥
ਦੁਸਰੇ ਚੋਕੀਦਾਰਨੇ ਮਾਰਕੇ ਉਸਦਾ ਸਿਰਜੁਦਾਕੀਤਾ

ਸਿਆਮਰਾ ਬਕਸਤੁਨ ਸਵਦਖੀਨਤੁਰਾ॥ ੨੬॥
ਤੀਸਰੇ ਕੇਤਾਈ ਸਾਥੇ ਮਾਰਕੇ ਦੇਲੁਹੁ ਫਿਰ ਤੋਰਕੀਤਾ॥

ਚੁਆਮਰਾ ਜਦਾ ਕਰਦ ਪੰਜਮ ਬਕਸਤਾ॥

ਚੁਕੇ ਕੇਤਾਈ ਸਾਰੇ ਜਦਾ ਕੀਤਾ ਫੇਰ ਪੰਜਵਾਂ ਖਾਇਆ

ਸੁਆਮਰਾ ਬਿਕਸਤੁੰਦ ਜਮਦਾਰ ਮੁਸਤਾ॥੨੭॥

ਫੇਰੇ ਕੇਤਾਈ ਖਾਇਆ ਕਟਾਰੀ ਹਥੀ ਨਾਲ

ਸੁਆਮਰਾ ਬਿਕਸਤੁੰਦ ਜਮਦਾਰ ਮੁਸਤਾ॥

ਫੇਰੀ ਚੋਕੀ ਕੇ ਮਾਰੇ ਆਈ ਉਸਕੇ ਅਰੇ

ਕਿਹਤੁਸ ਗਿਰਾਂਬਦ ਚੋਕੀ ਗਿਰਾਂ॥ ੨੮॥

ਜੇ ਸਤਵੀ ਤਾਰੀਖੀ ਚੋਕੀ ਆ ਭਾਗੀਏ

ਕਿਹਤੁਸ ਹਮੀ ਕੁਸਤੁ ਜਖਮੇ ਅਜੀਮਾ॥

ਜੇ ਸਤਵੀ ਬੀ ਐਸੇਗੇ ਮਾਰੀ ਫਟ ਭਾਗੀਏ

ਕਿਹਤੁਸ ਕਨਦ ਰਖਸ ਹੁਕਮੇ ਕਰੀਮਾ॥੨੯॥

ਜੇ ਹਥ ਕਰਦੀਓ ਉਪ ਘੋੜੇ ਦੇ ਹੁਕਮ ਵਾਹ ਭਾਗੀਏ ਕਾਠੀ ਪਾਥੇ ਉਪ

ਚਨ ਤਾਜੀ ਯਾਨਹ ਬਿਜਦ ਤਜੀ ਅਜਾ॥ ਘੋੜੇ ਦੇ

ਐਸੇ ਕੇਤਾਈ ਖਾਇਆ ਘੋੜੇ ਕੇਤਾਈ ਚੜ੍ਹ ਕਰਕੇ॥

ਕਿਬਾਲ ਬਰਾਮਦ ਬੁਜਮਨ ਅੰਦਰਸਾ॥੩੦॥

ਜੇ ਕਿਲੇ ਦੇ ਉਪ੍ਰੰਦ ਉਤਰੇ ਘੋੜਾ ਵਿਚ ਜਮਨਾ ਦੇ ਆਇਆ

ਟਗਸਤਨ ਦਰਾਬੇ ਬਬੇਰੀ ਅਜਾ॥

ਗਿਆ ਵਿਚ ਪਾਣੀ ਦੇ ਅਤੇ ਬਹਾਰ ਉਸੀ ਵੇਲੇ ਤਰਕੇ ਪਾਠ ਲਿਖਾਇ

ਕਿਹੇਰਤੁ ਬਿਮਾਂਦੀ ਦੁਸਾਰੇ ਜਹਾਂ॥੩੧॥

(ਸੇਰਸਾਹ) ਅਸਚਰਜ ਹੋਇਆ ਬਦਸਾਹ ਉਸਸੇ ਜੋ ਘੋੜਾ ਕਿਥੇ ਗਿਆ

ਕਿਦੀਦਾਂ ਖੁਰਦ ਦਸਤੁ ਅਜ ਸੇਰਸਾਹ॥

ਜੇ ਖੁਰਦੀਦਾਂ ਪਾਉਦਾਂ ਹਥ ਇਸਸੇ ਸੇਰਸਾਹ ਦੇਰਾ ਕੇ ਸਾਥ ਹਥ ਕੇ ਕਟਦੇ

ਬਹੇਰਤੁ ਹਮੀ ਰਿਫਤੁ ਆਲਮ ਪਨਾਹ॥੩੨॥

ਵਿਚ ਹੋਗੀ ਨੀਰੇ ਗਿਆ ਸੀਸਾਹ ਦੇ ਆਸਰੇ ਵਾਲਾ

ਕਿਮਾਰ ਕੁਜਾ ਬੁਰਦ ਅਜ ਪੇ ਅਜੀਮਾ॥

ਜੇ ਮੇਰਾ ਕਿਥੇ ਆਇਆ ਘੋੜਾ ਭਾਰੀ ਕੇਈ॥

१३० ਬ ਬਖਸੀ ਦ ਓਹ ਮ ਚ ਕ ਸ ਮੇ ਕ ਰੀ ਮ ॥ ੩੩ ॥
ਬਖਸੀ ਕੀਤੀ ਮੇ ਓਹ ਕੇਤਾਈ ਮੇ ਸੇਹੀ ਸਪਤ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਦੀ
ਦਰੇਗਾ ਅਗਰ ਰਹਿ ਓ ਦੀ ਦਮੇ ॥
ਅਫਸੋਸ ਜੇਕਰ ਓਸਦਾ ਮੂੰ ਦੇਖਦਾ ਮੇ

ਬਸ ਦਰੀਜ ਸਰ ਬਸਤੁ ਬਖਸੀ ਦਮੇ ॥ ੩੪ ॥
ਜੋ ਖਜਾਨਾ ਭਰਿਪੁਰ ਬਖਸੀ ਸ ਕਰਦਾ ਮੇ

ਕਿ ਹੋਫਸਤੁ ਗਰ ਦੀ ਦੁਏ ਯਾਫਤੁ ਮ ॥
ਜੋ ਅਫਸੋਸ ਹੋ ਜੇਕਰ ਓਸਨੂੰ ਮੇ ਦੇਖ ਸਰਦਾ ਮੇ

ਬਜਾਏ ਦਿਗਰ ਦਿਲ ਨ ਜੇ ਤਾਫਤੁ ਮ ॥ ੩੫ ॥
ਦਿਗਰ ਜਾਗਾ ਦੁਸਰੀ ਦੇ ਰਿਤ ਨਹੀ ਓਸ ਸੇ ਫੇਰਦਾ ਮੇ

ਕਿ ਦੀਦਾਰ ਬਖਸਦ ਅਗਰ ਓ ਮਰਾ ॥
ਜੋ ਦੀਦਾਰ ਦੇਵੇ ਜੇਕਰ ਓਹ ਮੇਰੇ ਤਾਈ ॥

ਕਿਸ ਦਰੀਜ ਸਰ ਬਸਤੁ ਬਖਸ ਮ ਵਰਾ ॥ ੩੬ ॥
ਜੋ ਸਭ ਖਜਾਨਾ ਭਰਿਆ ਹੋਇਆ ਵੇਦਾ ਮੇ ਓਸ ਕੇਤਾਈ

ਚਸਹ ਰਤੁ ਕਨਨੀ ਦ ਸਹਰ ਅੰਦਰੀ ॥
ਜੇਹੋ ਓਹਿ ਸਪਕਾਹੋ ਪੁਗਟ ਕੀਤਾ ਸਹਰਾ ਦੇਰ

ਬਿ ਬਖਸੀ ਦ ਮਨ ਖੁਨ ਅਜ ਖੁਆਰ ਖੁੰ ॥ ੩੭ ॥
ਜੋ ਬਖਸਿਆ ਮੇਰੇ ਖੁਨ ਓਸ ਖੁੰਦੀ

ਬਿ ਬਸਤੀ ਦ ਦਸਤਾਰ ਅਜ ਜਾ ਮੁਜਰਾ ॥
(ਸਹੁਕਾਰ ਦੀ ਬੇਟੀ) ਜੋ ਪਗੜੀ ਜਕੀਦੋ ਕਪੜੇ ਦੀ ਅਤੇ ਪਾਸਕਾਈ ਓਨੇ

ਬਪੇਸੇ ਸਹਾ ਮਾਮਦ ਚ ਜਕੀ ਸਿਪਰਾ ॥ ੩੮ ॥
ਆਹੇ ਭਾਰ ਸਾਹਰੇ ਆਈ ਜੇਸੇ ਸੁਰੋਜ ਮਾਵਤਾਈ

ਬੋਗਸ ਦ ਕਿਸੇਰ ਅਫਕਨ ਸੇਰ ਸਾਹਾ ॥
ਕੋਹਦਾ ਮੇ ਓ ਸੇਰ ਦੇ ਗਲ ਫੇਰਾਲੇ ਸੇਰ ਸਾਹ

ਕਿ ਅਜਰਾਹ ਰਾ ਮਨ ਬਿ ਬਰਦੀ ਦ ਰਾਹਾ ॥ ੩੯ ॥
ਜੇ ਇਸ ਰਸਤੇ ਮੇ ਮੇਲੀ ਗਿਆ ਹੋ ਗਾ ਮੇਰੇ ਹੁੰ ਵੇਲੇ ਗਤ ਦੇ

ਅਸਤੁ ਮਾਂਦ ਸਾਹਿਬ ਖਿਰਦ ਦੀ ਜਵਾਬਾ।

ਅਸਤੁ ਰਹਿ ਰਾਹ ਸਾਹਿਬ ਕਲ ਵਾਲ ਇਸਤੁ ਵਾਹਨੀ ਸੁਦਕਰ

ਇਗਰ ਬਾਰਗਲਦ ਕਿ ਬਰਵੈ ਸੁਦਾ। ੪੦॥

ਦਸਗੇ ਵਾਰ ਕੇਵਲੇ ਜੋ ਸਾਥ ਹਿਸਰੇ ਤੁਨਾ ਮਾਈ ਨਾਲ ਬਾਰਸਾਹ

ਕਿਨਕਲਸ ਨਮਾਈ ਮਹਾ ਸੇਰ ਤੁਨਾ।

ਜੋ ਨਕਲ ਹਿਸਟੀ ਕਰੇ ਦੇ ਖਾਲ ਮੇਰੇ ਤਾਈਏ ਸੁਹਮੇ

ਬਵਜਹੇ ਚਿਰਾ ਬਰਦ ਅਸਪੇ ਕੁਹਨਾ। ੪੧॥

ਕਿਸਤਾ ਮੇ ਲੇਹਿਆਤੁ ਘੋਰੇ ਪਹਾਵੇ ਕੇ ਤਾਈ

ਨਸਸਤੀਦ ਅਜਾ ਵਜਹੇ ਬਰਦੇਦ ਅਬਾ।

ਦੀਤੀ ਹਿਸ ਪੁਕਾਰ ਹਿਪਰ ਵਰਿਆ ਦੇ ਕਨਾਰੇ

ਇ ਬਰਦੀਦ ਬਾਦਹ ਬਿਖਰਦਨ ਕਬਾਬਾ। ੪੨॥

ਪੀਤੀ ਸੁਗਾਥ ਅਤੇ ਬਾਰੇ ਕਬਾਬ

ਰਵਾਂ ਕਰਦ ਅਵਲ ਬਸੇ ਪਸਤ ਕਾਹਾ।

ਰਵਾਨਾ ਕੀਤੇ ਪਹਲਾਂ ਬਹੁਤ ਤਾਰੇ ਘਾਹਵੇ

ਦਗਾ ਮੇਦਿਹਦ ਪਸ ਬਨਨ ਸਾਹਾ। ੪੩॥

ਭਰੇਬ ਇਦੀ ਹੈ ਚੋਰੀਦਾਰ ਬਾਦਸਾਹ ਇਅੰਨੀ

ਵਜਾ ਪਸ ਬਕਸਸ ਕਨਨੀਦ ਲਖਤਾ।

ਹਿਸ ਮੇ ਪੀਛੇ ਚਲਾਕੀ ਕੀਤੀ ਨਘਾਵੇ ਖੋਲੀ ਜੋਗੀ

ਬਪੋਰਸ ਦਰਾਮਦ ਜਿਦਰੀਲਾਇ ਸਖਤਾ। ੪੪॥

ਤਰਕੇ ਪਾਹ ਲਖੀ ਵਰਿਆ ਕਰਕੇ ਹੈ

ਵਜਾ ਪਸ ਕਿਨਨੀਦ ਉਕਰਦਹ ਸੁਦਾ।

ਹੇਮਾਜੇ ਮਛੇ ਬੀਤ ਜਿ ਕੰਮ ਤੇ ਹਿਸ ਤੇ ਕੀਤਾ ਸੀ

ਬਦੀਦਨ ਅਸੀਸਾਹ ਪਲ ਮਰਦਹ ਸੁਦਾ। ੪੫॥

ਦਖ ਕੇ ਹਿਸ ਵੀ ਤਰਕ ਬਾਰਸਾਹ ਮਰਦੇ ਦੀ ਮਾਨਿਦ ਰੋਵੇਆ

ਪਸੀਸਕ ਬਿਮਾਈਦ ਗੁਰਬ ਅਫਤਾਬਾ।

ਇਕ ਘਨੀ ਰਹੀ ਸੀ ਸੁਰਜ ਦੇ ਡਿਪਵੇ ਵਿਚ

੧੩੨ ਵਜਾ ਜਾ ਬਿਆਮਦ ਕੁਸਾਯਦ ਤਨੁ ਬਾ ॥੪੬॥
ਉਸ ਜਗਾ ਆਈ ਅਤੇ ਬੋਲੀ ਅਰਾਫ਼ੀ ਪਿਛਾਨੀ ਘੋੜੇ ਦੀ

ਲਗਾਮ ਸੁ ਬਿਦਾਦੰਦ ਸੁਰੇ ਸਦਸੁਤੁ ॥
ਘੋੜੇ ਨੂੰ ਲਗਾਮ ਦਿਤਾ ਅਤੇ ਉਸ ਉਪਰ ਅਸਵਾਰ ਹੋਈ

ਬਿਜਦ ਤੁਸੀਆ ਨਹ ਰੁਅਫਰੀਤੁ ਮਸਤੁ ॥੪੭॥
ਮਾਰਿਆ ਕੋਰੜਾ ਜਦੋ ਦੇਵ ਮਸਤ ਨੂੰ (ਅਰਥਾਤ) ਘੋੜੇ ਨੂੰ

ਚੁਨਾ ਅਸਪ ਪੇਜੀਦ ਬਰਤਰ ਜਿਸਾਹ ॥
ਮੈਂਸਾ ਘੋੜਾ ਉਡਿਆ ਜੋ ਬਾਦਸ਼ਾਹ ਦੇ ਉਪਰ ਹੈ

ਜਿ ਬਾਲਾ ਬਾਮਦ ਬਦਰੀਯਾਇ ਗਾਹ ॥੪੮॥
ਉਚਾ ਹੋਕੇ ਆਇਆ ਵਿਚੋਂ ਦਰਿਆ ਦੇ

ਕਿ ਪਾਰਸ ਹਮੀ ਗਸਤੁ ਹੁਕਮੇ ਕਰੀਆ ॥
ਜੋ ਪਾਰਸੀਆ ਸਾਥ ਤੁਕਮ ਵਾਹਿਗਾਹੁ ਕੇ

ਬਪੇਰਸ ਦਰਮਦ ਕਿਦਰੀਯਾ ਅਜੀਆ ॥੪੯॥
ਤਰਕੇ ਤਾਰੀ ਦਰਿਆ ਵਿਚੋਂ

ਫਰਦ ਆਮਦ ਅਜ ਅਸਪ ਕਰਦਸੁ ਸਲਾਮ ॥
ਉਠਰ ਕੇ ਘੋੜੇ ਉਪਰ ਜੋ ਬਾਦਸ਼ਾਹ ਨੂੰ ਨਮਸਕਾਰ ਕੀਤੀ

ਬਿਰੋਲਦ ਸੁਖਨ ਸਹ ਅਰਬੀ ਕਲਾਮ ॥੫੦॥
ਕੋਈ ਹੈ ਬਾਰਤ ਬਾਦਸ਼ਾਹ ਨੂੰ ਅਰਬੀ ਬੋਲੀ ਵਿਚੋਂ

ਤੁ ਅਕਲ ਸਚਰਾਗਸਤੁ ਏ ਸਾਹਸਾਹ ॥
ਤੇਰੀ ਅਕਲ ਕਿਥੇ ਗਈ ਏ ਸਾਹਸ ਸਾਹ

ਕਿ ਮਾਰਾਹ ਬਰਦਨ ਤੁਦਾਦਨ ਸੁਰਾਹ ॥੫੧॥
ਜੋ ਮੇਂਤਾ ਰਾਹ ਕੋਂ ਤਾਈ ਯੋ ਗਈ ਸੀ ਤੂੰ ਸੁਰਾਹ ਭੀ ਦੇ ਦਿਤਾ ਆਪਣੇ ਹਾਥ ਸੇ

ਕਿ ਗਫਤਸੁ ਚੁਨੀ ਤਾਰਵਾਂ ਕਰ ਦਰਖਸਾ ॥
ਏਹ ਕਿਹਕੇ ਮੈਸਾ ਉਸ ਨੂੰ ਤੋਰ ਦਿਤਾ ਘੋੜਾ

ਬਾਜਾਦ ਆਮਦੇ ਏ ਜਦੋ ਦਾਦ ਬਖਸਾ ॥੫੨॥
ਯਾਦ ਆਇਆ ਵਾਹਗਾਹੁ ਨਿਆਉ ਕਰਨੇ ਵਾਲਾ

ਬਿਅਫਤਾਦਪਸਤਅਸਪਹਾਬੇਸੁਮਾਰਾ॥
ਦੁਕਾਏ ਪਿਛੇ ਉਸਦੇ ਘੋੜੇ ਬਿਅੰਤ ਹੀ

ਕਿਓਰਾਨਹਮਬਰ ਕੁਨੀਦਕਸਸਵਾਰਾ॥੫੩॥
ਕਿਉ ਤੇ ਉਸਦੀ ਨਹੀ ਬਰਾਬਰੀ ਕਰਸਕਦਾ ਕੋਈ ਸਵਾਰ

ਬਿਜਾਦਮਰਦਦਸਤਾਰਹਾਪੇਸਸਾਹਾ॥
ਸਿਟੀਆ ਸੁਰਮਿਆ ਨੈ ਦਸਤਾਰ ਅਗੇ ਬਾਦਸਾਹ ਦੇ

ਕਿਉਸਾਹਸਾਹਨਅਲਮਪਨਾਹਾ॥੫੪॥
ਜੇ ਦੇ ਬਾਦਸ਼ਾਹ ਦੇ ਬਾਦਸ਼ਾਹ ਦੁਨੀਆਂ ਦਾ ਆਸਰਾ

ਬਗੀਰਦਕਸੇਹਰਦਆਹੁਬਰਾਕਾ॥
ਪਕੜ ਸਕਦਾ ਹੈ ਕੋਈ ਵੇਨੋ ਹਰਨ ਜੋਸੇ ਘੋੜਿਆ ਨੂੰ

ਤੁਓਰਾਬਿਬਖਸੀਦਖਦਦਸਤਤਾਕਾ॥੫੫॥
ਤੂੰ ਉਸਕੇ ਤਾਈ ਬਖਸੀਸ ਕੀਤੇ ਆਪਣੇ ਹਥਸੇ ਤਲੀਤਰਾਂ

ਹਿਰਾਮੇਕਨਦਗਾਰਹਾਬੇਖੁਦੀ॥
ਕਿਸ ਵਾਸਤੇ ਕਰਦਾ ਹੈ ਤੂੰ ਕੰਮ ਬੇ ਪਰਵਾਹੀਦਾ

ਕਿਰਾਹਾਅਜੇਮਨਸਰਾਹਾਤਈ॥੫੬॥
ਜੇ ਰਾਹ ਘੋੜਾ ਸਾਡੇ ਪਾਸ ਜੋ ਲੈ ਗਿਆ ਸੁਗਾਹ ਤੇਰੇਸੇ ਲੈ ਗਿਆ

ਬਿਬਰਦਸਅਜੇਅਸਪਹਰਦੇਅਜੀਆ॥
(ਸਾਹੁਕਾਰ ਦੀ ਬੋਲੀ) ਲੈ ਗਈ ਉਸ ਸੇ ਘੋੜੇ ਵੇਨੋ ਹੀ ਵੇਰੇ

ਵਧਾਰਾਬਿਬਖਸੀਦਹੁਕਮੇਰਹੀਆ॥੫੭॥
ਓਹ ਪ੍ਰੀਤਮ ਕੇ ਤਾਈ ਬਖਸੀਸ ਕੀਤੇ ਹੁਕਮ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਸੇ

ਕਿਓਰਾਵਰਾਵਰਦਖਨਹਨਿਕਾਹਾ॥
(ਜਿਥਾਵਸਾਹ ਦੇ ਬੋਲੇਨੇ) ਜੋ ਉਸਕੇ ਤਾਈ ਇਹ ਸਾਦੀਵੇ ਆਵਾ

ਕਿਕੋਲੇਕਨਦਮਸਤਕੀਮਹੁਕਮਸਾਹਾ॥੫੮॥
ਕਿਸ ਵਾਸਤੇ ਜੋ ਸੁਗੀਦ ਪਕੀ ਕੀਤੀ ਸੀ ਹੁਕਮ ਦੇ ਬਾਦਸਾਹਨੇ

ਬਿਦਿਹਸਾਕੀਯਾਸਾਗਰੇਕੋਕਨਾਰਾ॥
ਵੇਹ ਸੁਖ ਈਆ ਪਿਆਲਾ ਪੇਸਤਦਾ ਫੁਰਕੇ

ਦਰਦਕਤਜੰਗਸਬਿਯਾਂਮਦਬਕਾਰਾ॥੫੮॥
 ਵਿਚੋ ਵੇਲੇ ਜੁਧ ਦੇ ਆਵੇ ਅੰਦਰ ਕੰਮ ਦੇ

ਕਿਖਸਸਤਦਰਦਕਤਖਸਮਮਫਕਨੀ॥
 ਜੋ ਭੁਲਾ ਹੈ ਵਿਚੋ ਵੇਲੇ ਸਤੁ ਮਾਰਨੇ ਦੇ

ਕਿਯਕ ਕਤਰਲਸੁ ਫੀਲਗਪੇਕਨੀ॥੬੦॥
 ਜੋ ਇਕ ਬ੍ਰਿਥ ਉਸਕੀ ਪੀਕੇ ਹਾਈ ਸੇ ਭੀ ਜੁਧ ਕਰੀਏ

ਹੇ ਅੰਗਰੇ ਦੇਖ ਤੇਰੇ ਨਾਲੇ ਤਾਂ ਅੰਗਰਾਂ ਹੀਚੀਰੀਆਂ ਹਨ ਜੋ ਕੋਲ ਕਰਕੇ ਪ
 ਲਦੀਆਂ ਹਨ ਅਤੇ ਤੂੰ ਬਾਰਸਾਹ ਹੋਕੇ ਭੀ ਆਪਣੇ ਕੋਲ ਨਾ ਪੁਰਾ ਕੀਤਾ (ਅ)

ਕਰਾਨਦੀ ਸ਼ੀਰੀਦ ਖਾਕੇ ਸਾਡੇ ਨਾਲ ਰਗਾ ਕੀਤਾ

ਹਿਕਾਸਤ ਕਥਾ ਬਾਰਵੀਚੁਲੀ
 ੧੮੬੭ ਗੁਰੂਜੀਕੀ ਫਤਹਾ॥

ਰਜਾਬਖਸ਼ਬਖਸ਼ਿਦਦੇਬੇਜਮਾਰਾ॥
 ਖੁਸ਼ੀ ਕੇ ਦੇਵੇ ਵਾਲਾ ਅਤਸੇ ਕਰਕੇ ਅਤੇ ਬਿਅੰਤ ਹੈ

ਰਿਹਾਈਦਿਹੋਪਾਕਪਰਵਰਦਿਗਾਰਾ॥੧॥
 ਖੁਲਾਸੀ ਕੇ ਦੇਵੇ ਵਾਲਾ ਅਤੇ ਪਵਿਤ੍ਰ ਪਾਲਦੇ ਵਾਲਾ ਹੈ

ਰਹੀਮੋਕਰੀਮੋਮਕੀਨੋਮਕਾਨ॥
 ਰਹਿਗੁਰੂ ਰਹਮ ਕਰਨੇ ਵਾਲਾ ਕਿਰਪਾਕਰਨੇ ਵਾਲਾ ਮਕਾਨ ਵਿਚੋ ਬਸਦੇ ਵਾਲੇ ਉਪ
 ਰਅਤੇਮਕਾਨਉਪਰ

ਅਜੀਮੋਰਹੀਮੋਚਮੀਨੋਜਮਾਨ॥੨॥
 ਰਹਿਗੁਰੂ ਸਭ ਤੇ ਵਰਾ ਹੈ ਇਲਕੋਸਮਸੁਨੇ ਵਾਲਾ ਹੈ ਪ੍ਰਿਥਵੀ ਅਤੇ ਅਕਾਸ਼

ਸੁਨੀਦਮਸੁਖਨਕੋਕੋਬਰਾਮਜੀ॥
 (ਜਾਹਿਰਕੈਦੇਹੈ) ਸੁਨੀਤੈ ਤਮਨੇ ਬਾਰਤਾ ਪਹਾੜਕੋ ਬਰਤਾਰੇਦੀ

ਕਿਅਫਗਾਯਕੋਬੁਦਚਿਜਾ ਰਹੀਮਾ॥੩॥
 ਜੋ ਅਫਗਾਨ ਰਹੀਮ ਖੋਜ ਵਿਚੋ ਰੋਣਾ ਜੀ

ਯਕੋਬਾਨਦੇਬੁਦਓਹਮਚਮਾ॥
 ਇਕ ਸੇਸੀ ੨ ਸਦੀਥੀ ਮਾਨਿਕੋ ਚੰਦਮਾ ਦੀ

ਕਨਦ ਦੀ ਵਨਸ ਰਿਸਤੁ ਗਰਦਨ ਨਿਸਾਹ ॥੪॥
ਕਰਦਾਰੇ ਹਿਸਾ ਦੇਖਣ ਟਾਹੀ ਗਰਦਨ ਵਿਚ ਬਾਦਸਾਹਦੇ

ਬਾਮਬਰੁ ਰੁਅਬਰੇ ਬਹਾਰ ਕਨਦਾ ॥
ਸਾਧ ਭੋਹ ਦੇ ਮਾਨਿ-੨ ਭਵਲਦੀ ਬਹਸਦੀ ਯੋ ॥

ਬਾਮਿਯਰਾ ਰੁਅਜ ਤੀਰ ਬਾਹ ਕਨਦਾ ॥੫॥
ਸਾਧ ਪਲਕੇ ਕੇਮਿ-੨ ਤੀਰੀ ਬਾਹਸਕਦੀ ਯੋ

ਤੁਖੇ ਚੀ ਖੁਲਾਸੀ ਵਿਹਦ ਮਾਹਰਾ ॥
ਅਖ ਭਿੰਦਾ ਪ੍ਰਸਿਨ ਕਰਣੇਵਾਲਾ ਚੇਵਮਾ ਕੇ ਤਾਈ ॥

ਬਹਾਰੇ ਗੁਲਿਸਤੁ ਵਿਹਦ ਸਾਹਰਾ ॥੬॥
ਪਰਫੁਲਤ ਬਾਗਾਵੇਲਦੇ ਨੂੰ ਕਰਕੇ ਵਾਲੀ ਬਾਦਸਾਹਕੇ ਕੇ

ਬਾਮਬਰੁ ਕਮਲੇ ਸਦਹ ਨਜਨੀ ॥
ਭੋਹ ਕਮਲੇ ਰੋਈਆ ਉਸ ਵਿਸਰੀ ਸੁੰਦਰੀਆ

ਬਚਸਮਜ ਜਨਦ ਕੇਬਰੇ ਕਹਰਗੀ ॥੭॥
ਸਾਧ ਪਸਕਾ ਦੇ ਮਾਰੀ ਤੀਰ ਬਲਵਾਲੇ

ਬਾਮਜਤੀ ਵਿਹਦ ਹਮ ਚਨੀ ਰਯਮਸਤਾ ॥
ਮਸਤੀ ਕੇ ਵਿਚੀਏ ਐਲੀ ਮਸਤ ਚੇਰੇਵਾਲੀ

ਗੁਲਿਸਤੁ ਕਨਦ ਬਮ ਸੇਰੀਯ ਦਸਤੁ ॥੮॥
ਫੁਲਾਰਾ ਬਾਹ ਕਹ ਦਿੰਦੀ ਪ੍ਰਥਵੀ ਕਲਰਵਾਲੀ ਵਿਜਾਦਾ

ਖਸੇ ਖਸ ਜਮਲੇ ਕਮਲੇ ਹੁਸਨਾ ॥
ਭੁਲੀਏ ਅਤੇ ਭੁਲਾਹੀ ਰੁਪ੍ਰਏ ਅਤੇ ਪੁਰਣੇ ਰੁਪ੍ਰਾਜਿਸਦਾ

ਬਸੁਰਤ ਜਵਾਨਸਤੁ ਫਿਕਰੇ ਕਹਨਾ ॥੯॥
ਸਾਧੋ ਸੁਰਤ ਦੇ ਜਵਾਨਏ ਅਤੇ ਫਿਕਰ ਦੇ ਵਿਚ ਭੁਚੀਏ

ਸਕੇ ਹੁਸਨ ਖਾ ਬੁਦ ਵਿਜਾਫਗਾ ॥
ਇਕ ਹਸਨ ਖਾਨ ਚਾ ਭਿਏ ਅਵਗਾਨ

ਬਦਾਨਸ ਹਮੀ ਬੁਦਮ ਕੁਲਸ ਜਵਾਨ ॥੧੦॥
ਸਾਧਦਾਸੀ ਦੇ ਐਜਾਜੀ ੧੫ ਅਕਲ ਭੀਏ ਸਦੀ ਜਵਾਨ

ਕਨ ਦੋਸਤੀ ਬਾਹਮੇ ਯਕ ਦਿਗਰਾ॥

ਕੋਰੀ ਹੈ ਦੋਸਤੀ ਸਾਥ ਇਕ ਦੂਸਰੇ ਦੇ ਆਪਸ ਵਿਚ

ਕਿਲੋਲੀ ਓ ਮਜਨੂੰ ਖਿਜਲ ਗਸਤੁ ਸੁਰਾ॥੧੧॥

ਜੇ ਲੋਲੀ ਅਤੇ ਮਜਨੂੰ ਭੀ ਸੁਰਮਾਵੇ ਹੈ ਉਨ ਨੂੰ ਦੇਖਕੇ

ਚੁਬਾਯਕ ਦਿਗਰਾ ਹਮ ਚੁਨੀ ਗਸਤੁ ਮਸਤਾ॥

ਜਦੋ ਸਾਥ ਇਕ ਦੂਸਰੇ ਦੇ ਐਸੇ ਮਸਤ ਹੋ ਗਏ।

ਚਪਾ ਅਜਰ ਕਾਬੇ ਇਨਾਰ ਫਤੁ ਦਸਤਾ॥੧੨॥

ਜਿਸੇ ਪੈਰਾ ਰਕਾਬ ਸੇ ਅਤੇ ਲਗਾਮ ਹਥ ਤੇ ਛੁਟ ਜਾਂਦਾ ਹੈ (ਅ) ਬਹੁਤ ਕੇਸਧ ਹੋ ਗਏ ਮ
ਸਤੀ ਸੇ

ਤਲਬ ਕਰਦ ਓ ਖਾਨਦੇ ਖਿਲੋਲੀ॥

ਮਦਿਆ ਹਸਨ ਖਾਂ ਨੂੰ ਘਰ ਵਿਚੋਂ ਚੋਰੀ ਦੇ ਥਾਹ ਖਿਆ

ਮਿਆ ਆਮਦਸ ਜੋ ਬਦਨ ਸਹਵਤੇ॥੧੩॥

ਭੋਗ ਬਿਲਾਸ ਉਸ ਸੇ ਸਹੀਰ ਕਾਮਣੀ ਨੇ ਕੀਤਾ

ਹਮੀ ਜੁਫਨ ਖਰਦੀ ਦਵਸੇ ਚਾਰ ਮਾਹ॥

ਇਸੀ ਪ੍ਰਕਾਰ ਭੋਗ ਕੀਤਾ ਦੇ ਚਾਰ ਮਹੀਨੇ

ਖਬਰ ਕਰਦੇ ਜੋ ਦਸਮ ਨੇ ਨਿਜ ਦ ਬਾਹ॥੧੪॥

ਖਬਰ ਕੀਤੀ ਉਸਦੀ ਕਿਸੀ ਸਤ੍ਹ ਨੇ ਖਾਸ ਬਾਦ ਸਾਹ ਦੇ

ਬਹੈਰਤੁ ਅੰਦਰਾ ਮਦ ਫਗਨੇ ਰਹੀਆ॥

ਅਸਚਰਜ ਵਿਚ ਆਇਆ ਅਫਗਾਨ ਰਹੀਸ ਖਾਂ

ਕਸੀ ਦਨ ਯਕੇ ਤੇਗ ਗਰਾਂ ਅਜੀਆ॥੧੫॥

ਖਿਰਕੇ ਇਕ ਤਲਵਾਰ ਗਾਜ਼ੀਆ ਬਹੁਰ ਭਾਰੀ

ਚਖ ਬਹਸ ਰਸੀ ਦੇ ਕਿਆ ਮਦ ਸੋਹਰਾ॥

(ਉਸ ਇਸਤਰੀ ਨੂੰ) ਜਦੋ ਖਬਰ ਹੋਈ ਜੋ ਮੇਰਾ ਖਸਮ ਆਇਆ

ਹਮਾਂ ਯਾਰ ਖਦਰਾ ਬਜਦ ਤੇਗ ਸਹਾ॥੧੬॥

ਉਸੀ ਯਾਰ ਆਪੋ ਦੇ ਕੇ ਤਾਈ ਮਾਰੀ ਤਲਵਾਰ ਸਿਰ ਵਿਚੋਂ

ਹਮਾਂ ਗਸਤੁ ਓ ਦੇਗ ਅੰਦਰ ਨਿਹਾਦਾ॥

ਸਭ ਮਾਸ ਉਸ ਯਾਰ ਦਾ ਦੇਗ ਨੇ ਦਿੱਤਾ ਰਾਖਿਆ

ਸਾਹਿਬੁ ਬਿਅੰਤੁ ਪੁਰਖੁ ਅਤੁਸ ਬਹਾਦਰੁ ॥੧੭॥੧

ਸਾਭੇ ਪਾਸੇ ਅਤੁਸ ਬਹਾਦਰੁ ਦਿਤੀ।

ਹਿਰਖੁ ਨੀਦੁ ਕਾਕੀ ਬਿਅੰਤੁ।

ਸਾਭੇ ਬਿਅੰਤੁ ਪੁਰਖੁ ਅਤੁਸ ਬਹਾਦਰੁ ਦਿਤੀ।

ਮਾਹਿ ਨੀਕਰਾ ਹਾਜਿਅਤੁ ਕਰਨਾਦਾ ॥੧੮॥

ਮਾਹਿ ਨੀਕਰਾ ਕੇਤਾਈ ਨਿਅਮਾਨੀ ਕੀਤੀ।

ਮੁਸਰਾਸਤੁ ਸਿਹਰੁ ਨਦੀਦੁਸੁ ਚੁਨਰਾ।

ਪੁਸ਼ਿਰੇਇਆ ਪਸਮਨਾ ਦੇਖਿਆ ਕਈਆ ਦਾਮੀ

ਕਸਤੁ ਕਸੇਰਾ ਕੁਦਾਦੁਸੁ ਪੁਸ਼ੁਰਾ ॥੧੯॥

ਕਸਤੁ ਕਸੇਰਾ ਕੇਤਾਈ ਸਿਸਨੇ ਪਥਰੁ ਦਿਤੀਸੀ

ਬਿਅੰਤੁ ਸਾਕੀਆ ਸਾਗਰੇ ਸਥਾਨੁ ਕੀ।

ਹੋਰੁ ਸੁਖਈਆ ਪਿਆਲਾ ਹਰਚੰਗਵਾਲਾ (ਸੁਖਦਿੱਖਣ)

ਕਿਮਾਰਾ ਕਕਾਰਾ ਅਸੁਰੁ ਜੁਗਿਅੰਦੁਰੀ ॥੨੦॥

ਸਿਮੇਰੇਤਾਈ ਰਾਖੀਦਾਤੇ ਅੰਦਰੁ ਜੁਧਦੇ।

ਲਗਾ ਲਗਾ ਕੁਨਦੁਸੁ ਬਹਾਦਰੁ ਨੀਕ ਕਨਾ।

ਭਗਪਰਕਰਕੇ ਮੇਰੇਕੇ ਦੇਹ ਅੰ ਸਦੀਵ ਕਾਲ ਪੀਰ

ਗਮੇ ਹਰਦੇਆਲਾਮ ਫਰਮੇਸੁ ਕਨਾ ॥੨੧॥

ਕੇਰਕੇਪੁਰਿਕਦਾ ਭੁਲਾ ਦੇਵਾ (ਥੇੜ) ੮੬੧ ॥ ੧੨ ॥

ਸੰਪੁਰਦ ਸਮਤੁ ਸੁਭਸਮਤੁ ਸੰਮਤ ੧੬੪ ॥

ਸੰਮਤਿਗਤੋ ਕਰੇਖ ਵਿਸ ਬਾਦਸਾਹ ਨੇ ਦੇ ਬੰਨਕੀਤੇ ਵਿਸ

ਪੁਕਾਰ ਤੇ ਕਰ ਰਿਹਾ ਤੇ, ਸਾਪਦੇ ਦਿਲ ਵਿਚੋਂ ਜਾਵਲੀ ਤੇਰਾ

ਦੀ ਹਾਲਤ ਹੋਵੇਗਾ ॥

ਦਸਮੀ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ

ਸਦੀਕ ਨਾਮਾ ਸਦੀਕ ਨਾਮਾ

ਪ੍ਰਗਟ ਹੋਵੇ ਜਫਰ ਨਾਮਾ ਸਦੀਕ ਦਸਮੀ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ
 ਜਫਰ ਨਾਮਾ ਜੋ ਦਸਵੀ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ
 ਮੈਂ ਸ੍ਰੀ ਮੁਖ ਵਾਕ ਫਾਰਸੀ ਬੋਲੀ ਮੈਂ ਉਚਾਰਾ ਹੁਆ ਹੈ, ਅਤੇ
 ਫਾਰਸੀ ਉਸ ਨੂੰ ਅਤੀ ਪ੍ਰੇਮ ਨੇ ਪੜ੍ਹਤਾ ਹੈ ਪ੍ਰਤੀ ਕਰਦੇ ਬੋਲੀ
 ਹੋਵੇ ਸੇਫਤੀ ਸਮਝ ਕਰ ਨਹੀ ਪੜ੍ਹ ਜਾਤਾ ਥਾ ਅਰਥਕਾ
 ਜਨਾ ਤੇ ਬਹੁਤ ਹੀ ਮੁਸਕਲ ਥਾ ਜੀ ਜਾਤਗੁਰੂ ਕਰਗੀਥਾ
 ਨਾਮ ਕੇ ਪਰਉਪਕਾਰੀ ਕੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਸੇ ਪ੍ਰਉਪਕਾਰ ਸੁਬਖਾ
 ਸੇ ਸੰਤ ਮਹੰਤ ਕੇ ਵਾਸਤੇ ਭਾਈ ਨੁਗਾਇਤ ਸਿੰਘ ਬੇਟੇ ਭਾਈ
 ਗੁਲਾਬ ਸਿੰਘ ਰੀਝੀ ਰਹੇ ਵਾਲੇ ਫਲੋਰ ਦੇ ਨੇ
 ਜੋ ਅਜਕਲ ਸ੍ਰੀ ਅੰਮ੍ਰਤ ਸਰ ਜੀਵੇ ਮਰਸੇ ਗਵਰਨਮੰਟ
 ਸਕੂਲ ਵਿਚੋਂ ਫਾਰਸੀ ਪੜ੍ਹਾਉਦੇ ਹੈ ਟੀਕ ਕੀਤਾ ਮੋਖ ੩

ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪੁਸਤਕ ਗ੍ਰੰਥਕਰਤਾ ਦੇਵੇ ਹੋਵੇ
 ਜਿੰਦਗੀ ਨਾਮਾ ਸਦੀਕ ਭਾਈ ਜੰਦ ਲਾਲ ਜੀਕ ੩

ਸ਼ਤਬਾਰ ਫਾਰਸੀ

੧. ਨਾਮੇ ਸਰੀ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਸਾਹਿਬ ਜੀਉ ਨਾਮਾ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਕਾ ਅਹਲ ਮੋਤਰਜ਼ਮੇ ਬਹੁਤ
 ੨. ਪ੍ਰੀ ਨਾਇਤ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਸੇ ਚਿੱਛ ਕਰੇ ਪ੍ਰੀ ਨਾਇਤ ਸਿੰਘ ਸਾਹਿਬ ਜੀਉ ਨਾਮਾ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਕਾ ਅਹਲ ਮੋਤਰਜ਼ਮੇ
 ੩. ਪ੍ਰੀ ਨਾਇਤ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਸੇ ਚਿੱਛ ਕਰੇ ਪ੍ਰੀ ਨਾਇਤ ਸਿੰਘ ਸਾਹਿਬ ਜੀਉ ਨਾਮਾ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਕਾ ਅਹਲ ਮੋਤਰਜ਼ਮੇ
 ੪. ਪ੍ਰੀ ਨਾਇਤ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਸੇ ਚਿੱਛ ਕਰੇ ਪ੍ਰੀ ਨਾਇਤ ਸਿੰਘ ਸਾਹਿਬ ਜੀਉ ਨਾਮਾ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਕਾ ਅਹਲ ਮੋਤਰਜ਼ਮੇ
 ੫. ਪ੍ਰੀ ਨਾਇਤ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਸੇ ਚਿੱਛ ਕਰੇ ਪ੍ਰੀ ਨਾਇਤ ਸਿੰਘ ਸਾਹਿਬ ਜੀਉ ਨਾਮਾ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਕਾ ਅਹਲ ਮੋਤਰਜ਼ਮੇ

੬. ਪ੍ਰੀ ਨਾਇਤ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਸੇ ਚਿੱਛ ਕਰੇ ਪ੍ਰੀ ਨਾਇਤ ਸਿੰਘ ਸਾਹਿਬ ਜੀਉ ਨਾਮਾ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਕਾ ਅਹਲ ਮੋਤਰਜ਼ਮੇ
 ੭. ਪ੍ਰੀ ਨਾਇਤ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਸੇ ਚਿੱਛ ਕਰੇ ਪ੍ਰੀ ਨਾਇਤ ਸਿੰਘ ਸਾਹਿਬ ਜੀਉ ਨਾਮਾ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਕਾ ਅਹਲ ਮੋਤਰਜ਼ਮੇ
 ੮. ਪ੍ਰੀ ਨਾਇਤ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਸੇ ਚਿੱਛ ਕਰੇ ਪ੍ਰੀ ਨਾਇਤ ਸਿੰਘ ਸਾਹਿਬ ਜੀਉ ਨਾਮਾ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਕਾ ਅਹਲ ਮੋਤਰਜ਼ਮੇ
 ੯. ਪ੍ਰੀ ਨਾਇਤ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਸੇ ਚਿੱਛ ਕਰੇ ਪ੍ਰੀ ਨਾਇਤ ਸਿੰਘ ਸਾਹਿਬ ਜੀਉ ਨਾਮਾ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਕਾ ਅਹਲ ਮੋਤਰਜ਼ਮੇ
 ੧੦. ਪ੍ਰੀ ਨਾਇਤ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਸੇ ਚਿੱਛ ਕਰੇ ਪ੍ਰੀ ਨਾਇਤ ਸਿੰਘ ਸਾਹਿਬ ਜੀਉ ਨਾਮਾ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਕਾ ਅਹਲ ਮੋਤਰਜ਼ਮੇ

| | | |
|---|---|---|
| ੧ | ੨ | ੩ |
| ੪ | ੫ | ੬ |
| ੭ | ੮ | ੯ |









ੴ ਓ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫਤਹ ॥

੨੮੦/੨-੮੨
੧੦੦੦੦



ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਰਾਮ ਦਾਸ ਲਾਇਬ੍ਰੇਰੀ

(ਸ੍ਰੀ ਦਰਬਾਰ ਸਾਹਿਬ, ਸ੍ਰੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ)

ਹੇਠ ਲਿਖੀ ਤਾਰੀਖ ਤੇ ਕਿਤਾਬ ਵਾਪਸ ਨਾ ਆਉਣ
ਤੇ.....ਪੈਸੇ ਰੋਜ਼ਾਨਾ ਜੁਰਮਾਨਾ ਹੋਵੇਗਾ।



M-3456 ✓

